ज्ञानपीठ लोकोदय-ग्रन्थमाला-सम्पादक और नियामक
श्री लक्ष्मीचन्द्र जैन

प्रकाशक
मन्त्री भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड वाराणसी

द्वितीय संस्करण
१९६९
मूल्य छह रुपये

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय वाराणसी

समर्पण

परम स्नेहमयी मामी

श्रीमती सौभाग्यवती ज्ञानदेवी 'विदुषी'

और

परम श्रद्धेय भाई साहब

गंगाप्रसाद जैन एम० ए०, एल-एल० बी०

को

सादर

सप्रेम

स म र्पि त

समर्पण

परम स्नेहमयी मामी

श्रीमती सौभाग्यवती ज्ञानदेवी 'विदुषी'

और

परम श्रद्धेय भाई साहब

गंगाप्रसाद जैन एम० ए०, एल-एल० बी०

को

सादर

सप्रेम

स म र्पि त

प्रकाशक
मन्त्री भारतीय ज्ञानपीठ
दुर्गाकुण्ड रोड, वाराणसी

द्वितीय संस्करण
१९५९
मूल्य छह रुपये

मुद्रक
बाबूलाल जैन फागुल्ल
सन्मति मुद्रणालय वाराणसी

भूमिका

श्री नारायणप्रसाद 'साहित्यरत्न', हिन्दीके उन इने-गिने लेखकोंमेंसे हैं जो साहित्यको साधनाका मार्ग मानकर चलते हैं और जिनकी सफलताका अनुमान विज्ञापनकी बहुलतासे न लगाकर सम्पर्ककी घनिष्ठतासे ही लगाया जा सकता है। साहित्यके अतिरिक्त यदि और किसी दिशामें उनकी रुचि हुई है तो वह है राष्ट्रीय कार्य और लोक-सेवा। इस प्रकारका कार्य-क्षेत्र वही व्यक्ति चुनते हैं जिन्हें जीवनके साधनोंको जुटानेकी अपेक्षा साधनाकी उपलब्धिमें अधिक सन्तोष और सुख मिलता है। सुकुमार प्राण भावुक मन और कर्मठ साधनासे जिस व्यक्तिने जीवनको देखा और परखा है उसकी अन्तर्दृष्टि कितनी निर्मल और निखरी हुई होगी। श्रीनारायणप्रसादजी इसी अन्तर्दृष्टि और परिष्कृत रुचिने उन्हें प्रेरणा दी है कि उन्हें अपने जीवनव्यापी अध्ययनमें जहाँ कहींसे जो सत्यं शिवं और सुन्दरं प्राप्त हो वह यत्नसे संग्रह करके जनजीवनके लिए वितरित कर दें।

भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित 'मुक्तिदूत'के ख्यातनामा साहित्य-शिल्पी श्री वीरेन्द्रकुमारने हमें सूचना दी थी कि श्रीनारायणप्रसादजीके पास ज्ञानोक्तियों लोकोक्तियों और सुभाषितोंका एक बृहत् संग्रह है जिसे उन्होंने परिश्रमसे संकलित किया है और जिसका प्रकाशन ज्ञानपीठके लिए उपादेय होगा। श्री नारायणप्रसादजीसे हमने एक पत्र लिखकर पाण्डुलिपि भेज देनेका आग्रह किया। जब पाण्डुलिपि प्राप्त हुई तो कागजोंका पुलिन्दा और कतरनोंका ढेर देखकर हम अवाक् रह गये। कितने प्रकार और कितने ही आकारके कागजोंमें अनेक प्रकारकी स्याहीसे लिखे गये हजारों ज्ञान-वाक्य संग्रहीत थे बिना विषय-क्रम और बिना भाषाक्रमके। उस मूल रूपमें संग्रह अपने जन्म और विकासकी कहानी अपने आप ही कह रहा था। एकके

भूमिका

श्री नारायणप्रसाद 'साहित्यरत्न', हिन्दीके उन इने-गिने लेखकोंमेंसे हैं जो साहित्यको साधनाका मार्ग मानकर चलते हैं और जिनकी सफलताका अनुमान विज्ञापनकी बहुलतासे न लगाकर साधककी मनोनिष्ठासे ही लगाया जा सकता है। साहित्यके अतिरिक्त यदि और किसी दिशामें उनकी रुचि हुई है तो वह है राष्ट्रीय कार्य और लोक-सेवा। इस प्रकारका काम वे ही व्यक्ति चुनते हैं जिन्हें जीवनके साधनोंको जुटानेकी अपेक्षा साधनाकी उपलब्धिमें अधिक सन्तोष और सुख मिलता है। सुकुमार भावुक मन और कर्मठ साधनासे जिस व्यक्तिने जीवनको देखा और परखा है उसकी अन्तर्दृष्टि कितनी निर्मल और निखरी हुई होगी। श्रीनारायण-प्रसादकी इसी अन्तर्दृष्टि और परिष्कृत रुचिने उन्हें प्रेरणा दी है कि उन्हें अपने जीवनव्यापी अध्ययनमें जहाँ कहींसे जो सत्यं, शिवं और सुन्दरं प्राप्त हो वह उससे संग्रह करके लोकजीवनके लिए वितरित कर दें।

भारतीय ज्ञानपीठसे प्रकाशित 'मुक्तिदूत'के ख्यातनामा साहित्य-शिल्पी श्री वीरेन्द्रकुमारने हमें सूचना दी थी कि श्रीनारायणप्रसादजीके पास सूक्तियों, लोकोक्तियों और सुभाषितोंका एक बृहत् संग्रह है जिसे उन्होंने परिश्रमसे संकलित किया है और जिसका प्रकाशन ज्ञानपीठके लिए उपादेय होगा। श्री नारायणप्रसादजीसे हमने एक पत्र लिखकर पाण्डुलिपि भेज देनेका आग्रह किया। जब पाण्डुलिपि प्राप्त हुई तो कागजोंका पुलिन्दा और कतरनोंका ढेर देखकर हम अवाक् रह गये। कितने प्रकार और कितने ही आकारके कागजोंमें अनेक प्रकारकी स्याहीसे लिखे गये हजारों वचन-वाक्य संगृहीत थे बिना विषय क्रम और बिना पेजनम्बरके। उस मूल रूपमें संग्रह अपने क्रम और

बाद दूसरी और दूसरीके बाद तीसरी सूक्ति किस प्रकार कब मिली और किस 'मूड' (mood = मनःस्थिति) में हमने उसे लिपिबद्ध किया यह स्पष्ट मालूम रहा था। संग्रहकी उस क्रम-हीनतामें भी एक विशेष आकर्षण और प्रभाव था।

'ज्ञानगंगा' की मूल पाण्डुलिपिमें आरम्भिक सूक्तियोंका क्रम इस प्रकार था :—

(१) हे प्रभो, मुझे अलौकिक प्रकाश नहीं मिला तो क्या मैं केवल कवि बनकर रह जाऊँ ? —संत तुकाराम

(२) पापकी सारी जड़ बुद्धिमें है। —गीता

(३) अतिशयोक्ति वह सत्य है जो झल्लाई हुई हालतमें है। —खलील जिब्रान

(४) अपना मतलब सिद्ध करनेके लिए शैतान भी धर्मशास्त्रके हवाले दे सकता है। —शेक्सपियर

(५) सच तो यह है कि ग़रीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित्र खोकर धनी बने हुए हिन्दुस्तानका स्वतन्त्र होना मुश्किल है। —गांधी

(६) अपने प्रेममें ईश्वर सान्तको चूमता है और आदमी अनन्तको। —टैगोर

(७) जिसे दोषविहीन मित्रकी तलाश है वह मित्रविहीन रहेगा। —एक तुर्की कहावत

(८) मायाके दो भेद हैं—अविद्या और विद्या। —रामायण

(९) जीवन—आदि धर्म मध्य धर्म अन्त सद्। —जर्मन कहावत

(१०) स्याहीकी एक बूँद दस लाख आदमियोंको विचारमग्न कर सकती है। —बायरन

(११) शब्दोंका अर्थ नहीं, अनुभव देखना चाहिए। —गोरखनाथ

इन सूक्तियोंको पढ़कर पता चलता है कि मनुष्यके जागरित मनने पृथ्वीके विभिन्न भागोंमें रहकर अनन्त युगोंतक जीवनसे जूझकर और

जीवनको अपनाकर अपने अनुभव द्वारा सत्यको जिस प्रकार प्राप्त किया है और उसे जिस प्रकार वाणीमें व्यक्त किया है। वह मानव-सभ्यताका अक्षय भण्डार और अखण्ड उत्तराधिकार है। यहाँ देश काल जाति और भाषाकी सीमाओंसे परे सारा विश्व ज्ञानके प्रकाशसे उद्भासित, सत्यके बलसे अनुप्राणित और सौन्दर्यके आकर्षणसे एकाकार प्रतीत होता है। ज्ञानकी यह कितनी बड़ी करामात है कि वह मानवमात्रमें अभेद ही उत्पन्न नहीं करता जीवनकी मौलिक एकताका आधार साहित्य-वाणीमें व्यक्त करता है और इतिहासके पृष्ठोंपर अमरत्वकी छाप लगा देता है।

संग्रहकी समस्त सूक्तियोंको विषयके अनुसार अकारादि क्रमसे व्यवस्थित कर दिया गया है। उदाहरणार्थ उपर्युक्त ११ सूक्तियोंका अकारादि क्रमसे 'ज्ञानगंगा' की विभिन्न तरङ्गोंके अन्तर्गत क्रमशः इन विषय शीर्षकोंमें संकलित किया गया है:—

१ कवि, २ पाप ३ अतिशयोक्ति, ४ धर्मशास्त्र ५ चरित्र ६ पुस्तक ७ मित्र ८ मार्ग ९ आशा १० स्वार्थ और ११ अनुभव।

उक्त विषयोंपर अन्य जितनी सूक्तियाँ मिली हैं सब विषयवार इन्हीं शीर्षकोंके अन्तर्गत दे दी गई हैं। फिर भी विभाजनमें विषयकी दृष्टिसे पुनरावृत्ति हुई है क्योंकि एक ही विषयसे सम्बन्धित सूक्ति उस सूक्तिमें प्रयुक्त प्रमुख शब्दके आदि अक्षरके अनुसार अन्य तरङ्गमें सम्मिलित करनी पड़ी है।

ऊपर जिन ११ सूक्तियोंको उद्धृत किया गया है उनपर दृष्टि डालनेसे मालूम होगा कि प्रायः सूक्तियाँ मूलमें या मूलके अन्य अनुवादसे अनूदित हैं। इन प्रकारकी सूक्तियोंका अनुवाद बहुत कठिन होता है क्योंकि मूल सूक्ति अपनी भाषा और शब्दोंकी रचनामें इतनी चुस्त सधी और मुहावरेदार होती है कि इन्हीं गुणोंके कारण उनका प्रभाव टिकाऊ बनता है। भाषा और मुहावरेकी इस शक्तिको अनुवादमें लानेके लिए अनुवादकको कभी-कभी एक-एक शब्दके पीछे घंटों मगज मारना पड़ता है और फिर भी ऐसा होता है कि पूरा प्रयत्न करनेपर भी [illegible] नहीं निकलती अथवा लेखक

का मन नहीं भरता। 'ज्ञानगंगा' के संकलनकी यह खूबी है कि जो भाव मूलप्रणेताने अनुवादकी भाषाको रवानी दी है और मुहावरेकी शक्तिको कायम रखनेकी कोशिश की है। उदाहरणके लिए, शेक्सपियरकी उपयुक्त प्रसिद्ध सूक्ति 'Even the Devil can quote scriptures' का अनुवाद इससे अच्छा और क्या हो सकता था? "अपना उल्लू सीधा करनेके लिए शैतान भी धर्मशास्त्रके हवाले दे सकता है।" माना कि अनुवादमें मूलकी सूक्ष्मता (aphorism) और करारापन (crispness) नहीं है पर उसका प्राण और मुहावरा जरूर है। इसी प्रकार बाइबिल सिद्धान्तकी उक्ति अतिशयोक्ति पर सत्य है या बौखलाई हुई हालतमें हैं' में अनुवादके लिए 'बौखलाई हुई हालत' की शब्दयोजना सुन्दर और सशक्त है। अतिशयोक्तिका यह सहज विभाजन अन्य प्रकारसे कठिन था। लेखकने कहीं-कहीं धर्मशास्त्रके गूढ़ और परम्परागत शब्दोंका अनुवाद उर्दू फारसी अथवा 'हिन्दुस्तानी' के अनेक ऐसे शब्दोंसे किया है कि पढ़नेपर अटपटा लगता है पर वैसे बिजली-सी कौंध जाती है और गूढ़ अर्थ उजागर हो जाता है।

इन सूक्तियोंको पढ़ते हुए पाठकको अवश्य सोचना होगा कि जिस सूक्तिके अनुवादके पीछे इतना श्रम और चिन्तन है उस मूल सूक्तिके जन्मके पीछे जन्मदाताके जीवनका कितना विशाल अनुभव और मनन छिपा हुआ है। सूक्तिकार द्रष्टा मनीषी, साधक और कवि सब कुछ एक साथ है और शायद फिर भी वह कहीं कहीं निपट निरक्षर भी हो सकता है। पाठककी जिम्मेदारी है कि वह प्रत्येक सूक्ति और सुभाषितका ध्यानसे पढ़े अर्थपर विचार करे और अर्थके पीछे वक्ताका जो ज्ञान अनुभव तथा साधना है उसको उसके अंतरात्मामें आत्मसात् करनेका प्रयत्न करे। युधिष्ठिरने गुरुकी एक सूक्ति एक शिक्षा 'सत्यं वद' को ही सीखनेमें सारा जीवन लगा दिया था किन्तु फिर भी महाभारतमें अश्वत्थामाके प्रसंगमें 'नरो वा कुंजरो वा' के असत्य वाक्यमें फँस ही गये थे। इसलिए, समूची पुस्तकको कहानी या लेखकी तरह एक बारमें ही समाप्त करना 'ज्ञानगंगा'

के साथ और स्वयं अपने साथ न्याय करना होगा। महाश्रमण भगवान महावीरने आपको सावधान कर दिया है—'देखिए'!

ज्ञानपीठकी इस लोकोदय ग्रन्थमालाका मुख्य उद्देश्य इस प्रकारके सांस्कृतिक ग्रन्थोंका प्रकाशन है जो लोकजीवनको चेतना और गति दें जो साहित्यके शाश्वत और सजीव रूपका प्रतिनिधित्व कर सकें। 'ज्ञानगंगा' इसी साहित्य-शृंखलाकी एक कड़ी है।

आशा है 'ज्ञानगंगा' की अक्षय धार पाठकोंके मनको पावन और हृदयको शीतल करेगी।

> भावे प्रयाति विकृतिं विरसो न वा स्यात्
> न क्षीयते बहुजनैर्नितरां निपीतः।
> जाड्यं निहन्ति रुचिमेति करोति तृप्तिं
> नूनं सुभाषितरसोऽन्यरसातिशायी॥

डालमियानगर
(वसन्तपंचमी)
११-२-५१

—लक्ष्मीचन्द्र जैन
सम्पादक

दो शब्द

कायनातकी फ़ानी सम्पदा और इन्द्रियोंके क्षणिक भोग मिलना आसान है मगर अपने शाश्वत सच्चिदानन्द स्वरूपको पा लेना बड़ा मुश्किल है। सारी कलाएँ व्यर्थ हैं तमाम ज्ञान-विज्ञान फ़िज़ूल हैं, अगर वे इन्सान को आत्म-दर्शनकी ओर नहीं ले जाते।

आत्म-ज्ञान होता है निर्मल अन्तःकरणवालोंको। गुस्सा, घमंड छल फ़रेब मक्कारी-मक्कारी, लोभ-लालच मद-मोह राग-द्वेष माया-तृष्णा ममता-वासना रंज-फ़िकर वगैरह गन्दगियोंसे जिसका चित्त कलुषित हुआ है उसपर क्या ख़ाक हक़ीक़त रोशन होगी!

जिन दिव्य हस्तियोंने अपने आत्माओंसे कर्म-मल धो डाला है उन्हीं की अमृत-वाणी इस दुनियाके सन्तप्त जीवोंको शान्ति देनेके लिए 'ज्ञान गंगा' बनकर उनके आँगनमें बह निकली है।

तकदीरवाले! इस ज्ञान-गंगामें तैरता चल, यह तुझे दुःखी दुनियासे दूर अनन्त सुखके दिव्य लोकमें पहुँचा देगी।

—नारायणप्रसाद जैन

देखिए !

इस 'ज्ञान-गंगा' में पैठिए तो धीरे-धीरे नाव पकड़ बैठे तो कुछ हाथ न लगेगा। गोमुख-गंगासागरकी तो साधना तक नहीं। इस गंगामें पूरब पश्चिम दोनों ओरसे पल-पलपर आकर नई-नई विचार-धाराएँ मिली हैं; और हर धार कहती है : 'मुझे देखिए, मेरा पानी चखिए; बन सके तो मुझमें नहाइए'। धार तो यह कहती है पर मैं कहता हूँ—'नहाइए और इसके हो जाइए'। हो सकता है किसी धारमें नहाकर आप अपने आपको इतना महसूस करने लगें कि आपको लगने लगे आपके पाँव ज़मीनसे उठे जा रहे हैं।

यह ऐसी गंगा है कि साथ चल सकती है! बूँदमें समा सकती है! जिस देशमें गागरमें सागर रह सकता हो वहाँ गंगा गागरमें क्यों न समा सके!

इस सुभीतेसे जिस विचार-धारमें आप नहाना चाहें नहा सकते हैं। इस सिलसिला, संग्रह करनेवाले श्री नारायणप्रसाद जैनने, बहुत बड़े कामकी चीज़ बना दिया है।

इसे कोई अलमारी भी शरीर पर घरमें रख ले तो टाकेमें नहीं रह सकता। कभी न कभी किसीके काम आ ही जायेगी, क्योंकि यह सदा बहनेवाली दरिया है। गंगाजलकी तरह इसका पानी-चल हमेशा जैसाका तैसा बना रहता है; उपयोगितामें रत्ती भर कमी नहीं आती।

यह तो विचारोंका खज़ाना है; कभी न घटनेवाला खज़ाना है; सबके कामका खज़ाना है। क्या विद्यार्थी क्या पुजारी, क्या राजनेता क्या मिस्त्री, क्या वणिक क्या कारीगर—अर्थात् कामका खज़ाना है। ऊपरसे पढ़ने लगें तो हरज नहीं, कहींसे पढ़ना शुरू करो तो हरज नहीं। समझमें आ जाय तो मज़ा ही मज़ा।

इस किताबमें आप सन्तोंसे मिलिए; महात्माओंसे मिलिए; राज-नेताओंसे मिलिए; बहादुर सूरमाओंसे मिलिए; नंगे फकीरोंसे मिलिए; कवियोंसे मिलिए; और फिर चाहे नर-नारायणोंसे मिलिए, और पूजाके योग्य देवियों और नारियोंसे मिलिए।

जरूरत तो इसकी बहुत दिनोंसे थी; अब आई अभी सही।

यह ठीक है कि यह आपकी पूरी भूख न मिटा सकेगी; पर ज्ञानकी भूख मिटाना ठीक भी नहीं। और फिर ज्ञानकी भूख मिटा भी कौन सकता है!

५८, हनुमान रोड,
नई दिल्ली

—भगवानदीन

विषय-सूची

विषय-सूची

ज्ञानगगा

•

ज्ञानगंगा

अकर्मण्यता

नाचीज़ बननेका उपाय कुछ नहीं करना है। —हस

प्रकृति अपनी उन्नति और विकासमें रुकना नहीं जानती और हर अकर्मण्यता पर वह अपने शापकी छाप लगाती जाती है। —गेटे

अंकुश

दूसरोंका कसा अंकुश गिरानेवाला है और अपना लगाया उठाने वाला है। —गांधी

अकेला

अकेला ही जीवन व्यतीत कर और किसी पर भरोसा न कर—मेरा इतना ही कहना काफ़ी है। —एक कवि

गरुड़ अकेले उड़ते हैं, भेड़ें ही हैं जो हमेशा भीड़ लगाती हैं। —सर फ़िलिप सिडनी

जिस ईश्वरने संसारमें अकेला बनाया है, धन-वैभव नहीं दिया है, सुखमें मस्त होने वाला और दुःखमें मन लगाकर रोनेवाला साथी नहीं दिया है, संसारके लोगोंमें जिसे उसने 'दुखिया' बनाया है, उसके भाग्यमें उसने एक महान् अभिप्राय भर दिया है। —रामकृष्ण परमहंस

एक साधुसे किसीने पूछा कि तू अकेला क्यों बैठा है? जवाब दिया कि पहले तो अकेला न था, मालिकके ध्यानमें साथ था, अब तूने आकर अकेला कर दिया। —अज्ञात

जगत्में विचरण करते-करते अपने अनुरूप यदि कोई सत्पुरुष न मिले तो दृढ़ताके साथ अकेला ही विचरे, मूढ़के साथ मित्रता अच्छी नहीं। —बुद्ध

जिसे अकेले भी अपने निर्दिष्ट पथ पर चलनेकी हिम्मत है वही सच्चा बहादुर है। निर्दिष्ट पथपर अकेला अन्त तक वही जा सकता है जिसका पथ सत्पथ है और जिसे सत्पथ ही प्रिय है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

अक़्ल

उसी की अक़्ल ठीक या क़ायम रह सकती है जिसकी इन्द्रियाँ उसके क़ाबू में है। —गीता

अक़्लमन्द

अक़्लमन्द आदमी बोलनेसे पहले सोचता है, बेवक़ूफ़ बोल देता है और तब सोचता है कि वह क्या कह गया। —फ्रेंच कहावत

जैसे सुनार चाँदीके मैलको दूर करता है उसी तरह अक़्लमन्दको चाहिए कि अपने पापोंको हर वक़्त थोड़ा-थोड़ा दूर करता रहे। —बुद्ध

अक़्लमन्दको इशारा और बेवक़ूफ़को तमाचा। —हिन्द॰ कहावत

अख़बार

मानसिक अनुशासनकी दृष्टिसे अख़बार पढ़ना हानिकर है। मनके लिए इस मिनटमें चालीस बातें सोचनेसे बदतर क्या हो सकता है? —मेंकर

धन्य भाग्य हैं उनके, जो अख़बार नहीं पढ़ते, क्योंकि वे प्रकृति को देखेंगे और प्रकृतिके ज़रिये परमात्माको। —स्वामी रामतीर्थ

मैं अख़बार यह जाननेके लिए पढ़ता हूँ कि ईश्वर दुनियापर किस तरह हुकूमत करता है। —जॉन न्यूटन

अगर तूने किसीपर अत्याचार किया हो तो उसके क्रोधसे बच, क्योंकि जो आदमी काँटे बोता है वह अंगूर नहीं काटा करता।

—अज्ञात

अत्याचारी

जिसने किसी ऐसे आदमीपर अत्याचार किया है जिसका ईश्वरके सिवा कोई और सहायक ही नहीं है तो उसे चाहिए कि सचेत रहे और अपने अत्याचारका फल शीघ्र न पानेसे भ्रममें न पड़ जाय।

—इस्माईल-इब्न-अबूबकर

कोई अत्याचारी ऐसा नहीं है कि उसे भी किसी अत्याचारीसे पाला न पड़े। —अज्ञात

गुलामोंकी अपेक्षा अत्याचार करनेवालोंकी स्थिति अधिक खराब होती है। —गाँधी

अत्याचारीसे अधिक अभागा कोई नहीं है। विपत्तिके दिन उसका कोई साथ नहीं देता। —अज्ञात

अत्याचारी जब चुम्बन लेने लगे, वह समय चौकस होनेका है।

—शेक्सपियर

अत्युक्ति

अत्युक्ति झूठकी सगी रिश्तेदार है और लगभग उतनी ही दोषी।

—बेकन

अति

किसी भी बातका अतिरेक न होने देनेके प्रति बड़ी खबरदारी रखनी पड़ती है। —विवेकानन्द

अति प्रेम

प्रिय वस्तुसे भी मोहवश अत्यधिक प्रेम करनेसे मन थक जाता है और दुनियामें बदनामी होती है। —रामायण

अतिथि

निकम्मे बहुभोजी, लोकद्वेषी अति मायाचारी बदनाम देश कालको न जाननेवाले और बुरे वेष वालेको घरमें न ठहराये। —विदुर

अतिथि जब तक मेरे घरमें रहता है तब तक मैं निस्सन्देह उसका दास हूँ। इसके अलावा किसी और अवसरपर मेरी टेक दासत्वकी नहीं है। —अस मुहम्मदशा-उल-हिन्दी

अतिथिको अन्न दो। —श्री महा चैतन्य

अतिथि जिसका अन्न खाते हैं उसके पाप धुल जाते हैं। —अथर्ववेद

अतिथि-सत्कार

अतिथि-सत्कारसे इंकार करना हा सबसे ज्यादा शर्मिन्दगीकी बात है। —तिरुवल्लुवर

अति भोजन

अति खाना और मसान जाना। —मराठी कहावत

जब साधक अधिक माल खाता है तब देवता रोने लगते हैं। —अज्ञात

अतिशयोक्ति

अतिशयोक्ति भी असत्य है। —गांधी

जो अपनी बातको बढ़ा-चढ़ाकर कहते हैं वे अपने आपको छोटा बनाते हैं। —सिमन्स

अतिशयोक्ति वह सत्य है जो कि बौखलाई हुई हालत में है। —खलील जिब्रान

अतीत

अतीतकी चिन्ता मत करो, उसे भूल जाओ, बीती हुई बातमें चिन्तासे सुधार नहीं हो सकता। —जेम्स डगलस

हो सकता है तुम्हारा मोती एक और छोटेका हस्तहार बन रहा हो। —प्रसाद

अध्यात्म

सर्वोत्तम अध्यात्म दिव्य ज्ञानकी अपेक्षा दिव्य जीवन है।
—जैरमी टेलर

अर्ध-सत्य

वह झूठ जो अर्धसत्य है हमेशा सबसे काला झूठ है। —टैनीसन

अधिकार

ईश्वरनिर्मित हवा-पानीकी तरह सब चीजोंपर सबका समान अधिकार रहना चाहिए। —गांधी

ज्ञानियोंका अज्ञानियोंपर एक हक है, वह है उन्हें सिखानेका अधिकार। —एमर्सन

अधिकार दिखानेसे ही अधिकार सिद्ध नहीं हो जाता। —टैगोर

अधिकार बहुत बुरी चीज है। —गांधी

कोई शख्स जिसे अधिकार दे दिया गया है अगर वह सत्य-प्रेम और सेवा भावसे सरशार नहीं है उसका दुरुपयोग ही करेगा, चाहे वह राजकुमार हो या जनतामेंसे कोई। —क्रोम्वेल

अधोगति

विषय चिन्तनसे आसक्ति, आसक्तिसे कामना, कामनासे क्रोध, क्रोधसे मोह, मोहसे स्मृति भ्रम, स्मृतिभ्रमसे बुद्धिनाश और बुद्धिनाशसे अधोगति पैदा होती है। —गीता

अनजान

अनजान होना इतना शर्मकी बात नहीं, जितना सीखनेके लिए तैयार न होना। —फ्रैंकलिन

पूर्ण शान्तिका मुझे कोई रास्ता नहीं दिखाई देता सिवाय इसके कि आदमी अपने अन्तरकी आवाज़पर चले। —एमर्सन

अन्तरात्मा हमको न्यायाधीशकी तरह सज़ा देनेके पहिले मित्रकी तरह चेतावनी देती है। —अज्ञात

मनुष्य अपने अन्तरका अनुसरण करता है इसका पता उसकी नज़रें दे देती हैं। —रामकृष्ण परमहंस

अनर्थ

यौवन धन-सम्पत्ति प्रभुत्व और अविवेक—इनमेंसे प्रत्येक अनर्थ करनेके लिए काफ़ी है। जहाँ चारों हों वहाँ क्या होगा? —विदुर

अन्धश्रद्धा

अन्धश्रद्धाके क्या माने? 'एक ईश्वर नाम' इस श्रद्धाका नाम अन्धश्रद्धा है। —विनोबा

अन्धश्रद्धा अज्ञान है। —समर्थ गुरु रामदास

अन्न

जहाँतक हो सके विषयी व्यक्ति पुरुषोंके अन्नसे तो बचना ही चाहिए। —अज्ञात

दुर्जनका अन्न खानेपर बुरी बुद्धि ज़रूर पैदा होगी।

—श्री ब्रह्मचैतन्य

अन्तर्युद्ध

जब आदमीमें अन्तर्युद्ध शुरू हो जाता है तब उसकी कुछ क़ीमत हो जाती है। —ब्राउनिंग

अनादर

अति परिचयसे मनुष्यकी अवज्ञा होने लगती है बार-बार जानेसे अनादर होता है। —अज्ञात

अनासक्ति

आत्मा अनासक्त यानी वैराग और निःस्वार्थ काम करते हुए ही ईश्वरको पा सकता है। इसीमें सबका भला (लोक संग्रह) है।

—गीता

हजार वर्ष तक बिना नागा नमाज़ पढ़ने और रोज़ा रखनेके बजाय एक क्षणके बराबर संसारके प्रति सच्ची अनासक्ति कहीं अधिक उत्तम है। —हुसेन बसरी

यदि हम अपने धर्मके सिद्धान्तको मानते हैं और सचमुच उसपर दृढ़ रहते हैं तो अनासक्ति अपने आप आ जाती है। —प्रसाद

अनासक्तिकी कसौटी यह है कि फिर उस वस्तुके अभावमें हम कष्टका अनुभव न करें। —हरिभाऊ उपाध्याय

अनासक्त कार्य शक्तिप्रद है, क्योंकि अनासक्त कर्म भगवान्‌की भक्ति है। —गांधी

अनासक्तिके मानी हैं अपने और अपनोंके प्रति अनासक्ति और सत्यके प्रति तन्मय आसक्ति। —गांधी

मोक्षके प्रति भी अनासक्ति, यह फल-त्यागका अन्तिम और सर्वोत्तम रूप है। —विनोबा

कामनाओं और इन्द्रिय विषयोंसे मन हटाकर कार्य करना ही अनासक्ति है। —अरविन्द घोष

अनित्य

यह बड़ा-सा सूरज यह तारे और यह चाँद सब खूबसूरत हैं। पर इन सबके घेरेमें न पड़ और हमेशा यही कहता रह कि मैं नाशवान् चीज़ोंको नहीं चाहता। —हमसरी

अनियमितता

कामकी अधिकता नहीं, अनियमितता आदमीको मार डालती है।
—गांधी

अनुकरण

जहाँ अनुकरण है, वहाँ प्रथाकी दिखावट होगी, जहाँ प्रथाकी दिखावट है वहाँ मूढ़ता होगी। —जॉन्सन

नकल करके कोई आज तक महान् नहीं बना। —जॉन्सन

अनुग्रह

जिनका हम आदर करते हैं उनके किसी अनुग्रहमें रहना एक प्रकारका रुचिर दासत्व है। —रानी क्रिश्चिना

अनुग्रह स्वीकार करना अपनी स्वतंत्रता खोना है। —शेवर

जिस पर मैं अनुग्रह करना चाहता हूँ उसकी सम्पत्तिको हर लेता हूँ। —भगवान् श्रीकृष्ण

अनुपस्थित

अनुपस्थितकी कोई बुराई न करे। —प्रॉपर्टिस

अनुभव

अनुभव हमें वही सीखने बनाता है जिनकी कि हमें आत्म-शिक्षणके लिए जरूरत होती है। —प्रकाश

"उसका मैं" इस अनुभवमें अहंकार नहीं है परन्तु परोक्षता है, 'मेरा मैं' इस अनुभवमें परोक्षता नहीं है परन्तु अहंकार है, 'तेरा मैं' इस अनुभवमें परोक्षता भी नहीं है अहंकार भी नहीं है। —विनोबा

मेरे पास एक दीपक है जो मुझे मार्ग दिखाता है और वह है मेरा अनुभव। —पैट्रिक हेनरी

आत्मानुभवके प्रेमसागरमें गर्क होनेवाला अपना अनुभव कहनेको फिर भी बाहर नहीं निकलता। —स्वामी रामतीर्थ

बिना अनुभव कोरा शाब्दिक ज्ञान अन्धा है। —विवेकानन्द

औषधि किये बिना उसका नाम लेने मात्रसे रोग नहीं चला जाता, प्रत्यक्ष अनुभव किये बिना ब्रह्मका शब्दोच्चारण करने भरसे मोक्ष नहीं मिल जाता। —अज्ञात

शब्दोंका भय नहीं अनुभव देखना चाहिए। —रवीन्द्रनाथ

दर्शन विश्वास है परन्तु अनुभव परम सत्य है। —कहावत

जो 'कृष्ण कृष्ण' कहता है वह उसका पुजारी नहीं, 'रोटी-रोटी' कहनेसे पेट नहीं भरता खानेसे ही भरता है। —गांधी

स्वानुभवमें सगुण निर्गुणका भेद नहीं है। —विनोबा

अनुवाद

किसी किताबमें जो कुछ सचमुच सर्वोत्तम है अनुवादके योग्य है।
—एमर्सन

अनुसरण

जब तक हमारा अनुसरण करते रहोगे कभी मुक्त न होगे।
—भगवान् महावीर

बड़े जो करते हैं कनिष्ठ लोग उसीका पदानुसरण करते हैं। —गीता

लोकानुवर्तन और देहानुवर्तन और शास्त्रानुवर्तन छोड़ और स्वरूप पर पड़े हुए अध्यासको दूर कर। —विवेकचूडामणि

अनुकूलता

हर आदमीको एक ही काम माफिक आयेगा। —फारसी कहावत

सब अनुकूल हो तब तो सभी लोग अपनेको भला कहलानेका आचरण करते हैं।

अपने पास सब अनुकूल होनेपर ही काम करना, यह कुछ किया नहीं कहलाता। चाहे जिस लकड़ीके टुकड़ेसे बढ़ई आकृति बनाता है

अपमान

अपमान भरी जिन्दगीसे मौत अच्छी है। —अज्ञात

अपमानका मामला कुछ भी रहा हो उसे हमेशा नजर-अन्दाज ही करना सबसे अच्छा है क्योंकि मूर्खतापर क्या अफ़सोस करना और दुष्टोंकी सज़ा उपेक्षा है। —जान्सन

अगर कोई हमारा अपमान करता है तो इसमें हमारा क्या कसूर है? उसने हमारा क्या किया? या क्या बिगाड़ा? अपनी अधम संस्कृतिका परिचय अलबत्ते दिया। —हरिभाऊ उपाध्याय

अपराध

दरिद्रता, रोग, दुःख, बन्धन और विपत्ति ये सब मनुष्यके अपराध-रूपी वृक्षके फल होते हैं। —अज्ञात

दूसरोंके प्रति किये गये छोटे अपराध, अपने प्रति किये गये बड़े अपराध हैं। —अज्ञात

जुर्मको कबूल कर लेनेसे आधा माफ़ हो जाता है।

—पुर्तगाली कहावत

अर्पण

संसार साधन और सिद्धि दोनोंको भक्त देवके सुपुर्द कर देता है।

—विनोबा

अप्रमाद

कलका काम आज ही कर लेना और शामका काम सुबह ही कर लेना, क्योंकि मौत यह देखनेके लिए नहीं रुकी रहेगी कि इस आदमीने अपना काम पूरा कर लिया या नहीं। —महाभारत

पहले जो प्रमादमें था और अब प्रमादसे निकल गया, वह इस दुनियाको बादलोंसे निकले हुए चाँदकी तरह रोशन करता है। —बुद्ध

अपशब्द

अपशब्दोंसे क्रोध उत्पन्न होता है। क्रोधसे घूँसेबाजी तक नौबत पहुँचती है, और घूँसोंसे मित्र मित्र और शत्रु हो जाते हैं। —अज्ञात

अप्राप्त

जो हमारे पास नहीं है उसके पानेकी हम अभिलाषा रखते हैं और जो हमारे पास है, उससे खुशी मिलनी बन्द हो जाती है। —मानटेन

अपरिग्रह

आदर्श आत्यन्तिक अपरिग्रह तो उसीका होगा जो मनसे और कर्मसे दिगम्बर है। मतलब वह पक्षीकी भाँति बिना घरके, बिना कपड़ोंके और बिना अन्नके विचरण करेगा। इस अवधूत अवस्थाको तो बिरले ही पहुँच सकते हैं। —गांधी

अपरिग्रहकी ऊँची शान पर भी चढ़ना चाहिए, क्योंकि बराबर ज्ञानका परिग्रह रखना योग्य नहीं है। —विनोबा

अपरिग्रहसे मतलब यह है कि हम उस किसी चीज़का संग्रह न करें जिसकी हमें आज दरकार नहीं है। —गांधी

परिग्रहकी चिन्तासे अन्तरात्माका अपमान होता है, परिग्रहकी चिन्ता न करनेसे विश्वात्माका अपमान होता है, इसीलिए अपरिग्रह सुरक्षित है। —विनोबा

उसका दुःख दूर हो गया जिसे मोह नहीं है उसका मोह मिट गया जिसे तृष्णा नहीं है उसकी तृष्णा नष्ट हो गई जिसे लोभ नहीं है उसका लोभ खत्म हो गया जो अकिंचन है। —भगवान् महावीर

अपूर्णता

अपूर्णता ही है जो अपूर्ण चीज़की शिकायत करती है। हम जितने ज्यादा पूर्ण होते हैं उतने ही ज्यादा हम दूसरोंके दोषोंके प्रति मृदु और शान्त हो जाते हैं। —फेनेलन

अभ्यास

अभ्यास और वैराग्य ये एक ही वस्तुके विधायक और निषेधक अंग हैं। —प्रसाद

बिना अभ्यासके सब सूखका सूखा है सबका सब फीका है।
—सन्त नन्ददास

अभिमान

अभिमान मोहका मूल है—बड़ा शूलप्रद। —रामायण

किसीका भी अभिमान रह न सका। —गांधी

प्रभु और जीवके बीचमें अभिमानके समान अन्तराय दूसरा नहीं है। —प्रसाद

'मुझे अभिमान नहीं है' ऐसा भासित होना इस सरीखा भयानक अभिमान नहीं है। —विनोबा

'मैं जानता हूँ' ऐसी अभिमान-वृत्ति ही ज्ञानामृत-भोजनकी मक्खी है। वह मक्खी जिसने खा ली उसे ज्ञानभोजन मधुर कैसे लगेगा?
—समर्थ गुरु रामदास

अभिमान छोड़नेसे मनुष्य प्रिय होता है। —महाभारत

अभिलाषा

जो चाहें उन्हें अपनी अभिलाषाओंकी कुम्हलाती दुनियामें जीने दे। मेरा हृदय तो तेरे मिलनोंको चाहता है मेरे प्रभु। —टैगोर

किसी कामके श्रेय पानेकी अभिलाषाके मानी हैं अपने व्यक्तित्वको मान्य करानेकी इच्छा ही नहीं बल्कि उसमें रस भी। —प्रसाद

अमंगल

बदनसीबीकी आशंका करनेसे ज्यादा मनहूस और बदसगुना चीज कोई नहीं। आनेके पहले ही अमंगलकी आस लगाना कैसा दीवानापन है! —सेनेका

अगर तुम किसीको यह इत्मीनान दिलाना चाहते हो कि वह गलती पर है तो सच्चाईसे करके दिखलाओ। आदमी देखी हुई चीज़पर विश्वास करते हैं उन्हें देखने दो।
—थोरो

किसी निश्चय पर पहुँचना ही विचारका उद्देश्य है; और जब किसी बातका निश्चय हो गया तो उसको कार्यमें परिणत करने में देर करना भूल है।
—विवरलुबर

मोहम्मद साहबकी तलवारकी मूँठपर ये वचन खुदे हुए थे—तेरे साथ अन्याय करे उसे क्षमा कर दे, जो तुझे अपनेसे अलहदा अलग कर दे उससे मेल कर जो तेरे साथ बुराई करे उसके साथ तू भलाई कर और सदा सच्ची बात कह, चाहे वह तेरे ही खिलाफ़ क्यों न जाती हो।

यदि 'मौमिन' होना चाहता है तो अपने पड़ोसियोंका भला कर और यदि 'मुस्लिम' होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिए अच्छा समझता है वही मनुष्य मात्रके लिए अच्छा समझ और बहुत मत हँस, क्योंकि निस्सन्देह अधिक हँसनेसे दिल सख्त हो जाता है। —मसनद

शास्त्रज्ञान होनेपर भी लोग मूर्ख बने रहते हैं। विद्वान् तो वह है जो क्रियावान् है।
—मसनद

मैं कोई चीज़ नहीं हूँ, सिवाय खुदाके भेजे हुए एक मनुष्यके। न मेरे पास अल्लाहके ख़ज़ाने हैं, न मैं छिपा इल्म रखता हूँ न मैं फ़रिश्ता हूँ मैं केवल उसपर चलता हूँ जो अल्लाहने मेरे मनमें डाल दिया है।
—हज़रत मुहम्मद

पर उपदेश-कुशल बहुत हैं। स्वयं आचरण करनेवाले पुरुष अधिक नहीं हैं।
—रामायण

ईश्वर कहता है कि चाहे मुझे छोड़ दे, पर मेरे बन्दे पर चढ़े।
—तालमुद

दर्शनशास्त्रके एक ग्रन्थ लिखना आसान है, एक सिद्धान्तको अमलमें लाना मुश्किल।
—टॉलस्टॉय

अनियमित शरीरसे अनियमित अमीरी ज्यादा खतरनाक है।

—गीबर

अमृत

संसाररूपी कटुवृक्षके दो फल अमृत सरीखे होते हैं—एक तो मीठा सुभाषित और दूसरा साधु पुरुषोंकी संगति। —अज्ञात

अरण्यवास

अरण्यवास अंपकी जीवनका दूसरा नाम है। —स्वामी रामतीर्थ

अल्पभाषी

अल्पभाषी सर्वोत्तम मनुष्य हैं। —शेक्सपियर

अल्पाहार

कम खाना और कम बोलना कभी नुकसान नहीं करते। —अज्ञात

बड़ी उम्र चाहते हो तो खाना कम खाओ। —बेंजामिन फ्रैंकलिन

अल्पज्ञ

अगर कोई अल्पज्ञ कोई बुरा काम करे तो उचित है कि तू उसे क्षमा कर दे और उसे बुरा-भला न कहे। —अबुल-फ़तह-बुस्ती

अलबेली

जिसके चित्तको अलबेलीका स्वभाव नहीं घेरते वह तीनों लोक जीतता है। —इब्न उल-वर्दी

अवकाश

अगर तुमको एक क्षणका भी अवकाश मिले, तो तू उसे शुभ कार्यमें लगा; क्योंकि कालचक्र अत्यन्त क्रूर और उपद्रवी है।

—अयास-बिन-इब्न-दसे

अवगुण

अवगुण नावकी पेंदीके छेदके समान है जो छोटा हो या बड़ा, एक दिन उसे डुबा देगा। —कालिदास

जो अवसरोंका उपयोग करना जानते हैं वे देखेंगे कि वे उन्हें पैदा भी कर सकते हैं। —जॉन स्टुअर्ट मिल

हर अवसरको महान् अवसर बना दो, क्योंकि तुम नहीं कह सकते कि कब कौन उच्चतर स्थानके लिए तुम्हारी नाप ले रहा हो। —अज्ञात

हमेशा वक्तको देखकर काम करना—यह एक ऐसी डोरी है जो सौभाग्यको मज़बूतीके साथ तुमसे बाँध देगी। —तिरुवल्लुवर

अविचार

बिना विचारे उतावलीमें कोई काम कभी न करना चाहिए। अविचार सब आपत्तियोंका मूल है। विचारपूर्वक कार्य करनेवालेकी मनोवांछित कामनाएँ स्वयं पूर्ण हो जाती हैं। —भारवि

अविनय

अविनय मनुष्यको शोभा नहीं देता चाहे उसका इस्तेमाल अजनबी और विपक्षीके प्रति ही क्यों न हो। —तिरुवल्लुवर

जिस तरह बुढ़ापा सुन्दरताका नाश कर देता है उसी तरह अविनय लक्ष्मीका नाश कर देती है। —अज्ञात

अविद्या

अविद्या क्या है? आत्माकी स्फूर्ति न होना। —शंकराचार्य

अविश्वास

अविश्वास धीमी आत्महत्या है। —एमर्सन

अशान्ति

एकताके अभावमें जो अशान्ति रहती है वह हमें ऊर्ध्वगामी बनाती है; दूसरेकी विभूतिकी ईर्ष्यासे जो अशान्ति रहती है, वह अधोगामी। —अज्ञात

असन्तोष

जिसे सन्तोष नहीं है उसे बुद्धि नहीं है। —अज्ञात

असफल

असावधान सफल नहीं हो सकता, घमंडी अपने उद्देश्यको पूरा नहीं कर सकता। —सम्राट उद्दीन सफ़ी

असफलता

असफलतासे वही बचता है जो कोई प्रयत्न ही नहीं करता।
—मेरवी

अनिश्चितता और विलम्ब नाकामयाबीके वालिदैन हैं। —केनिंग

आदमीको सिर्फ एक असफलतासे डरना है—उस काममें डटे रहनेमें असफलता जिसे वह सर्वोत्तम समझता है। —ईलियट

असम्भव

'असम्भव' शब्द केवल मूर्खोंके कोशमें मिलता है। —नैपोलियन

अगर ठीक मौकेपर साधनोंका ख्याल रखकर काम शुरू करो और समुचित साधनोंको उपयोगमें लाओ तो ऐसी कौन-सी बात है जो असम्भव हो? —तिरुवल्लुवर

कौवेमें पवित्रता, जुआरीमें सत्य, सर्पमें सहनशीलता, स्त्रीमें काम-शान्ति, नामर्दमें धीरज, शराबीमें तत्त्वचिन्ता और राजामें मैत्री किसने देखी या सुनी है? —पंचतंत्र

सम्भव असम्भवसे पूछता है, 'तुम्हारा निवास-स्थान कहाँ है?' जवाब आता है, 'नामर्दके सपनोंमें'। —टैगोर

असमर्थ

बुद्धिमान् कार्योंके सामने असमर्थ और असफल सिद्ध होना धर्म-मार्गसे पतित हो जानेके समान है। —तिरुवल्लुवर

असंयमी

असंयमी धर्म अधर्मको नहीं जानता। —अज्ञात

असंयम

जिसकी इन्द्रियाँ वशमें नहीं, वह एक ऐसा मकान है जिसकी दीवारें गिर चुकी हैं। —सुलेमान

अहंकार

जब तू खुदी (अहंकार) को बिलकुल छोड़ देगा, खुदाके पास आत्मसाक्षात्कार हो जायगा। —शम्सतबरी

शून्यवत् होना यानी 'मैं करता हूँ' यह वृत्ति छोड़ना। —गांधी

"मैं" और 'मेरे' के जो भाव हैं वे घमण्ड और दुर्गुणोंके अलावा और कुछ नहीं हैं। —तिरुवल्लुवर

वह अहंभाव, अहंकार नहीं है जो आत्माको ज्ञान करावे। वह नम्रता नहीं है जो आत्माको हीन बनावे। —रामकृष्ण परमहंस

अहंकार छोड़े बगैर सच्चा प्रेम नहीं किया जा सकता।—विवेकानन्द

जिस महफ़िलमें सूरज एक कणके समान माना जाता है। वहाँ अपनेको बड़ा समझना बेवकूफ़ी है। —हाफ़िज़

अगर तुम्हारा अहंकार चला गया है तो किसी भी धर्म-पुस्तककी एक पंक्ति भी न बाँचो और न किसी भी मन्दिरमें पैर रक्खो और तुम जहाँ बैठे हो वहीं मोक्ष प्राप्त हो जायेगा। —विवेकानन्द

इस संसारके अहंकारियोंसे कह दो कि अपनी मूँछोंको कम कर दें। हाथी और काम यहाँ समान हैं। —हाफ़िज़

अहंकारको लगता है कि 'मैं न हुआ तो दुनिया कैसे चलेगी'! वस्तु-स्थिति यह है कि मैं ही क्या हजार बार भी न हुआ तो भी दुनिया चलती रहती दीखती है। —[illegible]

जो यह कल्पना करता है कि वह दुनियाके बगैर अपना काम चला लेगा अपनेको धोखा देता है; लेकिन जो यह कल्पना करता है कि दुनियाका काम उसके बगैर नहीं चल सकता और भी बड़े धोखेमें है। —रोशी

सुख बाहरसे मिलनेकी चीज़ नहीं, हमारे ही अन्दर है; मगर अहंकार छोड़े बगैर उसकी प्राप्ति नहीं होनेवाली। —विवेकानन्द

तुम्हारे क्षुद्र अहंकारको समूल नष्ट करके तुमको विश्व-व्यापी बनाने के एकमात्र ध्येयकी खातिर सब धर्मसंस्थाएँ पैदा हुई हैं।

—विवेकानन्द

इस तमाम प्रपंचका मूल अहंकार है। अहंकारके समूल नाशसे तृष्णाओंका अन्त हो जाता है। —बुद्ध

अहंकारी

अहंकारी वह है जो अपने 'मैं' से और समस्त जीवराशिको चुप कर देनेकी कोशिश करता हुआ दिखलाई देता है। —अज्ञात

अहतियात

अपने हृदयके जोशसे बचना मनुष्यकी पहिली अहतियात होनी चाहिए और संसारकी बदमाशीसे बचना दूसरी। —एडीसन

अहित

जो मनुष्य मनसे भी अगर प्राणियोंका अहित सोचता है उसको इस लोकमें वैसा ही मिलता है इसमें संशय नहीं। —हितोपदेश

हम प्रतिघात करे बगैर किसीका अहित नहीं कर सकते जब हम दूसरोंको दुःखी करते हैं हमेशा स्वयं दुःखमें रहते हैं। —मरसियर

अहिंसा

अहिंसाकी शक्ति अमाप है वैसी ही अहिंसककी है। अहिंसक खुद कुछ नहीं करता उसका प्रेरक ईश्वर होता है इस कारण भविष्यमें ईश्वर उससे क्या क्या लेगा, यह वह खुद कैसे बतावेगा?

—गांधी

अहिंसा माने अपने आचरणसे या कृतिसे किसीका भी दिल न दुखाना, किसीका अहित तक न सोचना। —विवेकानन्द

मैं पशुओंको तीरका निशाना बनानेके बजाय उन्हें चरते देखना चाहता हूँ किसी बुलबुलको खा जानेकी अपेक्षा उसे गाते सुनना चाहता हूँ। —रस्किन

अहिंसा धर्मका तकाज़ा है कि हम दूसरोंको अधिकसे अधिक सुविधाएँ प्राप्त करा देनेके लिए स्वयं अधिकसे अधिक असुविधाएँ सहें—यहाँ तक कि अपनी जान भी जोखममें डाल दें। —गांधी

जिन लोगोंका जीवन हत्यापर निर्भर है समझदार लोगोंकी दृष्टिमें वे मुर्दाखोरोंके समान हैं। —तिरुवल्लुवर

दयाभाव + समता + निर्भयता = अहिंसा। —विनोबा

जहाँ तक हो सके एक दिलको भी रंज न पहुँचाओ क्योंकि एक आह सारे संसारमें खलबली मचा देती है। —अज्ञात

अहिंसा परम धर्म है। —भगवान् महावीर

तमाम प्राणियोंके प्रति पूर्ण अद्रोह भावसे और यह न हो सके तो फिर अल्पतम द्रोह रखकर जीना परम धर्म है। —अज्ञात

धन्य है वह पुरुष जिसने अहिंसा-व्रत धारण किया है। मौत जो सब जीवोंको खा जाती है उसके दिनों पर हमला नहीं कर सकती। —तिरुवल्लुवर

इस दुनियामें प्राणोंसे ज़्यादा प्यारी कोई चीज़ नहीं है। इसलिए मनुष्यको अपनी तरह दूसरोंके प्रति भी दया दिखलानी चाहिए। —अज्ञात

धर्मप्रवचन इसलिए हुआ था कि जीवोंको एक दूसरेकी हिंसा करनेसे रोका जाए। इसलिए सच्चा धर्म वही है जो जीवोंके प्रति अहिंसाका प्रतिपादन करता है। —अज्ञात

ऐसा हृदय रखो जो कभी कठोर नहीं होता और ऐसा मिज़ाज जो कभी नहीं उकताता और ऐसा स्पर्श जो कभी ईज़ा नहीं पहुँचाता। —डिकिन्स

अगर तुझे अपना नाम बाकी रखना है तो किसीको दुःख पहुँचानेकी कोशिश मत कर। —जामी

धर्मका विचार धर्मका दूसरा नाम अहिंसा है। —गांधी

अहिंसाका अर्थ है अनन्त प्रेम और इसका अर्थ है कष्ट सहनेकी अनन्त शक्ति। —गांधी

इस अनमोल अहिंसा-धर्मको मैं शब्दोंके द्वारा नहीं प्रकट कर सकता। खुद पालन करके ही उसका पालन कराया जा सकता है।

—गांधी

मेरी अहिंसा सारे जगत्के प्रति प्रेम माँगती है। —गांधी

अहिंसा सब धर्मोंमें श्रेष्ठ है। हिंसाके पीछे हर तरहका पाप लगा रहता है। —तिरुवल्लुवर

ब्रह्मचारी पुरुषोंकी अपनी सब प्रेमशक्ति, इकट्ठी की हुई सम्पूर्ण सेवाका अन्तिम फलित 'अ-हिंसा'में व्यक्त होता है। —विनोबा

सम्पूर्ण आत्मशुद्धिके प्रयत्नमें भर मिटना यह अहिंसाकी शर्त है।

—गांधी

अहिंसा परम श्रेष्ठ मानव-धर्म है, पशुबलसे वह अनन्तगुना महान् और उच्च है। —गांधी

समूची सृष्टिको अपनेमें समा लेनेपर ही अहिंसाकी पूर्ति होती है।

—विनोबा

अहिंसा यानी पूर्ण निर्दोषिता ही है। पूर्ण अहिंसाका अर्थ है प्राणिमात्रके प्रति दुर्भावका पूर्ण अभाव। —गांधी

अक्षरज्ञान

अक्षर-ज्ञानकी हमें मूर्तिपूजा और मन्त्रपूजा न करनी चाहिए। यह कोई कामधेनु नहीं है। यह तो अपने स्थानपर तभी शोभा पा सकता है जब हम अपनी इन्द्रियोंको वश कर सकते हों, जब नीतिपर दृढ़ हों, जब हम उसका सदुपयोग कर सकते हों, तभी वह हमारा आभूषण हो सकता है। —गांधी

अज्ञान

तुम्हारा अज्ञान ही तुम्हारा वास्तविक पाप है। वही है जो दुःख लाता है। —प्रसाद

अज्ञानी

अज्ञानी होनेसे भिखारी होना अच्छा, क्योंकि भिखारीको तो सिर्फ धन चाहिए, मगर अज्ञानी आदमीको इन्सानियत चाहिए।

—एरिस्टिपस

अज्ञानी आदमीके लिए खामोशीसे बढ़कर कोई चीज़ नहीं और अगर उसमें यह समझनेकी बुद्धि हो तो वह अज्ञानी नहीं रहेगा।

—सादी

अपने पास बहुतसे नौकर-चाकर देखकर एक अज्ञानी भी फूला नहीं समाता। —हुसेन बसराई

[आ]

आक्रमण

जो साहसपूर्वक ज़िन्दगीका मोह छोड़कर आक्रमण करता है उसके सामने खड़े रहनेकी हिम्मत इन्द्रतक नहीं कर सकता। —प्रसाद

दिलेर हमला आधी लड़ाई जीतनेके बराबर है। —जर्मन कहावत

आँख

ज्ञानेन्द्रियोंमें आँखका क्या स्थान हो सकता है अगर वह एक ही नज़रमें दिलकी बात नहीं जान सकती? —तिरुवल्लुवर

अकेली आँख ही यह बता सकती है कि हृदयमें घृणा है या प्रेम। —तिरुवल्लुवर

वासनामयी आँख, अपवित्र हृदयकी परिचायक है। —ऑगस्टाइन

आग

दिलकी आगसे दिमागको धुआँ चढ़ता है। —जर्मन कहावत

जो हदमें चले सो मानव, जो बेहद चले सो साधु, जो हद-बेहद दोनों चले वह अथाह-मति। —कबीर

जो कथनी कथै, सो हमारा शिष्य, जो भेद पढ़ै सो हमारा प्रशिष्य, जो रहनी रहै सो हमारा गुरु, हम तो रहताके साथी हैं। —गोरखनाथ

कलियुगमें सब ब्रह्मकी बातें करेंगे, कोई उस पर आचरण नहीं करेंगे, सिर्फ शिश्नोदर-परायण रहेंगे। —जीवन्मुक्तिविवेक

जैसे व्यवहारकी तुम दूसरोंसे अपेक्षा रखते हो, वैसा ही व्यवहार तुम दूसरोंके प्रति करो। —ल्यूक

दूसरोंका जो आचरण तुम्हें पसन्द नहीं है वैसा आचरण दूसरोंके प्रति मत करो। ('आत्मनः प्रतिकूलानि परेषां न समाचरेत्'' —कन्फ्यूशियस

धर्मकी श्रद्धा होने पर भी धर्मका आचरण कठिन है, संसारमें धर्म श्रद्धालु भी कामभोगके प्रलोभनोंसे मूर्छित रहते हैं। हे गौतम! क्षणमात्र भी प्रमाद न कर। —भगवान् महावीर

मन भर चर्चासे कन भर आचरण अच्छा है। —विनोबा

जो ब्रह्मवार्तामें कुशल परन्तु वृत्तिहीन और सराग है वह भी अज्ञानियोंका शिरोमणि है, वह बारबार आता है और जाता है। —अपरोक्षानुभूति

जो मनको पवित्र जान पड़े उसीका आचरण करना चाहिए। —संस्कृत सूक्ति

वेदान्तमें निष्णात होने पर भी दुर्जन साधुता नहीं पाता, समुद्रमें चिरकालसे निमग्न रहने पर भी मैनाक मृदु नहीं हुआ। —जगन्नाथ

अधिक क्या कहें, जो अपने प्रतिकूल हो उसे दूसरोंके प्रति कभी न करो, धर्मकी यही आचारशिक्षा है। —मुनि देवसेन

आचार

बिना आचारके कोरा बौद्धिक ज्ञान वैसा ही है जैसा कि खुशबूदार मसालेका लगाया हुआ मुर्दा। —गांधी

महान् पुरुषकी ज्ञानके प्रदर्शनसे जनता पर कभी उसका असर नहीं पड़ता। अपने उच्चतत्त्व जिस परिमाणमें अपने रोजके वर्तनमें प्रत्यक्ष दिखाई देने लगते हैं उसी परिमाणमें अपने प्रति लोगोंका आदर व पूज्य भाव बढ़ता जाता है। —विवेकानन्द

सदाचारी सुखी है दुराचारी दुःखी। —श्रीमद् राजचन्द्र

आचार्य

आचार्य वह है जो अपने आचारसे हमें सदाचारी बनावें। —गांधी

आज

एक आज दो कलके बराबर है। —क्वार्ल्स

आजसे अपने चित्तमें विकार नहीं आने दूँगा, मुँहसे दुर्वचन नहीं निकालूँगा और दोषरहित हो मैत्री भावसे इस संसारमें विचरण करूँगा। —बुद्ध

आजका दिन हमारा है। गुजरा हुआ कल मर गया, और आनेवाला कल अभी पैदा नहीं हुआ। —अज्ञात

जो काम कभी भी हो सकता है वह कभी नहीं हो सकता है। जो काम अभी होगा वही होगा। जो शक्ति आजके कामको कल पर टालनेमें खर्च हो जाती है उसी शक्तिके द्वारा आजका काम आज हो किया जा सकता है। —अज्ञात

आज हो विवेकी बन; शायद कलका सूर्य तू देख ही न पावे। —अज्ञात

जो कुछ नेककार है वह आज ही करो। बुढ़ापेमें क्या कर सकोगे? तब तो तुम्हारा शरीर तक तुम्हारे लिए बोझा हो जायेगा। —अज्ञात

अच्छी तरह जिया हुआ आज हर गुजरे हुए कलको आनन्दका स्वप्न और हर आनेवाले कलको आशाका दर्शन बना देता है। —अज्ञात

कल जिन्दगी के लिए देर हो जायेगी; आज जी! —मार्शल

सोचो कि आजका दिन फिर कभी नहीं आयेगा। —दान्ते

आज़ादी

भी आज़ादी मानव जातिकी पहली ख़ुशी। —ड्राइडन

दो क़िस्मकी आज़ादियाँ हैं झूठी जहाँ कोई जो चाहे करनेको आज़ाद है और सच्ची जहाँ वह वही करनेके लिए आज़ाद है जो कि उसे करना चाहिए। —किंग्सले

आज़ादीसे साँस लेनेके मानी ही जीना नहीं है। —गेटे

पापकी ग़ुलामी करनेवाली आज़ादीको नष्ट कर दो।

—स्वामी रामतीर्थ

आज़ादी इसी वक़्त और आज़ादी हमेशाके लिए।

—डेनियल वेबस्टर

आज़ादी आत्माकी एक ख़ास हालतका नाम है न कि मुल्कमें किसी ख़ास हुकूमतका। और पिंजरेमें रहकर भी कुछ आज़ाद हैं क्योंकि वह आदमीकी गाड़ी नहीं खींचता। बैल और घोड़े खुले रहकर भी ग़ुलाम हैं। क्योंकि वह जुए या साज़के नीचे एक इशारेपर सिर झुकाकर गर्दन या पीठ झुका देते हैं। —महात्मा भगवानदीन

कोई देश बिना आज़ादीके अच्छी तरह नहीं जी सकता और न आज़ादी बिना सदाचारके बरक़रार रह सकती है। —रूसो

बिना ज़िम्मेदारीके आज़ादी असम्भव है बिना आज़ादीके ज़िम्मेदारी ग़ुलामी है। —प्रसाद

अपनी आज़ादीको बुद्ध, ईसा मुहम्मद या कृष्णके हाथों न बेच दो। —स्वामी रामतीर्थ

आज़ादीका प्रेम ईश्वरका प्रेम है। —बाउल्स

अपनी आज़ादीको त्यागना अपनी इन्सानियत खोना है मानवताके हक़ों और फ़र्ज़ोंको खोना है। यह त्याग मनुष्यकी प्रकृतिके अनुकूल नहीं है क्योंकि उसकी इच्छा-शक्तिसे तमाम स्वतन्त्रता छीन लेना उसके कार्योंसे तमाम नैतिकता छीन लेना है। —रूसो

मुझे आज़ाद कहकर न चिढ़ाओ, जबकि तुमने मेरे बन्धनोंको केवल सजीली बन्दनवारोंमें गूँथ दिया है। —आर्नोल्ड

कानून आदमियोंको कभी आज़ाद नहीं बनायेगा, आदमियोंको ही कानूनको आज़ाद बनाना होगा। —थोरो

किसीकी मेहरबानी माँगना अपनी आज़ादी खोना है। —गांधी

मुझे और सब आज़ादियोंसे पहले अपने अन्तःकरणके अनुसार जानने सोचने मानने और बोलनेकी आज़ादी दो। —मिल्टन

आज़ादीकी तड़प आत्माका संगीत है। —सुभाष बोस

अल्लाह तुम्हारी किसी बातसे इतना प्रसन्न नहीं होता जितना गुलामोंको आज़ाद करनेसे। —ह० मुहम्मद

जिन्हें आज़ाद होना हो उन्हें स्वयं ही प्रहार करना होगा। —बायरन

बुलबुल पिंजड़ेमें नहीं गाती। —कहावत

आज़ादी एक शानदार दावत है। —बर्न्स

मोटी चर्बीकी गुलामीसे दुबली-पतली आज़ादी अच्छी। —कहावत

निज देशमें गुलाम रहनेकी अपेक्षा परदेशमें आज़ाद रहना अच्छा। —जर्मन कहावत

उससे बदतर गुलाम नहीं जो झूठमूठको मानता है कि वह आज़ाद है। —गेटे

क्या आपको पूरी आज़ादी नहीं है कि साहित्य और इतिहासकी तुच्छ तफ़सीलोंपर वक्त बर्बाद कर डालें, क्योंकि व अल्पतम किसी शासक वर्गके मददगार साबित नहीं होते? —एमर्स

जो अपनी स्वतंत्रताके खोनेसे प्रारम्भ कर सकते हैं वे अपनी शक्ति खोकर समाप्ति करेंगे। —स्कॉट

ईश्वरकी आज्ञा पालन करनेमें ही पूर्ण स्वातंत्र्य है। —सेनेका

सद्ज्ञान और सदाचारके बग़ैर आज़ादी क्या है? सबसे बड़ा अभिशाप। —बर्क

लिए जितनी भी कुर्बानी क्यों न देनी पड़े इसके लिए कितना ही दुःख सहन क्यों न करना पड़े। —निकोलस बर्दोव

ज्ञानी लोग ही स्वतंत्र हैं और हर बेवकूफ़ गुलाम है। —ज़िनोफ़न

वह ख्वाहिश जिसे ज़माने इन्सानके दिलसे नहीं मिटा सके यह है कि मनकी मौजके सिवा कोई मालिक न हो। —बायरन

गुलामीसे ज्यादा दुखदायक कोई चीज़ नहीं हो सकती, और न आज़ादीसे ज्यादा सुखदायिनी कोई चीज़। —स्टर्न

बन्दी राजासे स्वतंत्र पक्षी होना अच्छा। —डेनिश कहावत

स्वदेशमें गुलाम रहनेके बजाय परदेशमें आज़ाद रहना अच्छा।
—जर्मन कहावत

आज़ादीके माने हैं खुदका खुद पर हुक्म। —हीगल

सम्यक चारित्र सत्य और भक्तिसे आज़ाद होता है।
—टी. ऐस. ईलियट

व्यक्ति स्वातंत्र्यके बुनियादपर किसी समाजकी रचना नहीं की जा सकती। —महात्मा गांधी

स्वतंत्र होकर ही कोई औरोंको स्वतंत्र कर सकता है। —अरविन्द

शासनमें शक्ति न हो तो आज़ादी बरकरार नहीं रह सकती।
—शिलर

जब दुनिया एक बन जायेगी तभी उसे सच्ची आज़ादी मिल पायेगी। —डी. फ्रौस्टर

गुलामोंको आज़ादी देकर हम आज़ादोंकी आज़ादीकी हिफ़ाज़त करते हैं। —अब्राहम लिंकन

ईश्वरके लिए आज़ादी ज़रूरी है। —ब्लोदीमीर सोलोवीव

क्या स्वतंत्रता इच्छानुसार जीनेके अधिकारके अलावा कुछ और चीज़ है? कुछ नहीं। —ऐपिक्टेटस

ईश्वरका साक्षात्कार कर लो और स्वतंत्र हो जाओ।
—स्वामी रामतीर्थ

इत्मीनान रक्खो, आज़ादीके दीवाने आज़ाद होकर रहेंगे।

—ऐडमण्ड बर्क

आज़ाद हुए मानो नया जन्म मिल गया। —गांधी

धीमे-धीमे आज़ाद होने के कुछ मानी नहीं। अगर हम पूर्ण स्वतंत्र नहीं तो हम ग़ुलाम हैं। आज़ादी जन्मकी तरह है। हर जन्म क्षण-भरमें हो जाता है। —गांधी

आदमी अपनी पराधीनताके लिए खुद ही ज़िम्मेदार है वह चाहते ही आज़ाद हो सकता है। —गांधी

मेरी निश्चित मान्यता है कि आदमी अपनी ही कमज़ोरीसे अपनी आज़ादी खोता है। —गांधी

हममें-से बदतरीन लोग भी बहुत ही काम करते हैं या कर सकते हैं। वह ज़रा-सा काम भी आज़ादीमें रहकर ही किया जाता है।

—रॉबर्ट ब्राउनिंग

पुण्यशीला स्वतंत्रताका एक दिन एक घंटा पराधीनताके अनन्त कालसे बढ़कर है। —ऐडीसन

फ्रांसीसियोंका उदात्त सूत्र है—'आज़ादी बराबरी भाईचारा' यह सिर्फ़ फ्रांसीसियोंकी ही विरासत नहीं बल्कि सारी मानव जातिके लिए है। —गांधी

ईश्वरने जब हमें ज़िन्दगी दी तभी आज़ादी भी दी थी।

—टॉमस जफ़रसन

जिसने अपनी आज़ादी खो दी उसने सब कुछ खो दिया।

—जर्मन कहावत

ईश्वर किसीको गुलाम नहीं बनाता, किसी क़ौमको आज़ाद नहीं बनाता; आज़ादी सिर्फ़ बहुत परिश्रमसे मिलती है। —रूसो

संकल्पशक्ति (Will) की आज़ादी न देना नैतिकताको असंभव बना देना है। —फ्रूड

आजीविका

मुँह छिपाने और मुँह दबाने जीते रहनेकी शर्त पर आजीविका पाना कोई गौरवकी बात नहीं है। —जॉन मोर्ले

जो ईश्वरका भरोसा रखते हैं ईश्वर उनका निर्वाह अवश्य करता है। —कुरान

शिक्षाको आजीविकाका साधन समझकर पढ़ना नीच-वृत्ति कही जाती है, आजीविकाका साधन तो शरीर है। पाठशाला तो चरित्रगठन का स्थान है। विद्यार्थियोंको यह पढ़नेसे ही जान लेना जरूरी है कि हमें अपनी आजीविकाको बाहुबलसे ही प्राप्त करना है। —गांधी

दिलकी शांतिके लिए बँधी हुई रोज़ी ज़रूरी है। —सादी

साँपोंको अपना भोजन वायु, बिना माँगे मिल जाता है, घास खानेवाले वनके पशु भी सुखसे रहते हैं, लेकिन संसारी मनुष्योंकी जीविका ऐसी है कि उसे ढूँढ़ते रहनेमें ही उनके तमाम गुण समाप्त हो जाते हैं। —संस्कृत सूक्ति

अगर इज्ज़त बेचकर रोज़ी मिलती हो तो उस रोज़ीसे ग़रीबी अच्छी। —सादी

आतंक

यह बात हम सब लोगोंमें आम तौरपर पाई जाती है मगर यह प्रमुखतः नीच बुद्धिवालेका लक्षण है कि वह उनकी बातों और उनकी धमकियोंसे आतंकित हो जाता है। —डिकेन्स

आतंक सबसे ज्यादा विनाश करनेवाली अवस्था है जिसमें कोई हो सकता है। —गांधी

आततायी

आततायी अगर सामनेसे आ रहा हो तो बिना सोचे उसे मार डालना चाहिए। —मनुस्मृति

आत्मकल्याण

सर्वस्वका त्याग करके भी मनुष्यको आत्मकल्याण करना चाहिए।

—भारत

आतिथ्य

अध-आतिथ्य दरवाज़ा खोल देता है मगर मुँह छिपा लेता है।

—चैपमैन

आत्मनिग्रह

आत्मनिग्रहसे स्वास्थ्यकी हानि नहीं होती; इतना ही नहीं, बल्कि स्वास्थ्यका यही एक अमोघ साधन है। —गांधी

आत्मरक्षा

आत्मरक्षा हर प्रयत्नसे करनी चाहिए। —भारत

आत्मविस्मरण

दूसरोंको सुखी कर सकनेके लिए, तुम्हें खुदको भूलना पड़ सकता है। —एविड

आत्मविश्वास

आत्मविश्वास वीरताकी जान है। —एमर्सन

महान् काम करनेके लिए पहिली ज़रूरी चीज़ है आत्म-विश्वास।

—जॉनसन

आत्मविश्वास सरीखा दूसरा मित्र नहीं। आत्मविश्वास ही भारी सब नहा मूल बाधा है। —विवेकानन्द

जिसमें आत्मविश्वास नहीं है उसमें अन्य चीज़ोंके प्रति विश्वास कैसे उत्पन्न हो सकता है? —विवेकानन्द

महान् कार्योंके लिए पहली ज़रूरी चीज़ है आत्मविश्वास।

—सैमुअल जॉनसन

आत्मश्रद्धा

आत्मश्रद्धा हमारे हाथमें एक अमोघ शस्त्र है। किसी भी बातसे मनमें दुर्बलता आने लगे तो पहले उस बातका त्याग करना चाहिए। नहीं तो दिन-दिन तुम्हारा मानसिक बल कम होता जायेगा और आखिरश मुस्तकिल तौरसे नाश पायेगा। —विवेकानन्द

आत्मशक्ति

जैसे कुश्ती करनेसे शरीर-बल बढ़ता है, कठिन प्रश्नोंको हल करनेसे बुद्धि-बल बढ़ता है, उसी तरह आई हुई परिस्थितिका शान्तिपूर्वक मुकाबला करनेसे आत्म-बल बढ़ता है। —सद्गुरु श्री ब्रह्मचैतन्य

सहनशीलता और विश्वास आत्म-शक्तिके लक्षण हैं। —गांधी

आत्म-शक्ति ईश-कृपासे आती है, और ईश-कृपा उस आदमी पर कभी नहीं होती जो तृष्णाका गुलाम है। —गांधी

आत्मदर्शन

जिसका मन रागद्वेषादिसे नहीं डोलता वही आत्मतत्त्वका दर्शन कर सकता है। —भागवत

मनुष्य-जीवनका उद्देश्य आत्म-दर्शन है और उसकी सिद्धिका मुख्य एवं एकमात्र उपाय पारमार्थिक भावसे जीवमात्रकी सेवा करना है; उसमें तन्मयता तथा अद्वैतके दर्शन करना है। —गांधी

आँखें आकाशको नहीं देख सकतीं भौतिक दृष्टि आत्माको नहीं देख सकती। —नैष्कर्म्यसिद्धि

आत्मदान

अगर सारी दुनियाको हम पाना चाहते हैं तो हमें यही सीखना है कि पायें अपनेको देकर। —जैनेन्द्रकुमार

हमारा देश आत्मदानका ऐश्वर्य चाहता है—विपुल धनकी महिमा और शक्तिकी प्रतियोगिता नहीं। —टैगोर

आत्म-शुद्धि

दूसरेका अच्छा बुरापन दूसरेकी दृष्टिसे कभी न नापो, ऐसा करना अपने मनकी दुर्बलता दिखलाना है। —विवेकानन्द

आत्म-सन्तोष

अपने निजी सन्तोषके लिए मैं ताज पहननेकी अपेक्षा अपने ही आत्मका मालिक होना ज्यादा पसन्द करूँगा। —बिशप [illegible]

आत्म-सम्मान

अगर आपने अपना आत्म-सम्मान खोया तो आपने सब कुछ खो दिया। —अज्ञात

आत्म-सम्मान पवित्र रूप है जिसमें महानता प्रगट होती है। —एमर्सन

आत्म-सम्मान समस्त गुणोंकी आधार शिला है। —सर जॉन हरशल

सब बातोंसे पहिले आत्म-सम्मान। —पिथागोरस

जिसके यहाँ रहना चाहते हो, उसके यहाँ अपनी आवश्यकता पैदा करो। दया पर पेट पल सकता है आत्म-सम्मान नहीं। —अज्ञात

धूलसे नीच कौन होगा? मगर वह भी तिरस्कार सहन नहीं कर सकती—अगर मारें तो सिरपर चढ़ती है। —रामायण

आत्म-संयम

आत्म-संयम सभ्यताका प्रधान अंग है। —अज्ञात

धन्य है वह आत्म-संयम जो मनुष्यको दुर्गुणोंकी सभामें जाने पाकर [illegible] ग्रहण करनेसे मना करता है। यह एक ऐसा गुण है जो अन्य गुणोंसे भी अधिक महत्त्वपूर्ण है। —तिरुवल्लुवर

किसी मनुष्यने अपने लिए कोई हानिकर बात की कि उसका बुरा करनेकी बुद्धि अपनेमें होती है। उसका नियमन करना यही आत्म-संयमकी पहली सीढ़ी है। —विवेकानन्द

आत्म-संशोधन

सब साहित्यके अभ्याससे अथवा सर्व विषयके विज्ञानसे जो समाधान नहीं मिलनेवाला वह आत्म-संशोधनसे मिलेगा। —विनोबा

आत्म-ज्ञान

काबा और सोना मुझे तेरे पथसे गिरा देते हैं तू अपने आपको उस समय पहचानेगा जब विश्वास और विकासको तिलाञ्जलि दे देगा।

—हाफ़िज़

सिर्फ़ दो तरहके लोगोंको आत्म-ज्ञान हो सकता है। उनको जिनके दिमाग़ विद्या यानी दूसरोंके उधार लिये हुए विचारोंसे बिलकुल भरे हुए नहीं हैं; और उनको जो तमाम शास्त्रों और साइन्सोंको पढ़कर यह महसूस करने लगे हैं कि वे कुछ नहीं जानते। —अज्ञात

जिसने अपने आपको पहचान लिया उसने अपने रबको पहचान लिया। —मुहम्मद

जिसने अपने आपको देख और पहचान लिया वह फिर अपने कामिल [सिद्ध या पूर्ण] बननेकी तरफ़ तेज़ीसे दौड़ने लगता है।

—मौलाना रूम

आत्मज्ञान ही शेष समस्त विद्याओंका विज्ञान है और अपना भी।

—प्लेटो

इस महत्त्वपूर्ण सत्यको कभी नज़र अंदाज़ न होने दो कि कोई तबतक सचमुच महान् नहीं हो सकता जबतक कि वह आत्मज्ञान न पा जाय। —ज़िमरमन

समझ लो कि जिसने अपना पता पा लिया उसके दुःख तमाम हो गये। —मैथ्यू आर्नोल्ड

संसारका सुख और संसारकी सहूलियतें रखकर जिसे आत्म-ज्ञान लेना है उसे आत्म ज्ञान नहीं मिलेगा। —अज्ञात

जिसने बुरा स्वभाव नहीं छोड़ा है, जिसने अपनी इन्द्रियोंको नहीं रोका है जिसका मन चंचल बना हुआ है वह केवल पढ़ने-लिखनेसे आत्म-ज्ञानको नहीं पा सकता। —कठोपनिषद्

जीवनमें सबसे मुश्किल बात अपने आपको जानना है। —थेल्स

जो अपनेको जानता है वह दूसरोंको जानता है। —काल्टन

ओ इन्सान! अपने आपको जान; तमाम ज्ञान वहीं केन्द्रीभूत होता है। —पोप

आत्मा

'नायमात्मा प्रवचनेन लभ्यः' (यह आत्मा प्रवचनसे नहीं मिलता।") —उपनिषद्

इन्द्रियाँ काफी सूक्ष्म हैं इन्द्रियोंसे ज्यादा सूक्ष्म मन है मनसे ज्यादा सूक्ष्म बुद्धि है, बुद्धिसे ज्यादा सूक्ष्म आत्मा है। वह आत्मा ही सब कुछ है। वही यह है। —गीता

क्या आत्माका अपना कोई प्राप्य घर नहीं है जो इस बाहियात शरीरमें आश्रय लेता है। —शिस्कसुपर

जिसने आत्माके अस्तित्वको स्वीकार किया है और जो आत्माका विकास करना चाहता है उसे यह समझनेकी जरूरत नहीं कि देह दमन बिना आत्माकी पहिचान या आत्माका विकास असंभव है। शरीर या तो स्वच्छन्दताका भाजन होगा या आत्माकी पहिचान करनेका तीर्थ क्षेत्र होगा। जो यह आत्माकी पहिचान करनेका तीर्थक्षेत्र हो तो स्वेच्छाचारको स्थान ही नहीं है। देहको क्षण-क्षणपर वश करना आत्मा-के लिए लाजिमी होगा ही। —महात्मा गांधी

जिस तरह एक सूरज सारी दुनियाको रोशनी देता है उसी तरह एक आत्मा इस सारे क्षेत्रको रोशन करता है। —गीता

जिसका मन संसारकी बातोंको छोड़कर आत्मगामी बना है वह अमोघ अमृतकी धारासे सर्वांगिण रूपसे सिंचित होता है।—रत्नसिंह सूरि

तू अपनी आत्माकी ओर ध्यान कर और उसके गुणोंकी पूर्ति कर; क्योंकि तू आत्माके कारण ही मनुष्य है न कि शरीरके कारण ।

—अबुल-फ़तह-बुस्ती

आत्माकी दौलत इससे नापी जाती है कि वह कितना ज्यादा अनुभव करती है उसकी गरीबी इससे कि कितना कम । —अल्जर

जब कोई निजात्माको विश्वात्मा ही अनुभव करने लगता है तो सारा ब्रह्माण्ड उसकी इस तरह सेवा करता है जैसे उसका शरीर ।

—स्वामी रामतीर्थ

समुद्रोंसे बड़ी एक चीज़ है और वह है आकाश; आकाशसे बड़ी एक चीज़ है और वह है मनुष्यकी आत्मा । —विक्टर ह्यूगो

सबकी आत्मा एक सरीखी है सबकी आत्माकी शक्ति समान है मात्र कुछकी शक्ति प्रकट हो गई है दूसरोंकी प्रकट होना बाकी है ।

—महात्मा गांधी

आत्माकी प्राप्ति हमेशा सत्यसे तपसे सम्यग्ज्ञानसे और ब्रह्मचर्यसे होती है । निर्दोष लोग अपने अन्दर शुभ्र ज्योतिर्मय आत्माको देख सकते हैं । —अज्ञात

यह आत्मा प्रवचनोंसे बुद्धिसे या बहुश्रवणसे नहीं मिलता । परन्तु जो आत्माको ही वरता है उसीको आत्मा अपना स्वरूप प्रकट करता है ।

—उपनिषद्

दया दिखाना कुछ नहीं है—तेरी आत्मा दयासे भरी होनी चाहिए । आचरणमें पवित्रता कुछ नहीं है—तुम्हें हृदयसे भी पवित्र होना चाहिए । —रस्किन

जैसे कि तमाम ग्रह अपने केन्द्रों या धुरोंसे ताल्लुक रखते हैं वैसे ही तमाम चरित्रका सौन्दर्य आत्मासे सम्बन्धित है । —थारो

'आत्माका अस्तित्व' ये शब्द पुनरुक्त हैं कारण कि 'आत्मा' माने, अस्तित्व । —विनोबा

विवेकी आत्मा बजाय खुद बरकरारीके तमाम खुशियोंके लिए दूसरेकी खुशी पर झुकती है। —गोल्डस्मिथ

जिस हस्तीको वेदान्ती ब्रह्म कहते हैं उसीको योगी आत्मा कहते हैं और भक्त भगवान् कहते हैं। —रामकृष्ण परमहंस

उसने अपनी आत्माको उन्नतताको कायम रखा था, इसीलिए लोग उसके लिए यूँ रोये। —बायरन

आत्मा पृथ्वीपर एक अमर मेहमान है जो कि एक अवास्तविक दावत पर भूखों मरनेको मजबूर है। —इमामोर

आत्माको रथमें बैठा हुआ योद्धा जान शरीरको रथ जान बुद्धिको सारथी जान मनको लगाम जान। —कठोपनिषद्

जिसे अपने जीवनके लिए मन प्राण शरीरकी शरण नहीं जिसे अपने ज्ञानके लिए मन और इन्द्रियोंकी शरण नहीं जिसे अपने आनन्दके लिए पदार्थ मात्रके बाह्य स्पर्शकी दरकार नहीं, उसी तत्त्वको 'आत्मा' नाम दिया गया है। —अरविन्द घोष

आत्मा शान्तता मूर्ति है आत्माको दुःख भी अशान्त नहीं है।

—विनोबा

हम सब शारीरिक पक्षाघातसे डर जाते हैं और उससे बचनेकी हर तदबीर करते हैं लेकिन आत्माको लकवा मार जानेपर किसीको परेशानी नहीं होती। —एपिक्टेटस

शरीरको हमेशा आत्माकी अधीनता और दासत्वमें रहना चाहिए।

—डा हेवर

आत्मा व्यक्तियोंका लिहाज नहीं रखती। —एमर्सन

आत्मा दैविक आनन्दके किनारेपर खड़ा है वह आनन्द ऐसा है मानो उसमें करोड़ों दुनियाओं (इन्द्रिय ग्राह्य जगत्) खुशियाँ घनीभूत हो गई हों, और उस आनन्दका भोगनके पश्चात वह दुनियाके तुच्छ बातोंमें प्रकाशित होकर मायाके जालमें फँसकर आता है।

—रामकृष्ण परमहंस

मैंने बालकोंकी आँखें, सुन्दरतम खूबसूरत शक्लें देखीं । लेकिन एक ऐसी आत्मा न मिली जो मेरी आत्मासे बोलता । —एमर्सन

जिनकी आत्माएँ छोटी-छोटी हैं वे बड़े-बड़े पापोंके रचयिता होते हैं । —गेटे

देव लोग आत्माकी गहराई पसन्द करते हैं न कि उसका आडम्बर । —वर्ड्सवर्थ

आत्मा होठोंसे नहीं आँखोंसे प्रतिबिम्बित होती है ।
—मैकडोनल्ड क्लार्क

दुनियामें छुद्र आत्माएँ नहीं हैं । —हॉब्स

क़ीमती चीज़ दुनियामें एक है—सक्रिय आत्मा । —एमर्सन

एक आत्मा सारे ब्रह्माण्डसे बढ़कर है । —अलेक्जेण्डर स्मिथ

हमारे शरीर भिन्न-भिन्न हैं तो क्या हुआ आत्मा तो हमारे अन्दर एक ही है । —गांधी

हृदय भले ही टूट जाए मगर आत्मा अचल रहे । —नैपोलियन

आत्मा ही अपना स्वर्ग और नरक है । —उमरख़य्याम

कारपोरेशनके आत्मा नहीं होती । —कोक

मौन और एकान्त आत्माके सर्वोत्तम मित्र हैं । —लॉंगफ़ेलो

आत्मानुभव

जो शरीरपोषणमें लगा रहकर आत्मानुभव कर लेना चाहता है वह मगरको लट्ठा समझकर नदी पार करना चाहता है । —प्रसाद

आदमी

दुनिया कुछ नहीं आदमी ही सब कुछ है । —एमर्सन

आदमी खाना पकानेवाला जानवर है । —बर्क

सिर्फ़ आदमी ही रोता हुआ जन्मता है शिकायतें करता हुआ जीता है और निराश मरता है । —सर वाल्टर टेम्पिल

सिर्फ तीन किस्मके आदमी हैं—पतनशील, स्थिर और उन्नतिशील।
—लैवेटर

'मैं आश्चर्य करता हूँ कि मछलियाँ समुद्रमें कैसे जीती हैं! 'क्यों, जैसे आदमी भूतल पर जीते हैं बड़े छोटोंको निगलकर। —शेक्सपियर

हर आदमी एक खंडित परमात्मा है। —एमर्सन

हर एक आदमी भक्षक है, उसे उत्पादक होना चाहिए। —एमर्सन

आदमी सिरजनेके लिए पैदा हुआ है। —एमर्सन

हमको कार्योंकी नहीं आदमियोंकी जरूरत है। —एमर्सन

आदर्श

मेरे पास आदर्श है ऐसा तब ही कहा जाय जब मैं उस तक पहुँचनेकी कोशिश करता हूँ। —गांधी

आदर्शको हमेशा 'वास्तविक'मेंसे उगना होता है। —अरविंद

जिस आदर्शमें व्यवहारका प्रवेश न हो वह निरर्थक है, जो व्यवहार आदर्श-प्रेरित न हो वह भयंकर है। —भगत

मानव जातिकी एकमात्र पाठशाला है—आदर्श, मनुष्य और कहीं नहीं सीखता। —बर्क

आदर्श-विहीन मनुष्य मल्लाह रहित जहाज जैसा है। —गांधी

आचारधर्म

आचारधर्मका स्वर्णसूत्र है परस्पर-सहिष्णुता क्योंकि यह असंभव है कि हम सब एक ही तरह विचार करें। हम तो अपने भिन्न दृष्टिकोणोंसे सत्यको अंशतः ही देख सकते हैं। सदसद्विवेक-बुद्धि सबके लिए एक ही वस्तु नहीं होती। इसलिए वह व्यक्तिगत आचरणके लिए बहुत अच्छा पथ-प्रदर्शक जरूर है। लेकिन उस आचारको एकएक सब लोगों पर लादना व्यक्तिमात्रके बुद्धि स्वातन्त्र्यमें अपमान और असह्य हस्तक्षेप है। —गांधी

पशुका आनन्द इन्द्रियतृप्ति है, और मनुष्यका आनन्द बुद्धिगत है। —विवेकानन्द

पराधीनतामें दुःख है और स्वाधीनतामें आनन्द। —अज्ञात

अगर कोई मनुष्य शुद्ध मनसे बोलता या काम करता है आनन्द उसके पीछे सायेकी तरह चलता है जो कि उससे कभी अलग नहीं होता। —बुद्ध

आत्माका परमात्मासे मिलना ही आनन्द है। —पास्कल

सच्चा आनन्द एकान्त प्रिय है शान और शोरका दुश्मन। एक तो वह आत्म-स्वाधीनतासे मिलता है और दूसरे थोड़े-से चुने हुए मित्रोंकी मित्रता और बातचीतसे। —एडीसन

आनन्द वह खुशी है जिसके भोगने पर पछतावा नहीं पड़ता।

—सुकरात

शोपेनहोर कहता है।—'अपने अन्दर आनन्द पाना मुश्किल है। मगर उसे और कहीं पा सकना असम्भव है। —स्वामी रामतीर्थ

'सच्चे अनुभव बिना मुक्तिको होनेवाला आनन्द ऐसा ही व्यर्थ है जैसा कि प्रतिबिम्बित वृक्षके फलका स्वाद। —अज्ञात

जो मनुष्य अपना आत्मामें परमात्माको देख सकता है और सब तरफ समभावसे देखता है वही सर्वोत्कृष्ट आनन्द प्राप्त करता है।

—मनु

आनन्दकी क़ीमत सम्यग्ज्ञान है। —गीता

आनन्द परिग्रह बढ़ानेसे नहीं रिक्त के बढ़ानेसे बढ़ता है।

—रस्किन

अगर ठोस आनन्दकी हमें भूख है तो वह रस हमारे हृदयमें रक्खा हुआ है; व मूर्ख हैं जो इसको तलाशमें बाहर भटकते हैं।

—अज्ञात

जो आनन्द एकदम बाहरसे आता है मिथ्या, अल्पकाल और क्षणिक है। जो आनन्द अन्दरसे आता है वह डालीपर खिले सुगन्धित फूलके समान है अधिक मधुर, सुन्दर और स्थायी। —[illegible]

सब ईश्वर करता है और वह जो करता है वह अच्छेके लिए है ऐसा समझकर आनन्दमें रहो। —गांधी

आनन्द मनकी समता और दृढ़तामें है। —अज्ञात

आनन्द सर्वोत्तम मदिरा है। —जॉर्ज इलियट

जीना आनन्दपूर्ण है, फिर भी मरनेसे न डरो। —प्ररथ

देखो, जो मनुष्य भ्रमात्मक भावोंसे मुक्त है और जिसकी दृष्टि स्वच्छ है उसके लिए दुःख और अन्धकारका अन्त हो जाता है और उसे आनन्द प्राप्त होता है। —तिरुवल्लुवर

आनन्दमें और दुःखमें एक गुण समान है कि वे विचार-शक्ति हरण कर लेते हैं। —स्टोबस

बँटानेसे आनन्द दुगुना हो जाता है। —गेटे

अपने जीवनको सीमित कर लेना हमेशा सुखद होता है। —शोपेनहॉवर

आनन्द दुःखसे अधिक दैविक है, क्योंकि, आनन्द आहार है और दुःख औषध है। —वार्ड बीचर

राम नामका सहारा चाहिए। सब उसको अर्पण किया तो आनन्द ही आनन्द है। —गांधी

हमें न तो दौलत ही आनन्द देती है और न महानता ही। —ऑ फ्रांस

उस हृदयको जिसे पवित्र आनन्दसे लबालब भरना है, स्थिर रखना होगा। —मोरिस

आनन्दवर्षण

अपने इर्द-गिर्द आनन्दवर्षण (न कि कष्टवर्षण) की इच्छासे बेहतर सूरत शक्ल और शरीर को सुन्दर बनानेवाला कोई साधन नहीं।
—एमर्सन

आपत्ति

ऐसा जो आदमी ऐशो-आरामको पसन्द नहीं करता और जो जानता है कि आपत्तियाँ भी सृष्टिनियमके अन्तर्गत हैं, वह बाधा पड़ने-पर कभी परेशान नहीं होता। —शोपनहुअर

आपत्तियोंको जो आपत्ति नहीं समझते वे आपत्तियोंको ही आपत्तियाँ समझकर वापस भेज देते हैं। —शोपनहुअर

जो आदमी आपत्तियोंसे मुक्त होना नहीं चाहता उसे दूसरोंको हानि पहुँचानेसे बचना चाहिए। —शोपनहुअर

मनुष्यको आपत्तिका सामना करनेके लिए सहायता देनेमें मुस्कानसे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है। —शोपनहुअर

तुच्छ मनुष्यपर जब कोई आपत्ति आती है तो बस उसके लिए एक ही मार्ग खुला होता है, और वह यह कि जितनी जल्द मुमकिन हो वह अपने आपको बेच डाले। —शोपनहुअर

आपदा

ईश्वर आपदाओंका भला करे क्योंकि इन्हींके ज़रिये हमने अपने शत्रुओं और मित्रोंका परख किया है। —अज्ञात

आपा

वही आदमी अपना भला करेगा जिसने अपने आपेको पाक साफ किया, और वह आदमी अपना भला नहीं कर सकता जिसने अपने आपेको नीचे गिराया यानी अपनेको नापाक किया। —कुरान

आराम

ईसाई धर्ममें कहा है कि ईश्वरने छह दिन तक सृष्टि की और सातवें दिन विश्राम किया। यह सातवाँ दिन बहुत लम्बा हो गया है। ईश्वरके आराम करनेसे दुनियाके नाकों दम आ रहा है।

—पामशिरर

आलस

पापके लिए प्रायश्चित करना तो साधारण है, पर आलसके लिए प्रायश्चित करना असाधारण है। —अर्जुन

आलस्य

पानीमें अगर सिवार हो तो मनुष्य उसमें अपना प्रतिबिम्ब नहीं देख सकता। इसी प्रकार जिसका चित्त आलस्यसे पूर्ण होता है वह अपना ही हित नहीं समझ सकता दूसरोंका हित कैसे समझेगा?

—बुद्ध

आलस्य एक प्रकारकी हिंसा है। —गांधी

आलस्यमें दरिद्रताका वास है मगर जो आलस्य नहीं करता उसके परिश्रममें कमला बसती है। —तिरुवल्लुवर

आलस्यकी रफ्तार इतनी धीमी है कि उसे दरिद्रता फौरन् आ दबाती है। —अज्ञात

पहले ईमानदारी फिर मक्कारदारी। —अज्ञात

अगर इस दुनियामें आलस्य न होता तो कौन धनी या विद्वान् न बन जाता? सिर्फ आलस्यके कारण ही यह सारी पृथ्वी नर-पशुओं और कंगालोंसे भरी हुई है। —अज्ञात

आलसी

एक दिन आलसी आदमी इस कारण काम नहीं करता कि आज बड़ी जाड़ेकी सर्दी पड़ रही है और दूसरे दिन बेहद गर्मीके कारण वह कामसे जी चुराता है। किसी दिन कहता है कि अब तो शाम हो

गई है, कौन काम करने जाता और किसी दिन यह कहता है कि अभी तो बहुत सवेरा है कामका वक्त अभी कहाँ हुआ है। —बुद्ध

ईश्वर उसीकी सहायता करता है जो स्वयं अपनी मदद करता है। वह आलसी पुरुषको मरने देना ही अधिक पसन्द करेगा।—गांधी

आलोचक

ग्रन्थोंको आलोचकोंकी अपेक्षा आदर्शोंकी अधिक आवश्यकता है। —जूबर्ट

मेरा पक्का नियम है कि मैं छिद्रान्वेषी आलोचकोंसे दूर रहता हूँ। —गेटे

आलिम

बदतरीन आलिम वह है जो दौलतमन्दोंका मोहताज हुआ; और बेहतरीन अमीर वह है जो आलिमका ख्वास्तगार हो। —मुहम्मद

आलोचना

सबसे पहले यह करो कि दोषान्वेषण और आलोचनाकी आदत छोड़ दो। —प्रोफेसर ब्लेकी

आवश्यकता

जीवनमें हमारी प्रधान आवश्यकता यह है कि कोई ऐसा मिले जो हमसे वह कराये जो हम कर सकते हैं। —एमर्सन

अगर इन्सानको ज़िन्दगीकी ज़रूरियात मुहय्या कर दे, तब कहीं उसे फ़ुरसत या इच्छा होगी कि सूक्ष्मतर रुचियोंका अनुशीलन करे। —गोल्डस्मिथ

अपनी आवश्यकताएँ थोड़ी कर तो सफल होगा; और आवश्यकता की न्यूनता विद्वत्ताका चिह्न है। —इब्न उल-वर्दी

मुझको कुछ आवश्यकता हो, यह न बताना यह बड़ा अभिमान और अन्याय है और इससे अपने मित्रों पर बड़ा बोझ पड़ता है। —गांधी

आवाज़

चरित्रका परिचायक आवाज़के समान कोई दर्पण नहीं ।
—रैनकोब

आशंका

सबसे अटल नियम यह है कि जैसी हम आशंका करते हैं वैसा ही गुज़रता है ।
—थोरो

साँपकी आशंकासे अच्छा मनुष्य जिसपर उसकी आशंकाकी माला फेंक देता है ।
—अज्ञात

आश्चर्य

इससे अधिक आश्चर्यजनक कुछ नहीं है कि किस आसानीसे थोड़ेसे लोग बहुतोंपर शासन करते हैं ।
—ह्यूम

आशा

आशाको जीवनका लंगर कहा है उसका सहारा छोड़नेसे आदमी भवसागरमें बह जाता है, पर बिना हाथ-पैर हिलाये केवल आशा करने-से ही काम नहीं चलता ।
—लुकमान

जो आशाके दास हैं वे सर्वलोकके दास हैं और आशा जिनकी दासी है उनकी तमाम दुनिया दासी बन जाती है ।
—अज्ञात

जो आशाओंपर जीता है वह फ़ाक़े करके मरेगा ।
—फ्रैंकलिन

जो मिल जाय उसीमें सन्तोष मानना पराई आशासे निराशा अच्छी ।
—रहीम

हमेशा ईश्वरका भय रखो और प्रभुके सिवाय किसीकी आशा न रखो ।
—हाकिम हाशम

धन्य है वह जो आशा नहीं रखता क्योंकि वह निराश नहीं होगा ।
—पोप

अपनी आशाओंकी मुर्गियोंके पर क़ैद कर दो वरना वे तुम्हें अपने पीछे मारा-मारा परेशान कर डालेंगी ।
—फ्रैंकलिन

आशा और आत्मबलका स्थान सच्ची दौलत है, भय और उसका पर्दा गरीबी।
—ह्यूम

आशा अमर है उसकी आराधना कभी निष्फल नहीं होती।
—गांधी

औरोंकी आशा छोड़ ऐसा करनेसे लोग भी तेरी आशा छोड़ देंगे। या भावना करे गुप्तरूपसे प्रभुके निमित्त कर ईश्वर अपने आप जगत् की भलाईके लिए तेरे गौरवका प्रसार करेगा। तू दुनियाकी सेवा करेगा तो दुनिया भी तेरी सेवा करेगी।
—हाकिमदास

आशा अमर है परन्तु उसके कारण एक एक करके मरते जाते हैं।
—अज्ञात

आशाकी आशामें निश्चित वस्तु न खो दो।
—अज्ञात

जब तक तुम संसारसे सुख-शान्तिकी आशा रखोगे ईश्वरके प्रति सन्तोषी नहीं बन सकोगे। यदि तुम सांसारिक भयोंसे डरोगे तो तुम्हारे मनमें ईश्वरका डर नहीं समा सकेगा। यदि तुम दूसरोंकी आशा रखोगे तो ईश्वरकी आशा निष्फल होगी।
—अबु उस्मान

आशा ही वह मधुमक्खिका है जो बिना फूलोंके शहद बनाती है।
—इंगरसोल

नरकके बीज बोकर स्वर्गकी आशा रखनेसे अधिक मूर्खता क्या होगी?
—इमर्सन

आशावादी

आशावादी हर कठिनाईमें अवसर देखता है निराशावादी हर अवसरमें कठिनाई देखता है।
—अज्ञात

आशिकी

सूरत पर आशिक होनेका अर्थ आपसे दुश्मनी करना समझ।
—अज्ञात

आश्रय

जो ईश्वरके सिवाय न किसीकी आशा रखता है न किसीका भय वास्तवमें वही ईश्वर पर निर्भर रहनेवाला है। —फ़ज़ल अयाज़

शैतानको छोड़कर खुदाका आश्रय लो। —[illegible]

आसक्ति

ईश्वरने कहा है—जो प्राणी संसार पर प्रेम रखता है उसके हृदयमेंसे मैं ईश्वर-स्मरण और उसके गुणगानमेंसे मिठास हर लेता हूँ। —मालिक दिनार

आसक्ति भय और चिन्ताकी जड़ है। —स्वामी रामतीर्थ

दुःखका मूल कारण आसक्ति है। —महाभारत

अनासक्तिका अर्थ प्रेमकी कमी नहीं जहाँ प्रेमका फल दुःख होता हुआ दिखाई दे वहाँ समझो कि आसक्ति है। —हरिभाऊ उपाध्याय

रास्तेको फूल इकट्ठे करनेके लिए ठिठको मत, बल्कि चलते रहो, क्योंकि फूल तुम्हारे तमाम रास्ते भर अपनेको खिलाते रहेंगे। —टैगोर

आसक्तिका राक्षस नष्ट कर दिया तो इच्छित वस्तुएँ तुम्हारी पूजा करने लगेंगी। —स्वामी रामतीर्थ

यहाँके सुन्दर कोमल और क़ीमती कपड़ों और स्वादिष्ट भोजनोंमें आसक्त रहनेवालेको स्वर्गीय वस्त्र-भोजनसे वंचित रह जाना पड़ेगा। —फ़ज़ल अयाज़

बुरेसे बुरा दुर्भाग्य मनकी मौत है संसारमें आसक्ति होना मनका मरना है। —हुसेन बसरी

जबतक लोक और लौकिक पदार्थोंमें आसक्ति रहेगी तबतक ईश्वरमें सच्ची आसक्ति न हो सकेगी। —जुन्नुन

आसुरी-वृत्ति

आसुरी-वृत्तिके खिलाफ़ युद्ध करनेसे इन्कार करना नामर्दी है। —गांधी

आँसू

ईश्वर कभी कभी अपने बच्चोंकी आँखोंको आँसुओंसे धोता है ताकि वे उसकी कुदरत और उसके आदेशोंको सही पढ़ सकें। —आस्कर

आहार

जिसे हवा, पानी और भोजनका परिमाण समझमें आ गया वह अपने शरीर पर जितना अधिकार रख सकता है उतना डाक्टर कभी नहीं रख सकता। —गांधी

हम पशुओंकी तरह पर न उतर आवें जिनका कि प्रधान आनन्द खाने और पीनेमें है। हमारे अन्दर एक अमर आत्मा है जो परम कल्याणके सिवाय किसीसे तृप्त नहीं होती। —ह्यूम

कोई इज़्ज़तदार आदमी खाते वक़्त बढ़कर नहीं खाता।
—कन्फ्यूशियस

शास्त्रोंसे तीन प्रकारका अन्न त्याज्य है : जिस अन्नमें रजोगुण बढ़ता है वह, जो अन्न गन्दी जगह तैयार किया गया हो वह और जिस अन्नसे दुष्ट मनुष्यका स्पर्श हो गया हो वह। —विवेकानन्द

आज्ञापालन

दुष्ट आदमी डरसे आज्ञापालन करते हैं, अच्छे आदमी प्रेमसे।
—अरस्तू

[इ]

इख़लाक़

अच्छा इख़लाक़ दौलतमें नहीं मिलते बल्कि दौलत अच्छा इख़लाक़में मिल जाया करती है। —सुकरात

इच्छा

इच्छासे दुःख आता है, इच्छासे भय आता है, जो इच्छाओंसे मुक्त है वह न दुःख जानता है न भय। —बुद्ध

इच्छापर विचारका शासन रहे। —सिसरो

इच्छा कभी तृप्त नहीं होती, किन्तु अगर कोई मनुष्य उसको त्याग दे तो वह उसी क्षण सम्पूर्णताको प्राप्त कर लेता है। —शोपेनहावर

जब तुझे किसी मामलेमें भलाई-बुराई न सूझ पड़े उस समय अपनी इच्छाका विरोध कर। —अज्ञात

हमारी इच्छाएँ जितनी ही कम हों उतने ही हम देवताओंके समान हैं। —सुकरात

इच्छा एक रोग है। —स्वामी रामतीर्थ

कुहरा पृथ्वीकी इच्छाकी तरह है वह उस सूरजको छिपा देता है जिसके लिए वह भिखारी है। —टैगोर

तुम अपनी इच्छाओंको जितना घटाओगे उतने ही परमात्माके निकट होगे। —सुकरात

जिस क्षण तुम इच्छासे ऊपर उठ जाओगे इच्छित वस्तु तुम्हारी तलाश करने लगती यही नियम है। —स्वामी रामतीर्थ

हमारी इच्छा जिन्दगीके महान कुहरे और भापको इन्द्रधनुषके रंग प्रदान करती है। —टैगोर

सांसारिक आकांक्षा रखकर कोई साधना न करे जो केवल प्रभुकी खोज करता है उसकी इच्छा पूर्ण हो जाती है। —रामदास

इच्छा-शक्ति

अपनी प्रबल इच्छा-शक्तिसे कोई कब क्या बन जायेगा कह नहीं सकते। —पतारिष

महान् आत्माओंकी इच्छा-शक्तियाँ होती हैं, दुर्बल आत्माओंकी सिर्फ इच्छाएँ। —चीनी कहावत

जो लोग इतिहासके मज़मून बनते हैं उन्हें उसके लिखनेकी फ़ुर्सत नहीं होती। —मैटर्निच

इत्तिफ़ाक

जिसे लोग इत्तिफ़ाक कहते हैं वह खुदाकी मुबारिक कारसाज़ी है। —शेली

इन्द्रिय-निग्रह

जहाँ बुद्धि और भावनाका मेल नहीं बैठता वहाँ इन्द्रिय-निग्रहका अभाव है। —विनोबा

जैसे कछुआ अपने सब अंगोंको समेट लेता है, उसी प्रकार जब मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको विषयोंमेंसे खींच लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है। —महाभारत

इच्छाकी घोड़ीकी रस्सीको ढील देकर उसे चाहे जहाँ जाने देनेके लिए अधिक सामर्थ्यकी ज़रूरत नहीं यह तो कोई भी कर सकता है, मगर रस्सी खींचकर उसे थाम रखनेमें समर्थ है। —विवेकानन्द

इन्द्रियाँ

इन्द्रियोंको वशमें करना बुध पुरुषका काम है, उसके वश हो जाना मूर्खका। —एपिक्टेटस

इन्सान

इन्सान जब हैवान बन जाता है उस वक़्त वह हैवानसे बदतर होता है। —टैगोर

इबादत

आदत और इबादत एक साथ नहीं रह सकतीं अगर तू इबादत करना चाहता है तो आदतका त्याग कर दे। —हुज्वेरी

इरादा

हम अपने उत्तमतर कर्मों तकसे अक्सर शर्मिन्दा हो जायँ अगर दुनिया सिर्फ उन इरादोंको देख सके जिनकी प्रेरणासे वे किये गये थे।

—रान्दे

आदमी कृतियोंपर विचार करता है लेकिन ईश्वर इरादोंको तोलता है।

—अज्ञात

इलाज

सूरज-तले हर बेहूदगीका इलाज या तो है या नहीं; अगर इलाज है तो उसका पता लगानेकी कोशिश करो अगर नहीं है तो उसको पता मिटानेकी कोशिश करो।

—अज्ञात

समय वह जड़ी है जो तमाम रोगोंका इलाज कर देती है।

—फ्रैंकलिन

इहलोक

इस दुनियामें भुगतना अच्छा है बजाय इसके कि हमें अगली दुनियामें कष्ट भोगना पड़े।

—ह० मुहम्मद

[ई]

ईज़ा

ईज़ाओंको पानीपर और मेहरबानियोंको संगमरमर पर लिखो।

—प्लेटो

ईद

ईद नहीं तो जुमा।

—अज्ञात

ईमान

ईमान क्या है? सब्र करना और दूसरोंकी भलाई करना।

—मुहम्मद

अगर मोमिन (ईमानवाला) होना चाहता है तो अपने पड़ोसीका भला कर और अगर मुसलिम होना चाहता है तो जो कुछ अपने लिए अच्छा समझता है वही सबके लिए अच्छा समझ। —मुहम्मद

ईमानदार

ईमानदार आदमीका सोचना व्यापक हमेशा न्यायपूर्ण होता है।

—रूसो

ईमानदार होना भी ज़माना दस हज़ारमें एक होना है।

—शेक्सपियर

ईमानदार मनुष्य ईश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है। —फ्लैचर

आदमी पहले ईमानदार और नेक बने, और बादमें तहज़ीब और नज़ाकतोंकी पालिश चढ़ाले। —कन्फ्यूशियस

ईमानदार आदमी ईश्वरकी सर्वोत्कृष्ट कृति है। —पोप

ईश-कृपा

जब सज्जनोंको असह्य कष्ट हो तो समझना चाहिए कि ईश्वर शीघ्र ही उन पर कृपा करनेवाला है। —माधव

ईश्वरकी कृपाके बिना मनुष्यके प्रयत्नसे कुछ भी नहीं मिल सकता।

—तामसीस

ईश्वरने कहा है—मैं अपनी स्वाभाविक करुणासे मनुष्यको उसकी इच्छासे भी अधिक देता हूँ। —आरिफ

ईश-चिन्तन

जिस मुहूर्तमें या क्षणमें ईश्वरका चिन्तन न किया उसे महाहानि समझो, उसे महाछिद्र मानो और वही अन्धता और मूर्खता है। —मार्कण्डेय

जितनी बार साँस लेते हो उससे अधिक बार ईश्वर-चिंतन करो।
—एपिक्टेटस

ईश-प्राप्ति

जबतक कोई शख्स 'अल्लाह हो! अल्लाह हो! हे भगवन्! हे भगवन्!' चिल्लाता है समझ जाओ उसे ईश्वर नहीं मिला, जो उसे पा लेता है चुप और शांत हो जाता है। —रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान उपासना और कर्म ये ईश्वर प्राप्तिके तीन विभिन्न मार्ग नहीं हैं—ये तीनों मिलकर एक मार्ग है। —गांधी

ईश्वर-प्राप्तिके लिए मुझे अपनी अनासक्ति ही अच्छी लगती है। इसमें सब कुछ आ जाता है। —गांधी

ईश-प्रेम

जहाँ ईश्वरके प्रति सबसे ज्यादा प्रेम है वहाँ सबसे सच्ची और सबसे बड़ी दानशीलता होगी। —मूरे

ईश्वर पर प्रेम करना और उसके बन्दोंकी सेवा करना इसके सिवाय सब फिजूल है। —[illegible]

ईश-दर्शन

जबतक कामिनी और कंचनका मोह नहीं छूट जाता ईश्वरके दर्शन नहीं हो सकते। —रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके दर्शन तब होते हैं जब मन बिल्कुल शान्त हो जाता है।
—रामकृष्ण परमहंस

मैंने उसे इसी तरह देखा है जिस तरह कि [illegible] बालक [illegible] पालनेमें अपनी आँख खोलता है और तब मुसकराता है फिर सो जाता है। —[illegible]

जबतक तुम्हारा अहंकार भी विद्यमान है ईश्वरका दर्शन नहीं

हो सकता इसलिए अपनी छोटी-छोटी इच्छाओंको पूरी कर ले, और सम्यक विचार और विवेक द्वारा बड़ी-बड़ी इच्छाओंका त्याग कर दे।

—रामकृष्ण परमहंस

जिसके चित्तमें तरंगें उठती ही रहती हैं वह सत्यका दर्शन कैसे कर सकता है। चित्तमें तरंगका उठना समुद्रके तूफान जैसा है। तूफानमें जो तूफानपर काबू रख सकता है वह सलामत रहता है। ऐसे ही चित्तकी अशांतिमें जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है।

—महात्मा गांधी

ईश्वर

जब तक हम ईश्वरके कानूनपर काम करते हैं, वह हमारी मदद करेगा। जब हम अपने कानूनोंपर काम करनेकी कोशिश करते हैं, तो वह असफलता देकर हमें सिखाता है।

—टी एल वॉसवर

तपस्वियो, 'उस'से डरो तब फिर तुम्हें किसी चीजसे न डरना पड़ेगा। 'उस'की सेवामें तुम अपना आनन्द बना लो तुम्हारी आवश्यकताओंकी पूर्ति करना 'उस'का काम होगा।

—अज्ञात

ईश्वर न दूर है न दुर्लभ है महाबोधमयी अपना आत्मा ही ईश्वर है।

—अज्ञात

ईश्वर अन्तरात्मा ही है।

—गांधी

मेरा ईश्वर तो मेरा सत्य और प्रेम है। नीति और सदाचार ईश्वर है निर्भयता ईश्वर है।

—गांधी

ईश्वर ही एकमात्र इच्छा-रहित है। मानवीय सद्गुणोंमें वही सर्वोत्तम और दैविक है जिसमें आवश्यकता कम-से-कम है।

—सुकरात

केवल शास्त्र पढ़कर ईश्वरकी व्याख्या करना ऐसा है जैसा बनारस शहरको सिर्फ नक्शेमें देखकर किसीको उसका विवरण सुनाना।

—रामकृष्ण परमहंस

जो ईश्वरका कोप पहिचानता है वह कोपरहित होता है। जो ईश्वरकी क्षमा पहिचानता है वह क्षमावान् होता है। —विनोबा

ईश्वरसे प्रेम करो, वह तुम्हारे साथ रहेगा। ईश्वराज्ञा मानो, वह तुमपर अपने महत्तम राज रोशन कर देगा। —रॉबर्टसन

ईश्वर कल्पवृक्ष है, जो उसके समक्ष कहता है—'हे प्रभो, मेरे पास कुछ नहीं है'—उसे सचमुच कुछ नहीं मिलता, लेकिन जो कहता है—'हे भगवन्, तूने मुझे सब कुछ दिया है'—उसे सब कुछ मिल जाता है। —रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके दो निवास स्थान हैं—एक बैकुण्ठमें और दूसरा नम्र और कृतज्ञ हृदयमें। —आइज़क वाल्टन

ईश्वरके रहस्यको तू तभी समझ सकेगा जबकि अपने दिलको साफ़ बना लेगा। —रूमी

हवनकी सामग्री भी ब्रह्म है। घी भी ब्रह्म है, आग भी ब्रह्म है, हवन करनेवाला भी ब्रह्म है और जो आदमी इस ब्रह्म-कर्ममें लगा हुआ है वह ब्रह्म हो को पहुँचता है। —गीता

शारीरिक श्रम ज़्यादा करो। सब काम करनेमें ईश्वरके दर्शन करो क्योंकि ईश्वर सबमें भरा है। —गांधी

कोई कहते हैं 'ईश्वर अज्ञेय है'। अगर 'अज्ञेय' है तो 'है' किस परसे? अगर 'है' तो 'अज्ञेय' कैसा? —अज्ञात

ईश्वर लोगोंको गहरे पानीमें डुबानेके लिए नहीं—साफ़ करनेके लिए लाता है। —औघे

सच ईश्वर क्या है? ग़रीबकी सेवा। —गांधी

ईश्वर भौतिक सृष्टिका सूत्रधार, नैतिकताका अनुमन्ता, भाविकोंका भर्ता, निष्कामियोंका मोक्ष और भक्तोंका महेश्वर है। —विनोबा

जब तक कोई अपना सब न छोड़े ईश्वरको नहीं पा सकता, क्योंकि ईश्वर सम्पूर्ण आत्मा है। —रामकृष्ण परमहंस

ईश्वरके नाम तो अनेक हैं, लेकिन एक ही नाम हूँ तो वह है सत्-सत्य। इसलिए सत्य ही ईश्वर है। —गांधी

मनुष्य जिसका ध्यान करता है, उसके मार्फत ईश्वरको निश्चित देखता है। —गांधी

जो मनुष्य ईश्वरसे डरता है उसके कामोंका फल अच्छा हुआ करता है और ईश्वर उसे प्रत्येक बुराई से बचाता है।

—अबुल-फ़ज़ल-दुर्रानी

अल्लाह कहता है—कि मैं ऊपर या नीचे, ज़मीनमें या आसमानमें या अर्शपर कहीं नहीं समा सकता, पर मैं मोमिन (विश्वासी भक्त) के दिलमें रहता हूँ, जो मुझे ढूँढ़ना चाहे वहीं ढूँढ़ ले। —मुहम्मद

तू अल्लाहको मख़लूक़ यानी दुनियासे अलग मत देख और न मख़लूक़ (आदमियों, जानवरों और सब चीज़ों) को अल्लाहके सिवा किसी दूसरे रूपमें समझ। —सूफ़ी मुहीउद्दीन इब्न

अगर तुम ईश्वरको देखना चाहते हो, तो तुम्हें ईश्वर बन जाना पड़ेगा। —[illegible]

जो मुझे (ईश्वरको) सब जगह और सब चीज़ोंको मेरे अन्दर देखता है वह न कभी मुझसे अलग होता है और न मैं उससे अलग होता हूँ। जो आदमी एक दिल होकर सब जानदारोंके अन्दर सबके घटमें रहनेवाले ईश्वरकी पूजा करता है वह योगी चाहे कहीं भी रहे ईश्वरके अन्दर है। —गीता

ईश्वर हमको कभी नहीं भूलता, हम उसको भूलते हैं यही सबसे दुःख है। —गांधी

मैं हर मिज़ाजवालोंका मिज़ाज हूँ, मैं ही आदमीके अन्दर ईमान हूँ, कभी मैं बादशाहोंका ताज होता हूँ, कभी होशियारोंकी होशियारी और कभी मुफ़लिसोंकी मुफ़लिसी। —मौलाना रूमीकी मसनवी

जो अपने सब काम ईश्वरके ऊपर छोड़कर बे-लगाव होकर काम करता है उसे पाप नहीं लगता। —गीता

जो अल्लाहपर तवक्कुल करता है (सब कुछ उसीपर छोड़ देता है) उसके लिए अल्लाह काफ़ी है। —कुरान

सन्तोंकी वाणी सुनो, शास्त्र पढ़ो, विद्वान् हो लो, लेकिन अगर ईश्वरको हृदयमें स्थान नहीं दिया तो कुछ नहीं किया। —गांधी

मैं पानी जैसी चीज़ोंमें रस हूँ, सूरज और चाँदकी रोशनी हूँ, वेदोंमें 'ॐ' हूँ, आकाशमें आवाज़ हूँ, लोगोंमें उनकी हिम्मत हूँ, इन्सानमें पुरुष हूँ, आगमें उसकी चमक हूँ, तपस्वियोंका तप हूँ और सब जानदारोंकी जान हूँ। —कृष्ण

अगर मुझे यह विश्वास हो जाता कि मैं हिमालयकी किसी गुफामें ईश्वरको पा सकता हूँ, तो मैं तुरन्त वहाँ चल देता। पर मैं जानता हूँ कि मैं इस मनुष्यजातिको छोड़कर उसे और कहीं नहीं पा सकता।

—गांधी

ईश्वर-कृपा उनपर होती है जिनके दिमाग़ साफ़ हैं और हाथ मज़बूत। —वार्ड बीचर

जिसने यह समझा कि ईश्वर नहीं जाना जा सकता वही जानता है उसे जाननेका दावा करनेवाले असलमें उसे नहीं जानते उसे वे ही जानते हैं जो उसे जाननेका दावा नहीं करते। —सामवेद

'वह मेरे दिलमें है और मेरा दिल उसके हाथमें है जिस तरह आइना मेरे हाथमें है और मैं आइनेमें हूँ। —एक सूफ़ी

वह आप ही प्याला है, आप ही कुम्हार है आप ही प्यालेकी मिट्टी है और आप ही इस प्यालेसे पीनेवाला है। वह ख़ुद आकर प्याला ख़रीदता है और ख़ुद ही प्यालेको तोड़कर चल देता है।

—एक सूफ़ी

ईश्वर हमारा आश्रय है, वही हमारा बल है और वही आपत्तिके समयमें हमारी रक्षा करता है। —बाइबिल

ईश्वर सत्य और नित्य यानी हक़ और लाज़वाल है, बाकी सब असत्य और अनित्य यानी बातिल और फ़ानी है, यह समझते हुए अपने सब फ़र्ज़ोंको पूरा करना उसकी 'पूजा' है। —गीता

वही सब कुछ जानता है और जो उसे जान जाता वह भी सब कुछ जानता है। —गीता

यह सभी उसका 'विश्वरूप' है। इसलिए आदमीको चाहिए कि दुनियाके सब प्राणियोंके साथ दोस्ती और मेल रखे (निर्वैर सर्वभूतेषु)। —गीता

आदमी सिर्फ़ 'आत्मयोग'के ज़रिये यानी अपने आपको क़ाबूमें करके और 'अनन्य भक्ति'के ज़रिये ही उसे जान सकता है, ठीक-ठीक देख सकता है और उसीमें लय होकर समा सकता है। —गीता

ईश्वर ही सत्य है, दुनिया माया है। —स्वामी रामतीर्थ

सब भूतोंके हृदय-प्रदेशमें रहनेवाला ईश्वर सब भूतोंको, अपनी मायासे यन्त्रपर चढ़े पुर्ज़ोंकी तरह चला रहा है। —गीता

ईश्वर सब लोगोंमें है, मगर सब लोग ईश्वरमें नहीं हैं और इसलिए वे दुःखी हैं। —स्वामी रामकृष्ण

ईश्वर ही ईश्वरको समझ सकता है। —डॉक्टर यंग

ईश्वर आत्माकी दुलहिन या दूल्हा है। —एमर्सन

मानवजातिकी सेवाके द्वारा ही ईश्वरके साक्षात्कारका प्रयत्न मैं कर रहा हूँ, क्योंकि मैं जानता हूँ कि ईश्वर न तो स्वर्गमें है और न पातालमें बल्कि हर एकके हृदयमें है। —गांधी

न मैं कैलासमें रहता हूँ न वैकुण्ठमें, मेरा वास भक्तोंके हृदयमें है। —शिवस्तोत्र

जैसा मेरा हृदय है, वैसा ही मेरा ईश्वर है। —हूबर

ईश्वर-स्मरण

अखंड ईश्वर-स्मरण माने अखंड कर्तव्यजागृति। —विनोबा

ईश्वर-शरणता

ईश्वर-शरणताकी मूर्ति फलका त्याग। —विनोबा

ईश-विमुख

धाममें पड़े हुए होनेपर भी ईश्वर-विमुख मनुष्योंको यमका डंडा खानी होनेसे न बचाता। —रामसतरी

ईश्वरार्पण

मनुष्य कब ईश्वरार्पण हो सकता है? जब कि वह अपने आराम—अपने हर एक कामको बिलकुल मूक भाव सर्वभावसे उसका आसरा ले ले और उसके सिवा किसी दूसरेसे न तो आशा रखे, न सम्बन्ध रखे। —कुरान

ईश्वरेच्छा

ईश्वरकी मंशाको इस तरह पूरा कर मानो वह तेरी ही मंशा हो और वह तेरी मंशाको इस तरह पूरी करेगा मानो कि वह उसकी ही मंशा हो। —रब्बी

ईश-समान

जिसके दिलमें स्त्रीकी आँखोंके तीरोंने असर नहीं किया और क्रोध-की काली रातने आ आफत रहा लोभके फंदेमें जिसने अपना गला नहीं बँधने दिया वह आदमी भगवान्‌के समान है। वह गुण मानवमें नहीं, ईश कृपासे मिलता है। —भागवत

ईश-साक्षात्कार

यह नहीं हो सकता कि तुम दुनियाके मज़े ले सको, कि तुम तुच्छ निकृष्ट कामनाएं, सभी सांसारिक इन्द्रियभोगोंके मज़े भी लेते रहो और ईश-साक्षात्कारके भी हकदार बन सको। —स्वामी रामतीर्थ

मुझे अपने परमात्माकी प्राप्ति इसी जन्ममें करनी है। हाँ मैं उसे तीन दिनमें प्राप्त कर लूँगा नहीं, उसके नामको सिर्फ एक बार लेनेसे ही मैं उसे अपने तक खींच लूँगा,—ऐसे उत्कट प्रेमसे परमात्मा तुरन्त खिंचा चला आता है और उसकी अनुभूति हो जाती है मन्द विश्वास प्रेमियोंको अगर वह मिला भी तो युगोंके बाद मिलता है।

—रामकृष्ण परमहंस

ईर्ष्या

ईर्ष्या करनेवालेके लिए ईर्ष्याकी सजा ही काफी है, क्योंकि उसके दुश्मन उसे छोड़ भी दें तो भी उसकी ईर्ष्या ही उसका सर्वनाश कर देगी।

—हिक्मतुनर

सच पूछो तो ईर्ष्याका तात्पर्य यही है कि ईर्ष्यावान् जिसकी ईर्ष्या करता है उसको अपनेसे बड़ा मानता है।

—वाम टायर

ईर्ष्या चारों ओरसे दूसरोंकी कीर्तिके प्रकाश-मण्डलसे घिरी रहती है जिसके भीतर वह बिच्छूकी तरह जो ज्वालासे घिर गया हो अपनेको आप ही डंक मारती हुई मर मिटती है।

—सुल्मन

लक्ष्मी ईर्ष्या करनेवालेके पास नहीं रह सकती वह उसकी अपनी बड़ी बहन (दरिद्रता) के डरके मारे भगी जायेगी।

—हिक्मतुनर

यह एक जो अकेला है उसे उन करोड़ोंपर रश्क करनेकी क्या जरूरत है जो तारागणमें बेशुमार हैं!

—रैमार

[उ]

उच्च

उच्च आदमी सत्कर्मोंका विचार करता है, तुच्छ आदमी आरामका; उच्च आदमी नियमकी पाबन्दियोंका विचार करता है, तुच्छ आदमी उन मेहरबानियोंका जो उसे प्राप्त हो सकती हैं। —कन्फ्यूशियस

उच्चता

उच्चपद तक टेढ़ी मेढ़ी सीढ़ीके बग़ैर नहीं पहुँचा जा सकता।
—लार्ड बेकन

उजड्डपन

कोई हो और कहीं हो, वह हमेशा ग़लती पर है अगर वह उजड्डपनसे पेश आता है। —मौरिस बेरिंग

निश्चय कर लो कि अपने हृदयकी नेकी और दयालुताको बाहरी उजड्डपनके पर्देमें कभी न छिपाओगे। —अज्ञात

उत्कटता

साधन अल्प भले ही हों परन्तु उत्कटता पार देगी। —विनोबा

उत्कर्ष

समाजका महान् उत्कर्ष व्यक्तिगत चारित्र्यमें है। —चैनिंग

उत्कृष्टता

बुरा काम करना अधमाचरण है बिना ख़तरा उठाये अच्छा काम करना साधारण बात है लेकिन उत्कृष्ट मनुष्य वही है जो कि महान् और नेक कामोंको, अपना सब कुछ खोकर भी कर दिखाता है।
—प्लुटार्क

उदार मनवाले विभिन्न धर्मोंमें सत्य देखते हैं; संकीर्ण मनवाले सिर्फ़ फ़र्क़ देखते हैं। —चीनी कहावत

जिसके पास जो है उसीसे उदार नहीं है वो वह यह सोचकर कि ज़्यादा मिलने पर उदार बनूँगा, अपने आपको सिर्फ़ धोखा देता है। —प्युमर

जो वास्तवमें उदार है वही वास्तवमें ज्ञानी है और वह जो कि दूसरोंसे प्रेम नहीं करता बरकतहीन ज़िंदगी बसर करता है। —राम

केवल उदार हृदयवाले सच्चे मित्र हो सकते हैं। नीच और कायर मनुष्य सच्ची मित्रताको नहीं जानता। —चार्ल्स किंग्सले

उदारता

उदारता अधिक देनेमें नहीं बल्कि समझदारीसे देनेमें है। —मॅकलिन

जलप्रपात गाता है "मैं खुशीमें अपना सारा पानी देता हूँ यद्यपि प्यासेके लिए इसका ज़रा-सा ही काफ़ी है।" —टैगोर

उदारताके समान सद्गुण नहीं है और कृपणताके समान कोई अवगुण नहीं है। —प्रसाद

उदार आदमी जब तक जीता है आनन्दसे जीता है; और तंग-दिलवाला ज़िन्दगी भर दुःखी रहता है। —हैम-बिन-हस ग़नीम

जब कि सुन्दर कल्पनाएँ हरा रहती हैं तब मेरी सारी सम्पत्ति औरोंके लिए होती है। पर जब मैं धनहीन हो जाता हूँ तो उनकी कल्पना-का पात्र नहीं बना करता। —मस-कुफ़्तनामा उम हिन्दी

उद्यम

अपने अमूल्य समयकी एक एक घड़ी उद्यममें गुज़ारनी चाहिए। यही आनन्द है। इसमें कोई क्षण ऐसा नहीं रह जाता जब कि हमें पछतावा या सोच करना पड़े। —एमर्सन

एक उद्यमी मज़दूर यह नहीं समझता कि उसका उद्यम उसे उस महान् मज़दूरके कितना नज़दीक पहुँचाता है जो रात दिन व्यस्त रहता है।
—ह्विटमैन

शरीरको बचानेके लिए बहुत उद्यम करता हूँ, आत्माको पहचाननेके लिए इतना करता हूँ क्या ? —गांधी

उद्योग

शारीरिक उद्योग करना मनुष्यका धर्म है। जो उद्योग नहीं करता वह चोरीका अन्न खाता है। —गांधी

उद्योग प्रत्यक्ष है और भाग्य अनुमान है, अनुमानकी अपेक्षा प्रत्यक्षका महत्त्व अधिक है। —गुरु वशिष्ठ

अन्तःकरणकी पवित्रता दृढ़निश्चय और धीर बुद्धि इतनी ही पूँजीसे उद्योग शुरू कर देना चाहिए। —विवेकानन्द

उद्योग तो करना ही चाहिए। फल उसी तरह मिलेगा। जिस तरह कि उस बिल्लीको मिलता है जिसके आगे गाय नहीं है मगर दूध रोज़ पीती है। —अज्ञात

उद्योग न करनेवाले दरिद्री मनुष्यपर हमेशा संकट पड़ते रहते हैं।
—अज्ञात

सतत उद्योग करनेवाला अवश्य सुख प्राप्त करता है। —महाभारत

सतत उद्योग लक्ष्मीका लाभका और कल्याणका मूल है। —अज्ञात

उद्योग ही उत्कर्ष है। —अज्ञात

उद्धार

सम्पूर्ण भारतके उद्धारका भार बिना कारण सिर पर मत लो। अपना निजका ही उद्धार करो। इतना भार काफ़ी है। सब कुछ अपने व्यक्तित्व पर ही लागू करना चाहिए। हम स्वयं ही भारतवर्ष हैं यह बात माननेमें आत्माका कल्याण है। तुम्हारा उद्धार ही भारतवर्षका उद्धार है। और सब व्यर्थ है ढोंग है। तुमसे सच्चे आत्म-सेवका

इस उत्पन्न हो इसीमें तुम डूबे रहो। शेषकी चिन्ता तुमको और मुझको करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। दूसरोंकी चिन्ता करते करते कुछ हाथ न आयेगा। —गांधी

सत्कर्मीको बहुत ही यंत्रणाएँ सहनी पड़ती हैं परन्तु प्रभु उसे उन सबसे तार देता है। —बाइबिल

चतुर मनुष्यको चाहिए कि हर प्रकार करके दीन स्थितिसे अपना उद्धार करे। —अज्ञात

ज़मानेके उद्धार करनेवाले तुम कौन? क्या तुम अपना उद्धार कर चुके हो? —अज्ञात

जो स्वयं संसारकी वासनाओंमें मुग्ध है वह दूसरोंका उद्धार कैसे कर सकता है? —आचार्य विजयधर्म सूरि

उद्वेग

उद्वेग ज़रा भी न रखना चाहिए। 'जो होता है सो भलेके लिए' ऐसा समझकर धैर्य और शौर्यसे सन्तोषका सेवन करना चाहिए। इससे पहाड़ सरीखे संकट भी दूर हो जाते हैं। —अज्ञात

उधार

जिसे उधार लेना प्रिय लगता है उसे अदा करना अप्रिय लगता है। —अज्ञात

न उधार दो न लो; क्योंकि उधार देनेसे अक्सर पैसा और मित्र दोनों खो जाते हैं; और उधार लेनेसे किफ़ायतशारी कुंठित हो जाती है। —शेक्सपियर

उधार माँगना भीख माँगनेसे ज़्यादा अच्छा नहीं है। —लेसिंग

उधार लिया हुआ पैसा शीघ्र ही उसका मालिक हो जाता है। —अज्ञात

उन्नति

किसी भी राष्ट्रकी उन्नतिके रास्ते बाधा हो तो सत्य और अहिंसाका उसे आश्रय लेना चाहिए। —गांधी

आत्माको पहिचाननेसे उसका ध्यान धरनेसे और उसके गुणोंका अनुसरण करनेसे मनुष्य ऊँचे जाता है। उलटा करनेसे नीचे जाता है।
—गांधी

मुझे अपने गुणोंपर चढ़ना चाहिए, न कि दूसरोंकी कृपापर। मैं गुण मुझे चढ़ायेंगे उसकी कृपा उसे चढ़ायेगी। —प्रसाद

जो करेगा सो भरेगा। —प्रसाद

चरित्र-सम्बन्धी उन्नतिके माने हैं 'छुरी'से 'कुर्सियों' सिरानेको और बढ़ना। —हार्टले

अगर एक मनुष्यकी आध्यात्मिक उन्नति होती है तो उसके साथ सारी दुनियाकी उन्नति होती है, और एक व्यक्तिका पतन होता है तो संसारका भी पतन होता है। —गांधी

उपकार

दुर्जन भी अपने उपकारीके उपस्थित होने पर उसका सत्कार करता है फिर सज्जनका क्या कहना! —कालिदास

नीच मनुष्यके प्रति किया गया उपकार भी अपकारका फल देता है। साँपको दूध पिलानेसे केवल विषवर्धन ही होता है। —प्रसाद

जिसने पहले तुम्हारा उपकार किया हो वह यदि बड़ा अपराध करे तो भी उसके उपकारको याद करके उसका अपराध क्षमा करना।
—महाभारत

कारूँ बादशाहको हज़रत मूसाने उपदेश किया कि भलाई वैसी ही गुप्त रीतिसे कर जैसे मालिकने तेरे साथ की है। उदारता वही है जिसमें निर्धारका मेल न हो तभी उसका फल मिलता है। सच्चे उपकारके वेलकी डालियाँ आकाशके परे पहुँचती हैं। —सादी

जो स्वयं संसारकी वासनाओंमें लिप्त है वह दूसरोंका उपकार नहीं कर सकता। —प्रसाद

महान् पुरुष जो उपकार करते हैं उसका बदला नहीं चाहते। भला जल बरसानेवाले बादलोंका बदला दुनिया कैसे चुका सकती है।

—तिरुवल्लुवर

वृक्ष अपने सिर पर गरमी सह लेता है परन्तु अपनी छायासे औरोंको गरमीसे बचाता है। —कालिदास

हार्दिक उपकारसे बढ़कर कोई चीज़ न तो इस संसारमें मिल सकती है न स्वर्गमें। —तिरुवल्लुवर

उपदेश

अपनी ज़बानकी अपेक्षा अपने जीवनसे तुम बेहतर उपदेश दे सकते हो। —सुकरात

कुछ आदमी मस्तिष्कसे उपदेश देकर कानोंकी बातको पा जाते हैं। दुनियेकी शक्ति बड़ी नाज़ुक चीज़ है वह शीघ्र ही थक जाती और चूक जाती है। —स्पूरर

अपने उपदेशोंमें पहिले तार्किकता ला और फिर गर्मजोशी; बिना तार्किकताके गर्मजोशी उस दरख्तके मानिन्द है जिसमें पत्तियाँ और कलियाँ तो हैं मगर जड़ नहीं। —हैरडन

मुझे वह गम्भीर उपदेशक पसन्द है जो मेरे लिए बोलता है न कि अपने लिए; जिसे मेरी मुक्ति वांछनीय है न कि अपनी झूठी शान। —मैसीलन

जो उपदेश आत्मासे निकलता है आत्मा पर सबसे ज़्यादा कारगर होता है। —फुलर

'परोपदेशे पाण्डित्यं' से ही नैतिक दरिद्रता होती है।

—स्वामी रामतीर्थ

ममतात्यागसे ज्ञान बढ़ाये बग़ैर, अभिलाषाओंसे विरक्ति जगाये बिना लोगोंको उनका उपदेश देना कामीको हरिकथा सुनाना ऐसा है जैसे पत्थर पर बीज बोकर फल पानेकी उम्मीद रखना। —रामकृष्ण

उपदेश वह बाजा नहीं है जिसे सुनकर श्रोतागण एक दूसरेसे बातें करते और बजानेकी तारीफ करते हुए जायें, बल्कि वह जिसे सुनकर वे विचारपूर्ण और गम्भीर होकर जायें और जल्दीसे एकान्त चाहें।

—सिराय क्लैट

वह पैगम्बर है जो अपनी नसीहतोंपर खुद अमल करता है। मैं बीस आदमियोंको आसानीसे सिखा सकता हूँ कि क्या करना अच्छा है, लेकिन मेरी ही नसीहतपर अमल करनेवाले उन बीसमेंसे एक होना मुश्किल है।

—शेक्सपियर

हम उपदेश सुनते हैं मनभर, देते हैं टनभर, पर ग्रहण करते हैं कनभर।

—अज्ञात

अक्लमन्द आदमी नीतिका उपदेश समझदारको ही देता है।

—सफ़ी-बिन-मुसा-अल काज़ी

पेट भरेपर उपवासका उपदेश देना सरल है।—[illegible]

नीतिका उपदेश दो तो संक्षेपमें देना।

—होरेस

यदि धर्मके लोग उन उपदेशोंपर स्वयं अमल करें जो वे औरोंको देते हैं, तो दुनिया आजके सोमवारको ही स्वर्ग तुल्य हो जाय।

—मार-किंग

यह कितनी शर्मकी बात है कि हम मैले रहें और दूसरोंको साफ रहनेकी सलाह दें।

—गांधी

जिसे हर एक देता है पर विरला ही कोई लेता है ऐसी चीज क्या है? उपदेश सलाह।

—स्वामी रामतीर्थ

दूसरोंको उपदेश देनेके बजाय अगर कोई उस समय ईश्वरकी आराधना करे तो यही पर्याप्त उपदेश है। जो अपनेको स्वतन्त्र करने का प्रयास करता है वही सच्चा उपदेशक है।

—रामकृष्ण

मेरे उपदेश देनेमें ख़ास बात यह है कि मैं सख्त दिलको तोड़ता हूँ और टूटे हुए को जोड़ता हूँ।

—जॉन न्यूटन

धर्म और नीतिका उपदेश ऐसा ही देना चाहिए जिसे कीर्ति ऐश्वर्य और सद्गति प्राप्त हो। —रामायण

जिसने अपनेको समझ लिया वह दूसरोंको समझाने नहीं जायेगा। —धम्मपद

जो आदमी बिना आप पूरा हुए दूसरोंको उपदेश देता है वह पशुओंका भला करता है, पर जो आप पूरा होकर दूसरोंको शिक्षा नहीं देता उसके विषयमें भी यह कहा जा सकता है कि उसने पशुओंकी भक्ति दे दी। —जापान

आध घंटेसे ज्यादा उपदेश देनेके लिए आदमी या तो खुद फ़रिश्ता हो या सुननेके लिए फ़रिश्ते रक्खे। —हार्ट पीयर्स

ऐ उपदेशक, अगर तेरे पास दैविक प्रेरणाका बिल्ला नहीं है तो चाहे तू बोल बोलकर अपनी जान तक दे दे, मगर सब फ़िज़ूल जायेगा। —रामकृष्ण

अगर उपदेशक इस दुनियामें एक क़दम चलेगा तो उसके सुनने वाले दो चलेंगे। —सैसिल

लालची और धोखा-धुमा उपदेशक न बनो। —एमर्सन

सम्प्रदायोंमें जो सबसे छोटा है वही उपदेशकका काम करेगा। —हज़रत मुहम्मद

लोग पैग़म्बर उपदेशकको फ़रिश्तेकी तरह मानते हैं। हमारी या मान्यता है कि वह इन्सान नहीं। —प्रभात

उपद्रव

अगर तू आकस्मिक उपद्रवोंको स्थान देता है तो तू अपने तत्त्वज्ञान का कोई इस्तेमाल नहीं कर रहा। —शेक्सपियर

उपयोग

दूसरोंका उपकार कर देनेकी अभिलाषा अथवा उपयोगी होने दे। यही सच्चा आत्मसमर्पण या स्वार्थ-विस्मृति है। —प्लेटो

उपयोगी

जो अपने लिए उपयोगी नहीं वह किसीके लिए उपयोगी नहीं।
—डेनिस म्यालक

उलझन

सुलझानेके फंदेमें न पड़ो, खुद ही उलझ जाओगे। —शीलनाथ

उपवास

प्रकाश और तपके लिए उपवास महान् आदरणीय संस्था है।
—गांधी

अगर तू स्वस्थ शरीर चाहता है, तो उपवास और टहलनेका प्रयोग कर, अगर स्वस्थ आत्मा तो उपवास और प्रार्थनाका—टहलनेसे शरीर को व्यायाम मिलता है, प्रार्थनासे आत्माको व्यायाम मिलता है, उपवास दोनोंको शुद्ध करता है। —मवार्स

उपासक

ईश्वर पर श्रद्धा रखनेवाला काहिल, सुस्त, निकम्मा और निष्क्रिय नहीं रह सकता। अनन्त अखण्ड, अजस्र अनवरत चैतन्य शक्तिवाले ईश्वरका उपासक मन्द व जड़ कैसे हो सकता है!—हरिभाऊ उपाध्याय

उपसर्ग

आधि व्याधि उपाधि और समाधि यह उपसर्ग चतुष्टय है।
—विनोबा

उपहार

जिन उपहारोंकी बड़ी आस लगी होती है वे भेंट नहीं किये जाते अदा किये जाते हैं। —फ्रैंकलिन

वह मुझे सुन्दर उपहार देता है जो मुझे अपूर्व विचार सुझाता है।
—जूबी

उपहार लेना स्वतन्त्रता खोना है। —सादी

उपेक्षा

भौंकते कुत्तेको ढेला मारो तो वह और भी ज्यादा भौंकेगा उसकी तरफ़ ज़रा तवज्जह न दो तो वह चुप हो जायेगा। —अज्ञात

[ऊ]

ऊँचा

पहाड़ी सरीखा ऊँचा होना मुझे मुनासिब नहीं लगता; मेरी मिट्टी आस-पासकी ज़मीन पर फैल जाय इसीमें मुझे आनन्द है। —विनोबा

ऊँचाई

वह ऊँचाई ऊँचाई नहीं है जिसका आधार सचाई नहीं है।
—अज्ञात

[ऋ]

ऋषि

जिसको आत्मज्ञान मालूम है वह ऋषि है। —स्वामी रामतीर्थ

[ए]

एक

एक ही देवताकी आराधना करनी चाहिए—केशवकी या शिवकी, एक ही मित्र करना चाहिए—राजा या तपस्वी, एक ही जगह बसना चाहिये—नगरमें या वनमें, एकसे ही विवाह करना चाहिए—सुन्दरी नारीसे या कन्दरासे ।

—भर्तृहरि

एकभुक्त

एक वक्त खाना और सबके लिए पर्याप्त होता है इन्सानके लिए तो वह ज़रूर काफ़ी होना चाहिए । —डाक्टर थॉर्ने प्रर्टिस

एक भुक्त सदा रोग-मुक्त । —अज्ञात

एकाग्रता

अनिश्चितमना पुरुष भी मनको एकाग्र करके जब सामना करनेको खड़ा होता है तो आपत्तियोंका उछलता हुआ समुद्र भी दबकर बैठ जाता है ।

—विश्वसुन्दर

चित्तका एकाग्रता योगकी समाप्ति नहीं है । यहाँसे योगकी शुरुआत है ।

—विनोबा

यह एकाग्रताकी ही शक्ति थी जिसने नैपोलियनको यह विश्वास करा दिया कि 'भूतल-तले कुछ भी नामुमकिन नहीं है ।' —अज्ञात

अपने सामने एक ही साध्य रखना चाहिए । उस साध्यके सिद्ध होने तक दूसरी किसी बातकी तरफ नज़र नहीं देनी चाहिए । रात दिन सपने उसीके—उसीकी धुन रहे तभी सफलता मिलती है ।

—विवेकानन्द

जबतक आशा लगी हुई है तबतक एकाग्रता नहीं होती ।

—स्वामी रामतीर्थ

झूठ, कपट, चोरी व्यभिचार आदि दुराचारोंकी वृत्तियोंके नष्ट हुए बिना चित्तका एकाग्र होना कठिन है और चित्त एकाग्र हुए बिना ध्यान और समाधि भी कठिन है। —मनु

एकान्त

एकान्त अच्छी पाठशाला है परन्तु दुनिया सबसे अच्छी रंगशाला है। —जे डेरक

सच्चा एकान्त कब हो? जब कि ओछे और मित्र जीवनसे परे हो जाओ। —जुन्नुन

बहुत-कुछ अकेले रहना ही महान् आत्माओंका भाग्य है। —शोपेनहोर

अगर तू आलसी ही रहना चाहता है या जीवनके मोहमें पड़ा है तो जमीनमें एक गुफा बना ले, या आसमान पर सीढ़ी लगाकर चढ़ जा जिससे तू एकांतवासी बन जाय। —अबु-इस्माइल-हुम्यरी

जो एकान्तमें खुश रहता है वह या तो पशु है या देवता। —बेकन

बाहरी एकान्त वास्तविक एकान्त नहीं। मनमें चिन्ता और शंका-का प्रवेश न हो वही सच्चा एकान्त है। —मानिस

संस्कृति और महत्ताके तमाम रास्ते एकान्त कारावासकी ओर जाते हैं। —एमर्सन

निर्जनतामें निवास करके देख तेरा प्रेम निर्जनता पर है या प्रभु-पर? यदि एकान्त ही से प्रेम है तो वहाँसे इससे ही प्रेम भी उठ जायेगा और यदि ईश्वर पर प्रेम होगा तो पहाड़, वन बस्ती सब स्थानों पर वह बरकरार रहेगा। —हसन

सबको एकान्त मिलेगा यह जानकर मुझे प्रसन्नता होती है और रिक्त होने पर लोगोंका लेन-देन मच जायेगा यह जानकर मुझे दुःख होता है। लोग आ आकर मुझे बातोंमें फँसाते हैं यह मैं बिलकुल नहीं चाहता। —प्रकाश प्रसाद

[औ]

औलाद

किसी आदमीके पैदा होनेसे क्या अगर उसके पूत पूर्वजोंके नामपर गुज़रता रहे कि हम कैसी औलाद छोड़ जावें। —सर फ़िलिप सिडनी

औषधि

शरीरके लिए किसी औषधिकी ज़रूरत ही न हो, अगर खाया हुआ खाना हज़म हो जानेके बाद नया खाना खाया जाय। —तिरुवल्लुवर

तमाम औषधियोंमें सर्वोत्तम औषधियाँ विश्राम और उपवास हैं।
—फ्रैंकलिन

औरत

नेक आदमीके घरमें ख़राब औरत इसी दुनियामें उसके लिए नरक-तुल्य है। —सादी

उस मकानपर खुशीके दरवाज़े बन्द कर दो जिसमेंसे औरतकी आवाज़ बुलन्द स्वरोंमें निकलती हो। —सादी

[क]

कर्ज़

कर्ज़ वह मेहमान है जो एक बार आकर जानेका नाम नहीं लेता।
—प्रेमचन्द

ग़रीबी बदतर है मगर कर्ज़ा भयावह है। —अज्ञात

[औ]

औलाद

किसी आदमीके पैदा होनेसे क्या अगर उसके मृत पूर्वजोंको बराबर गुज़रता रहे कि हम कैसी औलाद छोड़ आये। —सर फिलिप सिडनी

औषधि

शरीरके लिए किसी औषधिकी ज़रूरत ही न हो, अगर खाया हुआ खाना हज़म हो जानेके बाद नया खाना खाया जाय। —तिरुवल्लुवर

तमाम औषधियोंमें सर्वोत्तम औषधियाँ विश्राम और उपवास हैं।

—फ्रैंकलिन

औरत

नेक आदमीके घरमें शरीफ़ औरत इसी दुनियामें उसके लिए बहिश्त है। —सादी

उस मकानपर सुखके दरवाज़े बन्द कर दो जिसमेंसे औरतकी आवाज़ बुलन्द स्वरोंमें निकलती हो। —सादी

[क]

कर्ज़

कर्ज़ वह मेहमान है जो एक बार आकर जानेका नाम नहीं लेता।

—प्रेमचन्द

शराबी कड़वी है मगर कर्ज़ी भयानक है। —अरब

भली भाँति अपने कर्तव्यका पालन करके सन्तुष्ट हो जाओ और दूसरोंको अपने विषयमें इच्छानुसार कहनेके लिए छोड़ दो।—पैथागोरस

छोटे-छोटे कामोंको यथार्थ रूपसे करना प्रसन्नताका आवश्यक भाग है। —फेबरे

कर्तव्य करते शरीरको भी जाने देना चाहिए। यह नीति है। परन्तु शक्तिसे बाहर कुछ उठा लेना और उसे कर्तव्य मानना राग है।

—गांधी

जब तुम कर्तव्यके आगे इच्छाका बलिदान करो तब लोगोंको अगर वे चाहें, हँसने दो; तुम्हें आनन्दित होनेके लिए अनंतकाल पड़ा है।

—थ्योडोर पार्कर

आदमीको अपने बड़े कर्तव्योंका भी पालन करना चाहिए, हमेशा अपने छोटोंका ही नहीं; क्योंकि जो अपने बड़े कर्तव्योंका पालन न करके सिर्फ छोटे कर्तव्योंका ही पालन किया करता है वह छोटा हो जाता है।

—अज्ञात

जो वर्तमान कर्तव्यके प्रति सूना है वह कपड़ेका एक धागा छोड़ता है और दोष उसे तब मालूम होगा जब कि वह शायद उसके कारणको भूल जायगा। —बीचर

उस कर्तव्यका पालन करो, जो तुम्हारे निकटतम है। —गेटे

कार्य बिगड़े या सुधरे इसकी मुझे क्या फ़िक्र! उस पर सब भार डालकर वह इशारा करे उधर जाना इतना ही मेरे बसमें है।

—विवेकानन्द

'कर्तव्य' और 'सौदे' में दिन-रातका अन्तर है। कर्तव्य बदलेकी या पुरस्कारकी अभिलाषा नहीं रखता; सौदा तो पूरा बल्कि अधिक बदला चाहता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

उस सितारेकी तरह जो बिना उतावली और बिना आराम धुरी पर घूमता है हर आदमी अपना काम निरन्तरतापूर्वक और यथाशक्ति करे।

—गेटे

कृति

अपनी कृति सरस हो अथवा अति फीकी किसको अच्छी नहीं लगती ? जो दूसरोंकी कृति सुनकर हर्षित होते हैं, ऐसे श्रेष्ठ पुरुष जगत्में बहुत नहीं हैं। —रामायण

कब्रोंको जाने दो, कृतियोंको जवाब देने दो। —नेपोलियन

हर आदमीको लगता है कि दुनियाकी तमाम सुन्दर भावनाएँ एक सुन्दर कृतिसे हल्की हैं। —बोविज

जो कर्तव्यसे बचता है, कामसे वंचित रहता है। —थ्योडोर पार्कर

मौजूदा वक्तके कर्तव्यका पालन करनेसे आनेवाले युगों तकका सुधार हो जाता है। —एमर्सन

बड़ा काम यह नहीं कि हम दूरकी धुँधली हकीकतको देखें बल्कि यह कि हम उस फ़र्ज़को बजावें जो नज़रके सामने है। —कार्लाइल

हर आदमी काममें संलग्न रहे, अपने स्वभावानुकूल सर्वोत्तम कार्यमें संलग्न रहे, और इस चेतनाके साथ मरे कि उसने हद दर्जे किया।

—सिडनी स्मिथ

कर्तव्यपालन

कर्तव्यपालन स्वभावतः आनन्दमें पुष्पित होता है।

—फिलिप्स ब्रुक्स

जिन्दगीमें कुछ नहीं जिससे मैं डरती होऊँ, सिवाय इसके कि मैं अपने सम्पूर्ण कर्तव्यको न जान पाऊँ न उसके पालन करनेमें असफल रहूँ। —मेरी क्वीन

जब आत्मा हर कर्तव्यका तुरन्त पालन करना चाहे तो उसे ईश्वरकी उपस्थितिका भान है। —बेकन

कर्ता

जो कर्ता संग-रहित अहंता-रहित धैर्यवान और उत्साही हो और सफलता विफलतामें हर्ष शोक न करे उसे सात्त्विक कर्ता कहते हैं।

—गीता

कायम कर्ता कौन ? मेरे कायम मैं ही कर्ता हूँ। दूसरे कायम मुझे परिचय नहीं है। —विनाम

अपनी इच्छासे अवसरके हाथकी गुड़िया बन जानेपर फिर क्यों किस लिए ? उसे जैसे नचाना होगा वैसे वह नचायेगा। मुख्य बात तो नाचनेकी है न ? जिसे हमेशा नाचनेको मिलेगा उसे और क्या चाहिए ? —गांधी

कथन

सोचो वही जो कुछ कहो वही जो तुम्हें कहना चाहिए। —फ्रांसीसी कहावत

जो कुछ कहना है उसको जहाँ तक हो सके, संक्षेपमें कहो, वरना पढ़नेवाला उसको छोड़ता जायेगा, और जहाँ तक हो सके सादा भाषामें कहो वरना वह उसका मतलब न समझेगा। —रस्किन

कपड़ा

कपड़ा अंगको ढकनेके लिए है। सर्दी-गर्मीसे उसकी रक्षा करनेके लिए है उसे सजानेके लिए नहीं है। —महात्मा गांधी

कपटी

उल्लूको देखकर मूर्ख ही झुकनेमें आ जाते हैं, चतुर लोग नहीं। मोर देखनेमें सुन्दर लगता है अमृत सरीखी मीठी बोली बोलता है मगर उसका आहार साँप है। —रामायण

कर्म

हर कर्म जहाँ मिले, आत्माको एक संक्षिप्त सबक (प्रवचन) सुनाती है। —हाथोर्न

हर आदमीको अपनी फ़ौजमें ऐसे खेलना होगा कि वह अपनी जगह पर बराबर डट न सकेगा। —गुलनामी

कमज़ोर

कमज़ोर होना दुखी होना है। —मिल्टन

कमज़ोरी

तीखे और कटु शब्द कमज़ोर पक्षकी निशानी है। —विक्टर ह्यूगो

कर्म

कर्म ज्ञानका मसाला है? ज्ञानाग्नि अखंड जलती रखनेके लिए कर्मरूप मसाला अखंड रखना चाहिए। —विनोबा

सूरज हमेशा रोशनी और गर्मी देता है। मगर जो सूरजसे भाग-कर गुफामें छिपे और अँधेरेमें डूबे, उसके लिए सूरज भी क्या करे? —गांधी

सचमुच, कर्मोंकी जगह ही कर्मफल भी उत्पन्न होते हैं। इसलिए जैसा फल चाहिए, वैसा कर्म कर। —अज्ञात

संसारमें कर्महीन मनुष्य न तो पुरुष है न स्त्री। —देवी रानी विदुला

हम अपनेको जानना कैसे सीखेंगे, विचारसे? कभी नहीं; सिर्फ कर्मसे अपना फ़र्ज़ पूरा करनेकी कोशिश कर, तभी तू जान पायेगा कि तेरे अन्दर क्या है। —गेटे

ईश्वर मनुष्यके अच्छे और बुरे कर्मोंके अनुसार फल देता है, जो कर्म करता है उसे ही फल मिलता है। —रामायण

कर्मके आरम्भमें ही उसके फलकी गुरुता-लाघवता अथवा उसके दोषको जो नहीं विचारता वह केवल बालक है। —रामायण

कर्म माने प्रत्यक्ष सेवा भक्ति माने सेवाभाव। —विनोबा

सर्वोच्च स्थितिमें जानेका कर्म ही एक उपाय है और वह जन्म एवं मुक्तिके पार भी रहता है। —अरविन्द घोष

कर्म करूँगा तो फल भी लूँगा—यह रजोगुण फल छोड़ूँगा तो कर्म भी छोड़ूँगा—यह तमोगुण दोनों एक ही हैं। —विनोबा

कर्मोंकी परिसमाप्ति ज्ञानमें और कर्मोंका मूल भक्ति अर्थात् सम्पूर्ण आत्मसमर्पणमें है। —अरविन्द घोष

दुपायों, चौपायों, अपने खेत, अपना मकान, अपनी दौलत अपना असबाब और हर चीज़को अपनी इच्छाके ख़िलाफ़ छोड़कर और सिर्फ़ अपने कर्मोंके साथ लिये यह जीव अच्छी या बुरी योनिमें जाता है। —अवस्ता

दुनियामें कर्म प्रधान है, जो जैसा करता है वैसा फल भोगता है। —रामायण

अच्छी तरह सोचना अक्लमन्दी है अच्छी योजना बनाना, और भी बड़ी अक्लमन्दी अच्छी तरह करना सर्वोत्तम और सबसे बड़ी अक्लमन्दी है। —ईरानी कहावत

अपनी करनी कभी निष्फल नहीं जाती सात समुद्र भी जावे जावे तो भी आगे आकर मिलती है। —कबीर

कम बोलना अच्छा है क्योंकि बोलना भी कर्म ही है। —विनोबा

किसी प्रयत्नसे उदास न होकर आत्मविश्वास न खोकर, अनवरत कार्यरत रहना ही तुम्हारा कर्तव्य है अगर यह किया तो इसके सुन्दर फल दिन दिन बढ़ते हुए प्रमाणमें तुम्हारी नज़र पड़ेंगे। —विवेकानन्द

कर्मकाण्ड

कर्मकाण्डसे मुक्ति नहीं मिलती। —स्वामी रामतीर्थ

कर्मठ

जैसे आप महान् विचारक हैं वैसे ही महान् करके दिखा देनेवाले बनें। —शेक्सपियर

कर्मठता

अपने धार्मिक मनन और अध्ययनके लिए नहीं, बल्कि भावनाओं-को सेनेके लिए नहीं, ज़िन्दगी तुझे काम करनेके लिए दी गई थी और तेरे कामोंसे ही तेरा मूल्य आँका जा सकता है। —फ़िक्टे

कर्मनाश

दुष्कर्मोंके नाशका सच्चा उपाय सद्विचार और सदाचार है।

—प्रसाद

कर्म गिन गिनकर नष्ट नहीं किये जाते, ज्ञानी तो एक साथ सबका नाश कर देता है। —प्रसाद

कर्मपाश

कर्मपाश अपने आप नहीं कट जाता, काटोगे तब कटेगा।

—रवीन्द्रनाथ

कर्मफल

तमाम शास्त्र यह ही सबक सिखाते हैं कि जैसा करोगे वैसा भरोगे। —प्रसाद

दिमागमें जो रखा होगा उसमेंसे वही निकाल सकोगे। —प्रसाद

कर्मफलको इच्छा करनेवाले कृपण हैं। —गीता

जो कोई जिस हालतमें रहनेका पात्र हो गया। उसकी वह हालत न होने देनेकी ताकत किसीमें नहीं है। —विवेकानन्द

कर्मफलत्याग

ध्यानकी अपेक्षा कर्मफलत्याग श्रेष्ठ कहा है, क्योंकि ध्यानमें भी सूक्ष्म स्वार्थ है। —विनोबा

कर्मभोग

कोई किसीको सुख-दुःख देनेवाला नहीं है, सब अपने किये हुए कर्मोंका फल भोगते हैं। —रामायण

कर्मवीर

घबराहट पर देनेवाली चोट लगानेके बदले मैदान एक दमसे पीछे हट जाता है; कर्मवीरकी विघ्नसहनता ठीक इसी तरहकी होती है।

—विश्वसुधार

कर्मयोगी

कर्मयोगी सूर्यकी तरह सतत कर्म करता है। संन्यासी सूर्यकी तरह ज़रा भी कर्म नहीं करता। —विनोबा

कर्मयोगी—सफ़ेद दूधकी काली गाय, संन्यासी—सफ़ेद दूधकी सफ़ेद गाय। —विनोबा

अगर दो कर्मयोगियोंमें-से एकको किसी पाठशालाका संचालन करने और दूसरेको किसी सड़कपर पत्थर कूटने भेजा जाय, तो उनको अपना काम बदलनेकी कोई इच्छा न होगी। —गांधी

कर्मरेख

ऐसा विचार करके अफ़सोस मत करो कि विधाताका लिखा हुआ मिट नहीं सकता। —रामतीर्थ

कर्मण्यता

सौ वर्षके आलसी और हीनवीर्य जीवनकी अपेक्षा एक दिनकी दृढ़ कर्मण्यता कहीं अच्छी है। —धम्मपद

कमाई

काम किये बिना कमाई नहीं होने की। —कहावत

अपने हाथकी कमाईका भरोसा रखो मीरासका नहीं। मसल है कि एक बाप दस बेटोंका पालन कर सकता है पर दस बेटे एक बापका पालन नहीं कर सकते। —पिथागोरस

धन-दौलत कमानेके पीछे क्यों पड़े हुए हो? तुम्हारी ज़रूरियातको पूरा करने और तुम्हारी देख-भाल रखनेका भार तो उस ईश्वर ही ने ले रखा है। यदि उसका भरोसा करोगे तो सब तरहसे शान्ति और सुख पाओगे। —जुनैद

कमाल

कमाल सस्ता नहीं है और जो सस्ता है वह कमाल नहीं है। —ऑरसन

अगर कोई आदमी अपने पड़ोसीसे बहतर किताब लिख सकता है या बहतर उपदेश दे सकता है, या बहतर चूहेदानी बना सकता है, तो चाहे वह अपना घर जंगलोंमें बना ले, दुनिया उसके दरवाज़ेपर बराबर हाज़िरी बजाती रहेगी। —एमर्सन

कमी

जो आदमियोंकी कमियोंसे नफ़रत करता है वह खुदापर इल्ज़ाम लगाता है। —बर्क

कमीना

उससे दोस्ती कर लो जिसने हत्या की हो उस शख़्सकी अपेक्षा जो सिर्फ़ बार भी कमीनापन बरतता रहा हो। —स्टर्न

करामात

लोग कहते हैं कि मुहम्मदको उसके रबकी तरफ़से करामात दिखाने को क्यों नहीं मिलती? उनसे कह दो कि करामात सिर्फ़ अल्लाहके पास है मैं तो सिर्फ़ बुरे कामोंके नतीजोंसे खुले तौरपर आगाह करनेवाला हूँ। —मुहम्मद

क़त्ल

जो कालको अपना दोस्त बना सके, या जो उससे बच सके, या जो जानता है कि वह मरेगा नहीं ऐसा आदमी भले ही निर्भय रहे—वह क़त्ल किया जायेगा। —प्रसाद

इन्सानी ज़िन्दगीका कितना हिस्सा इन्तज़ारीमें निकल जाता है। कल भी तो आज सरीखा ही होगा। ज़िन्दगी बर्बाद होती जाती है और हम जीनेकी तैयारीमें ही लगे रहते हैं। —एमर्सन

जो आदमी ईमानदारीको ताकपर धर रखता है वह बहुत जल्दी अपने आपको इन्सानियत तक धर रक्खेगा। —सेवेरर

कला

जो कला आत्माको आत्मदर्शन करनेकी शिक्षा नहीं देती वह कला ही नहीं है। —गांधी

सच्ची कला ईश्वरका भक्तिपूर्ण अनुकरण है। —ट्रायन एडवर्ड्स

कला वही है जो सौन्दर्यका सबक सिखाती है। —अज्ञात

कला विचारको मूर्तिमन्त करती है। —एमर्सन

कला मुझे उसी अंश तक स्वीकार्य है जिस अंश तक वह कल्याणकारी एवं मङ्गलकारी है। —गांधी

तमाम महान् कला ईश्वरके न कि अपने कामों—आदमीका हर्ष प्रदर्शन है। —रस्किन

हर कलाका सबसे बड़ा काम कल्पनाद्वारा उच्चतर वास्तविकताकी माया पैदा करना है। —गेटे

सच्ची कलाकृति दैविक परिपूर्णताकी महज छाया है। —अज्ञात

कलाका नियम प्रकृतिका प्रतिबिम्बित करना है न कि उसकी नकल। —अज्ञात

साधारण सत्य या निरा तथ्य, कलाओंका ध्येय नहीं हो सकता—तथ्यकी भूमिपर माया-सृजन यह है ललित कलाओंका रहस्य। —अज्ञात

कला प्रकृतिकी नकल नहीं करती, बल्कि प्रकृतिके अध्ययनको अपना आधार बनाती है—वह प्रकृतिमेंसे चुन चुनकर वे चीजें लेती है जो कि उसकी अपनी मंशाके अनुकूल हों, और तब उसमें वह जोड़ती है जो कि प्रकृतिके पास नहीं है यानी आदमीका मन और आत्मा। —बटलर

पण्डित कलाका कारण समझते हैं, अपण्डित उसका आनन्द लेते हैं। —अज्ञात

उत्तम जीवनकी भूमिकाके बिना कला किस प्रकार चित्रित की जा सकती है? —गांधी

ज्ञानी हम सब हैं, लोगोंमें कमी ज्ञानकी नहीं बल्कि कलाकी है।
—एमर्सन

कलाका अन्तिम और सर्वोच्च ध्येय सौन्दर्य है। —गेटे

कला तो सत्यका केवल शृंगार है। —हरिभाऊ उपाध्याय

विशुद्ध कलाकृतिके लिए कलाकारका अन्तःकरण निर्दोष होना चाहिए। —अज्ञात

'कलाके लिए कला' यह तो नास्तिकोंका सूत्र है कला तो जन समाजको उन्नत करनेके लिए है। —अज्ञात

कला प्रकृतिकी नकल करनेमें नहीं है—प्रकृति वह सामग्री देती है जिसके जरिये वह सौन्दर्य प्रकट किया जाता है जो अभी तक प्रकृतिमें अप्रकट था—कलाकार प्रकृतिमें वह देखता है जिसका स्वयं प्रकृतिको भान न था। —एच जेम्स

सारी कला सौन्दर्य सृजनके लिए कठिनाईको पार करनेमें समाई हुई है। —विलियम एकैन हाइट

कलामें मुझे रस तो मालूम होता है किन्तु ऐसे कितने ही रसोंका मैंने त्याग किया है—मुझे करना पड़ा है। सत्यकी खोजमें जो रस मिले उन्हें मैंने छककर पिया और मिलें तो पीनेके लिए तैयार हूँ।
—गांधी

मैं कलाको कलाकारकी विकसित आत्माका प्रतिबिम्ब मानता हूँ और सुरुचिके लिए महत्ता होना आवश्यक समझता हूँ। —डम

सबसे बड़ा काम जो कला कर सकती है वह यह है कि वह हमारे सामने शरीफ इन्सानकी सही तस्वीर पेश करे। —रस्किन

जिसमें छिपाने लायक कुछ है वह कला नहीं है— —गांधी

उपयोगी कलाओंकी जननी है आवश्यकता, ललित कलाओंकी है विलासिता। पहली पैदा हुई बुद्धिसे और दूसरी प्रतिभासे।
—शॉपेनहॉर

कलाकार ईश्वरके निकटतम होते हैं। उनकी आत्माओंमें वह अपना चैतन्य फूँकता है और उनके हाथोंसे वह सुन्दर कलामय कृतियोंमें निकलकर दुनियाको बरकत देता है। —अज्ञात

कलाकार

सबसे महान् कलाकार वह है जो अपने जीवनको ही कलामय चित्र बनाये। —सत्यभक्त

जीवन समस्त कलाओंसे श्रेष्ठ है जो अच्छी तरह जीना जानता है वही सच्चा कलाकार है। —गांधी

कलाकार वह है जो शब्दोंके समूहके साथ इस तरह खेले जिस तरह कोई दस्तकार ताशोंके पत्तोंके साथ खेलता है। —एमर्सन

सच्चा कलाकार अपनी पत्नीको भूखों मरने देगा, बच्चोंको नंगे पैर घूमने देगा और अपनी माँ को सत्तर सालकी उम्रमें अपनी जीविकाके लिए मारी-मारी फिरनेको छोड़ देगा लेकिन वह कलाकी आराधनाके अलावा कोई काम नहीं करेगा। —बर्नार्ड शा

अत्यन्त पवित्र है कलाकारका पेशा उसका ईश्वरकी कृतियोंसे सीधा सम्बन्ध रहता है और वह मानव जातिको सृष्टिके दिव्यतम तात्पर्य बताता है। वह मानो ईश्वरके समक्ष उन विचारोंको सीखता है जो उसपर रोशन किये जाते हैं। —अज्ञात

कलाकार जब कलाको कल्याणकारी बनायेंगे और जब साधारणके लिए उसे सुलभ कर देंगे तभी उस कलाको जीवनमें स्थान रहेगा। वही काव्य और वही साहित्य चिरंजीवी रहेगा जिसे लोग सुगमतासे पा सकेंगे, जिसे वे आसानीसे पचा सकेंगे। —गांधी

कलाकार बननेके लिए मुख्य शर्त है मानव मात्रके प्रति प्रेम, न कि कला-प्रेम। —रामतीर्थ

कलाकार तथ्यकी पैरवी करनेका हर्गिज़ नहीं, बल्कि सत्यके आदर्श-पूर्ण प्रतिबिम्बको चित्रित करनेका प्रयास करता है। —अज्ञात

पहले शरीफ आदमी हुए बिना कोई अच्छा कवि नहीं हो सकता।
—बेन जॉन्सन

आत्माएँ उसका दिन-रात पीछा करती हैं और वह सुनता है और जब देख सकता है कि 'लिख!' तो कागजी तौरसे उसे यह आज्ञा माननी पड़ती है।
—कीरकेगा

कवि हमें हिला देता है और पिघला देता है फिर भी हम नहीं जानते कि कहाँसे और क्योंकर।
—शेली

कविता एक और शाही कलाम है उसकी पुरानियताकी जिसके बगैर कोई कवि नहीं हो सकता—क्योंकि उसका उद्देश्य सौन्दर्य है। उसे माधुर्यकता प्यारी है इसलिए नहीं कि वह जरूरी है बल्कि उसकी मनोहरताके कारण वह दुनियामें पुरुषमें स्त्रीमें आनन्द देता है उस आत्मामयी भावनाके कारण जो उससे छिटकती है। आनन्द और मस्तीकी वर्षा सुन्दरताको वह विश्वमें फैलाता रहता है।
—एमर्सन

कवि महान् और ज्ञानकी बातें करते हैं जिनको कि वे स्वयं नहीं समझते।
—प्लेटो

महान् कवि होनेसे दुगना चीज किसी कविको समझनेकी शक्ति है।
—कीगार्डेगा

कवि लिखनेके लिए तब तक कलम नहीं उठाता जब तक उसकी स्याही प्रेमकी आहोंमें सराबोर नहीं हो जाती।
—शेक्सपियर

कवियोंका काम आनन्दका काम है और उसके लिए मनको शान्ति आवश्यक होती है।
—मेंबिट

ओ कवि तू जल-थल-नभका सच्चा स्वामी है।
—एमर्सन

समालोचक दार्शनिक, असफल कवि है।
—एमर्सन

कविका प्रधान उद्देश्य सौन्दर्य होता है दार्शनिकका सत्य।
—एमर्सन

कोई आदमी अच्छा आदमी हुए बगैर अच्छा कवि नहीं हो सकता।
—बेन जॉन्सन

छोटे कैम्पों और बस्तोंमें झुण्डमें रहते हैं, मगर कवि अकेला रहा करता है। —एमर्सन

कविता

कविता भावनाओंसे रँगी हुई बुद्धि है। —प्रोफेसर विल्सन

तमाम देशोंके महान् कवियोंकी सर्वोत्तम कृतियाँ वे नहीं हैं जो राष्ट्रीय हैं बल्कि वे हैं जो कि सार्वभौम हैं। —लौंगफेलो

कविता ईश्वरकी इस प्रकार सेवा करनेमें है कि शैतान नाराज न हो। —जुबर

जो कविता वासनासे पैदा होती है हमेशा नीचे गिराती है; वास्तविक दार्शनिकतासे पैदा हुई कविता हमेशा शरीफ और ऊँचा बनाती है। —ऐ॰ ऐ॰ हॉपकिन्स

मेरा ख्याल है कि मैं ऐसा सुन्दर पद्य कभी न देख सकूँगा जैसा कि वृक्ष है। पद्य तो मुझ सरीखे मूर्ख भी बना लेते हैं, लेकिन वृक्षको ईश्वर ही बना सकता है। —जायस किल्मर

कविताकी एक खूबीसे किसीको इन्कार न होगा। वह गद्यकी अपेक्षा थोड़े शब्दोंमें अधिक कहती है। —वाल्टेयर

वही कविता है सच्ची वही है जिसके सुनने देखनेसे कवि-हृदय या पठित-हृदय तुरन्त सरल और सरस हो जाय। —प्रसाद

कविता छाया बनानेकी कला है, वह किसी भावको स्पष्ट बयान नहीं करती। —[illegible]

कविता विचारका संगीत है जो हम तक शब्दोंके संगीतमें आता है। —[illegible]

उत्कृष्ट कविकी कामदार कविता भी बिना राम नामके शोभा नहीं देती जैसे कि सब तरहसे सजी हुई सर्वांगसुन्दरी चन्द्रमुखी स्त्री बिना वस्त्रके शोभा नहीं पाती और अगर किसी कुकविकी सब गुण रहित वाणी राम नामके यशसे अंकित हो तो बुधजन उसे आदर सुनते-सुनाते हैं और संत लोग मधुपकी तरह उसके गुणको ग्रहण करते हैं। —रामायण

कविता आत्माका संगीत है और सबसे ज्यादा महान् और अनुभूतिशील आत्माओंका। —वाल्टेर

कविता किससे बनी है? एक भरे हुए हृदयसे जो कि एक सत्य- [illegible] भरा हो। —गेटे

कविता शैतानकी शराब नहीं ईश्वरकी शराब है। —एमर्सन

कविताके कवियों और समझनेवालोंकी अपेक्षा हमें कवि ज्यादा मिलते हैं—एक अच्छा-सा पद्य समझनेकी अपेक्षा एक बुरा-सा पद्य लिखना आसान है। —मॉन्टेन

कविता स्वयं ईश्वरकी चीज है—उसने अपने पैगम्बरोंको कवि बनाया और जब हम कविताकी अनुभूति करते हैं, प्रेम और शक्तिमें ईश्वरके समान बन जाते हैं। —बेली

कविता सर्वाधिक आनन्दमय और सर्वोत्तम मनस्वियोंके सर्वोत्तम और सर्वाधिक आनन्दमय क्षणोंका रिकार्ड है। —शैली

कविता अपने दैवी ओजके सबसे ज्यादा अनुरूप तब होती है जब कि वह मनकी शान्तिमयी विचारधारा बहाती है। —वर्ड्सवर्थ

जिससे आनन्द प्राप्त न हो वह कविता नहीं है। —जाबर

कविता मनके विशाल क्षेत्रमें यहीं उपजकर भावनाओंके बाद पैदा होती है। —[illegible]

कविताकी कलम भावनाओंको छूती है और उनमें [illegible] उन्हें मनुष्यकी ओर ले जाती है। —कूपर

कविता स्वयं ही मेरे लिए अतीव महान् पुरस्कार साबित हुई है। इसने मुझे अपने आसपासकी चीजोंमें अच्छाई और सौन्दर्य देखनेकी आदत दी है। —कॉलेरिज

कविता गहरे हृदय-गत भावका आभास है—सच्चा कवि बहुत कुछ पैगम्बरके समान है। —ई. एच. चैपिन

आप दर्शनसे ऊपर पहुँचते हैं, मैं कवितापर सबसे पहुँचता हूँ। —जोबर्ट

कविता स्वयं ही शक्ति और आनन्द है; चाहे सारी मानवजाति उसे सिंहासनपर बिठाये या वह अपने बालूके तपोवनमें अकेली रहे।
—स्विंबर्न

कविताका काम हमें ठीक तरह सोचनेके लिए नहीं, ठीक तरह अनुभव करनेके लिए विवश करना है। —एफ० डब्ल्यू० रावर्टसन

कविताका जामा पहिनकर सत्य और भी चमक उठता है। —पोप

कविता अपनी नाजुक और कोमल भावनाओंके सजीव चित्रणसे, और अपने पौराणिकताका चमत्कारोंके चमकीलेपनसे विश्वासको भावी जीवनके प्राप्त करनेमें सहायता देती है। —सैमिथ

शायरी गमकी वसीयत है; हर आदमी जो दुःख सहता है और रोता है शायर है हर आँसू एक गाना है, और हर दिल एक नग्मा। —ऐन्ड्री

कोमल-रसके भीतर रमनेवाली कविता रचनेकी शक्ति हो तो फिर राजसत्ता भोगनेकी क्या जरूरत है। —भर्तृहरि

जिस कृतिका बुद्धिमान आदर न करें उसके रचनेमें बालकवि वृथा श्रम करते हैं। उसी तरह कविता और विमल कीर्तिका सुजान लोग आदर करते हैं जिसकी दुश्मन भी, स्वाभाविक वैरको भूलकर तारीफ करने लगें। —रामायण

सत्यसे सत्यको सुन्दरसे सुन्दर रूप देना कविता है।
—श्रीमती ब्राउनिंग

कविता सुन्दरको सुन्दर रूपसे कहना है। —प्रोफेसर थॉम्सन

कविता सिर्फ वही है जो मुझे विमल और पुरुषार्थी बनाती है।
—एमर्सन

कविताको अगर हम अपने अन्दर नहीं लिये तो वह कहीं नहीं मिलनेवाली। —जोबर्ट

कविता केवल कहनेका सबसे सुन्दर और प्रभावक तरीका है, और इसीलिए उसकी महत्ता है। —मैथ्यू आरनोल्ड

कविता थोड़े शब्दोंको महान् शक्ति बताती है। —एमर्सन

हर महान् कविता नियमसे सीमित होती है परन्तु अपने संकेतोंमें निस्सीम और अनन्त। —जौबर्ट

सबसे अच्छी कविता वह है जो हृदयको सबसे ज्यादा हिला दे। वह उस ईश्वरके सबसे निकट आ जाती है जो कि तमाम शक्तिका स्रोत है। —ह्वीटर

गद्य = शब्द सबसे अच्छी तरतीबमें।

पद्य = सबसे अच्छे शब्द सबसे अच्छी तरतीबमें। —कोलेरिज

कविताका सार है खोज, ऐसी खोज जो अप्रत्याशित बात कहकर आश्चर्यचकित और आनन्दित कर देती है। —सैमुएल जॉन्सन

कविता तमाम मानवीय ज्ञान विचारों भावों अनुभूतियों और भाषाकी सुगन्धसार कली है। —कोलेरिज

कविताका महान् काम यह है कि वह लोगोंकी चिन्ताओंको शान्त करने और उनके विचारोंको उन्नत करनेमें मित्रका काम करे।

—कीट्स

कविता शब्दोंका संगीत है और संगीत ध्वनिकी कविता है।

—फुलर

जिसे वीररसपूर्ण कविता लिखनी है उसे अपना समूचा जीवन वीर रसपूर्ण बना डालना होगा। —मिल्टन

कविता सत्यका उच्चार है—गहरे हार्दिक सत्यका। सच्चा कवि बहुत कुछ पैगम्बरके समान है। —चैपिन

कष्ट

छोटे लोगोंको छोटी तकलीफें बड़ी लगती हैं। —कहावत

सच्चा कष्ट यदि सच्चाईके साथ सहन किया जाय तो वह पत्थर जैसे हृदयको भी पानी-पानी कर सकता है। —गांधी

हज़रत मोहम्मदको तीव्र ज्वरमें बेचैन देखकर उनकी पत्नी रोने लगी। मोहम्मद साहबने करुणापूर्ण कहा— 'आयशा! जिसे ईश्वरपर

विश्वास है वह कभी इस तरह नहीं रो सकता। हमारे कष्ट हमारे पापोंका प्रायश्चित्त हैं। निस्सन्देह यदि किसी ईश्वरके विश्वासीको एक काँटा भी चुभता है तो अवश्य उसका बदला चुका देता है और उसका एक पाप धुल जाता है। जिसका जितना पक्का विश्वास होता है उसे उतने ही कष्ट भी दिये जाते हैं। यदि विश्वास कमजोर है तो कष्ट भी वैसे ही होते हैं किन्तु किसी सूरतमें भी कष्टोंमें उस समय तक कोई माफी न होगी जब तक कि मनुष्यका एक-एक पाप न धुल जाय और पृथ्वीपर वह निष्कलंक होकर न विचरने लगे। —मुह०

क्रोध प्रीतिका नाश करता है, मान विनयका नाश करता है, माया मैत्रीका नाश करती है, और लोभ सबका विनाश करता है।

—भगवान् महावीर

कषाय

लोग अपनी जिन्दगियाँ कषायोंकी सेवामें गुजार देते हैं बजाय इसके कि वे कषायोंको अपनी जिन्दगियोंकी सेवामें जोतें। —ह्यूम

जब कषाय सिंहासनपर होती है विवेक घरसे बाहर होता है।

—हैनरी

कषाय मनकी मादकता है। —सेम्सर

कषायका अन्त पश्चात्तापकी शुरुआत है। —फ्रैंकलिन

कसरत

मुझे हर एक काममें सफलता इसलिए मिली है कि मैं मिताहारी रहता और कसरत करता था। —तेलके बादशाह, धनकुबेर, राक फ़ेलर

कहावत

कहावतें युगोंका सद्ज्ञान हैं। —जर्मन कहावत

कहावत दैनिक अनुभवकी पुत्रियाँ हैं। —डच कहावत

किसी राष्ट्रकी प्रतिभा, कुशाग्रता और आत्माका पता उसकी कहावतोंसे लगता है। —बेकन

काँटा

लोभका काँटा तुम्हारे अन्दर चुभा हुआ है और उससे तुम पीड़ित हो रहे हो आश्चर्य है कि इस दुःख-पीड़ामें भी तुम्हें नींद आ रही है। श्रद्धा और अप्रमादके द्वारा यह काँटा निकाल फेंको ना! —बुद्ध

क्रान्ति

इस ज़मानेके दुःखों और जुर्मोंका एक सर्वाधिक व्यापक स्रोत इस मान्यतामें है कि चूँकि हालात अद्ल-ए-तराज़ूसे खिसक रहे हैं यह ग़ैर मुमकिन है कि वे कभी भी ठीक किये जा सकें। —रस्किन

बड़ी क्रान्तियाँ तलवारोंकी अपेक्षा सिद्धान्तोंकी कृतियाँ हैं और वे पहले नैतिक क्षेत्रमें की जाती हैं और बादमें भौतिकमें। —मैज़िनी

निम्नतर वर्गोंकी क्रान्तियाँ हमेशा उच्चतर वर्गोंके अन्यायका परिणाम होती हैं। —गेटे

कान

दो अच्छे कान सौ ज़बानोंको सुखाकर खुश्क कर सकते हैं।

—फ्रैंकलिन

क़ानून

जहाँ क़ानून ग़रीबोंपर शासन करता है और अमीर क़ानूनोंपर शासन करता है। —ओ. गोल्डस्मिथ

क्या बिल्ली कभी चूहोंके लिए उचित क़ानून बना सकती है?

—जॉन ब्राइट

क़ानून बड़ों द्वारा छोटोंके लिए बनाये जाते हैं।—इंग्लिश कहावत

नये क़ानून, नये स्वामी, नये धोखे। —कहावत

मवालियों और गँवारोंके लिए कोई क़ानून नहीं है; वे घरोंमें घुसनेसे नहीं रोके जा सकते; ज़मीन आख़िरकार उन्हें निगल जाती है गुरुत्वाकर्षणके सिवाय उनके लिए कोई नियम नहीं है। —रस्किन

काबू

जो अपने विचारोंपर काबू नहीं रखेगा, वह अपनी कृतियोंपरसे काबू खो बैठेगा। —प्रसाद

काम

जो छोटे-छोटे कामोंके पीछे जरूरत से ज्यादा पड़े रहते हैं, वे अक्सर बड़े कामोंके लिए नाकाबिल बन जाते हैं। —रोशे

वही काम करना ठीक है जिसे करके पछताना न पड़े और जिसके फलको प्रसन्न मनसे भोग सकें। —बुद्ध

मैंने पचास साल तक औसतन् रोजाना बारह घंटे काम किया है। —कैसर

यह ग़ैर-मुमकिन है कि आदमी बहुतसे कामोंको करनेकी कोशिश करे और उन सबको अच्छी तरह कर सके। —ज़ेनोफ़न

काम जीनेका साधन है, मगर वह जीना नहीं है। —जे. जी. हॉलैंड

सर्वोत्तम काम कभी कमाई बचतकी खातिर नहीं किया जाता और न कभी किया जायेगा। —रस्किन

अगर कोई काम नहीं करता तो उसे खाना भी नहीं चाहिए। —बाइबिल

हर अच्छा काम पहले असम्भव दिखता है। —कार्लाइल

अपना काम किये जाओ, उसकी माकूलियतका ख्याल रखकर नहीं बल्कि उसके उमदा व कमालका लिहाज़ रखकर। —एमर्सन

इन्सानकी सिरमौर खुशकिस्मती यह है कि वह किसी कामके लिए पैदा हुआ हो जिसमें वह लगा और आनन्द पाता रह सके, चाहे वह काम टोकरियाँ बनाना हो या नहरें खोदना, मूर्तियाँ बनाना हो या गाने रचना। —एमर्सन

कामिनी

तू मृगनयनियों और उनकी चर्चासे विमुख हो जा; दो एक बात कह और हँसी-ठट्ठेसे मुँह मोड़। —इब्न-उल्-वर्दी

कार्य

मनुष्यको अपने कार्योंका स्वामी बनना चाहिए, कार्योंको अपना स्वामी नहीं बनने देना चाहिए। —अज्ञात

कार्य-कारण

कार्य-कारणका महान् सिद्धान्त अटल है। —अज्ञात

जिस तरह बबूलके पेड़पर आम नहीं लग सकते, मिर्चके पौधेपर गुलाबके फूल नहीं आ सकते उसी तरह बुरे कार्मोंका नतीजा कभी सुखकर नहीं हो सकता। —अज्ञात

एक मनुष्यकी वर्तमान दशा एक अटल नियमका अवश्यम्भावी परिणाम है कि जैसा वह बोता है वैसा काटेगा, जैसा वह काटता है वैसा उसने बोया भी था। —अज्ञात

कायर

कायर तभी धमकी देता है जब सुरक्षित होता है। —गेटे

कायर होनेके कारण ही हम दूसरोंके खूनका विचार करते हैं। —गांधी

जो भागा सो पछताया। —रवीन्द्रनाथ

अगर कोई [illegible] होकर अहिंसाको लेता है तो अहिंसा उसका नाश करेगी। —गांधी

जो भय मानता है उसे मानसिक कायर समझना चाहिए और जिस वस्तुसे उसे भय है वह जरूर धर दबावेगी। —अज्ञात

कायरता

अत्याचार व भय दोनों कायरताके दो पहलू हैं। —अज्ञात

मैं कायरता को किसी हालतमें बर्दाश्त नहीं कर सकता। आप कायरतासे मरें, इसकी अपेक्षा आपका बहादुरीसे प्रहार करते हुए और प्रहार सहते हुए मरना मैं कहीं बेहतर समझूँगा। —गाँधी

कायरताकी अपेक्षा बहादुरीके साथ शरीर-बलका प्रयोग करना कहीं श्रेयस्कर है। —गाँधी

सच तो यह है कि कायरता खुद ही एक सूक्ष्म, और इसलिए भीषण प्रकारकी हिंसा है; और शारीरिक हिंसाकी अपेक्षा उसे निर्मूल करना बहुत ही मुश्किल है। —गाँधी

कारण

कारणको दूर कर दो, कार्य बन्द हो जायेगा। —अंग्रेजी कहावत

जैसे अनुभव लेता हूँ, पाता हूँ कि आदमी स्वयं अपने सुख-दुःखका कारण है। —गाँधी

काल

सुबह और शामके आने और जानेने छोटेको जवान और बूढ़ेको नष्ट कर दिया। सुलतान उद्-मआनी

कालकी आपदाओंसे व्याकुल न हो क्योंकि व्याकुल होना मूर्खोंका काम है। —हजरत अली

कालेज

कॉलेज पत्थरके टुकड़ोंको तो चमकदार बनाते हैं किन्तु हीरोंपर जंग चढ़ा देते हैं। —इंगरसोल

काहिल

काहिल आदमी ऐसी घड़ी है जिसमें दोनों सुइयोंकी कमी है। चलती भी है तो उतनी ही निरर्थक जितनी कि बन्द रहनेपर।—अज्ञात

काहिली

काहिली एक मज़ेदार मगर कष्टप्रद हालत है; आनन्दित होनेके लिए हमें कुछ न कुछ करते रहना चाहिए। —हैज़लिट

काम मानो बोतलमें 'कुम्म' रहता है। आदमीके बोलनेसे पता चल जाता है कि उससे क्या काम होगा। —सर्वांटिस

ईश्वर उस मनुष्यकी कभी मदद नहीं देता जो काम नहीं करता। —सोफोक्लिस

लोगोंके काम उनके विचारोंके सर्वोत्तम परिचायक हैं। —लॉक

बुरा काम करना नीचता है। बिना खतरा मोल लिये अच्छा काम करना मामूली बात है। मगर महान् और शरीफाना काम करना सज्जनका ही काम है। चाहे उसके करनेमें उसे सब कुछ खतरेमें डाल देना पड़े। —प्लूटार्क

हम जितना ज्यादा करें उतना ज्यादा कर सकते हैं, हम जितने ज्यादा मशगूल होते हैं उतनी ही ज्यादा फुरसत हमें मिलती है। —हैज़लिट

कामके मानी हैं अपने वास्तविक स्वरूपसे सामञ्जस्य और आत्मा से एकरूपता। —स्वामी रामतीर्थ

सच्चा काम अहंकार और स्वार्थको छोड़े बिना होता नहीं। —स्वामी रामतीर्थ

हर कोई काम कर 'पेड' या 'अनपेड', बस देख यह कि तू काम करता है। —एमर्सन

लोगोंकी जीवनियोंमें निस्स्वार्थ और शरीफाना काम सबसे रोशन वर्क़े हैं। —थॉमस

अपने कामको चाँद तारों और सूरजके कामकी तरह निस्स्वार्थ बना दो तभी सफलता मिलेगी। —स्वामी रामतीर्थ

यदि तुम गन्दगीसे और दुनियाके बड़े पापोंसे बचना चाहो, तो खूब दृढ़तापूर्वक काम करो, चाहे तुम्हारा काम अस्तबल साफ करना ही क्यों न हो। —थोरो

अगर हमें बड़े ही काम करने हैं, तो आओ हम अपने ही कामोंको बड़े बनायें। हर काम असीम अवकाश रखता है और छोटेसे छोटा भी

कामिनी

तू मृगनयनियों और उनकी चर्चासे विमुख हो जा, तो एक बात कह और हँसी-ठट्ठेसे मुँह मोड़। —इब्न-उल् वर्दी

कार्य

मनुष्यको अपने कार्यका स्वामी बनना चाहिए, कार्यको अपना स्वामी नहीं बनने देना चाहिए। —अज्ञात

कार्य-कारण

कार्य-कारणका महान् सिद्धान्त अटल है। —अज्ञात

जिस तरह बबूलके पेड़पर आम नहीं लग सकते, मिर्चके पौधेपर गुलाबके फूल नहीं आ सकते; उसी तरह बुरे कर्मोंका नतीजा कभी सुखकर नहीं हो सकता। —अज्ञात

एक मनुष्यकी वर्तमान दशा इस अटल नियमका अवश्यम्भावी परिणाम है कि जैसा वह बोता है वैसा काटेगा, जैसा वह काटता है वैसा उसने बोया भी था। —अज्ञात

कायर

कायर तभी धमकी देता है जब सुरक्षित होता है। —गेटे

कायर होनेके कारण ही हम दूसरोंके खूनका विचार करते हैं। —गांधी

जो भागा सो पछताया। —शोभनाथ

अगर कोई डरपोक होकर अहिंसाको लेता है तो अहिंसा उसका नाश करेगी। —गांधी

जो भय मानता है उसे मानसिक कायर समझना चाहिए और जिस वस्तुसे उसे भय है वह ज़रूर घर दबायेगी। —अज्ञात

कायरता

अत्याचार व भय दोनों कायरताके दो पहलू हैं। —अज्ञात

काहिलीसे कोई अमर नहीं हुआ। —अज्ञात

कुदरतके सख्त और वंचित कानूनोंके मुताबिक जहाँ काहिली शुरू हुई कि आत्मोल्लास ख़त्म हो जाता है। —पोलक

काहिली ज़िन्दा आदमीका मक़बरा है। —जैरेमी टेलर

काहिली और खामोशी मूर्खके गुण हैं। —फ्रैंकलिन

काहिली बीमारियाँ लाकर ज़िन्दगीको निहायत छोटी कर देती है। काहिली जंगकी तरह परिश्रमकी अपेक्षा अधिक विनाशक है। जो चाभी इस्तेमालमें आती रहती है हमेशा चमकीली रहती है। —फ्रैंकलिन

काहिली दुर्बल मनोंकी शरण है, और मूर्खोंकी छुट्टी। —अज्ञात

काहिली शुरूमें मकड़ीका जाला होती है अन्तमें लोहेकी जंजीर बन जाती है। —अज्ञात

किताब

मनुष्य जातिने जो कुछ किया, सोचा और पाया है वह पुस्तकोंके जादू-भरे पृष्ठोंमें सुरक्षित है। —कार्लाइल

अच्छी किताब वह है जो आशासे खोली जाय और लाभसे बन्द की जाय। —ऐमा ब्रॉन्सन ऑल्कॉट

बुरी किताबसे बढ़कर शत्रु नहीं। —इटली कहावत

प्रसिद्ध किताबोंमें बेहतरीन विचार और कल्पनाएँ हैं। —एमर्सन

मालूम हुआ है कि हर ज़मानेको अपनी किताबें खुद लिखना चाहिए। —एमर्सन

किताबोंपर क़ाबिल यक़ीन करनेसे बेहतर है कि इन्सानके पास कोई किताब ही न हो। —अज्ञात

कुछ किताबें चखनेके लिए हैं, कुछ निगले जानेके लिए और कम थोड़ी-सी चबाये जाने और हज़म किये जानेके लिए। —बेकन

पुराना कोट पहनो और नई किताब ख़रीदो। —अज्ञात

यह है जवाहिरातकी दुकान, और इस रत्न इस ज्योत इस रत्नके लिए तुम्हें अपना सर देना होगा, अपनी कीमत त्यागनी होगी। अगर तुम यह कीमत अदा नहीं कर सकते तो हट जाओ यहाँसे।

—स्वामी रामतीर्थ

आपकी कीमत वह है जो आपने अपने लिए स्वयं आँक रखी है। —अज्ञात

हर आदमीकी कीमत ठीक उतनी है जितनी उन चीज़ोंकी कीमत जिनमें वह संलग्न है। —ऑरेलियस

अक्सर इस दुनियामें आदमीकी कीमतका अन्दाज़ा इससे लगता है कि खुद उसकी नज़रमें उसकी कीमत क्या है। —ला ब्रूयर

"तुम्हें क्या चाहिए ?" ईश्वरने पूछा "कीमत दो और ले लो"।

—अज्ञात

कुकर्म

कुकर्म करते वक्त मीठे और सुखदायी लगते हैं और कर्मफल भोगते वक्त दुखदायी। —धम्मपद

अगर तुम वह करते हो जो तुम्हें नहीं करना चाहिए, तो तुमको वह सहना पड़ेगा जो तुम्हें नहीं सहना पड़ता। —फ्रैंकलिन

किसी महात्माका वचन है कि दिनभर कुविचार और कुकर्मोंमें बिताना रातभरके भजन-बन्दगीसे बदतर है। —[illegible]

कुटुम्ब

तमाम प्राणियाँ परमात्माका कुटुम्ब हैं और उन सबमें परमात्माको सबसे प्यारा वह है जो परमात्माके इस कुटुम्बका भला करता है।

—हज़रत मुहम्मद

जो मनुष्य पापके द्वारा कुटुम्बका भरण-पोषण करता है वह महाघोर नरकका भागी होता है। —अज्ञात

कुदरत

कुदरतके क़ानून न्याय्य ही नहीं भयङ्कर हैं। उनमें दुर्बल दया नहीं है। —लौंगफ़ेलो

जब मनुष्य सत्यपर चलता है तो सारी कुदरत उसकी मुक्तिके लिए प्रयत्नशील हो जाती है। —अज्ञात

कुदरतन् तुम जो कुछ हो, उस पर आश्रित-क्रम रहो; अपनी व्यक्तिगत विशेषताकी कायम कभी न छोड़ो। वही बनो जिसके लिए कि कुदरतने तुम्हें बनाया है और तुम कामयाब होगे, अगर कुछ और बने तो तुम असलसे दस हज़ार गुना बदतर होगे। —सिडनी स्मिथ

कुदरतके सब काम धीरे-धीरे होते हैं। —बेकन

कुदरतको भला-बुरा न कहो। उसने अपना फ़र्ज़ पूरा किया, तुम अपना करो। —मिल्टन

कुपथ

जो निहायत तेज़ चलता है लेकिन ग़लत रास्ते चलता है रास्तेसे सिर्फ़ दूर-दूर होता जाता है। —प्रायर

कुपन्थ

जो कुपन्थमें पैर रखते हैं उनमें ज़रा भी बुद्धिबल नहीं रह जाता। —रामायण

कुमारी

कुमारियोंको मधुर और लज्जाशील गुणोंमें तेज और बोलनेमें मन्द होना चाहिए। —प्रसाद

कुरबानी

जो जानवर कुरबान किये जाते हैं उनका मांस या उनका ख़ून अल्लाहको नहीं पहुँचता, अल्लाह तुमसे सिर्फ़ तुम्हारा तक़वा (बुराईसे बचे रहना) क़बूल करता है। —क़ुरान

कुरीति

कुरीतिके अधीन होना कायरता है उसका विरोध करना पुरुषार्थ है।
—गांधी

कुलीन

मैं कुलीन पैदा हुआ हूँ, जिसे कोई अपनी आज्ञाकार नहीं बना सकता; जिसपर कोई हुकूमत नहीं कर सकता संसारके किसी भी राज्यका मैं कठपुतली या समयबद्ध नौकर सिद्ध नहीं हो सकता।
—थोरो

सच्चे कुलीन सज्जनमें ये चार गुण पाये जाते हैं—हँसमुख चेहरा, उदार हाथ मृदु भाषण और स्निग्ध निरभिमान। —तिरुवल्लुवर

"मैं मजदूर हूँ—तुम मालिक हो। मैं दिनभर मिहनत करके थोड़ा-सा लेता हूँ—तुम मेरा सब कुछ लेकर थोड़ा-सा मुझे देते हो। तुम कुलीन और मैं अछूत हूँ क्योंकि तुम अपने घरोंको गन्दा करते हो और मैं उन्हें साफ करता हूँ।" —प्रसाद

कुशलता

हमारी सभी क्रियाएँ अपनी अकुशलतामें हैं। कुशलता यही कि हमें काम जो चमत्कारक प्रतीत होता है वही आनन्द देनेवाला मालूम होगा। तन्त्र सुव्यवस्थित और सात्त्विक होगा तो कभी कष्ट मालूम न होना चाहिए।
—गांधी

कुसंग

सज्जन लोग बुरी सोहबतसे डरते हैं, मगर छोटी तबीयतके आदमी बुरे लोगोंसे इस तरह मिलते-जुलते हैं मानो वे उनके ही कुटुम्बवाले हैं।
—तिरुवल्लुवर

नरकवास अच्छा, ईश्वर दुष्टोंकी संगति न दे। —रामायण

मनुष्योंने क्रोधमें ऐसी बातें कहीं और की हैं जिन्हें अगर वे फेर के पावें तो अपना सर्वस्व वार दें! —अज्ञात

बलवान्‌को जल्दी क्रोध नहीं आता। —अज्ञात

क्रोधका सबसे बड़ा इलाज विलम्ब है। —सेनेका

क्रोध करना बर्रोंके छत्तेमें पत्थर मारना है। —मलाबारी कहावत

क्रोध भूलको दोष बनाता है और सत्यको अविवेक बनाता है। —अज्ञात

क्रोधसे सबसे अच्छी तरह वह बचा रहता है जो याद रखता है कि ईश्वर उसे हर वक्त देख रहा है। —प्लेटो

जब क्रोध चढ़े, तो उसके नतीजों पर विचार करो। —कन्फ्यूशियस

क्रोध करके हम दूसरेको उसकी ग़लती नहीं समझाते हैं, अपनी पशुताको स्वीकृति उससे कराना चाहते हैं। —हरिभाऊ उपाध्याय

क्रोध बलवान्‌को दुखित और निर्धनको अत्यन्त दुखित बना देता है। —अज्ञात

सारी दुनियाको एक कर देनेकी कल्पना शोध निकालना आसान है परन्तु अपने मनके अन्दरका क्रोध जीतना कठिन है। —विनोबा

जिस आगको तुम दुश्मनके लिए जलाते हो वह अक्सर तुमको ही ज़्यादा जलाती है। —चीनी कहावत

यदि किसीने अपमान की है या कोई काम बिगाड़ा है, तो उसपर क्रोध करना मार्गमें पड़े हुए पर ठेस खिसकना नहीं तो क्या है! —हरिभाऊ उपाध्याय

क्रोध मूर्खतासे शुरू होता है और पश्चात्तापपर ख़त्म होता है। —पिथागोरस

आदमीकी तमाम कामनाएँ तुरन्त पूरी हो जाया करें अगर वह अपने क्रोधको दूर कर दे। —तिरुवल्लुवर

सारथी मैं उसीको कहता हूँ जो रास्ता छोड़कर जानेवाले रथकी

तरह क्रोधके पैदा होते ही उसे वशमें कर ले। बाकी तो सब रास थामनेवाले हैं। —अज्ञात

क्रोधका अन्त पश्चात्तापका प्रारम्भ है। —बोवेन्स्टेर

क्रोध समझदारीको घरसे बाहर निकाल देता है और दरवाज़ेकी चटख़नी लगा देता है। —प्लुटार्क

जिस तरह खौलते पानीमें अपना प्रतिबिम्ब दिखाई नहीं दे सकता, उसी तरह क्रोधाभिभूत मनुष्य यह नहीं समझ सकता कि उसका आत्महित किसमें है। —बुद्ध

क्रोधमें समुन्दरकी तरह बहरा, आगकी तरह उतावला। —शेक्सपियर

स्वर्ग उन लोगोंके लिए है जो अपने क्रोधको वशमें रखते हैं। —कुरान

अग्नि उसीको जलाती है जो उसके पास जाता है मगर क्रोधाग्नि सारे कुटुम्बको जला डालती है। —तिरुवल्लुवर

क्रोध हँसीकी हत्या करता है और खुशीको नष्ट कर देता है। —तिरुवल्लुवर

प्रभुकी आज्ञा है कि मेरा भक्त कभी क्रोध न करे। —मलिक दिनार

ग़ुस्सा [क्रोध] और शहवत [काम] आदमीको अंधा कर देते हैं और उसे उसकी ठीक हालतसे भटका देते हैं। —मौलाना रूम

महात्माओंके आपकी शान्ति उनके क्षमा करनेसे होती है। —अभिराम

इस बातपर क्रुद्ध न होओ कि तुम दूसरोंको वैसा नहीं बना सकते जैसा तुम चाहते हो क्योंकि तुम स्वयं अपनेको भी वैसा नहीं बना सकते जैसा तुम बनना चाहते हो। —टॉमस केम्पी

जिस मनुष्यने इस पद प्राप्त किया है उसके हृदयमें क्रोधका वास नहीं हुआ करता। और जिसके स्वभावमें क्रोध हो वह उस पद नहीं प्राप्त कर सकता। —अज्ञात

कृतघ्नता

आदमी, विचारक, अध्यात्म-ज्ञान-सम्पन्न प्राणी है और सबसे निकृष्ट जानवर कुत्ता है परन्तु सन्त इस बातपर सहमत हैं कि कृतघ्न आदमी से कृतज्ञ कुत्ता बेहतर है। —सादी

कृत्य

कृत्योंमें बोलने, कल्पनाओंका समय चला गया, सिर्फ काम ही काफी है। —हिटर

कृतज्ञ

किसी शासितको शब्दोंकी इतनी कमी कभी महसूस नहीं हुई जितनी कि कृतज्ञको। —कोस्टन

कृतज्ञता

कृतज्ञता शाब्दिक धन्यवादसे कहीं बढ़कर है और कार्य शब्दोंसे अधिक कृतज्ञता प्रकट करता है। —मसैल

जिसने कभी उपकार किया हो उससे बड़ा अपराध हो जाय तो भी उसके उपकारके एवज़में उसे क्षमा कर देना चाहिए। —अज्ञात

कृतघ्नताके बाद संसारमें सबसे कमतर चीज़ कृतज्ञता है।

—एच डब्ल्यू बीचर

कृपा

मुझे ऐसा लगता है कि मेरी प्रभुपर जितनी भक्ति है उसकी अपेक्षा प्रभुकी मुझपर कृपा अधिक है। —विनोबा

[ख]

खर्च

जो अपनी आमदनीसे ज़्यादा ख़र्च करे और उधारका रुपया न चुकाये उसे उसी वक्त जेलखानेमें भेज देना चाहिए, चाहे वह कोई हो। —पैरे

बुद्धिमानीके साथ खर्च करता हुआ आदमी थोड़े धनसे भी अपनी गुज़र कर सकता है। मगर फ़िज़ूलखर्चीसे सारे ब्रह्माण्डकी सम्पदा भी नाकाफ़ी हो सकती है। —अज्ञात

जो आदमी अपने धनका ख़याल न रख कर उसे खुले हाथों लुटाता है, उसकी सम्पत्ति शीघ्र ही समाप्त हो जायेगी। —तिरुवल्लुवर

भरनेवाली नाली अगर तंग है तो कोई परवाह नहीं बशर्ते कि खाली करनेवाली नाली ज़्यादा चौड़ी न हो। —तिरुवल्लुवर

ख़ज़ाना

साँप हवा खाकर रहते हैं मगर वे दुर्बल नहीं होते, जंगली हाथी सूखी घास खाकर जीते हैं मगर फिर भी बलवान् होते हैं। साधु लोग कन्द-मूल-फल खाकर अपना समय गुज़ारते हैं। सन्तोष ही इन्सानका बेहतरीन ख़ज़ाना है। —अज्ञात

ख़तरा

ख़तरा गया दुख भूला। —अज्ञात

ख़तरेकी जगह बेतहाशा दौड़ पड़ना बेवकूफ़ी है। बुद्धिमानोंका यह भी एक काम है कि जिससे डरना चाहिए, उससे डरें। —तिरुवल्लुवर

बड़े कामोंके, जिन्हें हम नहीं कर सकते और छोटे कामोंके, जिन्हें हम नहीं करना चाहते—के बीचका ख़तरा यह है कि हम कुछ नहीं करेंगे। —अज्ञात

खतरा तो जिन्दगीका नमक है। खतरोंका पूर्ण अभाव मौतके बराबर है। —अज्ञात

हमेशा डरते रहनेसे खतरोंका एक बार सामना कर डालना अच्छा। —नीतिसूत्र

खतरनाक

डायोजिनीजसे पूछा गया कि किन जानवरोंका काटना सबसे खतरनाक होता है। उसने जवाब दिया कि जंगलियोंमें निन्दकका और पालतुओंमें चापलूसका। —अज्ञात

खरा

कठोर मगर हितकी बात कहने और सुननेवाले बहुत थोड़े हैं। —रामायण

खरीद

छातीपर पिस्तौल रखकर जान्य छीनना और सोनेकी मुहर देकर ख़रीदना इसमें अक्सर ज़रा भी फ़र्क़ नहीं होता। —विनोबा

खामोशी

ख़ामोश रहो, या ऐसी बात कहो जो ख़ामोशीसे बेहतर है। —पिथागोरस

जैसे कि हमें हर प्रमादपूर्ण वक्तव्यका जवाब देना होगा उसी तरह हर प्रमादभरी खामोशीका भी। —मेंशियस

जब कि बोलना चाहिए उस वक्त खामोश रहनेसे औरोंका 'ख़ात्मा' हो सकता है जब कि ख़ामोश रहना चाहिए—उस वक्त बोलनेसे हम अपने शब्दोंको फ़िज़ूल खर्च करते हैं। अक्लमन्द आदमी सावधानता-पूर्वक दोनों ग़लतियोंसे बचता है। —कन्फ़्यूशियस

जब कहनेसे कुछ नहीं होता तब पवित्र मासूमियतकी ख़ामोशी अक्सर कारगर होती है। —शेक्सपियर

खादी

खादी देशके सब मनुष्योंकी आर्थिक स्वतन्त्रता और समानताके आरम्भकी सूचक है। —गांधी

खाना

एक वक्त खाना योगीके लिए काफ़ी होता है, आदमीके लिए दो होना ही चाहिए। —फ्रोबिस

पशु चरते हैं, आदमी खाता है, समझदार आदमी ही जानता है कि किस तरह खाना चाहिए। —ब्रिलेट सेवेरिन

भीख माँगनेसे भी अधिक अप्रिय उस कंजूसका जमा किया हुआ खाना है, जो अकेला बैठकर खाता है। —तिरुवल्लुवर

वे भले आदमी जो दूसरोंको देकर बचा हुआ खाना खाते हैं सब पापोंसे छूट जाते हैं और जो पापी लोग सिर्फ़ अपने लिए ही खाना पकाते हैं वह पाप ही खाते हैं। —गीता

खान्दान

धुआँ आसमानसे शेख़ी बघारता है और राख ज़मीनसे कि वे आगके खान्दानवाले हैं। —टैगोर

खिताब

बेवकूफ़को सचमुच खिताबकी ज़रूरत है उससे लोग उसे 'राय बहादुर' और 'सर' कहना सीख जाते हैं और उसके असली नाम 'बेवकूफ़' को भूल जाते हैं। —ब्राउन

खिताब आदमियोंकी शोभा नहीं बढ़ाते बल्कि खिताबोंकी शोभा आदमियोंसे है। —मैकियावेली

खुश

तुम्हें इस बातका ख़याल बारबार क्यों आता है कि शायद मुझसे

बिना खुशमिज़ाजीके चतुर आदमी बिना [illegible] घड़ीके माफ़िक़ है—उसमें चीज़ें जमा रहती हैं, लेकिन उससे आपको अधिक सहूलियत नहीं मिलती। —अज्ञात

तुमने हर फ़र्ज़ पूरा नहीं किया जब तक कि तुमने खुशमिज़ाजी और खुशगवारीका फ़र्ज़ पूरा नहीं किया। —स्टसन

खुशमिज़ाजी, सोसाइटीमें पहिननेके लिए एक बेहतरीन पोशाक है। —थैकरे

सम्यग्ज्ञान और सत्कर्मसे खुशमिज़ाजी स्वभावतः पैदा होती है। —मोर

खुशमिज़ाजी तन्दुरुस्ती है गमगीनी बीमारी। —हैलिबर्टन

खुशमिज़ाजीसे दिलमें एक किस्मका उजाला रहता है जो कि चेहरे पर प्रतिबिम्बित रहता है। —अज्ञात

खुशीकी नज़रें हर रुकावटको रुखसत कर देती हैं, और वे ही स्वागतकी सितारा हैं। —मौसियर

खुशहाली

आदमीकी खुशहालियाँ उसकी सच्चरित्रताका फल हैं। —एमर्सन

खुशामद

खुशामदसे जो चीज़ मिलती है उससे कायाको सुख परन्तु आत्माको दुःख होता है। —अज्ञात

खुशामदी

कमीना आदमी एक ही है और वह है खुशामदी। —अज्ञात

खुशी

हर खुशीके पहले कुछ [illegible] रही होती है। —शोपेनहॉवर

सब खुशियोंमें परिश्रमका फल मधुरतम है। —वौविनार्ग

खुशियोंसे सावधान रह — थंप

जैसा आदमी होता है वैसा ही उसका खुदा होता है, इसलिए खुदाकी अक्सर खिल्ली उड़ती रही। —गेटे

इस दुनियाका खुदा दौलत ऐश और अहंकार है। —ल्यूथर

अपने रबका नाम याद रक्खो और सब चीजोंसे बेलगाव होकर उसीकी तरफ़ लगे रहो। —कुरान

खुदाके पानेका रास्ता सिवाय जनताकी यानी दूसरोंकी खिदमतके और कोई नहीं है। माला लेकर 'अल्लाह, अल्लाह' रटनेसे चटाई बिछाकर नमाज़ पढ़नेसे या गुदड़ी ओढ़ लेनेसे अल्लाह नहीं मिल सकता।
—एक सूफ़ी

खुदी

जो खुदीसे भरा हुआ है खुदासे बिलकुल खाली है। —अज्ञात

पापकी सारी जड़ खुदीमें है। —गीता

जहाँ खुदी है वहाँ खुदा नहीं है। —अज्ञात

आदमी आप ही अपना दोस्त है और आप ही अपना दुश्मन। जिस किसीने अपने आपे (खुदी) को जीत लिया वह अपना दोस्त है और जिसका आपा उसपर सवार है। वह आप अपना दुश्मन है।
—गीता

खुशियाँ

क्षणिक खुशियोंको त्यागकर सर्वोच्च हितके रास्ते चल। —अज्ञात

हमारी खुशियाँ वास्तवमें कितनी कम हैं अफ़सोस है कि उनकी खातिर हम अपने चिरंतन कल्याणको खतरेमें डाल देते हैं। —बोधी

पापमय और ममनूअ खुशियाँ जहरीली रोटियोंकी तरह हैं उनसे उस वक्त भूख भले ही मिट जाय मगर आखिरमें उनमें मौत है।
—ट्रायन एडवर्ड्स

खूबसूरती

तन्दुरुस्ती और खुशमिज़ाजीसे खूबसूरती बनी है। —सर सैंडी

खूबसूरतीको बाहरी गहनोंकी मददकी ज़रूरत नहीं होती। वह तो सिंगार बिना ही सबसे अधिक शोभा पाती है। —थॉमसन

किसीने अरस्तूसे पूछा, 'खूबसूरती क्या है?' उसने जवाब दिया 'यह सवाल अन्धोंसे पूछो'। —अज्ञात

खेती

किसी राष्ट्रके लिए धन प्राप्त करनेके सिर्फ़ तीन तरीके दिखाई देते हैं, पहिला है लड़ाईसे जैसा कि रोमनोंने अपने विजित पड़ोसियोंको लूटकर किया था—यह डकैती है; दूसरा व्यापारसे जो कि मामूलन् धोखाज़नी है; तीसरा खेतीसे जोकि एकमात्र ईमानदार तरीका है जिसमें कि आदमी ज़मीनमें डाले हुए बीजकी वास्तविक वृद्धि पाता है, एक किस्मका लगातार चमत्कार जिसे ईश्वर उसकी मासूम ज़िन्दगी और पुण्यमय उद्योगके लिए इनामके तौरपर उसके हाथमें दिखलाता है।
—फ्रैंकलिन

जो कोई अनाजकी एक बालकी जगह दो या घासकी एक पत्तीकी जगह दो उगाता है, ज़्यादा शुक्रगुज़ारीका मुस्तहक है और तमाम राजनीतिज्ञोंकी समूची जातिकी बनिस्बत वह देशकी ज़्यादा ज़रूरी सेवा करता है। —स्विफ़्ट

वह सुन्दरी जिसे लोग धरती बोलते हैं अपने मन ही मन हँसा करती है जब कि वह किसी काहिलको यह कह रोते हुए देखती है—'हाय, मेरे पास खानेको कुछ भी नहीं है।' —तिरुवल्लुवर

खेल

जो अपनी सारी ज़िन्दगी खेलमें गुज़ारता है वह उस आदमीकी तरह है जो सिर्फ़ किनारियाँ पहिनता है और सिर्फ़ चटनियाँ खाता है।
—रिचार्ड फुलर

खोना

पूरे तौरसे पाना सबसे अच्छा है लेकिन अगर वह असम्भव हो तो उसके बाद सबसे अच्छी चीज़ पूरे तौरसे खोना है। —टैगोर

खोज

दुनिया ग्रन्थोंसे सन्तुष्ट रहती है, वस्तु-स्वरूपकी खोज करनेवाले विरले ही निकलते हैं। —पास्कल

आकाशमें एक नया ग्रह खोज निकालनेकी अपेक्षा पृथ्वीपर आनन्दके एक नये स्रोतका पता लगाना अधिक महत्त्वपूर्ण है। —अज्ञात

बेहतर इसके कि दुनिया तुम्हें खोजे तुम्हें अपने आपको खोज लेना होगा। —अज्ञात

[ग]

गंगा

वह देश धन्य है, जहाँ गंगा है। —रामायण

गंगा इसलिए महान् है कि वह मैल छुड़ाती है। सच्ची महत्ता दूसरोंका उद्धार करनेमें है। —अज्ञात

गपशप

आह! गपशप एक तुच्छ आदमीको भी किस प्रकार गर्वसे भर देता है! —एन. इवान्स

गति

आहिस्ता चलनेसे न डर सिर्फ़ डर चुपचाप खड़ा रहनेसे। —चीनी कहावत

गदहा

गदहा रेशमी वस्त्र पहिन ले तो भी लोग उसे गदहा ही कहेंगे।

—अज्ञात

गधा

गधेको बहुत रेंकना पड़ेगा पेश्तर इसके कि वह सितारोंको खिसकाकर गिरा दे। —जॉर्ज इलियट

गप

गपकी क्या खूब परिभाषा की गई है कि वह दो और दोको मिलाकर पाँच बनाती है। —अज्ञात

गमन

दावतवाले घरकी बनिस्बत मातमवाले घर जाना बेहतर है।

—अज्ञात

गरज

आदमीको किसी भी दूसरेसे अपनी गरज पूरी करानेकी इच्छा नहीं रखनी चाहिए। —गीता

गलतियाँ

मैंने जो सारा दुनिया देखी है उससे यही सीखा है कि दूसरोंकी गलतियों पर अफ़सोस करूँ न कि गुस्सा। —लौंग फैलो

गवर्नमेण्ट

गवर्नमेण्टका सर्वोच्च ध्येय लोगोंको सत्पुरुष बनाना है। —एमर्सन

ग़रीब

किसी भी ग़रीब आदमीका अपमान न करो। अपनी आपदाके कारण वह दयाका पात्र है अपमानका नहीं। —अज्ञात

ग़रीब वह नहीं है जिसके पास कम है बल्कि वह जो अधिक चाहता है। —डेनियल

वही ग़रीब है जिसकी तृष्णा विशाल है। मन अगर सन्तुष्ट हो तो कौन धनी है कौन दरिद्री। —कहावत

धनवान् होते हुए भी जिसकी अपेक्षा दूर नहीं हुई है वह सबसे अधिक ग़रीब है। —इब्राहिम आदम

"मैं ग़रीब हूँ" ऐसा कहकर किसीको पापकर्ममें लिप्त न होना चाहिए क्योंकि ऐसा करनेसे वह और भी कंगाल हो जायेगा। —तिरुवल्लुवर

दो चीज़ें कहाँ ग़रीबकी बुरा लगते हैं– ग़रीबकी इच्छा और कमज़ोरका गुस्सा। —कहावत

ग़रीबी

ग़रीबीका आख़िरी नतीजा पराधीनता है। —जॉन्सन

ग़रीबीकी शर्म उतनी ही बुरी है जितना धनका अहङ्कार। —अंग्रेज़ी कहावत

तमाम नसीहत पूर्णतापूर्ण उपदेशोंमें इससे ज़्यादा सच्चा हुआ कोई नहीं है कि ग़रीबी चरित्रको निर्मल करती है। —एम मैरिक

बुरा होनेसे निर्धन होना अच्छा। —कहावत

संसार न्यायनिष्ठ और नेक आदमीको ग़रीबीके दैन्य दलित नहीं देखता। —तिरुवल्लुवर

ग़रीबी सद्गुणोंकी माँ है। —पुरानी अंग्रेज़ी कहावत

ग़रीबी ऐसा बड़ा पाप है और इतने अधिक प्रलोभन और दुःखोंसे ओत-प्रोत है कि मैं हृदयसे चाहूँगा कि तुम इससे बचकर रहो। —डाक्टर जॉन्सन

मैंने ग़रीबीके समान अन्य कोई वस्तु पुरुषके लिए अधिक दुःखदायी नहीं देखी। —प्रभु-नारायण

गहराई

ईश्वर आत्माकी गहराईको पसन्द करता है उसके फैलावको नहीं। —वर्ड्सवर्थ

ग्रहण

मेरी समझमें जिससे हम कुछ भी नहीं ले सकते ऐसा संसारमें कोई नहीं है। —गाँधी

ग्रन्थ

ग्रन्थोंका काम जिज्ञासा उत्पन्न करना मात्र है। मगर उसे पूरा करनेका एक ही उपाय है और वह है स्वानुभव। —विवेकानन्द

ग्रन्थके मानी हमेशा सद्ग्रन्थ नहीं होते अक्सर उसके मानी निकलते हैं 'ग्रन्थि (गाँठ)। —रामकृष्ण परमहंस

गाना

वह गाना जो मैं गाने आया था आज तक बेगाया पड़ा है। —टैगोर

मुझे राष्ट्रके सब गाने लिखने दो, और मुझे इसकी परवाह नहीं कि उसके क़ानून कौन बनाता है। —फ्लेचर ऑफ़ साल्टन

गाय

वह ईश्वरके द्वारा करुणापर लिखी गई कविता है। —गाँधी

गाली

मुझे तुम चाहे जितनी गालियाँ दो, वह अक्सर इलाजकी बनिस्बत फ़ायदा ज्यादा करती है। —प्रसाद

जो धीर वीर और गम्भीर हैं वे गाली देते हुए शोभा नहीं पाते। —रामायण

एक नीच और क्षुद्र आदमी द्वारा अश्लील गालियाँ दिए जानेपर कैटोने उससे शान्तभावसे कहा—'मेरा तेरा मुक़ाबला नहीं बराबरीका

है क्योंकि तू दुर्वचन आसामियोंसे सह सकता है और सुगमतासे सीख सकता है, लेकिन मेरे लिए उसका सुनना असामान्य है और बोलना नागवार है। —अज्ञात

गुण

कौवेकी चोंचको सोनेसे मढ़िये उसके पैरोंको माणिक्यसे जड़िये, और उसके हर एक परमें मोती पिरोइये तो भी वह कौआ ही रहेगा राजहंस नहीं हो जायेगा। —अज्ञात

गुणसे ही उच्चता प्राप्त होती है ऊँचे आसनपर बैठनेसे नहीं। महलके शिखरपर बैठ जानेसे कौआ गरुड़ हो जाता है क्या? —अज्ञात

शत्रुके गुण ग्रहण कर लो और गुरुके दुर्गुण छोड़ दो। —अज्ञात

जिसे तुम दूसरोंमें देखकर खुश होते हो, वह तुममें हो तो अक्सर दूसरोंको खुश करे। —चैस्टरफील्ड

गुणसे कोई स्मरणीय होता है न कि धन से। —अज्ञात

अक्सर उस आदमीमें ही वे अच्छाइयाँ या बुराइयाँ होती हैं जिन्हें वह मनुष्यजातिपर आरोपित करता है। —शेनस्टन

अगर किसीमें गुण होंगे तो वे स्वयं खुद प्रकाशित हो उठेंगे; कस्तूरीको अपनी मौजूदगी कसम खाकर नहीं साबित करनी पड़ती। —अज्ञात

गुण-गान

ईश्वरने कहा—'हे नारद न मैं वैकुण्ठमें रहता हूँ और न तो योगियोंके हृदयमें ही रहता हूँ किन्तु मेरे भक्त जहाँपर मेरे गुणोंका गान करते हैं मैं वहीं रहता हूँ। —अज्ञात

ईश्वरने कहा है—हे सत्यनिष्ठ जनो, संसारमें गुणगान करके सम्पत्तिवान् बनो। मेरा गुणगान इस लोकमें सम्पत्तिदायक और परलोकमें भी लाभदायक है। —मलिक दिनार

गुण-ग्राहक

गुणीका कद्रदाँ भी गुणी है। —अज्ञात

गुण-ग्राहकता

एक चीज़ है जो कि योग्यतासे कहीं ज़्यादा विरल, सूक्ष्म और दुर्लभ है। वह है योग्यताको पहिचाननेकी योग्यता। —अज्ञात

गुणवान

गुणवान मनुष्योंको कैद किये जाते हैं, निर्गुणी छुट्टे रहते हैं। तोतेको पिंजड़ेमें बन्द रहना पड़ता है परन्तु कौआ आज़ादीसे उड़ता फिरता है।
—अज्ञात

गुणी

सद्गुणवान, सुशिक्ष मिज़ाज और दानिशमंद आदमी तब तक नहीं बोलता जब तक खामोशी नहीं हो जाती। —सादी

गुनाह

गुनाह छिपा नहीं रहता। वह मनुष्यके मुखपर लिखा रहता है। इस शास्त्रको हम पूरे तौरसे नहीं जानते, लेकिन बात साफ़ है।
—गांधी

गुप्त

दिलकी ऐसी कोई गुप्त बात नहीं है जिसे हमारे काम प्रकट न कर देते हों। —मासिंजर

अगर तू सफलता और मान-सम्मानका इच्छुक है, तो हर अमीर और ग़रीबसे अपनी बातोंको छिपाये रख।
—ख़्वाजा-अहीम सहरी

गुर

चार हज़ार वचनोंमेंसे मैंने चार गुर चुने हैं जिनमेंसे दोको सदा

याद रखना चाहिए यानी मालिक और मौत और दो को भूल जाना चाहिए यानी भलाई जो तू किसीके साथ करे और बुराई जो कोई तेरे साथ करे। —लुकमान

गुरु

शिष्यके सामने 'सही' करना यही गुरुका काम है बाकीके लिए शिष्य स्वावलम्बी है। —विनोबा

यदि मानवमात्र सच्ची हार्दिकता और तीव्र व्याकुलतासे जो स्वयं ही ईश्वर तक पहुँच सकता है उसके लिए गुरुकी आवश्यकता नहीं है। लेकिन आत्माकी ऐसी व्याकुलता बहुत दुर्लभ है, इसलिए गुरुकी आस रखता है। —रामकृष्ण परमहंस

धर्माचरण सिखानेवाला सच्चा गुरु अनुभव है। —विवेकानन्द

एक मात्र ईश्वर ही विश्वका पथ-प्रदर्शक और गुरु है।

—रामकृष्ण परमहंस

गुरुभक्त

सच्चा गुरुभक्त किसी रोज़ सारी दुनियाको भारी पड़ जायेगा।

—विवेकानन्द

गुलाम

गुलाम वह है जिसने अपने विचार या मनकी आज़ादी खो दी है।

—अज्ञात

वह आदमी गुलाम नहीं है जिसकी इच्छा-शक्ति स्वतंत्र है।

—अज्ञात

जिसकी महत्तर शक्ति आधार है वह गुलाम नहीं है। —याहरिवत

जिसकी अपनी कोई राय नहीं है लेकिन दूसरोंकी राय और रुचि पर निर्भर रहता है गुलाम है। —क्लॉपस्टॉक

कुछ गुलाम बाहरी कोड़ोंसे काममें लगते हैं और अन्य अपनी अशान्ति और अहंकारवाले अन्दरूनी कोड़ोंसे। —रस्किन

पैदासे ही नहीं जो पिछले भी गुलाम हो गये हैं वे कभी आजादी हासिल नहीं कर सकते। —गांधी

मुझे वह आदमी दो जो कषायका गुलाम नहीं है तो मैं उसे अपने हृदयकी कोरमें रखूँगा। मेरे हृदयके हृदयमें रखूँगा। —शेक्सपियर

बहुतसे आदमी गुलाम हैं क्योंकि वे 'नहीं' का उच्चारण नहीं कर सकते। —अज्ञात

होमरका कथन है कि 'जिस दिन आदमी गुलाम बनता है अपने आधे सद्गुण खो बैठता है' यह सचाईके साथ, वह और कह सकता था कि वह आधेसे ज्यादा खो सकता है जब कि वह गुलामोंका मालिक बनता है। —बोल्टे

सबसे बड़े गुलाम वे हैं जो अपनी कषायोंकी गुलामीमें बने रहते हैं। —डायोजिनीज

गुलामी

इस तथ्यको आप चाहे जितना छिपायें गुलामी फिर भी कड़ुवा घूँट है। —स्टर्न

अरे आदमियो गुलामीके लिए तुम अपनेको कैसा तैयार करते हो। —टेसिटस

अपनी कषायोंका दासत्व करते रहना सबसे बड़ी गुलामी है। —[illegible]

ईश्वरपर निर्भर रहकर ही दुनियाकी गुलामीसे छूटा जा सकता है। धनके अनुष्ठानसे जो फल मिले उसे भी प्रभुप्रेमके लिए विसर्जन कर दो। ईश्वराज्ञा पालन करने पर ही सच्चा आनन्द मिलेगा। —[illegible]

जो भी हृदयसे प्रार्थना करता है वह कभी गुलामीको कबूल नहीं कर सकता। —गांधी

गुलामीमें रहना इन्सानका मानसिक निकाल है। जिस गुलामको

अपनी इच्छाका मालिक है और फिर भी अपनी ख्वाहिशोंको रोकनेका प्रयास नहीं करता वह पशुसे हीन है। अन्तःकरणसे प्रार्थना करनेवाला गुलामी का हर्गिज गवारा नहीं कर सकता। —गांधी

गुलामीको एक लमहेके लिए भी रहने देना अन्याय है।
—विलियम पिट

गुलामीसे मौत अच्छी है। —अज्ञात

कोई पाँच ही रुपये महीनेपर गुलामी स्वीकार करते हैं कोई बड़ी तनख्वाहपर, लेकिन कोई ऐसे भी होते हैं कि लाख रुपयेपर भी गुलामी मंजूर नहीं करते। —अज्ञात

गुस्सा

गुस्सेमें हो तो बोलनेसे पहिले दस तक गिनो; अगर बहुत गुस्सेमें हो, तो सौ तक। —जेफ़रसन

जब कभी तुम गुस्सेमें हो, तो यकीन रखो कि वह सिर्फ़ मौजूदा बेहूदगी ही नहीं है बल्कि यह कि तुमने एक आदत बढ़ा ली।
—एपिक्टेटस

गुस्सा बिना सबब नहीं होता, मगर शायद ही कभी माकूल सबबसे होता हो। —फ्रैंकलिन

गुस्सा करनेके मानी हैं आत्माकी शान्ति खोना, अपने ऊपर काबू खोना, विचारकी स्पष्टता खोना, परिस्थितिकी पकड़ खोना, और अक्सर निकटवर्ती लोगोंका मान खोना। —अज्ञात

जिस वक्त आप गुस्सेमें हों उस वक्त सामनेवाले आदमीको दो बात सुनाना बड़ा महँगा पड़ जाता है। —अज्ञात

गुस्सेका दौरा आत्मगौरवके लिए ऐसा विनाशक है जैसा ज़िन्दगीके लिए संखिया। —जे. जी. हालैंड

गोपनीय

मनुष्यको गुप्त रूपसे भी वह बात न कहनी चाहिए जो वह प्रत्येक समयमें नहीं कह सकता। —इमर्सन

गौरव

जो मनुष्य दर्प, क्रोध और विषय-कामनाओंसे रहित है, उसमें एक प्रकारका गौरव रहता है जो उसके सौभाग्यको सूचित करता है।
—तिरुवल्लुवर

सुख-सम्पत्ति ईर्ष्या करनेवालोंके लिए नहीं है ठीक उसी तरह गौरव दुराचारियोंके लिए नहीं है। —तिरुवल्लुवर

गृहस्थ

गुरुके सामने माथ झुकानेवाला गृहस्थ दुनियामें सुखको बढ़ानेका कारण होता है। —विवेकानन्द

[घ]

घर

वह घर दुःखी है जहाँ मुर्गेकी अपेक्षा मुर्गी ज्यादा बुलन्द आवाज़से बाँग देती है। —कहावत

अपने घरसे स्वर्ग ज्यादा दूर नहीं है। —कहावत

राजा हो या किसान सबसे सुखी वह है जो कि अपने घरमें शान्ति पाता है। —गेटे

घंटी

गिर्जेकी घंटी औरोंको बुलाती है, मगर खुद उपदेशपर ध्यान नहीं देती। —मॅकलिन

घमण्ड

किसी भी हालतमें अपनी शक्तिपर घमण्ड न कर। यह बहुरूपिया आसमान हर घड़ी हजारों रंग बदलता है। —हाफ़िज़

घुड़दौड़

घुड़दौड़ें प्रधानतः मूर्खों गुंडों और चोरोंकी खुशी और मुनाफ़ेके लिए चलाई जाती हैं। —जी गिसिंग

घृणा

घृणा या बदला लेनेकी इच्छासे मानसिक रोग उत्पन्न होते हैं।
—अज्ञात

सत्यपरायण मनुष्य किसीसे घृणा नहीं करता। —नैपोलियन

[च]

चर्खा

मुझे शांतिकी तमाम शक्ति चर्खेसे मिलती है। —गांधी

चमत्कार

दुनियाका चमत्कार देखना हो तो बच्चोंको देखो। इन्द्रजालका जादू देखना हो तो कलाकारोंके पास जाओ। —अज्ञात

पूर्ण त्याग और ईश्वरमें पूर्ण विश्वास ही हर चमत्कारका रहस्य है। —रामकृष्ण परमहंस

बुद्धि कोई सन्तोषजनक उत्तर दे या न दे, जो ईश्वरपर सच्ची श्रद्धा रखता है वह क़दम क़दमपर चमत्कारोंका अनुभव कर सकता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

चरित्र

सच तो यह है कि ग़रीब हिन्दुस्तान स्वतन्त्र हो सकता है लेकिन चरित्र खोकर धनी बने हुए हिन्दुस्तानका स्वतन्त्र होना मुश्किल है। —गांधी

क्या तुम यह जानना चाहते हो कि अमुक मनुष्य सदाचारित है या दुष्ट-चरण? आचार-व्यवहार चरित्रकी कसौटी है। —तिरुवल्लुवर

चरित्र मनुष्यके अन्दर रहता है यश उसके बाहर। —अज्ञात

चलन-व्यवहार

चलन-व्यवहार याने उधारका एक प्रकार। —विनोबा

चाकरी

नौकर यदि चुप रहता है तो मालिक उसे गूँगा कहता है, यदि बोलता है तो उसे बकवादी कहता है, यदि पास रहता है तो ढीठ कहता है, यदि दूर रहता है तो उसे मूर्ख कहता है, यदि गाली-मारी सह लेता है तो उसे डरपोक कहता है, और यदि नहीं सहता है तो उसे नीच कुलका कहता है। मतलब यह कि पराई चाकरी बड़ी ही कठिन है, योगियोंके लिए भी अगम्य। —भर्तृहरि

चापलूस

तमाम जंगली पशुओंमें मुझे अत्याचारीसे बचाओ, और तमाम पालतू जानवरोंमें चापलूससे। —बैन जॉन्सन

चापलूस उन बिल्लियोंकी तरह हैं जो सामनेसे चाटती हैं, पीछेसे खसोटती हैं। —जर्मन कहावत

चापलूस सबसे बुरे दुश्मन हैं। —टैसीटस

चापलूस मित्र सरीखे दिखते हैं जैसे भेड़िये कुत्ते सरीखे दिखते हैं। —अज्ञात

चापलूसी

चापलूसी बेवकूफोंका आहार है। —अज्ञात

मुश्किलसे कोई आदमी होगा जिसपर चापलूसीका असर न पड़ता हो, लेकिन जब वह किसी चीजके मूल्यपर आजमाई जाती है तो वह उसे पचीस गुना ज्यादा मुतकब्बिर अहमक बना देती है। —ईसप

चापलूसी मोटा जहर है। —अज्ञात

चापलूसीसे दोस्ती और सचाईसे दुश्मनी पैदा होती है। —कहावत

चापलूसी लेने और देनेवाले दोनोंको भ्रष्ट करती है। —बर्क

चारित्र

प्रकृतिमें वास्तविक सम्मानके चारित्रसे प्रियतर कुछ भी नहीं है। —[illegible]

जीवनका लक्ष्य सुख नहीं, चारित्र है। —बीचर

चारित्र ही धर्म है। —जैनाचार्य

अगर आप सोचते हैं कि अपनी किताबोंपर उदास बैठे रहकर वीरता का निर्माण कर लेंगे तो यह वह मुगालता है जो नवयुवकोंको गुमराहकर उनका सत्यनाश किया करती है। आप सपने देखदेखकर चारित्रवान् नहीं बन सकते, अपने चारित्रका निर्माण आपको गढ़गढ़कर और हथौड़ा ठोककर करना होगा। —फ्राउड

मनुष्यको कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जिससे वह अपने आपको तुच्छ और हीन समझने लगे। —डॉ॰ गणेशप्रसाद

...के भरोसे चलनेवालेकी मौत है, अपने दरप...

—अज्ञात

...त्व और चारित्र्यमें गुप्त होता है।

—कन्फ्यूशियस

...सरोवरकी तरह है जो हवाके हर झोंकेसे ... जाता है।

—[illegible]

बुद्धिसे चारित्र बढ़कर है। —एमर्सन

मैं अपने कैम्पमें चारित्रहीन मनुष्यकी अपेक्षा बेवकूफ, पीला कुत्ता, रीछ और ताकतवर खाना ज्यादा पसन्द करूँगा।

—कैप्टिन जान ब्राउन

आदमीके बर्तावमें कोई हरकत ऐसी नहीं है चाहे वह कितनी ही सरल और नगण्य हो, जिसमें कुछ ऐसी सूक्ष्म विशिष्टताएँ न छिपी हों जो उसके गुप्त चारित्रको प्रकट कर देती हैं। कोई बेवकूफ बुद्धिमान् और समझदारकी तरह न तो कमरेमें आता है न जाता है न बैठता है, न चुप रहता है न खड़ा होता है। —ब्रूयर

चारित्र संग-साथमें विकसित होता है और बुद्धि एकान्तमें। —गेटे

बिना चारित्रके ज्ञान अंधेकी आँखकी तरह है—सिर्फ दिखानेके लिए, और एकदम उपयोगिता-रहित। —सिम्पॉक

यश वह है जो कि लोग-लुगाइयाँ हमारे विषयमें सोचते हैं, चारित्र वह है जो ईश्वर और देव हमारे विषयमें जानते हैं। —पेन

तुम्हारी एक प्रधान आवश्यकता है—जो ठीक है वह करते रहना, चाहे ऐसा कितनी ही मजबूरीमें करना पड़े जब तक कि तुम वैसा बिना मजबूरीके न करने लग जाओ। और तब तुम आदमी हो। —रस्किन

चारित्र-बल

अब तो शासक भी चारित्र-बलके लिए स्थान छोड़ता जा रहा है।

—अज्ञात

चारित्रवान्

जिसे दूसरे बुद्धि और वक्तृत्व-बलसे कर पाते हैं चारित्रवान् उसे अपने प्रभावसे कर लेता है। —अज्ञात

मज़बूत चारित्रवाला ध्येयकी तरफ़ सीधा जाता है। —अज्ञात

चाल

यदि तू चाल चल जाता है और मैं तुझसे इसकी शिकायत नहीं करता तो यह न समझ कि मैं बेवकूफ़ हूँ। —अज्ञात

आहिस्ता चलोगे तो दूरकी मंज़िल ते कर लोगे। —अज्ञात

चालाकी

जहाँ योग्यताका अभाव है वहाँ चालाकी पैदा हो जाती है।

—फ्रैंकलिन

चाह

यदि मुझे किसी भौतिक वस्तुकी चाह नहीं है तो फिर मुझे अनुचित रूपसे किसीके सामने झुकनेकी क्या आवश्यकता है? —अज्ञात

चिकित्सक

संयम और परिश्रम इन्सानके दो सर्वोत्तम चिकित्सक हैं परिश्रमसे भूख तेज़ होती है और संयम अतियोगसे रोकता है। —रूसो

चित्तकी प्रसन्नता

चित्तकी प्रसन्नतासे आत्मामें एक प्रकारकी धूप रहती है जो कि उसे एक अमोलक और अविनाशी प्रशान्तिसे ओतप्रोत रखती है।

—एडीसन

चित्रकला

चित्रकला महान् है; नहीं, ईश्वर चित्रकार है। —एमर्सन

चित्रकार

चित्रकार अपने कामके करनेके विचारसे निर्जीव है, लेकिन अपनी धारणा, भावना और डिज़ाइनकी दृष्टिसे कविसे कम नहीं है। —शिलर

चिन्ता

चिन्ता आपत्तिका वह सूद है जिसे आपत्तिका ऋणदाता होनेसे पहले ही अदा कर दिया जाता है। —डीन इंगे

जो दूसरेके कामकी चिन्ता नहीं करता वह आराम और शान्ति पाता है। —इटालियन कहावत

मुझे विश्वास है कि चिन्ता जीवनकी शत्रु है। —शेक्सपियर

बेफ़िक्र दिल भरी थैलीसे अच्छा है। —अरबी कहावत

हमारी चिन्ताएँ हमेशा हमारी कमज़ोरियोंके कारण होती हैं। —जोबर्ट

सब लोग सब और सबकी व्यर्थ चिन्ता करते हैं, जो देव तमाम विश्वको पालता है वह क्या अपने बच्चोंकी उपेक्षा करेगा? —लौक

बिस्तरेपर चिन्ताओंको ले जाना अपनी पीठपर गट्ठर बाँधकर सोना है। —हेलिबर्टन

चुगली

मुँहसे कोई कितनी ही मीठी बातें करे मगर उसकी चुग़लख़ोर ज़बान उसके हृदयकी नापाकताको प्रकट कर ही देती है। —तिरुवल्लुवर

जो आदमी सदा बुराई ही करता है और नेकीका कभी नाम भी नहीं लेता, उसको भी प्रसन्नता होती है, जब कोई कहता है—'देखो यह किसीकी चुग़ली नहीं करता।' —तिरुवल्लुवर

चुनाव

मधुमक्खीकी तरह गुलमेंसे मधु ले लो और काँटे छोड़ दो। —अमेरिकन कहावत

चुप

दूसरोंको चुप करनेके लिए पहले खुद चुप हो जाओ। —अज्ञात

चुम्बन

अपने प्रेममें ईश्वर सान्तको चूमता है और आदमी अनन्तको।

—टैगोर

चेहरा

जिस तरह बिल्लौरी पत्थर पासवाली चीज़का रंग धारण करता है उसी तरह चेहरा भी दिलकी बातको प्रगट करने लगता है।

—शिवस्तुपर

खासकर स्त्रियोंका चेहरा किस कामका जब कि दिलके अन्दर बुराई भरी हुई है और दिल इस बातको जानता है? —शिवस्तुपर

अच्छे चेहरेके पीछे बुरा दिल छिपा हो सकता है। —कहावत

चेहरा हृदयका प्रतिबिंब है। —अज्ञात

अगर तुम्हारा चेहरा मुसकराना चाहता है मुसकराने दो; अगर नहीं, तो उसे मजबूर करो। —अज्ञात

आईनेमें चेहरा देखकर एक निगाह दिलपर भी डाल। —अज्ञात

एक टोपीके नीचे दो चेहरे मत लिये फिरो। —अज्ञात

चोर

चोर सबको चोर समझता है। —अज्ञात

जो शारीरिक परिश्रम करके ख़ुराक बदला चुकाये बग़ैर खाता है चोर है। —गांधी

जो दूसरोंका ख़याल नहीं रखता वह 'चोर' है। —गीता

क्या हम नहीं जानते कि हम छोटे चोरोंको फाँसी देते हैं और बड़े चोरोंके आगे सलाम झुकाते हैं? —जर्मन कहावत

बड़े चोर छोटे चोरोंको फाँसीपर चढ़ाते हैं। —कहावत

जो अपने हिस्सेका काम किये बिना ही भोजन पाते हैं वे चोर हैं।
—गांधी

चोरी

जिस वस्तुकी हमें आवश्यकता नहीं है उसे रखना लेना भी चोरी है।
—गांधी

अगर कोई आदमी मेहनतके रूपमें कीमत चुकाये बगैर ज़मीनसे फल लेकर खाता है तो वह चोरी करता है।
—अज्ञात

उस चीज़का भी इस्तेमाल करना जो कि मानी तो हमारी जाती है लेकिन जिसकी हमें ज़रूरत न हो चोरी है।
—गांधी

शारीरिक उद्योग करना मनुष्यका धर्म है जो उद्यम नहीं करता वह चोरीका अन्न खाता है।
—गांधी

[छ]

छल

वह सभा नहीं है जिसमें वृद्ध पुरुष न हों, वे वृद्ध नहीं हैं जो धर्म ही की बात नहीं बोलते, वह धर्म नहीं है जिसमें सत्य नहीं और न वह सत्य है जो कि छलसे युक्त हो।
—महाभारत

छलछंद

छलछंद और विवेकमें उतना ही अन्तर है जितना बंदर और आदमीमें।
—अज्ञात

छिछला

छिछले दिमागका इससे ज़्यादा अचूक लक्षण दूसरा नहीं कि वह

जड़ता

किसी किसी अति कठिन रोगकी भी दवा है मगर जड़ताकी कोई औषधि नहीं है। —ईसा-बिन-इब्न करीम

जनहित

जनहितके लिए उत्साह आइमस्त और शरीफ आदमीका गुण है, और उसे निजी खुशियों सुभीतों और अन्य वृत्तियोंका त्याग कर देना चाहिए। —स्टील

जन्म

हमारा मानव-अवतार इसलिए हुआ है कि हमारे अन्तरमें जो ईश्वर बसता है उसका साक्षात्कार हम कर सकें। —गांधी

जन्म-मरण

जो जन्म-मरणकी बात सही हो, और है तो हम मृत्युसे जरा भी क्यों डरें दुःखी हों, और जन्मसे खुश हों? प्रत्येक मनुष्य यह सवाल अपनेसे करे। —गांधी

जप

इस कलियुगके योग्य वास्तविक भक्तिमय और आध्यात्मिक अभ्यास प्रेमसे प्रभुका नाम जपना है। —रामकृष्ण परमहंस

ज़बान

मिल्टनसे पूछा गया 'क्या आपका इरादा अपनी दुख्तरको मुख्तलिफ ज़बानें सिखानेका है?' जवाबमें वे बोले, "ना भाई! औरतके लिए एक ज़बान काफी है!" —अज्ञात

लम्बी ज़बान छोटी ज़िंदगी। —अरबी कहावत

दसमें से नौ सूरतोंमें बदज़बानी दुष्टता या निराशाके कारण होता है। —बनसीन ए

स्वप्नकी विविधता जागनेपर 'एक' हो जाता है उसी तरह इस जाग्रत संसारकी विविधता 'ब्रह्ममें जागने' पर 'एक' हो जाती है।

—प्रभात

जागृति

यह एक स्वप्न है जिसमें चीज़ें बिखरी हुई हैं और परेशान करती हैं। जब मैं जागूँगा उन्हें तुममें एकत्र पाऊँगा और मुक्त हो जाऊँगा।

—टैगोर

जाति

मनुष्य कर्मसे ब्राह्मण होता है, कर्मसे क्षत्रिय होता है, कर्मसे वैश्य होता है, कर्मसे शूद्र होता है। —भगवान् महावीर

आखिरकार जाति सिर्फ एक है—मानवजाति —जॉर्ज मूर

ज्ञान

मनुष्य जितना ही अधिक अपना ज्ञान देता है उतना अधिक वह उसे बचाता है। —गांधी

जानकारी

आप अपना काम कीजिए और मैं आपको जान जाऊँगा। —एमर्सन

हिमालयके उत्तरमें क्या है? मैंने उसे उत्तरमें ही रहने दिया है क्योंकि मैं जब उसके उत्तरमें जाकर पहुँचूँगा तो वह दक्षिणकी ओर हो ही जायेगा। —विनोबा

जो तुम दिखलाई देते हो उसे हर कोई देखता है, परन्तु यह कौन जानता है कि तुम क्या हो? —मैकियावेली

जाँच

हर इन्सानको जाँचनेका बेहतरीन तरीका यह है कि उसकी पसन्द उससे पूछी जाय। तुम मुझे बताओ कि तुम्हें क्या पसन्द है और मैं तुमको बता दूँगा कि तुम क्या हो। —रस्किन

अगर तू अक़्लमन्द समझा जाना चाहता है तो इतना अक़्लमन्द तो बन कि अपनी ज़बानपर क़ाबू किये रह। —[illegible]

ज़माना

ज़मानेके साथ रहो लेकिन उसके पीछे न चलो; अपने समकालीनोंके लिए वह दो जिसकी उन्हें ज़रूरत है, वह नहीं जिसकी वे तारीफ़ करें। —शिलर

कोई आदमी सत्रहवीं और उन्नीसवीं सदीमें एक साथ नहीं रह सकता। —[illegible]

ज़मीन

ज़मीनका मालिक तो वही है जो उसपर मेहनत करता है। —गांधी

ज़मीर

सच्चे आनन्दका फ़व्वारा अन्तरात्मामें है। —[illegible]

अन्तरात्मा तमाम सच्चे साहसकी जड़ है; अगर किसीको वीर बनना है तो वह अपने अन्तरका कहा माने। —[illegible]

अन्तःकरणकी आवाज़ ही सबसे बड़ा धर्म और राजकीय नियम है। —[illegible]

इन्सानका ज़मीर ख़ुदाका पैग़म्बर है। —बायरन

जिसकी सदसद्विवेक बुद्धि शुद्ध है वह आक्षेपोंसे नहीं डरता। —[illegible]

ज़मीर आत्माकी आवाज़ है जैसे कि वासनायें शरीरकी आवाज़ हैं; कोई ताज्जुब नहीं कि ये अक्सर एक दूसरेके विरोधी होते हैं। —रूसो

जहाँ मेरी राय ख़त्म हो जाती है वहाँसे ज़मीरकी शुरू होती है। —नैपोलियन

कोशिश करो कि तुम्हारे हृदयमें दैविक ज्वालाकी वह चिनगारी रौशन रहे जिसे ज़मीर कहते हैं। —[illegible]

स्वप्नकी विविधता जागनेपर 'एक' हो जाती है उसी तरह हम जाग्रत संसारकी विविधता 'ब्रह्ममें जागने' पर 'एक' हो जाती है।

—प्रसाद

जागृति

यह एक स्वप्न है जिसमें चीज़ें बिखरी हुई हैं और परेशान करती हैं। जब मैं जागूँगा उन्हें तुममें एकत्र पाऊँगा और मुक्त हो जाऊँगा।

—टैगोर

जाति

मनुष्य कर्मसे ब्राह्मण होता है, कर्मसे क्षत्रिय होता है, कर्मसे वैश्य होता है, कर्मसे शूद्र होता है। —भगवान् महावीर

आख़िरकार जाति सिर्फ़ एक है—मानवजाति —जॉन मूर

ज्ञान

मनुष्य जितना ही अधिक अपना ज्ञान देता है उतना अधिक वह उसे बचाता है। —गांधी

जानकारी

आप अपना काम कीजिए और मैं आपको जान जाऊँगा। —एमर्सन

हिमालयके उत्तरमें क्या है? मैंने उसे उत्तरमें ही रहने दिया है क्योंकि मैं जब उसके उत्तरमें जाकर देखूँगा तो वह दक्षिणकी ओर हो ही जायेगा। —विनोबा

जो तुम दिखलाई देते हो उसे हर कोई देखता है, परन्तु यह कौन जानता है कि तुम क्या हो? —मेकियावेली

जाँच

हर इन्सानकी जाँचका बेहतरीन तरीक़ा यह है कि उसकी पसन्द उससे पूछी जाय। तुम मुझे बताओ कि तुम्हें क्या पसन्द है और मैं तुमको बता दूँगा कि तुम क्या हो। —रस्किन

जितेन्द्रिय

जो अच्छा या बुरा छूकर खाकर सूँघकर, देखकर सुनकर न तो खुश होता है न नाखुश, उसको जितेन्द्रिय पुरुष जानना। —मनु

ज़िंदगी

हर आदमीकी ज़िन्दगी ऐसी डायरी है जिसमें वह एक कहानी लिखना चाहता है और लिखता है दूसरी। —अज्ञात

जाहिल कम-अक्ल, कम-ज़र्फ़की रातें सोनेमें जाती हैं और दिन व्यर्थ कामोंमें। —अज्ञात

हम हमेशा शिकायत करते रहते हैं कि हमारे दिन थोड़े हैं और काम ऐसे करते रहते हैं मानो उनका अन्त कभी न होगा। —एडीसन

किसी नेक आदमीकी ज़िन्दगीका सबसे अच्छा हिस्सा उसके प्रेम और दयाके छोटे-छोटे, नामरहित भूले हुए काम हैं। —वर्ड्सवर्थ

कोई आदमी ज़िन्दगीका सच्चा मज़ा नहीं चखता सिवाय उसके जो उसे छोड़नेके लिए तैयार और रज़ामन्द रहता है। —सेनेका

'डरके रहकर जीना दुखदायी वस्तु है यह तो गुलामीकी ज़िन्दगी है। —लियर

ज़िन्दगी बरबाद होती जाती है जब कि हम जीनेकी तैयारी करते जाते हैं। —एमर्सन

ज़िन्दगी समुन्दरका पानी है और वह उसी वक्त तक साफ़-सुथरी रह सकती है जब तक आस्मानकी तरफ़ बढ़ती रहे। —अज्ञात

ऐसे आदमी बनो और ऐसी ज़िन्दगी बसर करो कि अगर हर आदमी तुम सरीखा हो जाय और हर ज़िन्दगी तुम्हारी ज़िन्दगीके सदृश हो जाय तो यह दुनिया ईश्वरका स्वर्ग बन जाय। —फ़िलिप्स ब्रुक्स

ज़िन्दगी चन्दरोज़ा है। यह हिमाक़तोंकी ताक-झाँक या उजड्ड बकवास झगड़ा या शोर-पुकारके लिए नहीं है। शीघ्र ही अन्धकार का आनेवाला है। —एमर्सन

जीना मात्र मौज नहीं—खाना पीना कूदना नहीं—बल्कि ईश्वरकी स्तुति करना अर्थात् मानव जातिकी सच्ची सेवा करना।

—गांधी

यह बात कुछ महत्त्व नहीं रखती कि आदमी कैसे मरता है बल्कि यह कि वह जीता किस तरह है। —जॉनसन

आदमी अपनी सारी जिन्दगी बर्बाद करके अपनी शक्तियोंको खो देता है और अपने तजर्बोंसे फ़ायदा उठाना शुरू करता है।

—जेन टेलर

जीवन जागनेके लिए है और इसके समान जागनेमें कोई आनन्द नहीं है। सम्पत्ति और वैभव मनुष्यका सुख होंगे यह भ्रम है। सौन्दर्य और आनन्दसे ही सुख है। वास्तविक सौंदर्य शान्त प्रकृति पवित्र आचार और पवित्र विचारमें है। ये बातें जिस मनुष्यमें हैं वही सुखका भोक्ता है। इस सुखको प्राप्त करनेके लिए मनुष्यको अहर्निश संघर्ष करना चाहिए, यही जीवन है। —थोरो

अपना जीवन लेनेके लिए नहीं देनेके लिए है। —विवेकानन्द

मानव जीवन नश्वर है, उसमें आयुष्य तो बहुत ही परिमित है। एकमात्र मोक्षमार्ग ही अविचल है। यह जानकर काम भोगोंसे विमुख हो! —भगवान् महावीर

अगर हम एक दूसरेकी ज़िन्दगीकी मुश्किलें आसान नहीं करते तो फिर हम जीते ही किस लिए हैं? —जॉर्ज इलियट

मुझे आशा है कि मैं सत्य और अहिंसाके व्रतको—जिसके कारण जीवन मेरे लिए जीने योग्य है—भुलाऊँगा नहीं। —गांधी

जिस तरह जबसे दुनिया शुरू हुई है कोई सच्चा काम कभी निष्फल नहीं गया, उसी तरह जबसे दुनिया शुरू हुई है कोई सच्चा जीवन कभी असफल नहीं हुआ। —एमर्सन

जीवनका लक्ष्य ईश्वरके समान होना है और जो आत्मा परमात्मा का अनुसरण करती है वह उसीके समान हो जायगी। —सुकरात

मनुष्य जीवन माने प्रभुकी तमाम शक्ति सम्पादन करना ईश्वरके समस्त ऐश्वर्यको प्राप्त करके जीवन उत्कृष्ट करना। —अरविन्द घोष

बुरे आदमी खाने-पीनेके लिए जीते हैं। भले आदमी इसलिए खाते-पीते हैं कि वे जी सकें। —सुकरात

जब हम न केवल मिथ्या और पापपूर्ण चीज़ोंके लिए 'नहीं' कह सकें, बल्कि ऐसी सुहावनी फ़ायदेमन्द और अच्छी चीज़ोंके लिए भी कह सकें जो हमारे महान् कर्तव्यों और हमारे प्रधान काममें बाधा या रोक डालें तब हम अधिक अच्छी तरह समझेंगे कि ज़िन्दगीकी कीमत क्या है और किस तरह उसका अत्यधिक उपयोग किया जाय।

—स्पॉडर्ड

जीवन अधिकांशतः झाग—बुलबुला है, दो चीज़ें पत्थरके समान खड़ी हैं—दूसरेके दुःखमें दया और अपने दुःखमें हिम्मत। —अज्ञात

वह सबसे अधिक जीता है जो सबसे अधिक सोचता है, उत्कृष्टतम भावनाएँ रखता है, सर्वोत्तम रीतिसे कार्य करता है। —वही

बहुत कम लोग समझते हैं कि मानव-जीवनका उद्देश्य परमात्माको देखना है। —अज्ञात

वह आदमी जिसने अन्दरसे गम्भीरतर जीवन शुरू कर दिया बाहरसे सरलतर जीवन शुरू कर देता है। —हुमन्स

मूर्खोंके साथ संग्राम करना ही जीवन है। —गाँधी

जीवन अच्छाईसे भरा हुआ है अगर हम उसकी तलाश करें।

—अज्ञात

जब कि मैं जानता हूँ कि मेरा जीवन केवल एक दम मात्र है तो मैं क्यों उसे ईश्वरकी स्तुति-प्रार्थना-उपासनामें न लगाऊँ?

—सुलेमान फ़ारसी

कर्मका ही दूसरा नाम जीवन है। निकम्मेका अस्तित्व है पर वह जीवित नहीं। —[illegible]

पवित्र जीवन एक आवाज़ है, वह तब बोलती है जब ज़बान ख़ामोश होती है। —[illegible]

वे ही लोग जीते हैं जो निष्कलंक जीवन व्यतीत करते हैं; और जिनका जीवन कीर्ति विहीन है वास्तवमें वे ही मुर्दे हैं। —तिरुवल्लुवर

जो मानवताके लिए जीता है उसे अपनेको खोकर सन्तोष मानना चाहिए। —प्रो॰ बी॰ [illegible]

जिसका कोई घरबार नहीं, उसीका घर सारी दुनिया है। जिसने जीवनके बन्धनोंको काट डाला है उसीके हिस्सेमें सच्चा जीवन आता है। —स्टीफ़न ज़िग

पहले ईश्वरको प्राप्त करो और तब धन प्राप्त करो। इससे उलटा करनेकी कोशिश न करो। अगर आध्यात्मिकता प्राप्त करनेके बाद, तुम सांसारिक जीवन बसर करोगे तो तुम मनकी शान्तिको कभी नहीं खोओगे। —रामकृष्ण परमहंस

अगर कोई आदमी यह प्रतिज्ञा कर ले कि वह हर रोज़ अपना शक्तिभर काम करेगा और पवित्र तथा उपकारी जीवन बितानेमें कोई कसर उठा न रखेगा तो मैं विश्वास करता हूँ कि उसका जीवन अर्थपूर्ण और आशातीत उत्साहसे लबरेज़ हो जायगा। —बुकर टी॰ वाशिंगटन

जीवनका स्वाद लेनेके लिए हमें जीवनके लालचका त्याग कर देना चाहिए। —गाँधी

जीवन-कला

जीनेकी कला अधिकांशतः इसमें है कि हम उन तुच्छ बातोंको [illegible] मार सकें जो हमें चिढ़ा सकती हैं। —[illegible]

हम सतहोंमें रहते हैं और जीवनकी सच्ची कला उनपर खूबीसे सरकनेमें है। —एमर्सन

जीवन-चरित्र

प्राचीन कालके सुप्रसिद्ध महापुरुषोंके जीवनसे अपरिचित रहना अपनी जिन्दगीको बच्चेपनकी हालतमें गुजारना है। —प्लूटार्क

जीवन-पथ

अगर हम जीवन-पथपर फूल नहीं बखेर सकते तो कमसे कम उस पर हम मुसकानें तो बखेर सकते हैं। —चार्ल्स डिकेन्स

जीवनोद्देश्य

अपनी रिमझिमाती मेहरबानी और प्रेमकी छायासे मेरी आत्माको तंग मत करो। मुझे कठोर इन्कारकी बेरहम आज्ञाओंमें बांध दो। मुझे सर्वोत्तम विरागमें होकर वीरतापूर्वक जीवनोद्देश्यको प्राप्त करने दो। —टैगोर

जीवन्मुक्त

अगर किसीको यह विश्वास हो जाय कि ईश्वर ही यह सब कुछ कर रहा है तो वह जीवन्मुक्त हो जाता है। —रामकृष्ण परमहंस

जीविका

बहुतसे पंडित व मूर्ख लोग कपटाचरणसे जीविका उपार्जन करनेमें लुब्ध हैं और वे निर्दोष लोगोंको ही नहीं, साक्षात् बृहस्पतिको भी कमअक्ल समझते हैं। —महाभारत

वही जीविका श्रेष्ठ है जिससे अपने धर्मका हानि न हो, और वही ऐसा उद्यम है जिससे कुटुम्बका पालन हो। —शुक्रनीति

जीवित

जीवित कौन? जो सत्यके लिए हर वक्त मरनेको तैयार है वह।
—स्वामी रामतीर्थ

जुआ

इन्सानकी ज़िन्दगीमें दो वक़्त हैं जब कि उसे जुआ नहीं खेलना चाहिए, एक तो जब वह खेल नहीं सकता और दूसरे जब वह खेल सकता हो।
—सैमुएल क्लीमेंस

जुलूस

जहाँ तुम जुलूस देखो तो अत्यधिक सम्भावना यह है कि सच मुख़ालिफ़की तरफ़ है।
—बिशप लैटीमर

जेब

मेरी जेब पर हमला हुआ कि मेरा दिल धड़का।
—अकबर

जोगी

तनका जोगी और है मनका जोगी और।
—दीनानाथ

ज़ोरदार

ज़ोरदार वह है जो न दबे, न दूसरोंको दबने दे। बल्कि जो दबाया जाता हो उसे सहारा भी दे।

यदि मैं तुमसे इसलिए दबता हूँ कि तू ज़ोरदार है मुझे नुक़सान पहुँचा देगा तो मैं तुझे मनुष्य नहीं ज़ालिम और राक्षस समझता हूँ।

और मेरे इस प्रकार डरके झुकनेसे तू राज़ी रहता है तो तेरे बराबर मूढ़ नहीं।
—हरिभाऊ उपाध्याय

जोश

आदि गर्म मध्य नर्म अन्त सर्द।
—जर्मन कहावत

ज्योति

मैंने गुरुकी सेवामें निवेदन किया कि मेरी स्मरण-शक्ति निबल गई, इसपर उन्होंने मुझे यह उपदेश दिया कि पापोंको छोड़ दे; क्योंकि विद्या ईश्वरकी ज्योति है और ईश्वरकी ज्योति पापीको नहीं मिला करती।
—इमाम शाफ़ई

दूसरेके अनुभवसे होशियारी सीखनेकी मनुष्यमें उसको स्वतंत्र होकर चाहिए ।

[त]

तक़दीर

सिर्फ़ तक़दीर और इत्तिफ़ाक़की बातें यह दर्शाती हैं कि हम कार्य-कारणके सिद्धान्तोंको कितना कम जानते हैं । —हामिया बैसन

तजुर्बा

तजुर्बा उस क़ीमती कंघेके मानिन्द है जो किसीको उस वक़्त दिया जाय जब कि उसके तमाम बाल झड़ गये हों । —तुर्की कहावत

तटस्थ

तटस्थ आदमी शैतानके साथी हैं । —चैपिन

तटस्थ वृत्ति

तटस्थ वृत्तिके बिना गृहस्थ तटस्थ नहीं रह सकता । —विनोबा

तत्परता

पूर्ण तत्परता सब कुछ है और उससे कम कुछ भी नहीं ।

—चार्ल्स डिकेन्स

तत्त्व

जब तत्त्व आचरणमें उतरता दिखाई नहीं देता तब समझना चाहिए कि उसमें तत्त्व ठीक नहीं बैठ पाया । शुद्ध तत्त्व आचरणमें आना ही चाहिए । अशुद्धका कोई भी तत्त्व आचरणमें आ ही नहीं सकता ।

किन्तु जो आचरण तत्त्वके विरुद्ध नहीं जाता वह अशुद्ध और त्याज्य है।
—गाँधी

तत्त्वविचार

तत्त्वका विचार उत्तम है, शास्त्रोंका विचार मध्यम है, मंत्रोंकी साधना अधम है और तीर्थोंमें भिरना अधममें अधम है। —प्रभाव

तन्दुरुस्ती

जिस तरह तन्दुरुस्ती उस आदमीको ढूँढ़ती है जो पेट खाली होने पर ही खाना खाता है, उसी तरह बीमारी उसको ढूँढ़ती फिरती है जो उससे ज्यादा खाता है। —तिरुवल्लुवर

सबसे बड़ी मूर्खता स्वास्थ्यका किसी अनिश्चित कामके पीछे बरबाद कर देना है। —शोपेनहोर

तन्दुरुस्ती बगैर ज़िन्दगी ज़िन्दगी नहीं है, बेजान ज़िन्दगी है।
—प्रसाद

तन्दुरुस्ती जिसके बगैर ज़िन्दगी जीने लायक नहीं, सबेरे उठने, व्यायाम करने, गंभीरता और मिताहारसे क्यों न हासिल होगी!
—वॉकर

तन्मयता

जो अपने काममें तन्मय हो गया है उसे थाक या नुकसान कुछ नहीं मालूम होता। जिसे काममें प्रेम नहीं उसे थोड़ा भी अधिक मालूम होता है, जैसे कैदियोंको एक दिन वर्षकी तरह मालूम होता है, योगियोंको एक वर्ष एक दिनकी तरह। —गाँधी

तप

तप समस्त कामनाओंको यथेष्ट रूपसे पूर्ण कर देता है, इसलिए लोग दुनियामें तपस्याके लिए उद्योग करते हैं। —तिरुवल्लुवर

'शान्तिपूर्वक दुःख सहन करना और जीव हिंसा न करना' बस इसीमें तपस्याका समस्त सार है। —तिरुवल्लुवर

तप और तापकी विभाजक रेखा पहचानना जरूरी है। —विनोबा

जो धनी होकर दान न करे और निर्धन होकर तप न करे उसे गलेमें पत्थर बाँधकर डुबा देना चाहिए। —विदुर

तप ही परम श्रेय है इतर सुख मोह करनेवाला है। —रामायण

तपः स्वधर्मवर्तित्वम्।
(तप माने अपने कर्तव्यका पालन करना।) —अज्ञात

तपश्चर्या

शुद्ध तपश्चर्याके बलसे अकेला एक आदमी भी सारे जगत्को कँपा सकता है मगर इसके लिए बहुत श्रद्धाकी आवश्यकता है। —गाँधी

तपस्या जीवनकी सबसे बड़ी कला है। —गाँधी

तर्क

तर्क बड़ा हल्का सवार है कल्पनाके घोड़े उसे आकाशोंसे पटक देते हैं। —लिटन

तर्क करते समय शान्त रहिए, क्योंकि भावावेश गलतीको अपराध बना देती है और सत्यको बदतमीज़ी। —हरबर्ट

तर्कमें संगीत रहित ध्वनि न आने दें। —बेन जॉन्सन

केवल तर्क अपूर्ण है केवल भावना अन्ध है भावनावाली तर्क शुद्ध है तर्क-शून्य भावना अनिष्ट है। —अज्ञात

तर्कशील

बिना तर्कशील मन उस चाकू जैसा है जो धार ही धार है। वह उसे इस्तेमाल करनेवाले हाथको लहूलुहान कर देता है। —टैगोर

तर्क-वितर्क

अगर तुम्हें निरर्थक तर्क-वितर्कोंमें मज़ा आया करता है तो हो सकता है कि तू सोफ़िस्ताइयों (मिथ्यावादियों) से भिड़ने लायक हो, परन्तु इसका तुम्हें भान भी न हो कि मनुष्योंसे प्रेम किस तरह किया जाता है।
—सुकरात

तर्कशक्ति

हमारी तर्कशक्ति उसके लिए बहाने खोज निकालती है जिसे हम करना चाहते हैं, और उसके लिए युक्तियाँ गढ़ लेती है जिसपर हम विश्वास करना चाहते हैं।
—अज्ञात

तन्मयता

सच्चा साधन एक ही है 'तन्मयता'। सच्ची सिद्धि एक ही है 'तन्मयता'।
—विनोबा

'तन्मयता' प्राप्त होनेके लिए ध्येयका स्पष्ट दर्शन चाहिए। थोड़ा अन्तर भी सहन नहीं होता। पैरके बिलकुल नजदीक रखे हुए पानीसे क्या प्यास बुझ जाती है?
—विनोबा

तलाक

ध्यान रखो कि जिस चीज़को अल्लाह सबसे ज़्यादा नापसन्द करता है वह तलाक है।
—ह० मुहम्मद

तलाश

मैं अपने कमरेसे निकले आदमीकी तलाश उस सड़कपर कर रहा हूँ जहाँ सैकड़ों ऐसे आदमी पड़े हुए हैं।
—अज्ञात

उत्तम व्यक्ति जिसकी तलाश करता है वह उसके अन्दर है, तुच्छ आदमी जिसकी तलाशमें है वह दूसरोंमें है।
—कन्फ्यूशियस

तहज़ीब

सज्जन भी यदि बद-तहज़ीबोंके साथ हों अप्रिय लगते हैं।

—ग्लैडस्टन

तामस

तामस नम्रताकी क्षमाकी व सहिष्णुताकी कौड़ीकी भी कीमत नहीं। इससे कौमोंका भी फ़ायदा नहीं। —अरविन्द घोष

तारनहार

तमाम धर्मग्रन्थ फ़िज़ूल हैं जब तक कि पति-पत्नियाँ एक दूसरेके तारनहार न बन जायें। —स्वामी रामतीर्थ

तारीफ़

लानत है तुमपर अगर सब लोग तेरी तारीफ़ ही तारीफ़ करें।

—बाइबिल

तिरस्कार

दूसरोंका तिरस्कार करना और उन्हें नीचा मानना तो बड़ा भारी मानसिक रोग है। —प्रभु-उपदेश

तुच्छ

छोटी छोटी बातोंका ख़्याल महान् चीज़ोंका मज़मून है। —वाल्टेयर

हीन-दीन बेईमान आदमी घासके तिनकेके बराबर है। —अज्ञात

तुच्छ मनुष्य जो बात तुमसे कहे उसे तुच्छ मत जान क्योंकि मधुमक्खी एक मक्खी ही है परन्तु मधुकी स्वामिनी है।

—इस्माइल इब्न-अबीबकर

तुच्छता

तुच्छ लोग तुच्छ चीज़ोंसे ख़ुश रहते हैं। —साकिब

इस दुर्जेय तृष्णापर जो काबू पा लेता है उसके शोक इस प्रकार झड़ जाते हैं जैसे कमलके पत्ते परसे जलके बिन्दु। —बुद्ध

यह जहरीली तृष्णा जिसे जकड़ लेती है उसके शोक वीरण घासकी तरह बढ़ते ही जाते हैं। —बुद्ध

मेरुकी उपमा दिये जाने लायक बुद्धिमान्, शूर-वीर या धीर हो उसे भी एक तृष्णा तृणके समान बना देती है। —अज्ञात

चाँदी और सोनेके असंख्य हिमालय भी यदि लोभीके पास हों तो भी उसकी तृप्तिके लिए वे कुछ भी नहीं! कारण कि तृष्णा आकाशके समान अनन्त है। —अज्ञात

तेज

जब कि और लोग छिप जाते हैं उस वक्त भी तू मुझे सूरजके समान पायेगा जो कभी किसी स्थानमें छिपा नहीं करता।

—अरबस-बिन-मुहम्मद-अनसारी

मुखपर प्रसन्नता व दिव्य तेज त्यागवृत्तिके बगैर प्राप्त नहीं होते।

—स्वामी रामतीर्थ

तेज और क्षमा ये एक दूसरेकी व्याख्या हैं। —विनोबा

सिंह चाहे शिशु अवस्थामें ही हो मदसे मलिन कपोलोंवाले उत्तम गजके मस्तकपर ही चोट करता है। यही तेजस्वियोंका स्वभाव है। निस्सन्देह अवस्था तेजका कारण नहीं होती। —भर्तृहरि

तोबा

सच्चे दिलसे गुनाहस तोबा करनेवाला बेगुनाहके बराबर है।

—ह० मुहम्मद

त्याग

इस दुनियामें हम जो लेते हैं वह नहीं, बल्कि जो देते हैं वह हमें धनवान् बनाता है। —बीचर

त्यागसे पाप घटता है । दानसे पापका ब्याज चुकता है ।
—विनोबा

त्याग और भोगकी पक्की [illegible] पैदी हुई है, इसलिये हमारी बातोंका त्याग किया भी तो वह त्याग 'भोगका भोग' होकर बैठता है ।
—विनोबा

पवित्रताकी भावना ही त्यागका स्वरूप है । —स्वामी रामतीर्थ

जिस त्यागसे अभिमान उत्पन्न होता है वह त्याग नहीं है । त्यागसे शान्ति मिलनी चाहिए । आखिरकार अभिमानका त्याग ही सच्चा त्याग है ।
—विनोबा

कर्मसे नहीं और सन्तानसे भी नहीं, अमृत स्थितिकी प्राप्ति केवल त्यागसे ही होती है । —विवेकानन्द

त्यागसे अनेकों प्रकारके सुख उत्पन्न होते हैं, इसलिए अगर तुम उन्हें अधिक समय तक भोगना चाहो तो शीघ्र त्याग करो ।
—तिरुवल्लुवर

संभोगजन्य आनन्दका भी जनक त्याग ही है । —स्वामी रामतीर्थ

कुलके लिए व्यक्तिका, गाँवके लिए कुलका, देशके लिए गाँवका और आत्माकी प्राप्तिके लिए पृथ्वी तकका त्याग कर देना चाहिए । —हितोपदेश

जिस तरह हाथसे साँप छोड़नेसे मुक्त होता है उसी तरह धर्मात्मा पापमति पुरुषके त्यागनेसे मुक्त होता है । —रामायण

जो अपने आराम अपने सुख, अपनी दौलतका कुछ हिस्सा दूसरोंके भलेके लिए नहीं देता वह एक ढंगका कठोर कमीनापन है । —वासवानी

यदि हमें जीवनका सदुपयोग करना है और उसे बर्बाद नहीं करना है तो धीरतापूर्वक त्यागको अपनानेका निश्चय करें । —प्रसाद

त्याग यह नहीं है कि मोटे और सख्त कपड़े पहिन लिये जायँ और सूखी रोटी खायी जाय । त्याग तो यह है कि अपनी आरज़ू, तमन्ना और ख्वाहिशोंको जीता जाय । —सुफियान सौरी

हम सब स्वप्न-द्रष्टा हैं और हम वस्तुओंमें अपनी ही आत्माका प्रतिबिम्ब देखते हैं। —एमील

दर्शनशास्त्र

दर्शनशास्त्रके दो सबसे महत्त्वपूर्ण उद्देश्य हैं—सचाईकी खोज और भलाईपर अमल। —वोल्टेर

दर्शनशास्त्र जीवन-कला है। —मुफर्ड

विपत्ति समयका मीठा दूध दर्शनशास्त्र। —शेक्सपियर

दलील

अगर मैं आपके दलको जानता हूँ तो मैं आपकी दलीलको पहिलेसे ही ताड़ लेता हूँ। —एमर्सन

दया

अच्छी हालतमें दया न करो वर्ना बेहतर होनेके लिए कहीं तुम्हें मरना न पड़ जाय। —इयाकिमन [illegible]

दया कुत्तोंको फेंक दो मैं उसे कतई नहीं लूँगा। —शेक्सपियर

दण्ड

शरीरके किसी भी दण्डसे आत्माकी बीमारी नहीं जाती। —जेरेमी टेलर

कोई भी किसीके बारेमें निर्णय देनेका अधिकारी नहीं। दण्ड देना ईश्वरके हाथकी बात है मनुष्यके हाथकी नहीं। —स्टीफन मिथ

साधु पुरुषके साथ अनुचित व्यवहार करनेवालेको दण्ड मिले बिना नहीं रहता। —व्यास

दाता

चार तरहके आदमी होते हैं—(१) मक्खीचूस : जो न आप खाय न दूसरोंको दे, (२) कंजूस : जो आप तो खाय पर दूसरोंको न दे,

मौतसे बढ़कर कड़वी चीज और कोई नहीं है, मगर मौत भी उस वक्त मीठी लगती है जब किसीमें दान करनेकी सामर्थ्य नहीं रहती।

—तिरुवल्लुवर

दानार्थ खर्चे पाइससे हम अपने असंख्य पाप छिपाते हैं।

—पोप

दान लेना बुरा है चाहे उससे स्वर्ग ही क्यों न मिलता हो। और दान देनेवालेके लिए चाहे स्वर्गका द्वार ही क्यों न बन्द हो जाय, फिर भी दान देना धर्म है। —तिरुवल्लुवर

अपने दानको अपनी दौलतके अनुसार बढ़ा, वरना कुदरत तेरी दौलतको तेरी दुर्बल दानशीलताके अनुसार घटा देगी। —चामर्स

देना ही सचमुच पाना है। —रस्किन

जीवनका अनुरोध-भरा पाठ, चाहे इसे हम जल्दी सीखें या देरसे यह है कि देनेसे हृदयकी पहले और सबसे अधिक अभिवृद्धि होती है और उसमें साधुशीलता आती है। —लावल

जो ग़रीबको देता है ईश्वरको उधार देता है। —बाइबिल

सबसे उत्तम दान आदमीको इस योग्य बना देना है कि वह दानके बिना काम चला सके। —तालमुद

ईश्वर दानसे दसगुना देता है। —इस्लाम

उदार दानसे भी बढ़कर है मधुर वाणी स्निग्ध और स्नेहार्द्र दृष्टि।

—तिरुवल्लुवर

जलद तुम बिना माँगे हुए भी चातकको वर्षाजलसे तृप्त करते हो। सज्जनका यही स्वभाव है कि बिना कुछ कहे याचकोंकी माँग पूरी करे।

—कालिदास

तुम्हारे पास कितना धन है—इस बातका ख़याल रखो, और उसके अनुसार ही दान-दक्षिणा दो। योग-क्षेमका यह यही तरीक़ा है।

—तिरुवल्लुवर

बादलोंके समान सज्जन भी जिस वस्तुका ग्रहण करते हैं उसका दान भी करते हैं। —कालिदास

दी हुई वस्तु मैं वापस नहीं ले सकता। —शफ़ीक़

ग़रीबोंको देना ही दान है, और सब तरहका देना उधार देनेके समान है। —तिरुवल्लुवर

दानसे धन घटता नहीं, बढ़ता है। अंगूरोंकी शाखें काटनेसे और ज़्यादा अंगूर आते हैं। —सादी

दानत

अपनी दानत यही अपना सर्वस्व है यही अपना धन है और यही अपनी सामर्थ्य है। —विवेकानन्द

दानव

जो स्वार्थके लिए दूसरोंका बिगाड़ करते हैं वे नरपिशाच हैं लेकिन जो फ़िज़ूल दूसरोंको नुक़सान पहुँचाते हैं उन्हें क्या कहा जाय?

—अज्ञात

दानवता

मानवकी मानवके प्रति दानवता असंख्यलोगोंको रुलाती है।

—बर्न्स

दानशीलता

हमारी दानशीलता घरसे शुरू होती है और अक्सर वह वहीं ख़त्म हो जाती है जहाँसे शुरू हुई था। —अज्ञात

दानशीलता देकर धनवान बनती है, तृष्णा संग्रह करके ग़रीब बनती है। —चमन प्रताप

दाम

प्रथम काम, बादमें मिले तो काम जितना दाम। वह तो हुई

परमात्माकी सेवा। अगर दाम पड़के मौजोंमें तो वह हुई शैतानकी सेवा। —गांधी

दार्शनिक

दार्शनिकका यह काम है कि वह हर रोज कथाओंको दबाता रहे और पूर्वग्रहोंको हटाता रहे। —एमर्सन

महज दाढ़ी रखा लेनेसे कोई दार्शनिक नहीं हो जाता। —इपिक्टिस प्लूटार्क

दावत

आजकी दावत कलका उपवास। —मराठी

जो अपने शरीरको लज़ीज़ दावतें देता है और अपनी आत्माको आध्यात्मिक भोजनके बिना भूखों मारता है वह उस मनुष्यके मानिन्द है जो अपने गुलामको दावतें देता है और अपनी घरवालीको भूखों मारता है। —अज्ञात

दासत्व

अगर तुम किसी गुलामकी गरदनमें जंजीर डालो तो उसका दूसरा सिरा खुद तुम्हारी गरदनका फंदा बन जाता है। —इमर्सन

मनुष्यके आधे गुण तो उसी समय विदा हो जाते हैं जब वह दूसरे का दासत्व स्वीकार करता है। —होमर

दिखावा

गुणी बननेका काम करना चाहिए, दिखावा करनेसे क्या फ़ायदा? बिना दूधकी गायें गलेमें घंटियाँ बाँध देनेसे नहीं बिक जातीं। —अज्ञात

दिन

शरीरकी जो रात है वह आत्माका दिन है —स्वामी रामतीर्थ

दिशा

अगर तुम सच्ची दिशामें काम करो तो बस इतना काफी है।

—एमर्सन

दीनता

भिखारीको सारी दुनिया दे दी जाय फिर भी वह भिखारी ही रहेगा।

—फारसी कहावत

दीर्घजीवन

यदि तू जीवनका सदुपयोग करना जानता है तो वह पर्याप्त लम्बा है।

—सेनेका

हैरत है कि लोग जीवनको बढ़ाना चाहते हैं सुधारना नहीं!

—कोल्टन

जो अपने भोजनकी मात्रा जानता है और उससे ज्यादा नहीं खाता उसे रोगका तकलीफ नहीं होती और वह दीर्घ काल तक जवान रहता है।

—बुद्ध

दीर्घजीवी

दीर्घजीवी लोग प्रायः मिताहारियोंमें पाये जाते हैं।

—प्रवचनसार

दीर्घसूत्रता

काम शुरू करनेपर दीर्घसूत्रता उचित नहीं है।

—अज्ञात

दीर्घसूत्री

कुशल जन दीर्घसूत्री नहीं।

—जैन उपदेश

दुई

जो शख्स एक साथ दो खरगोशोंके पीछे दौड़ता है वह एकको भी पकड़नेमें कामयाब नहीं होता।

—फ्रेंकलिन

दुनियाकी शान्तिसम्बन्धी महान् भ्रमजालका बहाना है।
—स्वामी रामतीर्थ

ऐ दुनिया! हम कितने थोड़े बरस जीते हैं! काश, जो जीवन हम जीते हैं वास्तविक जीवन होता!
—मैंपफेला

जो दुनियाको सबसे अच्छी तरह समझता है वह उसे सबसे कम चाहता है।
—फ्रैंकलिन

दुनियादारी

दुनियामें रह, मगर दुनियादार मत बन। —रामकृष्ण परमहंस

दुराग्रह

अपने पूर्वजोंके खोदे हुए कुएँका खारा पानी पीकर दूसरोंके स्वच्छ जलका त्याग करनेवाले बहुतसे बेवकूफ दुनियामें घूमते-फिरते हैं।
—विवेकानन्द

दुराचार

दुराचार मनुष्यको कमीनोंमें जा बिठाता है।— तिरुवल्लुवर

दुराशा

अगर सेवक सुख चाहे, भिखारी मान चाहे, व्यसनी धन चाहे, व्यभिचारी शुभ गति चाहे, लोभी यश चाहे, तो समझ लो कि वे लोग आकाशसे दूध दुहना चाह रहे हैं।
—रामायण

दुर्गुण

क्या कारण है कि कोई शख्स अपने दुर्गुणोंको नहीं मानता? क्योंकि वह उनमें लिप्त है। जाग्रत आदमी ही अपना स्वप्न कह सकता है।
—सेनेका

दुर्जन

दुर्जनको चाहे जितना उपदेश दो वह सज्जन नहीं होगा। गदहेको नदीमें अच्छे चाहे जितना धोओ, क्या वह घोड़ा हो जायगा?
—[illegible]

दुश्मन

दोस्त हमारा जितना हित कर सकते हैं एक दुश्मन उससे ज़्यादा हानिकर हो सकता है। —नीति

क्या आपके पचास दोस्त हैं?—यह काफ़ी नहीं है। क्या आपका एक दुश्मन है?—वह बहुत ज़्यादा है। —इटैलियन कहावत

हर शख़्स खुद ही अपना बदतरीन दुश्मन है। —रोफ़र

हर आदमी एक दुश्मन अपने दिलमें छिपे फिरता है।
—डेनिश कहावत

आदमीसे पाप करानेवाली दो ही चीज़ें हैं। ये दो ही इस दुनियामें आदमीके दुश्मन हैं—एक 'काम' और दूसरा 'क्रोध'। जिस तरह धुआँ आगको ढँक लेता है और गर्द शीशेको अन्धा कर देती है, इसी तरह ये दोनों आदमीकी समझपर पर्दा डाल देते हैं। —गीता

अपने दुश्मनके लिए अपनी भट्टीको इतना गर्म न कर कि वह तुझ ही भूनकर रख दे। —शेक्सपियर

हिरन, मछली और सज्जन ये तीनों केवल घास, जल और सन्तोष सेवन कर अपनी रोज़ी चलाते हैं। फिर भी इस दुनियामें शिकारी, धीवर और दुर्जन इनके नाहक दुश्मन बनते हैं। —भर्तृहरि

दुश्मनी

किसीसे दुश्मनी करना मेरे लिए मौत है। मैं इससे घृणा करता हूँ और तमाम शरीफ़ आदमियोंके प्रेमका अभिलाषी हूँ। —शेक्सपियर

दुष्कर्म

दुष्कर्मका एक फल तो तत्काल यह मिलता है कि आत्मा एक 'धक्का', ठसकसे, महसूस करता है। दूसरेके दिलको दुखाना आत्मा

दुष्ट आदमी हरगिज़ हरगिज़ विवेकी नहीं है। —होमर

दुष्टोंके दोषोंकी चर्चा करनेसे अपना चित्त क्षुब्ध ही होता है इसलिए उसके वर्तनकी ओर ध्यान न देकर अथवा उसकी चर्चा करने न बैठकर उसको उपेक्षाकी दृष्टिसे देखना ही अपने लिए श्रेयस्कर है।

—विवेकानन्द

चीतेको कितने ही प्रेमसे पालिए, वह कभी मांस खाना नहीं छोड़ सकता। —रामायण

दुष्टको उपकारसे नहीं अपकारसे ही शान्त करना चाहिए।

—कालिदास

कोई अपनेको दुष्ट नहीं समझता। —कहावत

जिस तरह कसाई पशुओंको वधस्थल पर ले जाता है उसी तरह दुष्ट आदमी अपने शिकारोंको सम्मानकी रस्सीमें बाँधकर मौतकी ओर ले जाता है। —कहावत

दुष्टता

दुष्टता दुष्टको खराब करती है; और अत्याचारकी परीक्षा द्वारा अत्याचारीके अनुकूल नहीं होता। —ज़हीर-बिन-हुसम-उल-सफ़दी

हर दुष्टता निर्बलता है। —मिल्टन

जब तक तुम्हें दूसरोंकी जगहोंपर गुदगुदी होती है तब तक तुममें दुष्टता बाक़ी है। —हरिभाऊ उपाध्याय

दुःख

एक समयमें एक दुःखसे अधिक कभी न सहन करो। कुछ लोग हैं जो तीन किस्मके दुःख एक साथ सहन करते हैं—वे तमाम जो आज तक उन्होंने सहे, वे तमाम जो हम आज सह रहे हैं और वे तमाम जिनके सहनेकी हमें आशंका है। —[illegible]

जिस वक्त हमको दुःखकी प्राप्ति होती है उस वक्त किसी और को दोष देनेका कारण नहीं। अपना ही दोष ढूँढ निकालना शूर वीरोंका काम है। —विवेकानन्द

तुम जो कुछ भी करो अगर वह ईश्वरकी आज्ञाके अनुसार नहीं है तो तुमको दुःख ही मिलेगा। —कुरान

दुःख एक प्रकारका छूतका रोग है। हम अगर उसका दुखी मुँह लेकर किसीसे मिलें तो उसका उल्लास कम हो जाता है। —विवेकानन्द

एक बात जो मैं दिनकी तरह साफ देखता हूँ वह है कि दुःखका कारण अज्ञान है और कुछ नहीं। —विवेकानन्द

अगर यह चाहते हो कि दुःख तुम्हारा न आवे तो ईश्वरसे पूछो कि वह क्या सिखा रहा है। —सर्व

जिसने कभी दुःख नहीं उठाया वह सबसे भारी दुखिया है और जिसने कभी पीर नहीं सही वह बड़ा बेपीर है —मेथलिंक

लोग नाना प्रकारके दुःख इसलिए भोग रहे हैं कि अधिकांश जन-समाज धर्महीन जीवन व्यतीत कर रहा है। —रामदास

दुःखको न तो नातेदार बँटाते हैं न रिश्तेदार न मित्र न पुत्र। मनुष्य उसे अकेला ही भोगता है, क्योंकि कर्म तो करनेवालेके ही पीछे लगते हैं। —प्रसाद

दुःखका नाप विपत्तिके स्वरूपसे नहीं, बल्कि सहनेवालेके स्वभावसे करना चाहिए। —एडीसन

दुःखका कारण हमारी चित्त-वृत्तियोंका प्रभाव ही है —कृष्ण

मिथ्या और अनित्य पदार्थोंको सत्य समझनेसे ही मनुष्यको दुःखमय जीवन भोगना पड़ता है। —शिवकुमार

हाय कि चन्द मिनटोंकी आसक्तियोंका शिकार होकर बरसों दुःखदर्द और तीव्र पश्चात्ताप करते रहें। —नाथ

उस सरीखा दुःखी कोई नहीं जो चाहता सब-कुछ है करता कुछ नहीं। —क्लॉडियस

ईश्वरके मार्गमें विरोधक वस्तुओंपर आसक्त होना प्रकृतिकी कृपा खोनेके लिए तैयार होना है। —अबु मुराद

बड़े दुःखोंमें आत्माको महान् करनेकी बड़ी शक्ति है।

—विक्टर ह्यूगो

ज्यों-ज्यों काम क्रोध और मोह छूटते जाते हैं दुःख भी उनका अनुसरण करके धीरे धीरे नष्ट होते जाते हैं। —तिरुवल्लुवर

दुःख नतीजा है पाप का। —बुद्ध

देखो, जो पुरुष मुक्तिके साधनोंको जानता है और सब मोहोंको छोड़नेका प्रयत्न करता है उसके सब दुःख दूर हो जाते हैं।

—तिरुवल्लुवर

दुःख-सुख

जो बातें औरोंके आधीन हैं वह सब दुःख है, और जो अपने अधिकारमें है वह सुख है। —मनु

जिस सुखके अन्तमें दुःख है वह वस्तुतः सुख नहीं दुःख ही है और जिस दुःखके अन्तमें सुख है वह दुःख नहीं सुख है। —महाभारत

दुःख और सुख दोनों काल्पनिक हैं। —रवीन्द्रनाथ

दुःखी

ईर्ष्या करनेवाला घृणा करनेवाला सदा असन्तुष्ट रहनेवाला, सदा क्रोध करनेवाला सदा शकमें डूबा रहनेवाला, और दूसरोंके भाग्य-भरोसे जीनेवाला—ये छः सदा दुःख भोगते हैं। —महाभारत

दुःखी आदमी बदहवास हो जाता है—उसे अच्छे-बुरेका ध्यान नहीं रहता। —धम्मपद

दुःखी कौन कौन-सा पाप नहीं करते? —धम्मपद

सब दुःखियोंमें कर्तव्यच्युत सबसे अधिक दुःखी है। —अज्ञात

दुःख

समस्त प्राणियोंके दुःखका त्याग करना यह धर्म-दीपककी तरह मुझे दिखाई दे रहा है। —गांधी

दूर

जिससे तुम्हारा जी नहीं मिलता उससे दूर रहो। —बुद्ध

दूरदर्शी

दूरदर्शी पुरुष आनेवाली आपत्तिका पहले ही से निराकरण देता है। —तिरुवल्लुवर

दूषण

गृहस्थोंके लिए जो भूषणरूप है साधुओंके लिए वह दूषणरूप है। —अज्ञात

दृढ़ता

अमुक मार्गोंसे जानेका एक बार निश्चय किया कि फिर जान जानेकी नौबत आ जाए तो भी पीछे कदम नहीं रखना चाहिए। —विवेकानन्द

दृढ़प्रतिज्ञ

वह दृढ़प्रतिज्ञ आदमी जो प्राणोत्सर्गके लिए तैयार है भगवान तक को हाथोंपर उठा सकता है। —स्वामी राम

दृष्टि

मेरी आँखें रिवाज आदर्श और स्वार्थसे अन्धी हो गई थीं। —जॉन म्यूर

ख्याल रक्खो कि तुम किस तरह देख रहे हो, क्योंकि जिसकी आँखें भटकती रहती हैं उसका दिल भटकता रहता है। —अज्ञात

जब तक हमारी कषाय नहीं मर जाती हम हर्गिज देवतुल्य नहीं हो सकते। —जैन

स्वरूप विश्वरूप अरूप ये देवके तीन रूप हैं। —अज्ञात

देवता

बिना कहे समझ जावे उसका नाम देवता, कहेसे समझ जावे उसका नाम आदमी, कहे से भी नहीं समझे उसका नाम पशु।

—दीनानाथ

देश

महान् देश वे हैं जो महान् व्यक्तियोंको जन्म देते हैं।

—डिसरायली

देश-प्रेम

तेरा देश-प्रेम एक तुच्छ भोलापन है। यदि तू यात्रामें विदेशमें जायेगा तो कुटुम्बियोंके बदले तुझे कुटुम्बी मिल जायेंगे।

—इब्न-उल-वर्दी

देह

नखसे लेकर शिखापर्यन्त यह सारा शरीर दुर्गन्धसे भरा हुआ है फिर भी मनुष्य आदरसे इस पर अगर, चन्दन, कपूर आदिका लेप करता है। —शंकराचार्य

मार्गमें पड़ी हुई हड्डीको देखकर मनुष्य उससे छू जानेके डरसे बच कर चलता है परन्तु हजारों हड्डियोंसे भरे हुए अपने शरीरको नहीं देखता। —शंकराचार्य

दैन्य

दैन्यकी अपेक्षा मरण अच्छा। —अज्ञात

दैववादी

दैववादी मनुष्य तत्काल विनष्ट होता है इसमें संशय नहीं।

—महाभा०

दोष

बहुत-से आदमी उन लोगोंसे नाराज़ हो जाते हैं जो उनके दोष बताते हैं, जब कि उन्हें नाराज़ होना चाहिए उन दोषोंसे जो कि उन्हें बताये जाते हैं। —डैनिंग

निर्दोष पत्थरसे सदोष हीरा अच्छा। —चीनी कहावत

अपना दोष कोई नहीं देख पाता। अपना व्यवहार सभीको अच्छा मालूम देता है। लेकिन जो हर हालतमें अपनेको छोटा समझता है वह अपना दोष भी देख सकता है। —अबु उस्मान

अपना भला चाहनेवालेको छः दोष त्यागने चाहिएँ—अतिनिद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता। —नीति

सबसे बड़ा दोष; किसी दोषका भान न होना है। —कार्लाइल

हज़ार गुणोंका सम्पादन कर लेना आसान है, एक दोष दूर कर लेना मुश्किल। —ब्रूयर

रात्रिके पूर्वार्द्धमें जब तुम जगे हुए हो, अपने दोषोंपर विचार करो, और दूसरोंके दोषोंपर रात्रिके उत्तरार्द्धमें जब कि तुम सोये हुए हो।

—चीनी कहावत

जब कि हमारे दोष हमें छोड़ते हैं तो हम यह मानकर अपनी चापलूसी करते हैं कि हम उन्हें छोड़ते हैं। —रोशे

ईश्वर उसका भला करे जो मुझपर मेरे दोष ज़ाहिर कर दे।

—सुकरात

मुझे तो ऐसा एक भी व्यक्ति नहीं दीख पड़ता जो अपना दोष स्वयं देख सके और अपनेको अपराधी माने। —कन्फ्यूशियस

अपने पड़ोसीके सौ दोष सुधारनेकी अपेक्षा अपना एक दोष सुधार लेना अच्छा। —प्रभव

अपने दोषोंको अपनेसे पहले मरने दो। —फ्रैंकलिन

चरित्रवान् अपने दोषोंको सुनना पसन्द करते हैं। दूसरी श्रेणीके लोग नहीं। —एमर्सन

जो तुम्हारे दोषोंको दिखाता है उसे गड़े हुए धनका दिखानेवाला समझो। —प्रभव

दोषदर्शन

जब कभी मुझे दोष देखनेकी इच्छा होती है तो मैं अपनेसे आरम्भ करता हूँ और इससे आगे बढ़ ही नहीं पाता। —डेविड ग्रेसन

दोषान्वेषण

अगर तुम दूसरोंमें दोष निकालोगे दुनिया तुम्हें अच्छी नज़रसे नहीं देखेगी। —निज़ामी

अपने पड़ोसीकी छतपर पड़ी हुई बर्फकी शिकायत न करो, जब कि तुम्हारे दरवाज़ेकी सीढ़ी गन्दी है। —कन्फ्यूशियस

दोषारोपण

क्या तुमने उस आदमीके विषयमें नहीं सुना जो सूर्यको इसलिए दोष देता था कि वह उसकी सिगरेट नहीं जलाता! —प्रबोधक

दोस्त

मैं अपने दुश्मनोंसे ख़बरदार रह सकता हूँ; ओ ईश्वर मुझे मेरे दोस्तोंसे बचा! —मिकियावेली

दानिशमंद और वफ़ादार दोस्तसे बढ़कर कोई रिश्तेदार नहीं। —फ्रैंकलिन

इन्सानका सबसे अच्छा दोस्त उसका ज़मीर है। —[illegible]

बाहर-भीतरसे जागा हुआ मन एक ऐसे दोस्तका काम देता है कि फिर किसी दूसरे दोस्तकी ज़रूरत ही नहीं रह जाती। —रूमी

हर एकको जो दोस्तीका दम भरता हो अपना दोस्त न समझ।

—अज्ञात

देखो, जो यह सोचते हैं कि हमें उस दोस्तसे कितना मिलेगा वे उसी दर्जेके लोग हैं कि जिसमें चोरों और बाज़ारू औरतोंकी गिनती है।

—तिरुवल्लुवर

यदि तुमने ईश्वरको पहचान लिया है तो तुम्हारे लिए एक वही दोस्त काफ़ी है। यदि तुमने उसको नहीं पहचाना है तो उसे पहचाननेवालोंसे दोस्ती करो। —जुन्नुन

दानिशमन्द दोस्तके मानिन्द ज़िन्दगीमें कोई बरकत नहीं।

—एपिक्टेटस

ऐसे दोस्त न रक्खो जो तुम्हारे समान न हों। —कन्फ्यूशियस

सच्चे दोस्तसे जी खोलकर हाल कहनेसे सुख दूना और दुःख आधा हो जाता है। —अज्ञात

जिस दोस्तको तुम्हें ख़रीदना पड़े वह उस क़ीमतका भी नहीं है जो तुमने उसके लिए अदा की चाहे वह कितनी भी हो।

—टॉम ब्राउन

कोई दोस्त दोस्त नहीं है जब तक कि वह अपनेको दोस्त साबित करके न दिखा दे। —बोमॉण्ट और फ़्लेचर

मेरे दोस्तो! दोस्त हैं ही नहीं। —अरस्तू

चिढ़ता हुआ दोस्त मुसकराते हुए दुश्मनसे अच्छा है। —एजन

मामूली आदमीको अपना जिगरी दोस्त न बना वह अवश्य तेरी कमज़ोरियोंको बढ़ावेगा और ख़ूबियोंको कम करेगा। वह हमेशा भारी बोझ लिये चलता है, और उसका आधा तुझे भी उठाना पड़ेगा।

—फ़ुलर

जो ईश्वरका दुश्मन है वह इन्सानका सच्चा दोस्त नहीं हो सकता।
—मूर

रिश्तेदार इत्तिफाकन मिलते हैं लेकिन दोस्त अपनी पसन्दसे।
—डिलाइल

सच्चे दोस्तोंकी न खुशी अकेली होती है न रंज अकेला। —पैरिस

दोस्ती

इस दुनियामें लोगोंकी दोस्ती बाहरसे देखनेमें सुन्दर पर भीतरसे ज़हरीली होती है। —मलिक दिनार

मुझे ऐसी दोस्ती नहीं चाहिए, जो मेरे पाँवोंमें ज़ंजीर बनकर चलनेमें बाधक हो। —पोप

ज़रूरत सिर्फ इस बातकी है कि हम मित्रोंके लिए उतने ही अच्छे हों जितने हम अपने लिए हैं, ताकि दोस्तीके लायक हो सकें। —थोरो

एक कुत्ता जो कि हड्डी लिये हुए है किसीसे दोस्ती नहीं पालता।
—ईसप

तेरा रास्ता अगर किसीको मालूम है तो दिलको; इसलिए उसीसे दोस्ती कर। —निज़ामी

जहाँ सच्ची दोस्ती है वहाँ तकल्लुफ़की ज़रूरत नहीं। —सअदी

दरिद्रकी श्रीमन्तसे मूर्खकी विद्वान्से शूरकी कायरसे क्या दोस्ती? —महाभारत

जो तुमसे बेहतर नहीं है उससे कभी दोस्ती न करो।
—कन्फ्यूशियस

दोस्ती करनेमें रफ्तार धीमी रक्खो, लेकिन जब दोस्ती हो जाय तो फिर मज़बूतीसे कदमों अड़े रक्खो। —सुकरात

नज़रानों से दोस्ती न ख़रीदो, जब तुम नज़राने देना बन्द कर दोगे
वे प्यार छोड़ देंगे। —फुलर

दौलत

दुष्टोंकी दौलतसे सज्जनकी निर्धनता अच्छी है। —शारदिल

दौलतकी कामना न कर। सोनेमें ग़मका सामान है, उसमें एक कीड़ा है जो दिलकी कलीको खाता है उसकी मौजूदगीमें प्रेम स्वार्थपूर्ण और ठंडा हो जाता है और घमण्ड और दिखावेका बुखार चढ़ जाता है। —नीति

सिवाय उसके जिसे लोग अपने अन्दर लिये हुए हैं कोई चीज उन्हें धनवान और बलवान नहीं बनाता। दौलत दिलकी है हाथकी नहीं। —मिल्टन

शीलवान् पुरुष ही दयाकी सच्ची दौलत हैं। —प्रभात

नादानोंके पास दौलत ऐसे है जैसे गोबरके ऊपर हरियाली।

—प्रभात

दानके तुल्य निधि नहीं है। लोभके समान शत्रु नहीं है। शीलके समान भूषण नहीं है। सन्तोषके समान धन नहीं है। —नीति

क्या तुम धन चाहते हो? तो इन छः दोषोंको छोड़ दो—अति निद्रा, तन्द्रा, भय, क्रोध, आलस्य और दीर्घसूत्रता। —नीति

अन्यायसे पैदा किया हुआ धन ज्यादासे ज्यादा दस वर्ष टिकता है। ग्यारहवाँ वर्ष लगते ही समूल नष्ट हो जाता है। —नीति

वह सच्ची दौलत है जिससे दूसरोंको उपकृत किया जाय।—नीति

वह आदमी जो धनसंचय करता है मगर उसे भोगता नहीं है उस गधेके माफिक है जो सोना ढोता है और घास खाता है।

—प्रभात

मेरे ख़ुदा मुझसे वह दौलत दूर रख जिसमें आँसू आयें और हाय छिपे हुए हैं। ऐसे धनसे निहायत निर्धनता अच्छी।

—क्रिश्चियन एल्डर

दौलत इन्सानको अहंकार, बदमाशी और मूर्खताके सामने ला पटकती है। —एमर्सन

अगर तुम्हारी दौलत तुम्हारी है, तो तुम उसे अपने साथ दूसरी दुनियामें क्यों नहीं ले जाते ? —सादी

दौलतका रास्ता ऐसा साफ है जैसा बाजारका रास्ता। वह प्रायः दो चीजोंपर निर्भर है मेहनत और किफायत। —फ्रैंकलिन

द्रोह

द्रोहीसे द्रोह करना दोषको दूना करना है। द्रोहका बदला प्यार है। —धम्मपद

द्वन्द्व

जगत् द्वन्द्वसे भरपूर है। इस द्वन्द्वसे छूटना अनासक्ति है। द्वन्द्वको जीतनेका उपाय द्वन्द्वको मिटाना नहीं है बल्कि द्वन्द्वातीत अनासक्त होना है। —गाँधी

द्विविधा

मेसनने कहा था कि, जब मुझे सूझ नहीं पड़ता कि करूँ या न करूँ तो मैं हमेशा करता हूँ। —इमर्सन

द्वेष

हजरत अलीने खुदाके नामपर अपने मुखालिफको पछाड़ दिया। जब उसने अलीके मुँहपर थूक दिया तो उन्होंने उसे कत्ल करनेका इरादा छोड़ दिया व उसकी छातीपरसे उतर पड़े। मुखालिफने सबब पूछा तो बतलाया—पहले मैं खुदाके कामके लिए कत्ल करना चाहता था अब तूने मुझपर थूक दिया इससे मेरा व्यक्तिगत द्वेष उभर सकता है उससे उत्तेजित होकर तुझे मारूँगा तो वह गुनाह होगा।
—हरिभाऊ उपाध्याय

द्वेष

द्वैत दर्शनकी अपेक्षा करो; शास्त्रमें भेद-दर्शनको द्वेष माना है। —अज्ञात

[ध]

धन

संसारमें सबसे निर्धन वह है जिसके पास सिर्फ धन है और कुछ नहीं। —अज्ञात

ख्वाहिशोंसे परहेज करना ही दौलत है। —अरबी कहावत

क्या तुम जानना चाहते हो कि धन क्या है? जाओ कुछ उधार ले आओ। —कहावत

निर्धन आदमी ऐसा है जैसा बिना पंखोंका पक्षी या बिना मस्तूलों का जहाज। —अज्ञात

अच्छे हृदयके बिना धनवान एक भद्दा भिखारी है —एमर्सन

मायडास जिस चीजको छूता था सोनेका हो जाती थी। इन दिनों आदमीको सोनेसे छू दीजिये बस वह चाहे जिस चीजमें बदल जायेगा। —अज्ञात

धन एक सापेक्ष वस्तु है; क्योंकि, जिसके पास कम है परन्तु और भी कम चाहता है वह उससे अधिक धनवान है जिसके पास ज्यादा है मगर और भी ज्यादा चाहता है। —कॉल्टन

धनकी तीन गति हैं—दान भोग और नाश। जो न देता है न भोगता है उसकी तीसरी गति होती है। —भर्तृहरि

लोगोंका महत्त्व उनके धनके कारण आदर न करो बल्कि उनकी उदारताके कारण; हम सूरजकी क़दर उसकी ऊँचाईके कारण नहीं करते बल्कि उसकी उपयोगिताके कारण। —बेली

धन अनर्थकारक है ऐसी निरन्तर भावना कर। सचमुच उसमें सुखका लेश भी नहीं है। धनवानको पुत्र तकसे डरना पड़ता है यह रीति सर्वत्र जानी हुई है। —शंकर

आश्चर्य! जीवनकी वास्तविक आवश्यकताओंकी पूर्तिके लिए कितने कमकी ज़रूरत है। —एण्ड्रू कारनेगी

अपना कुछ धन मित्रोंमें बँटवाकर मुहम्मद साहबने कहा— "अब मुझे शान्ति मिली। निस्सन्देह यह शोभा नहीं देता था कि मैं अपने अल्लाहसे मिलने जाऊँ और यह सोना मेरी मिल्कियत रहे।" —अज्ञात

धनसे तुमको सिर्फ़ रोटी मिल सकती है इसे ही अपना ध्येय और साध्य न समझो। —रामकृष्ण परमहंस

दुनियामें सबसे वाहियात ग़लतफ़हमी यह है कि पैसा आदमीको सुखी बना सकता है। मुझे अपने धनसे तब तक कोई तृप्ति नहीं मिली जब तक मैंने उससे नेक काम करने शुरू न कर दिये। —मोर

ख़ुदपर ख़र्च किया हुआ पैसा अकेला पत्थर हो सकता है, दूसरोंपर ख़र्च किया हुआ हमें फ़रिश्तोंके पंख दे सकता है। —हिचकॉक

जो धनका स्वामी है पर इन्द्रियोंका नहीं वह इन्द्रियोंको वश न रखनेसे धनसे भ्रष्ट हो जाता है। —विदुर

धर्मार्थके लिए ही क्यों न हो धनकी इच्छा [illegible] नहीं है। कीचड़को बादमें धोनेकी अपेक्षा उसके स्पर्शसे दूर रहना ही अच्छा। —[illegible]

धनकी भूख ज़बरदस्त व्याधि है। ज्योंही आदमी धनी हुआ कि बिलकुल बदल जाता है। —रामकृष्ण परमहंस

बेईमानके धनसे ईमानदारकी ग़रीबी अच्छी। —अज्ञात

आत्माकी किसी भी आवश्यक चीज़के ख़रीदनेके लिए धनकी ज़रूरत नहीं है। —थोरो

जिसे धनका गर्व है वह बेवकूफ़ है। —अज्ञात

कोई आदमी धन कमाकर मर जाय और हरामख़ोरोंके लिए उसे छोड़ जाय—इससे बड़ा गुनाह नहीं। मैं क़सम खाकर कहता हूँ कि अपनी ज़िन्दगीमें ही अपने सारे धनको परोपकारमें लुटा दूँगा। —कारनेगी

जो धनका अतिसंचय करते हैं वे उसे दूसरोंके लिए ही इकट्ठा करते हैं। मधुमक्खियाँ बड़ी मेहनतसे शहद इकट्ठा करती हैं मगर उसे पीते और ही हैं। —अज्ञात

अमीर बनना है तो एक कोनेमें बैठ जाओ और विचार करो। कोई भी चीज़ हो, यह ज़रूरी नहीं कि वह कोई बड़ी बात ही हो, बल्कि जो चीज़ तुम्हें दिखे उसीपर सोचने लग जाओ। और अगर तुम उससे पैसा नहीं कमा सकते तो यक़ीन रक्खो तुम्हारे दिमाग़में अक़्लका एक कण भी नहीं है। —प्रश्नोत्तरका निर्माता एडीसन

जीवनके अतिरिक्त और कोई धन नहीं है—जीवन जिसमें प्रेम आनन्द और प्रशंसाकी समस्त शक्तियोंका समावेश है। —रस्किन

थोड़ा देकर हाथोंहाथ धन जमा करना बस ऐसा है जैसा कि मिट्टीके कच्चे बरतनमें पानी भरकर रखना। —तिरुवल्लुवर

जो धन दया और ममतासे रहित है उसकी तुम कभी इच्छा मत करो और उसको कभी अपने हाथसे मत छुओ। —तिरुवल्लुवर

बना-बनाया धनिक आदमी या बाबा तो ठीक है मगर यह हो सकता है कि वह बना-बनाया बेवकूफ़ हो। —वॉन ईस्मिग

धन परम ईर्ष्याकी वस्तु है परन्तु न्यूनतम उपभोगकी, ज्ञान परम उपभोगकी वस्तु है परन्तु न्यूनतम ईर्ष्याकी। —कॉल्टन

धनके साथ दो संताप लगे रहते हैं—अहंकार और खुशामदी ।
—अज्ञात

धनका दायाँ हाथ परिश्रम और बायाँ हाथ किफ़ायत है । —अज्ञात

धनमद

धनके मदसे मत्त आदमी तब तक होशमें नहीं आता जब तक गिरे नहीं । —अज्ञात

धनवान

बिना उदारताके धनवान आदमी भूत है, और शायद यह साबित करना मुश्किल बात न होगी कि वह बेवकूफ भी है । —फ़ील्डिंग

घोर परिश्रम और मितव्ययताकी अपेक्षा किसीको भी दौलत-मन्द बना देते हैं । —[illegible]

जो ईश्वरको अपना सर्वस्व मानता है वही असली धनवान है और दुनियाकी चीज़ोंमें अपना सम्पत्ति माननेवाला तो सदा ग़रीब ही रहेगा । —[illegible]

जो दूसरोंको खसोट कर धनवान बना है वह मूजी है, जो सचाई और ईमानदारीके कारण निर्धन है वह अति उदार । —सादी

धनवान आदमी अन्यायी आदमी है या अन्यायीकी सन्तान ।
—अज्ञात

जो अधिक धनाढ्य है वही अधिक मोहताज है । —सादी

धनवान दूसरोंकी तकलीफ़को नहीं जानते । —अज्ञात

आदमी मालदार होनेसे धनी नहीं कहा जा सकता बल्कि उदार चित्त होने से । —सादी

वह मनुष्य जो सत्यके अनुसरणके लिए दृढ़ प्रतिज्ञ है सबसे अधिक धनवान है, पैसेके लिहाज़से चाहे वह विपन्नोंमें सबसे अधिक निर्धन ही क्यों न हो । —अज्ञात

जो थोड़ेमें सन्तुष्ट है वह काफ़ी धनवान है । —[illegible]

जिस तरह मन चले उसी तरह लोगोंको धनवान होनेकी जिद देना मानो उन्हें विपरीत बुद्धि देना है। —पोप

धनवान होकर मरनेके प्रश्नपर बहुमूल्यवालेके दरबार भरकर देख पड़ते हैं। —जॉन फ्रॉस्टर

निःसन्देह ऐसे बेशुमार आदमी हैं जो अन्यायी बेईमान धोखेबाज, अत्याचार लोभी सूदख़ोर और विश्वासघाती बनकर धनवान हुए हैं। क्या यह सोचना पागलपन नहीं है कि ऐसे आदमी सुखी हो सकते हैं? क्या वे इस दौलतके अत्यल्पांशका भी आनन्दसे उपभोग कर सकते हैं? क्या उनका अन्तरात्मा उन्हें दिन-दिन भर और रात-रात भर जिन्दगी पीड़ा, संताप और यन्त्रणा नहीं देता रहता होगा?

—अज्ञात

अगर तू धनवान है तो तू कंगाल है, क्योंकि तू उस गधेकी तरह जिसकी कमर बोझेसे झुकी जा रही है अपनी सारी दौलतको ढोये चला जा रहा है और मौत आकर तेरा बोझ उतारती है। —शेक्सपियर

धनिक

धनिकोंके आमोद-प्रमोद ग़रीबोंके आँसुओंसे ख़रीदे जाते हैं।

—अज्ञात

मैं ऐसे समयमें हूँ जिसमें श्रीमन्तको उच्च समझा जाता है, उसका सम्मान करना परम धर्म समझा जाता है और निर्धनको तुच्छ समझा जाता है। —इब्न-उल-वर्दी

धनी

बेहतरीन साथी मासूमियत और तन्दुरुस्ती, और बेहतरीन दौलत दौलतसे बेख़बरी। —गोल्डस्मिथ

धनसे धनीके पास द्रव्य होता है, पर उसको वह धन नहीं प्राप्त होता जो कि हृदयके धनीका होता है चाहे उसके पास कम ही धन क्यों न हो। —हज़रत अली

मैं तो धनी हूँ क्योंकि ईश्वरके सिवा किसी औरका दास नहीं हूँ, और वस्तुतः निर्धन हूँ पर उसीके सहारे सधन हूँ — एक कवि

जहाँ बुद्धिहीन धनिकोंका नाम भी नहीं सुना जाता, उस वनको धन्य। — भर्तृहरि

रेशमके कपड़ोंमें कितनी नंगी आत्माएँ पाई जाती हैं। — थॉमस फुलर

बिना ज्ञान और विद्वत्ताके धनी केवल सुनहरी ऊन वाली भेड़ों जैसे हैं। — सोलन

वह आदमी सबसे धनवान है जिसकी खुशियाँ सबसे सस्ती हैं। — थोरो

धनी बेवकूफ उस सूअरके माफिक है जो अपनी ही चर्बीसे घुट मरता है। — कन्फ्यूशियस

धनोपार्जन

प्रत्येक उद्यमी मनुष्यको आजीविका पानेका अधिकार है मगर धनोपार्जनका अधिकार किसीको नहीं। सच कहें तो धनोपार्जन स्तेय है चोरी है। जो आजीविकासे अधिक धन लेता है वह जानमें हो या अनजानमें दूसरोंकी आजीविका छीनता है। — गाँधी

धन्य

परमेश्वरका दुनियाके प्रति प्रेम ही मातारूपसे प्रकट हुआ है ऐसा जिसे प्रतीत होता है वह पुरुष धन्य है! परमेश्वरका पितृत्व ही पुरुषरूपसे प्रकट हुआ है ऐसा जिस बच्चेको प्रतीत है वह भी धन्य है! और माता-पिता केवल परमेश्वरस्वरूप ही हैं ऐसा जिन्हें प्रतीत होता है वे बच्चे भी धन्य हैं! — विवेकानन्द

धमकी

प्रेम भी यदि धमकी लेकर तेरे सामने आये तो उसे बैरंग वापिस

करे। बीस सदमोंसे बरबाद हो जाना अच्छा है, बनिस्बत सदमा रोज़-रोज़ बरबाद होनेका निमन्त्रण देता है। —सादी

धर्म

मुझसे यह मत पूछो कि धर्मसे क्या फ़ायदा है? बस एक बार पालकी उठानेवाले कहारोंकी ओर देखो और फिर उस आदमीको देखो जो उसमें सवार है। —तिरुवल्लुवर

मनके सभी द्वार सत्यके लिए खुले हों और निर्मलता उसकी रंग-भूमिमें हो, उस समय हम जो भी विचारें या करें वह सब सत्यज्ञान या धर्ममें समाविष्ट हो जाता है। —प्रज्ञाचक्षु पं. सुखलालजी

सच्चा धर्म हृदयकी कविता है जहाँ तमाम सद्गुण कुसुमित और पुष्पित होते हैं। —बर्क

यह समझकर कि मानो तू सदा ही इस जगत्में रहेगा, विद्यार्जन कर, और यह समझकर कि मौतने तेरे बाल पकड़ रखे हैं धर्मका अनुष्ठान कर। —हरिहर

पहले धर्म-ज्ञान प्राप्त करो, पीछे और कुछ। —अनुभव प्रकाश

धर्म कुछ आचरणसे भिन्न नहीं है; आचरण ही धर्म माना जाय। और धर्महीन जीवन मनुष्यजीवन नहीं है वह पशु-जीवन है। —गाँधी

जैसे हम अपने धर्मको आदर देते हैं वैसे ही दूसरोंके धर्मोंको दें। मात्र सहिष्णुता पर्याप्त नहीं है। —गाँधी

आप मेरी सारी ज़िन्दगीको गौरसे देखिए, मैं कैसे रहता हूँ, कैसे खाता हूँ, कैसे बैठता हूँ, कैसे बातचीत करता हूँ, और आमतौरपर मेरा बर्ताव कैसा रहता है, सो सब आप पूरी तरह देखिए। इन सबको मिलाकर जो छाप आप पर पड़े वही मेरा धर्म है। —गाँधी

जिसमें मनुष्यता नहीं है उसमें लवलेश धर्मोत्पादन नहीं है। —मराठी कहावत

एक धर्मसे दूसरे धर्ममें लोगोंको लेनेकी प्रथा मुझे ज़रा भी अच्छी नहीं लगती। दो भिन्न धर्मोंके स्त्री-पुरुषोंमें विवाह होना असंभव अथवा अयोग्य है ऐसा मैं नहीं मानता।

—गाँधी

मेरे लिए सत्यसे परे कोई धर्म नहीं है और अहिंसासे बढ़कर कोई परम कर्तव्य नहीं है।

—गाँधी

हर मौक़े और हर हालतमें जो अपना फ़र्ज़ दिखाई दे उसीको अपना 'धर्म' समझकर पूरा करना चाहिए, दूसरे किसी 'धर्म' की तरफ़ नहीं जाना चाहिए। जैसा भी अपनेसे बन पड़े अपना यह कर्तव्य या फ़र्ज़ पूरा करते हुए ही मरना ठीक है। —गीता

समाजमेंसे धर्मको निकाल फेंकनेका प्रयत्न बाँझके पुत्र पैदा करने जितना ही निष्फल है और अगर कहीं सफल हो जाय तो समाजका उसमें नाश है। —गाँधी

धर्म-परिवर्तनके बारेमें मेरा कहना यह नहीं है कि कभी धर्म-परिवर्तन हो ही नहीं; किन्तु एक दूसरेको अपना धर्म बदलनेके लिए प्रेरित न करना चाहिए। मेरा धर्म तो सच्चा और दूसरा झूठा ऐसे जो विचार ऐसे धर्मान्तरके पीछे हैं, उन्हें मैं दूषित समझता हूँ। —गाँधी

धर्म अगर सिर्फ़ बदनकी कसरत होठोंका हिलाना घुटनोंका झुकाना होता तो कौन स्वर्गको ऐसी आसानीसे चढ़े जाया करते जैसे किसी दोस्तसे मिलने चले जाते हैं, लेकिन दुनियाकी प्यारी चीज़ोंसे अपना मन और आत्मिक हटाना अपने सब सद्गुणोंको विकसित करना और उनमेंसे हर एकको अपने-अपने कार्यमें लगाना और तबतक लगाये रखना कि काम हमारे हाथों बखूबी हो जाय यह यह है कठिन चीज़।

—बनयन

जो किसी ठोस धर्मका अनुयायी नहीं है उसका कभी विश्वास न

करो, क्योंकि जो ईश्वरके प्रति भूला है वह मनुष्यके प्रति कभी सच्चा नहीं हो सकता। —हाइ नर्वे

धर्म एक भ्रमात्मक सूर्य है जो कि मनुष्यके गिर्द तब तक घूमता रहता है जब तक कि मनुष्य मनुष्यताके गिर्द नहीं घूमता।
—कार्ल मार्क्स

यह कल्पना करना धर्मके लिए बड़े कलंककी बात है कि वह सुखों और सुखमिज़ाजीका दुश्मन है और विचार विमग्न नज़रों और गंभीर चेहरोंकी सख़्त अपेक्षा रखता है। —वाल्टर स्काट

धर्म कहते हैं, हर चीज़का इस्तेमाल ईश्वरके लिए करने को।
—होवर

किसी भी लौकिक विद्याकी अपेक्षा धर्मज्ञान श्रेष्ठ है।
—विवेकानन्द

अपने धर्मको दिखने दो। दीपक बोलता नहीं चमकता है।
—कौंबार

धर्म—अहिंसा संयम तप—सर्वश्रेष्ठ मंगल है। जिसका मन इस धर्ममें लगा रहता है उसे देव भी नमस्कार करते हैं। —महावीर

कोई आदमी जो धर्मको इसलिए अलग रख देता है कि उसे सौदाईमें बाधा है उस आदमीके मानिन्द है जो जूतोंको इसलिए उतारकर रख देता है कि उसे काँटों पर चलना है। —सैसिल

उपयोगिता धर्मका शरीर है चित्त शुद्धि आत्मा। —विनोबा

आदमी धर्मके लिए झगड़ेगा, उसके लिए लिखेगा, उसके लिए मरेगा, सब कुछ करेगा मगर उसके लिए जियेगा नहीं। —कोल्टन

उस आदमीकी ज़िन्दगी हैवानकी ज़िन्दगी है जिसने धर्म, धन और सुख प्राप्त नहीं किया, लेकिन इन तीनोंमें भी धर्म मुख्य है क्योंकि धर्मके बिना न धन सम्भव है न सुख। —प्रसाद

तत्त्वज्ञान = बौद्धिक तन्मयता

काव्य = भावनामें तन्मयता

धर्म = आचारमें एकता —स्वामी रामतीर्थ

जो धर्म शुद्ध अर्थका विरोधी है वह धर्म नहीं है। जो धर्म शुद्ध राजनीतिका विरोधी है वह धर्म नहीं है। धर्म-रहित अर्थ त्याज्य है। धर्म-रहित राज्य-सत्ता राक्षसी है। अर्थ आदि से अलग धर्म नामकी कोई वस्तु नहीं है। —गाँधी

अगर आप शिक्षाको धर्मसे वंचित कर देंगे तो आप चालाक शैतानोंकी एक जाति पैदा करेंगे। —मा ब्यारटैन

आम लोग धर्मकी चर्चा मन-भर करते हैं मगर धर्मका कण-भर भी नहीं करते। ज्ञानी पुरुषका चाहे समूचा जीवन धर्ममय हो तो भी वह बहुत कम बोलता है। —रामकृष्ण परमहंस

धर्माचरण अकेले करना चाहिए इसमें सहायककी जरूरत ही नहीं है। —अज्ञात

अगर धर्म एक दम दुनियासे बिलकुल नष्ट हो गया तो क्या होगा? हममेंसे मनुष्य ही नष्ट हो जायेंगे और दुनिया गोया पशुका साम्राज्य हो जायगी। जंगलमें घूमनेवाले पशुओं और ऐसी स्थितिवाले मनुष्योंमें कोई फ़र्क नहीं रहनेवाला। केवल इन्द्रियोंकी वासना तृप्त करते रहना यही मनुष्यका साध्य नहीं है स्वतः शुद्ध ज्ञानरूप होना यही उसका साध्य है। —विवेकानन्द

मेरे उपदेशित धर्मको बेड़ेकी तरह जानो, वह पार उतारनेके लिए है ढोकर ले चलनेके लिए नहीं। —बुद्ध

जो धर्मके नियमका पूरा पालनकर शान्त और नम्र होता है उसीको सच्चा शान्त और सच्चा नम्र समझना चाहिए। अपना मतलब साधनेके लिए कौन शान्त और नम्र नहीं बन जाता? —बुद्ध

हृदयमें प्रेम, पर-धर्मपर आदर अबलापर दया—मिलकर धर्म। —रिनाता

धर्मपालन

धर्मपालन वही कर सकता है जो फाँसीपर भी अपना विश्वास न छोड़े। —अज्ञात

धर्म प्रसार

अपने धर्मका प्रचार करनेका बेहतरीन तरीका उसे अपने जीवनमें उतारना है। —अज्ञात

धर्म-मार्ग

जिस जगहपर एक कदम उठाकर पहुँच जाना चाहिए वहाँ पहुँचनेके लिए एक हजार कदम न उठा। धर्मकार्यमें गिन गिनकर आगे चलेगा तो उस मुकाम तक पहुँच ही नहीं पायेगा। —जुनैद

धर्म-वचन

ऐसे हर एक वचनको जिसके लिए धर्मशास्त्रका वचन होनेका दावा किया गया हो, सत्यकी निहाईपर दयारूपी हथौड़ेसे पीटकर देख लेना चाहिए। अगर वह पक्का मालूम हो और टूट न जाय तो ठीक समझना चाहिए, नहीं तो हजारों शास्त्रवाक्योंके रहते हुए भी 'नेति-नेति' कहते रहना चाहिए। —गांधी

धर्मशास्त्र

अपना मतलब सीधा करनेके लिए शैतान धर्म-शास्त्रके हवाले दे सकता है। —शेक्सपियर

धर्म-समन्वय

जितना सम्भव था उतना विविध धर्मोंका अध्ययन करनेके बाद मैं इस निश्चयपर आया हूँ कि सब धर्मोंका एकीकरण करना यदि उचित और आवश्यक है तो उन सबकी एक बड़ी चाबी होनी चाहिए। वह चाबी सत्य और अहिंसा है। —गांधी

धीर

समुद्रमंथनसे देवोंको अमूल्य रत्न मिले तो भी सन्तोष नहीं माना, उसके बाद भयंकर विष निकला उससे डरे नहीं, जब तक अमृत न निकला आराम लिया नहीं। धीर पुरुष चाहे जितने प्रलोभन या भयके प्रसंग आवें अपना निश्चित काम सिद्ध किये बिना चैनसे नहीं बैठते।

—[illegible]

नीतिनिपुण लोग निन्दा करें या स्तुति लक्ष्मी आवे या जावे मृत्यु आज ही आ जाय या युगान्तरके बाद परन्तु धीर पुरुषोंका न्यायमार्गसे कदम नहीं डिगता। —भर्तृहरि

वास्तवमें धीर पुरुष तो वे ही हैं जिनका चित्त विकार उत्पन्न करनेवाली परिस्थितिमें भी अस्थिर नहीं होता। —कालिदास

धूर्त

जो यह कहता है कि ईमानदार आदमी नामक कोई चीज है ही नहीं, वह खुद धूर्त है। —बर्कले

मुखमें मधु, हृदयमें हलाहल बाना धोखाबाजीका। —अज्ञात

यह विश्व एक ऐसे बड़ा चित्र है जो बाहरसे भेड़ और अन्दरसे भेड़िया है। —डेनहम

संसारमें दीर्घ अनुभवके बाद मैं ईश्वरके समक्ष दावेके साथ कहता हूँ कि मेरी जानकारीमें कोई ऐसा धूर्त नहीं आया जो कि दुखी न हो। —जूनियस

निरापद ईमानदार और समझदार आदमी भी धूर्त द्वारा ठगा जा सकता है। —जूनियस

हो सकता है कि आदमी मुसकराये और मुसकराये और धूर्त हो।

—शेक्सपियर

धूर्तता

सब कामकी उपदेश है, अपनी बातोंको पेंचदार रखना। —अज्ञात

अगर कोई आदमी मुझे एक बार धोखा देता है, तो धिक्कार है उसपर; अगर वह मुझे दो बार धोखा दे जाता है तो लानत है मुझ पर। —अज्ञात

जब हम दूसरोंको धोखा देते हैं उस वक्त हम अपने आपको ही धोखा देते हैं। —अज्ञात

आदमी जितना दूसरोंको धोखा देते वक्त धोखा खाते हैं उतना कभी नहीं खाते। —ला रोशे

तमाम धोखोंमें पहला और सबसे बुरा अपने आपको धोखा देना है—इसके आगे और पाप कुछ भी नहीं है। —बेली

किसने तुझे इतनी बार धोखा दिया है जितनी बार खुद तूने अपने आपको? —फ्रेंकलिन

तुम सोचते हो कि अमुक आदमी तुम्हारी धोखेबाजीमें आ गया। अगर वह ऐसा ही 'बनता' है तो कौन बड़ा धोखा खा रहा है वह या तुम? —कूपर

ध्यान

क्या तुम्हें मालूम है सात्त्विक (पवित्र) प्रकृतिका मनुष्य कैसे ध्यान करता है? वह आधी रातको, अपने बिस्तर पर मसहरीके अन्दर ध्यान करता है ताकि और लोग उसे न देख सकें।

—रामकृष्ण परमहंस

जो जिसका मनसे ध्यान करता है जिसको वाणीसे बोलता है जिसको कर्मसे करता है उसीको प्राप्त होता है। —यजुर्वेद

इच्छाओंसे ऊपर उठ जाना ही ध्यान है। —स्वामी रामतीर्थ

ध्येय

ध्येयके लिए जीना ध्येयकी खातिर मरनेसे मुश्किल है। —अज्ञात

यदि परिस्थिति अनुकूल हो तो सीधे अपने लक्ष्यकी ओर बढ़ो,

अगर तुम अपने शत्रुओंसे घृणा करोगे तो तुम्हारे मनकी एक ऐसी विचित्र आदत पड़ जायगी जो कि क्रमशः उनपर बरस पड़ेगी जो कि तुम्हारे मित्र हैं या जिनके प्रति तुम समभाव रखते हो। —[illegible]

नम्रता

मनमें ज्ञान न हो तो नम्रता होनेसे ज्ञान प्राप्त करना उसके लिए सहज होता है। —[illegible]

फलके आनेसे वृक्ष झुक जाते हैं, जल बरसनेके समय बादल झुक जाते हैं, सम्पत्तिके समय सज्जन नम्र हो जाते हैं—परोपकारियोंका स्वभाव ही ऐसा है। —कालिदास

हमें रजकण बनना चाहिए। संसारकी लात सहन करना सीखना चाहिए। —गाँधी

ईश्वरको जाननेपर मनुष्य अपने आप रजकण हो जाता है। —गाँधी

जिन लोगोंने विद्वानोंके चातुरी-भरे शब्दोंको नहीं सुना है, उनके लिए वस्तुतः नम्रता प्राप्त करना कठिन है। —तिरुवल्लुवर

तुमसे पूछे उसे नम्रतासे जवाब देना; तुमको गालियाँ दे उसे मीठे वचन कहना; तुमको दुःखी करे उसको 'ईश्वर तेरा भला करे' कहना। क्योंकि प्रभुके कामके लिए जिसको निन्दा सहनी पड़ती है उसकी प्रभुके दरबारमें ज्यादा कीमत है। —[illegible]

जिसने सारी बातोंमें नम्रतासे काम लिया है वह न तो किसी कार्यमें लज्जित हुआ और न किसीने उसकी निन्दा ही की।

—[illegible]

दुनियाके विरुद्ध खड़े रहनेकी शक्ति प्राप्त करनेके लिए मगरूर या उद्धत बननेकी ज़रूरत नहीं है। ईसा दुनियाके खिलाफ खड़ा रहा। बुद्ध भी अपने ज़मानेके खिलाफ गया। प्रह्लादने भी यही किया। वे सब नम्रताके पुतले थे। अकेले खड़े रहनेकी शक्ति नम्रता बिना असंभव है। —गाँधी

नरक

आत्माको बरबाद करनेवाले नरकके तीन दरवाज़े हैं—काम, क्रोध और लोभ। —गीता

अगर तुम नरकको जानना चाहते हो तो समझ लो कि ईश्वरविमुख नकारी मनुष्यकी सोहबत इस दुनियामें नरक है। —हाफ़िज़

नशा

जो आदमी नशेमें मदहोश है उसकी सूरत उसकी माँको भी बुरी मालूम होती है। —तिरुवल्लुवर

नसीहत

दुश्मनों तकसे बोलनेमें ग़नीमत है दोस्तोंको नसीहत करनेमें नहीं। —बेकन

मूर्खको नसीहत देना ऐसा ही बर्बाद है; साबुन कोयलेको धोकर सफ़ेद नहीं बना सकता। —[illegible]

जिसने ज़मानेके वाक़योंसे कोई नसीहत नहीं ली उसे मकतबके बच्चोंके साथ पढ़ना चाहिए। —ख़्वाजा हसन बसरी

नहीं

एक सामयिक और सुविचारित 'नहीं' न कह सकना महान् अभिशाप और दुर्भाग्य है। —सिम्स

एक 'नहीं' सत्तर बलाओंसे बचाती है। —हिन्दुस्तानी कहावत

'नहीं' कहना सीखो, अंग्रेज़ी पढ़ सकनेकी अपेक्षा वह तुम्हारे लिए ज़्यादा लाभदायक होगा। —स्पर्जियन

दूसरोंको प्रसन्न करनेके लिए कोई काम न करो। वह वीर है जो 'नहीं' कह सकता है। 'नहीं' कह सकनेसे तुम्हारे चरित्रकी शक्ति प्रकट होती है। —स्वामी रामतीर्थ

नाश

तृष्णासे सब गुणोंका नाश होता है, अभिमानसे पुरुषका नाश होता है, याचना करनेसे गौरव नष्ट होता है अपनी प्रशंसा करनेसे गुणोंका चिन्तासे बलका और व्यसनसे लक्ष्मीका नाश होता है।

—अज्ञात

पराया धन हरनेसे परस्त्री गमन करनेसे और मित्रोंके साथ विश्वासघात करनेसे मनुष्य नष्ट हो जाता है। —विदुर

नाशवान्

जब एक साधुको खबर दी गई कि उसका बच्चा मर गया तो उसने केवल यह कहा—"मैं जानता था वह नाशवान् है।" —अज्ञात

नास्तिकता

नास्तिकता इन्सानके दिलमें नहीं जीवनमें होती है। —बेकन

क्षणिक लोभ अपनेमें निराशा और आत्म-विश्वासकी कमी—ये नास्तिकताके चिह्न हैं। —हरिभाऊ उपाध्याय

स्वार्थ ही वास्तविक नास्तिकता है, निःस्वार्थता परार्थ-चिन्तना ही वास्तविक धर्म है। —अज्ञात

नास्तिकता आशाकी मौत और आत्माकी आत्म-हत्या है। —[illegible]

निकटता

मैं संसारके लोगोंमें यह बात पाता हूँ कि जो उनके नजदीक होता जाता है वह तुच्छ हो जाता है, और जो अपना मान आप करता है वह प्रतिष्ठाका भागी बनता है। —एक कवि

निकम्मा

निकम्मा कौन है? पेटू। —[illegible]

दुनियाने तुझे निकम्मा ठहरा दिया तो तू क्यों घबराता है ? जिस दिन तेरा दिल तुझे निकम्मा ठहरा देगा उस दिन दुनिया-भरकी प्रशंसा तेरे काम नहीं आयेगी । —अज्ञात

निकृष्ट

संसारमें निकृष्टतम आदमी कौन हैं ? वे जो अपने कर्तव्यको जानते हैं, और उसपर अमल नहीं करते । —अज्ञात

निकृष्टतम जीव वे हैं जो वस्तुको तीव्रतम, अधिकतम राग-दृष्टिसे ग्रहण करते हैं और न्यूनतम ज्ञान-दृष्टिसे देखते हैं । —अज्ञात

निगाह

जो शख़्स इस्तग़नाकी निगाहको नहीं समझ सकता उसके सामने अपनी ज़बानको शर्मिन्दा-ए-तकल्लुम न करो । —अज्ञात

निग्रह

मनोनिग्रहकी अपेक्षा शरीरनिग्रहका अभ्यास अधिक आसान है, इसलिए शरीरनिग्रहके अभ्याससे प्रारम्भ करना श्रेयस्कर है । शरीर निग्रहका अभ्यास अच्छी तरह दृढ़ होनेपर मनोनिग्रहका अभ्यास करना सरल हो जाता है । —विवेकानन्द

निद्रा

निर्दोष नींद आनेके लिए जाग्रतावस्थामें आचार-विचार निर्दोष होने चाहिए । निद्रावस्था जाग्रतावस्थाकी स्थिति जाँचनेका एक आईना है । —गाँधी

जिसके नीचे नरककी आग दहक रही हो और ऊपर स्वर्गका राज्य जिसे बुला रहा हो, वह नींदमें समय कैसे गँवाये ! —अस्मान दर्द

निधि

अंधकार और दुष्ट शक्तियोंसे युद्ध ही मेरी निधि है । —गाँधी

निन्दक

पक्षियोंमें कौवेको चाण्डाल कहा है, पशुओंमें गधेको और मनुष्योंमें निन्दकको। —अज्ञात

सारे संसारमें सबसे अधिक विवेकभ्रष्ट वह आदमी है जो लोगोंकी निन्दामें व्यस्त रहता है—जैसे मक्खी व्रणस्थानोंको ही तलाश करती है। —इस्माइल-इब्न-अमीनकर

हाथी अपने रास्ते चलता जाता है, कुत्ते भौंकते हैं उन्हें भौंकने दे।
—कबीर

जो कोई तुम्हारे पास दूसरोंके दोष गिनाता हुआ आता है वह निस्सन्देह तुम्हारे दोष दूसरोंके सामने ले जायगा। —अज्ञात

निन्दा

इन्द्रियासक्त मनुष्य दुराचारी धनवान् और अत्याचारी आचार्य—इनके दोष प्रकट करना निन्दा करना नहीं है। —हुसेन बसराई

अफलातूनने यह सुनकर कि कुछ लोग उसे बहुत बुरा आदमी बताते हैं कहा : 'मैं इस तरह जीनेकी पवित्रता रक्खूँगा कि उनके कहनेपर कोई विश्वास ही नहीं करेगा। —गार्डिनर

पर-निन्दा दुर्बलताका असाधारण लक्षण है। —अज्ञात

जो दूसरोंके अवगुण बखानता है वह अपना अवगुण प्रकट करता है।
—बुद्ध

चाहे तुम बर्फकी तरह निर्मल और निष्पाप हो जाओ तब भी निन्दासे नहीं बच सकोगे। —शेक्सपियर

अगर कोई तुमसे कहे कि अमुक आदमी तुम्हारी बुराई करता था, तो जो कुछ कहा गया उसके बारेमें बहाने न बनाओ बल्कि जवाब दो—'वह मेरे और दोषोंको नहीं जानता था वरना वह सिर्फ इन्हींका ज़िक्र न करता। —एपिक्टेटस

निन्दा किसीकी न करो। —मुहम्मद

अपनी आलोचना या निन्दामें रुचि होना इस बातका सबूत है कि मैंने अपने घरकी देखभाल शुरू कर दी है। —हरिभाऊ उपाध्याय

मालिक देखता है और चुप रहता है; पड़ोसी देखता नहीं पर शोर मचाता है। —सादी

नेकीसे विमुख हो जाना और बदी करना बेशक बुरा है मगर सामने हँसकर बोलना और पीठ-पीछे निन्दा करना उससे भी बुरा है। —तिरुवल्लुवर

कामोंके विरोध या निन्दासे मुक्त होनेकी मैंने कभी इच्छा नहीं की। सबको बचानेवाला वह ईश्वर भी जब दयालु निन्दकोंकी जीभसे नहीं बच पाया तो मैं उससे बचानेवाला कौन ? —हुसेन बसराई

दुर्जनोंको निन्दामें ही आनन्द आता है, सारे रसोंको चखकर कौआ गन्दगीसे ही तृप्त होता है। —महाभारत

पीठ-पीछे किसीकी निन्दा न करो चाहे उसने तुम्हारे मुँहपर ही तुम्हें गाली दी हो। —तिरुवल्लुवर

ऐ ईमानवालो, दूसरोंपर बहुत शक मत करो, सचमुच कभी-कभी शक करना भी गुनाह हो जाता है। दूसरोंके दुर्गुण ढूँढ़ते मत फिरो, और न पीठ-पीछे किसीकी बुराई करो। पीठ-पीछे बुराई करना ऐसा ही है जैसा अपने मुरदा भाईका मांस खाना। —कुरान

दूसरोंकी निन्दा करनेमें सज्जनको परिताप और दुर्जनको संतोष होता है। —भरत

निन्दा एक ऐसा दोष है जो दुहरी मार मारता है यह निन्दक और निन्दित दोनोंको ज़ख़्मी करता है। —डीरिंग

सच्चा आदमी अगर निन्दा सुनकर विकल हो उठता है तो वह ईश्वरकी नज़रकी अपेक्षा मनुष्यकी नज़रमें ज़्यादा डरता है।

—कल्पन

निन्दक और ज़हरीले साँप दोनोंके दो-दो जीभ होता है।

—तमिल

संसारमें न किसीकी सदा स्तुति होती है, न निन्दा।

—धम्मपद

अगर लोग हमारे बारेमें कुछ भौंक-भौंक करते हैं तो हमें उसका बुरा नहीं मानना चाहिए। जिस तरह कि गिरजाघरकी मीनार अपने इर्द-गिर्द चीलोंके चीखनेका ख्याल नहीं करती। —जॉर्ज ईलियट

निमित्त

'निमित्तमात्रं भव सव्यसाचिन्'—निमित्तमात्र होना माने दाहिना हाथ थक गया तो बायें हाथसे लड़नेकी तैयारी रखना। —विनोबा

नियत मार्ग

गंगा अपने नियत मार्गसे बहती है। इसलिए उसका लोगोंको अधिकसे अधिक उपयोग प्राप्त होता है। लेकिन उपयोगी पड़नेके हेतुसे अगर वह अपना नियत मार्ग छोड़कर लोगोंके आँगनमें बहने लगी तो लोगोंकी क्या दशा होगी?

—विनोबा

नियम

कुदरतका यह एक साधारण नियम है जो कभी नहीं बदलेगा कि योग्य अयोग्योंपर शासन करते रहेंगे। —डायोनीसियस

बग़ैर नियमके एक भी काम नहीं चलता। नियम एक क्षणके लिए टूट जाय तो सारा ब्रह्माण्ड अस्त-व्यस्त हो जाय। —गांधी

जो अपने लिए नियम नहीं बनाता उसे दूसरोंके बनाये नियमोंपर चलना पड़ता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

इस प्रकार काम करो कि तुम्हारी प्रवृत्तियोंका सिद्धान्त सारे संसारके लिए नियम बना दिया जा सके। —कान्ट

नियामत

जो पुरुष समझ-बूझकर ठीक तरहसे अपनी इच्छाओंका दमन करता है मेवा और दूसरी न्यामतें उसे मिलेंगी। —तिरुवल्लुवर

निरर्थक

निरर्थक ज़िन्दगी बिन-आई मौत है। —गेटे

निरामय

हर जगह व हर वक्त आनन्दित और उत्साही होना पूर्ण निरामय जीवनका रहस्य है। —स्वामी रामतीर्थ

निराशा

जो अपनेसे निराश हो गया उससे कौन आशा बाँधेगा।

—सर फ़िलिप सिडनी

निराशा नरककी दलदल है जिस तरह कि खुशी स्वर्गकी शान्ति है।

—डॉन

निर्गुण

सर्वभूतहित यह निर्गुण उपासना है। —विनोबा

निर्णय

जिसका निर्णय दृढ़ और अटल है वह संसारको अपने साँचेमें ढाल सकता है। —गेटे

याद रहे कि तुम्हारा पहुँच तुम्हारे निर्णयसे ज्यादा ऊँची नहीं हो सकती। —अज्ञात

निर्दोष

बेदाग़ दिलको आसानीसे भौंचक्का नहीं किया जा सकता।

—शेक्सपियर

निर्बलता

निर्बल वह नहीं है जिसे निर्बल कहा जाता है बल्कि वह है जो अपनेको निर्बल समझता है। —गाँधी

निर्बुद्धि

वह मनुष्य तो बिलकुल ही पतित और निर्बुद्धि है जो यह नहीं जानता कि मुझपर कैसी चक्की चल रही है। —मसनवी

निर्भय

हजारमेंसे केवल एक ऐसा होता है जो संसारकी मायासे लुब्ध नहीं होता, स्वर्गकी कामना नहीं करता और नरकसे भी भयभीत नहीं होता।
—कुरान

निर्भयता

जहाँ पवित्रता है वहीं निर्भयता रह सकती है। —गाँधी

निर्भय होनेका क्या लक्षण है? संसार-प्रेमी लोगोंसे विरक्त होना और मनको साधन भजनमें लगाकर बड़प्पनके मोहसे दूर रहना।
—कुसुम

वह महान् अजन्मा अजर अमर निर्भय आत्मा ब्रह्म है। ब्रह्म निर्भय है, जो यह जानता है निर्भय ब्रह्म हो जाता है। —ब्रह्म उपनिषद्

निर्मलता

निर्मल हृदयको आशाओंसे भयभीत नहीं किया जा सकता।
—शेक्सपियर

निर्मल मनवाले धन्य हैं क्योंकि उन्हें ईश्वरके दर्शन अवश्य होंगे। —बाइबिल

निर्लज्जता

उस निर्लज्जतासे बढ़कर निर्लज्जताकी बात और कोई नहीं है जो यह कहती है कि मैं माँग-माँगकर अपनी दरिद्रताका अन्त कर डालूँगी।
—तिरुवल्लुवर

निर्लिप्त

न किसीसे भय, न किसीसे ममता। —प्रसाद

निर्लोभ

जो निर्लोभ हो गये हैं वे धन्य हैं, क्योंकि दुनियाको भिन्न-भिन्न चीज़ोंका लोभ होता है वे सब उन्हें अनायास मिल जायेंगी। —पारसिरर

निर्वाण

ब्रह्मनिर्वाण उन्हीं लोगोंके लिए है जिन्होंने अपनी आत्माको जान लिया है। —गीता

'एक ही एक' ऐसी अनन्त अपौरुषेय विराट् सत्तामें व्यक्तिगत स्वत्वका लय हुआ देना ही निर्वाण है। बौद्ध मतानुसार आत्माका लोप नहीं। —अरविन्द घोष

निर्वाणका आनन्द मनसे परे है। —प्रसाद

निर्वाण-पथ

जिस तरह आदमी साँपके फनसे दूर रहता है उसी तरह जो कामोपभोगसे दूर रहता है वह इस विषयकी तृष्णाका त्याग करके निर्वाण-पथकी ओर अग्रसर होता है। —बुद्ध

निर्वाह

ईश्वरीय आज्ञाका हरएक व्यवहारमें पालन करनेपर निर्वाहके साधन तो अपने-आप दौड़े आयेंगे। —कुमेर

निवास

मैं कहाँ रहना चाहता हूँ?—(१) कहीं भी (२) सन्तोंमें (३) आत्मामें। —अमर

निवृत्ति

निवृत्तिका मतलब अकर्मण्यता नहीं अपितु वैयक्तिक स्वार्थोंके बन्धनसे छूट जाना है। —सत्यभक्त

नामके हित्य उसको पीकर भी कोयल गान नहीं करती लेकिन कीचड़का पानी पीकर मेंढक टर्राने लगता है। —प्रसाद

जब नीचको पदवी, चाँदी और सोना मिल जाते हैं तो वास्तवमें उसके सिरको सम्हालेकी आवश्यकता होती है। —प्रसाद

नीचकी नम्रता अत्यन्त दुःखदायी है। अंकुश, धनुष, साँप और बिल्ली झुककर ही मारते हैं। दुष्टकी प्रिय वाणी ऐसी भयदायक है जैसे असमयके फूल। —रामायण

नीचता

शक्तियोंका एक नियम है जिसके कारण चीज़ें समुद्रमें डूबकर अमुक गहराईसे नीचे नहीं जा सकतीं, लेकिन नीचताके समुद्रमें जितने गहरे हम जायँ डूबना उतना ही आसान। —सॉकिस

नीति

नीतिशास्त्रका आधार जिसने ईश्वरको बनाया उसने मानो बिना नींवपर इमारत खड़ी की। —विनोबा

अपनी क्रियाओं और परम्पराओंको भूल जाओ, और अपनी तात्कालिक नैतिक दृष्टिको पकड़ना मानो। —एमर्सन

अहंकार ही अनीति है व निरहंकारता ही नीति है। —विवेकानन्द

नीति ही राजा है और नीति ही कानून है। —विवेकानन्द

नुक्ताचीनी

दुनियामें सबसे मुश्किल काम अपना सुधार है और सबसे आसान दूसरोंकी नुक्ताचीनी। —प्रसाद

नूतन

वह न कीजिए जो किया जा चुका है। —टॅम

मैं पुराने धर्म और पुराने नबियोंके उपदेशोंको नष्ट या बरबाद करने नहीं आया, बल्कि मैं उन्हें पूरा करनेके लिए आया हूँ। —ईसा

मैं सिर्फ़ पिछली बातोंको आगे चला रहा हूँ, मैं कोई नई चीज़ नहीं गढ़ सकता। —कुंग फ़्यूत्से

बहुतसे बुद्ध मुझसे पहले आये हैं, और बहुतसे मेरे बाद आयेंगे। मैं पुरानी रोशनीको ही फिरसे फैला रहा हूँ। —बुद्ध

नेक

दुष्ट अभिमानसे ईश्वर घृणा करता है, परन्तु नेकके मार्गवाले खुश होता है। —कुरान

तुम नेक रहो और संसार तुम्हें बुरा कहे—यह अच्छा है बनिस्बत इसके कि तुम बुरे रहो और संसार तुम्हें अच्छा कहे। —अज्ञात

जो मनुष्य अपने मनमें भी नेकीसे नहीं डिगता है, उसके रास्तेपार होनेसे निकली हुई बात नित्य सत्य है। —तिरुवल्लुवर

नेकनामी

नेकनामी मर्द और औरतके लिए उनका रूहका ज़ेवर है। —शेक्सपियर

नेकी

नेकी जितनी ज़्यादा की जाती है उतनी ही फूलती-फलती है। —अज्ञात

नेकी उन बाहरी कामोंमें नहीं है जो हम करते हैं बल्कि इसमें है कि हम अन्दर क्या हैं। —चैनिंग

उस दिनको खोया हुआ गिन जिस दिन अस्ताचलको जाता हुआ सूर्य तेरे हाथसे कोई अच्छा काम किया गया न देखे। —स्टेनफोर्ड

वास्तविक नेकीसे अधिक दुर्लभ कुछ भी नहीं है। —रोशे

महान् आत्माएँ ही जानती हैं कि नेकीमें कितना गौरव है। —सोफोक्लिस

नेकीका एक काम करना स्वर्गकी ओर एक क़दम बढ़ाना है। —जे बी हर्बर्ट

सेवकको कोई निजी महत्वाकांक्षा नहीं रखनी चाहिए। वह अपने लिए कुछ न चाहे; न तो धन, न अधिकार, न पद, न भोग, न उपभोग। और वह ईश्वरको दिनमें चौबीस घण्टे याद रक्खे। —गांधी

नैतिकता

सब उपजातियाँ भिन्न-भिन्न हैं, क्योंकि वे मनुष्यसे आई हैं; नैतिकता हर जगह वही है, क्योंकि वह ईश्वरसे आई है। —वाल्टेयर

नौकर

जो अपने नौकरको अपना भेद देता है, वह अपने नौकरको अपना मालिक बनाता है। —ड्राइडन

अगर तुम्हें वफ़ादार और दिलपसन्द नौकरकी ज़रूरत है तो अपने सेवक स्वयं बनो। —बैंजामिन फ्रैंकलिन

देखो, जो आदमी नेकी देखता है और बदी भी देखता है मगर पसन्द उसी बातको करता है जो नेक है, बस उसी आदमीको अपनी नौकरीमें लो। —तिरुवल्लुवर

नौकरी

श्री रामकृष्ण परमहंस एक नौजवान शिष्यसे बोले, "एक दुनियावी आदमीकी तरह तू तनख्वाहदार नौकर बन गया है। लेकिन तूने अपनी माँकी ख़ातिर यह किया है, वरना मैं कहता 'लानत है! लानत है! लानत है!'" उन्होंने इसे भी एक मरतबा दुहराया और तब कहा, 'सिर्फ़ भगवान्‌की नौकरी कर।'" —अज्ञात

चाकरीके टुकड़ोंसे भाजीकी घास अच्छी। —अज्ञात

उसी आदमीको अपनी नौकरीके लिए चुनो जिसमें दया, बुद्धि और गुण विद्यमान हैं या जो लालचसे आज़ाद है। —तिरुवल्लुवर

न्याय-परायण

अगर कोई यह कहे कि उसने एक न्याय-परायण आदमीको रोटीके लिए मोहताज देखा है तो मैं कहता हूँ कि वह ऐसी जगह था जहाँ दूसरा कोई न्याय-परायण आदमी था ही नहीं। —सेण्ट क्लीमेंट

न्यायाधीश

हम किसीके न्यायाधीश नहीं हो सकते। —गाँधी

न्यायी

इन्सानका फ़र्ज़ है कि वह उदार बननेसे पहले न्यायी बने।
—डिकेंस

[प]

पछतावा

दुष्कर्मोंका पछतावा व्यर्थ है जब तक कि प्रण न कर लो कि फिर ऐसा काम न करोगे। —अज्ञात

पठन

पढ़नेसे सस्ता कोई मनोरंजन नहीं; न कोई खुशी उतनी स्थायी।
—लेडी मॉण्टेग्यू

आम पढ़ना सब जानते हैं लेकिन क्या पढ़ना चाहिए यह कोई नहीं जानता। —जॉर्ज बर्नार्ड शा

महज़ किताब पढ़नेका नुकसान इतना कि दूसरोंके आधारपर विचार-शक्ति कमज़ोर पड़ जानेका डर है और यह शक्ति एक बार गई कि अपनी सारी ज़िन्दगी कौड़ी क़ीमतकी हो जाती है। —विवेकानन्द

पड़ोसी

पड़ोसियोंकी खुशहाली अन्तमें हमारी ही हो जाती है और पड़ोसियोंकी बदहाली भी अन्तमें हमारी ही हो जाती है। —रस्किन

आजकल अधिकांश लोग सोचते हैं कि पड़ोसीकी सेवा करनेका एकमात्र आशास्पद तरीका यह है कि उससे काम उठाया जाय।
—रस्किन

हम अपने मित्रोंके बिना जी सकते हैं लेकिन अपने पड़ोसियोंके बगैर नहीं। —अज्ञात

हम पड़ोसीको उसके स्वार्थके लिए इतना प्यार नहीं करते जितना अपने स्वार्थके लिए करते हैं। —बिशप विल्सन

पड़ोसीके साथ संधी करना एक प्रशंसनीय गुण है। —इब्न मालूक

जो आदमी अपने पड़ोसियोंके मनको प्राप्त करनेकी कोशिश नहीं करता वह मरनेके बाद अपने पीछे क्या चीज़ छोड़ जानेकी आशा रखता है। —शिपनहुअर

कोई इतना धनिक नहीं है कि पड़ोसीके बगैर काम चला ले।
—डेनिश कहावत

मैंने एक बार एक साधुसे पूछा 'आप एक ही झोंपड़ीमें पहाड़की चोटीपर आबादीसे मीलों दूर, अकेले रहनेका कैसे साहस करते हैं?' उसने जवाब दिया "ईश्वर मेरा निकटतम पड़ोसी है।' —स्टर्न

पड़ोसीके स्वत्वको न भूल, क्योंकि जो इस कर्तव्यसे चूक जाता है वह जब पर नहीं प्राप्त कर सकता। —हज़रत ईसा

पतन

सब पतनोंमें बड़े-से-बड़ा पतन आत्माका अविश्वास है।

—अज्ञात

परमात्मा

वह परम आत्मा जो अनन्तके सिंहासनपर बैठा है न इस समय अस्तीमें है न पहिले कभी था और न आइन्दा कभी होगा।

—जे जी हॉलैंड

परमात्मा सिर्फ पवित्रात्माका दूसरा नाम है। —बैनयर्न

जब हम अपने परम्पराके ईश्वरसे सम्बन्ध तोड़ लेंगे और अपने कारनामोंके खुदाको ख़त्म कर देंगे तब परमात्मा हाज़िर होकर हमारे हृदयमें आग लगा देगा। —एमर्सन

जब हम परमात्माकी परिभाषा करने और उसका वर्णन करनेका प्रयत्न करते हैं तो भाषा और विचार दोनों हमें छोड़कर चले जाते हैं और हम मूर्खों और जंगलियोंकी तरह लाचार हो जाते हैं। —एमर्सन

जिसने अपनी खुदीको जीत लिया, जो शान्त है; और जो सर्दी-गरमी सुख-दुःख मान-अपमानमें एक-सा रहता है, उसकी आत्मा ही परमात्मा है। —गीता

मेरे लिए परमात्मा सत्य है, प्रेम है। —गांधी

परमात्माके सिवा आत्मा किसी चीज़से सन्तोष नहीं पा सकती।

—बेली

जिन्हें दोनों वक्त भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वरकी चर्चा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटीके ही रूपमें प्रकट हो सकते हैं। —गांधी

परमात्माकी पहचान नैतिक बुद्धिके विकासके बिना असम्भव है।

—गांधी

सिवाय परमात्माके किसी भी चीज़से वाह-वाही चाहना मूर्खता है।

—एडीसन

परमात्मा सदैव कृपारूप है। जो शुद्ध अन्तःकरणसे उसकी मदद चाहता है, उसको वह अवश्य मिलती है। —विवेकानन्द

क्या तुम पूछते हो परमात्मा कहाँ रहता है? आत्मामें; और जब तक आत्मा शुद्ध और पवित्र न हो, उसमें परमात्माके लिए स्थान नहीं है। —अज्ञात

हर एकके हृदयमें अनमापा और अनमापा हुआ 'अनन्त' बसा हुआ है। —एमर्सन

परमार्थ

प्रत्येक व्यक्तिको अपने अधिकारके अनुसार अपने स्वभावनिर्दिष्ट कर्मद्वारा विकास करनेसे परमार्थ-प्राप्ति होती है। —अरविन्द घोष

करनी और शरण परमार्थकी दो कुंजियाँ हैं। —गीता

परमुखापेक्षी

त्यागी होकर भी जो परमुखापेक्षी बना रहता है वह तो कुक्कुरके समान है। —अज्ञात

परमेश्वर

सबके साथ अपने एकपन या अपनेपनको महसूस करनेसे ही आदमी सबके अन्दर परमेश्वरके दर्शन कर सकता है।

परमेश्वर ही आत्माका अमृतका और अनन्त सुखका खज़ाना है।

जो आदमी सबके अन्दर रहनेवाले परमेश्वरके साथ अपने दिलको लगाता है वही परमेश्वरको पाता है। वह परमेश्वरमें रहता है और परमेश्वर उसमें। —गीता

परमेश्वर सत्य है, उसकी सचाईके सामने बाकी सब चीज़ें झूठी हैं। वह हर तरहकी व्यक्तितासे अलग है। वहाँ न 'मैं' है न 'तू' है न 'वह' है। वह सबमें रमा हुआ है। —गीता

परम्परा

मूर्ख, अशिक्षित या भद्र परम्पराओंका इसलिए अनुसरण करना कि हम निर्णयकी शक्तियोंसे बच जायें मानो एक मनरेका दूसरेमें उपहास करना है। —गेटे

पतित

मुझे इस बातपर शर्म आनी चाहिए कि उस ऊँचे स्थानसे गिरकर तू यहाँपर अपनी ज़िन्दगी गुज़ार रहा है। —शम्सवी

पत्र

अत्यन्त आनन्दप्रद पत्र भी संभाषणके चमत्कारका स्थान नहीं लिये होता। —पोप

पथ-प्रदर्शन

अगर अन्धा अन्धेको राह दिखाये तो दोनों खाईमें गिरेंगे। —हिब्रू कहावत

पथ्य

जो मरणोन्मुख होता है उसे पथ्य नहीं रुचता। —रामायण

पद

जिस मनुष्यका पद सूरजके स्थानसे भी ऊपर हो, उसको न तो कोई वस्तु घटा ही सकती है और न बढ़ा ही सकती है। —अज्ञात

पदवी

तीन सबसे बड़ी पदवियाँ जो मनुष्यको दी जा सकती हैं : शहीद वीर और महात्मा। —ग्लेडस्टन

परख

मनुष्योंकी परख उसके गुणसे नहीं अवगुणोंसे होती है। —अज्ञात

अगर विद्वान् लोगोंने मनुष्योंको साधारण रीतिसे परखा है तो मैंने गूढ़ रूपसे परखा है मैंने लोगोंके प्रेमको धोखा और उनके [illegible] पाया है। —एक कवि

किसी लेखके पेशका अन्दाज़ा उसपरके सबसे बुरे लेखसे करना मुनासिब नहीं है न किसी आदमीको ही उसके निम्नतम कार्य या भावनासे परखना चाहिए। —अज्ञात

पर-चर्चा

जो दूसरोंके गुण-अवगुणोंकी चर्चामें लगा रहता है वह अपने वक़्त-को महज़ बर्बाद करता है, क्योंकि वह वक़्त न तो आत्म-विचारमें लगता है न परमात्माके ध्यानमें। —रामकृष्ण परमहंस

पर-दुःख

अगर तू दूसरोंकी तकलीफ़ नहीं समझता तो तुझे इन्सान नहीं कहा जा सकता। —सादी

पर-द्रोही

पृथ्वी कहती है—पहाड़ बोझ, समुद्र मुझे इतने भारी नहीं लगते जितना कि एक पर-द्रोही। —अज्ञात

पर निन्दा

परनिन्दा किये बग़ैर दुर्जनको चैन नहीं पड़ता। जिस तरह कौआ सब रस खावे, फिर भी विष्ठा खाये बिना तृप्त नहीं होता। —अज्ञात

अगर एक ही कर्मसे जगत्को वश करनेकी इच्छा हो तो पर-निन्दा छोड़ दो। —अज्ञात

पर-पीड़ा

"पर-पीड़ा सम नहिं अधमाई"। —तुलसी

पर-पीड़न

दूसरोंको सतानेके बराबर कोई नीचता नहीं है। —रामायण

परम-शक्ति

आत्म-सम्मान आत्मज्ञान और आत्म-संयम सिर्फ़ यही तीन मिल-कर जीवनको परम शक्तिकी ओर ले जाते हैं। —टैनीसन

परमात्मा

वह परम आत्मा जो ब्रह्माण्डके सिंहासनपर बैठा है न इस वक्त वक्तोंमें है न पहिले कभी था और न आइन्दा कभी होगा।

—मी वो हॉमिंग

परमात्मा सिर्फ पवित्रात्माका दूसरा नाम है। —जैनधर्म

जब हम अपने परम्पराके ईश्वरसे सम्बन्ध तोड़ लेंगे, और अपने धर्माचार्योंके खुदाको खत्म कर देंगे तब परमात्मा हाज़िर होकर हमारे हृदयमें जीवन डाल देगा। —एमर्सन

जब हम परमात्माकी परिभाषा करने और उसका वर्णन करनेका प्रयास करते हैं तो भाषा और विचार दोनों हमें छोड़कर चले जाते हैं और हम मूर्खों और जंगलियोंकी तरह लाचार हो जाते हैं। —एमर्सन

जिसने अपनी इन्द्रियोंको जीत लिया, जो शान्त है और जो सर्दी-गर्मी सुख-दुःख, मान-अपमानमें एक-सा रहता है, उसकी आत्मा ही परमात्मा है। —गीता

मेरे लिए परमात्मा सत्य है, प्रेम है। —गांधी

परमात्माके सिवा आत्मा किसी चीज़से सन्तोष नहीं मान सकती।

—बेली

जिन्हें रोटी बगैर भूखे रहना पड़ता है उनसे मैं ईश्वरकी चर्चा कैसे करूँ? उनके सामने तो परमात्मा केवल दाल-रोटीके ही रूपमें प्रकट हो सकते हैं। —गांधी

परमात्माकी झलक नैतिक बुद्धिके विकासके बिना असम्भव है।

—गांधी

सिवाय परमात्माके किसी भी चीज़से बार-बार बातना मुश्किल है।

—एडीसन

परमात्मा सदैव कृपालु है। जो शुद्ध अन्तःकरणसे उसकी मदद माँगता है, उसको वह अवश्य मिलती है। —विवेकानन्द

परलोक

परलोकके जीवनमें न तो दौलतकी क़ीमत है और न ग़रीबीकी। वहाँ तो क़ीमत है कृतज्ञता और सहिष्णुताकी। धनवान् होकर मनुष्य उपकार मत भूलो और ग़रीबीकी हालतमें सहनशीलताको मत खोओ।
—हदीस

उस लोकमें अल्लाह उन लोगोंको सुख देगा जो इस दुनियामें बड़े बननेका प्रयत्न नहीं करते जो किसीके साथ अन्याय नहीं करते। परलोकका आनन्द केवल उन लोगोंके लिए है जो इस लोकमें परहेज़गारी से रहते हैं। —ह० मुहम्मदका अन्तिम उपदेश

अगर तुम स्वर्ग और नरक नहीं देखा है तो समझ ले कि उद्यम स्वर्ग है और आलस्य नरक है। —राम

परयश

परयशको धिक्कार है। —रामदास

परस्त्री

पर-स्त्रीको माताके समान समझो। —[illegible]

पर-स्त्रीगमन

दानवता है उसकी मर्यादाओंको जो पराई स्त्रीपर नज़र नहीं डालता। वह नेक और धर्मात्मा ही नहीं, पर सन्त है।—तिरुवल्लुवर

पर-स्त्रीगमन करनेसे पाप दुर्गति भयभीतकी भयभीतसे अल्प रति, बड़ा मिलता है, इसलिए मनुष्यको पर-स्त्रीगमन नहीं करना चाहिए। —बुद्ध

पर-स्त्रीगमन करना आम-तौरपर अपनी स्त्रीको व्यभिचारिणी बनाना है। —विजयधर्म सूरि

जिन लोगोंकी नज़र धन और धर्मपर लगी रहती है वे पराई स्त्रीको चाहनेकी मूर्खता कभी नहीं करते। —तिरुवल्लुवर

परहित

जिनके मनमें परहित बसा हुआ है, उनको जगमें कुछ भी दुर्लभ नहीं है। —रामायण

पराक्रम

हाथियोंके मस्तकोंकी कुम्भोंको मिटानेवाला सिंह हिरणोंमें अपने किस पराक्रमका वर्णन करे? —भामिनीविलास

यदि कदाचित् पराक्रमी पुरुष जब किसी दुस्तर कार्यको करता है तब वह किसी मित्रकी सहायता नहीं चाहता। —सम्राट बिन नाशिप

पराक्रमी

पराक्रमी अपनी प्रतिज्ञाको अपनी दोनों आँखोंके सामने रख लेता है, और परिणामके विचारको भूलकर भी चित्तमें नहीं लाता।

—सम्राट बिन नाशिप

पराक्रमी जब किसी कामका संकल्प करता है तब उससे वह रुका नहीं जा सकता और वह जो काम करता है निर्भय होकर करता है।

—सम्राट बिन नाशिप

पराक्रमी अपने काममें अपनी आत्माके सिवा और किसीसे सलाह नहीं लेता। और न अपने काममें अपनी तलवारके दस्तेके सिवा किसी औरको अपना साथी ही बनाता है। —सम्राट बिन नाशिप

पराधीन

"पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।" —रामायण

पराभक्ति

पराभक्ति माने समता माने ज्ञान माने निर्विकारिता। —विनोबा

परावलम्बन

अन्तःकरण एक बार परावलम्बी बन गया कि फिर वह किसी-न किसीके पीछे भागे बगैर रह ही नहीं सकता। कोई नहीं कह सकता कि उसकी कितनी अधोगति होगी। —[illegible]

परावलम्बी जीव जीते होनेकी बनिस्बत मरे हुए अच्छे ।

—विवेकानन्द

परिग्रह

जिसको विश्व अपना घर लगता है उसे परिग्रह रखनेकी जरूरत नहीं । —अज्ञात

परिग्रहका अर्थ है भविष्यके लिए प्रबन्ध करना । सत्यान्वेषी प्रेमधर्मका अनुयायी कलके लिए किसी चीज़का संग्रह नहीं कर सकता ।

—गांधी

अपरिग्रहका सच्चा अर्थ देहभाव नहीं-सा होना, है । क्योंकि देह ही मुख्य परिग्रह है । —विनोबा

भगवान् महावीरने सिर्फ बाहरी चीज़ोंको ही परिग्रह नहीं कहा आसक्तिको भी परिग्रह बताया है । —अज्ञात

सच्चे सुधारका, सच्ची सभ्यताका लक्षण परिग्रह बढ़ाना नहीं है, बल्कि उसका विचार और इच्छापूर्वक घटाना है । ज्यों-ज्यों परिग्रह घटाइए त्यों-त्यों सच्चा सुख और सच्चा सन्तोष बढ़ता है, सेवाशक्ति बढ़ती है । —गांधी

धन किसी वर्णित आवश्यकताकी क्षणिक पूर्तिका साधन है । अपने परिग्रहको अपना परमात्मा न माने जाओ । —अज्ञात

परिचय

ईश्वरको जानकर भी उससे प्रेम न करना असम्भव है । जो परिचय प्रेम-शून्य है वह परिचय ही नहीं । —बायबिल

परिणाम

यह न कह कि परिणामसे कार्यका औचित्य सिद्ध होता है ।

—अज्ञात

महान् परिणाम तत्काल नहीं प्राप्त हो जाते, इसलिए हमें जीवनमें कदम-कदम बढ़ते जानेमें सन्तोष मानना चाहिए।

—सेमुएल स्माइल्स

परिपूर्णता

हथौड़ेकी चोटें नहीं, जलके नृत्यका संगीत पत्थरके टुकड़ोंको परिपूर्ण बनाता है। —टैगोर

मामूली बातोंसे परिपूर्णता आती है और परिपूर्णता मामूली बात नहीं है। —पाम

छोटे छोटे कर्तव्योंके पालनमें परिपूर्णता आना आनन्दका अद्भुत स्रोत है। —ग्रूसर

परिमितता

परिमितता वह रेशमी सूत्र है जो समस्त सद्गुणोंकी मुक्तामालामें पिरोया हुआ है। —टॉमस फुलर

परिवर्तन

परिवर्तनका नाम असंगति नहीं है। परिवर्तन यदि मुझे अपने लक्ष्यकी ओर न ले जाता हो तो असंगति हो सकता है।

—प्रसाद

परिश्रम

अच्छे काममें किया गया परिश्रम अवश्य ही सफल होता है। ज्ञानी समर्थ पुरुष कभी नीच विचारवालोंकी राहपर नहीं चलते।

—कालिदास

वह परिश्रम जिससे कोई उपयोगी परिणाम न निकले, नैतिक पतन का कारण होता है। —जॉन रस्किन

कुएँमें चाहे जितना पानी हो, अगर मशक्कत चाहोगे तो वह नहीं निकल आता। —अरबी कहावत

मरते दमतक तू अपने पसीनेकी रोटी खाना। —बाइबिल

जो काटना चाहता है उसे बोना होगा। —रूप

अध्यवसायिता सद्भाग्यकी जननी है। —सरवेन्टीज

अगर तूने कुछ नहीं बोया, तो अन्य किसी बोनेवालेको जब तू उसे काटते हुए देखेगा, उस समय तू अपने व्यर्थ समय गँवानेपर लज्जित होगा। —एक ऋषि

देखो, जो मनुष्य परिश्रमके द्वारा, दबाव और आवेगको सदा सुख समझता है उसके दुश्मन भी उसकी प्रशंसा करते हैं।

—तिरुवल्लुवर

और परिश्रम, पानी और ताप कुछ भी हो नहीं सकता है, तो आत्मबोध कैसे हो सके! —गाँधी

नवयुवकोंके लिए मेरा सन्देश तीन शब्दोंमें है—परिश्रम, परिश्रम, परिश्रम। —बिस्मार्क

परिश्रम अन्य हर अच्छी चीजकी तरह स्वयं ही अपना पुरस्कार है।

—ह्विपिल

याद रखिए, आपमें एक भी स्नायु ऐसा नहीं है जो काम करनेसे बलवान् न होता हो। हमारे शरीर, मन या आत्माकी ऐसी कोई शक्ति नहीं है जो परिश्रमसे सुधरती न हो। —हॉफ

मेहनत करेगा सो पावेगा। —कहावत

ऊँचे-ऊँचे ख्वाब किसको नहीं आते? कौन महत्त्वाकांक्षी नहीं होता? किसकी अन्तरात्मा उच्चतम पदके लिए मचलती नहीं रहती? मगर महत्ताका सेहरा उन्हींके सिर बँधता है जो रातदिन अपने आदर्शके पथमें रास्तेपर लगातार चलते रहते हैं।

—अज्ञात

जो न तो अपने लिए करता है न दूसरोंके लिए, उसे खुदाका इनाम नहीं मिलेगा। —मुहम्मद

आदमियोंका सुख ज़िन्दगीमें है और ज़िन्दगी परिश्रममें है।

—अज्ञात

परिश्रमी

लक्ष्मी, महत्ता, दृढ़ता और कीर्ति परिश्रमीको मिलती है आलसीको नहीं। —अज्ञात

परिस्थिति

आदमीकी सबसे बड़ी ख़ूबी यह है कि वह जितना अधिक मुमकिन हो बाहरी हालातपर शासन करे और जितना कम हो सके उनसे शासित रहे। —गटे

सत्यके पुजारीपर परिस्थितिका प्रभाव न पड़ना चाहिए। उसका भेदकर उनमेंसे पार हो जाना ही उसका कर्तव्य है। परिस्थितिके कारण बने हुए कितने ही विचार ग़लत ठहरते हैं यह हम देखते हैं। —गांधी

अगर तुम किसी गोल छेदमें जा पड़ो, तो तुम्हें अपनेको गेंद बना डालना होगा। —जार्ज इलियट

परिस्थितियोंके बदलनेसे चरित्रका दोष दुरुस्त नहीं हो जाता।

—एमर्सन

नैपोलियन अपने कार्योंको परिस्थितियोंके अनुकूल नहीं बनाता था, बल्कि परिस्थितियोंको अपने कार्योंके अनुकूल बनाता था। —अज्ञात

परेशानी

परेशानीके कामसे ज़्यादा कोई परेशान नहीं करता। —अज्ञात

अनागतके लिए परेशान होना ईश्वरका अविश्वास है, जो है उसके लिए परेशान होना ईश्वरके प्रति अनादर है, और गुज़रे हुए कार्योंके लिए परेशान होना ईश्वरपर आघात करना है। —बिशप [illegible]

परोपकार

अठारह पुराणोंमें व्यासजीने दो ही बातें कही हैं वे ये हैं—दूसरोंका भला करना पुण्य यानी सवाब है, और किसी दूसरेको तकलीफ़ देना पाप यानी गुनाह है । —अज्ञात

अगर तू किसी एक आदमीको भी तकलीफ़से दूर करे तो यह ज़्यादा अच्छा काम है बजाय इसके कि तू हज्जको जाय और रास्तेकी हर मंज़िलपर एक-एक हज़ार रकअत नमाज़ पढ़ता जाय । —सादी

मैंने अमर जीवनको और प्रेमको वास्तविक पाया और यह कि अगर मनुष्य निरन्तर सुखी बना रहना चाहता है तो उसे परोपकारके लिए ही जीवित रहना चाहिए । —टैगोर

यदि मैं तुझे उठानेका प्रयत्न करता हूँ, तो इससे अपना ही अधिक हित करूँगा; तू तो अपने ही प्रयत्नसे उठ सकेगा । —अज्ञात

किसी बच्चेको ख़तरेसे बचा लेनेपर हमें कितना आनन्द आता है! परोपकार इसी अनिर्वचनीय आनन्द-प्राप्तिके लिए किया जाता है ।
—अज्ञात

परोपकार करनेकी एक ख़ुशीसे दुनियाकी सारी ख़ुशियाँ छोटी हैं ।
—हरदर्द

पर-हित सरिसा धर्म नहीं है भाई ! —रामायण

सांसारिक कामोंमें लिप्त हो जानेसे हानि ही होती है, और परोपकारके अतिरिक्त सारे कामोंमें घाटा ही घाटा है । —अबुल-फ़ज़ल-मुस्तो

जिन सज्जनोंके हृदयोंमें परोपकार भावना हमेशा जाग्रत रहती है उनकी विपदाएँ नष्ट हो जाती हैं और उनके क़दम-क़दमपर सम्पदाएँ आती हैं । —अज्ञात

जो करोड़ों ग्रन्थोंमें कहा गया है उसे मैं आधे श्लोकमें कहता हूँ; वह यह कि 'परोपकार करना पुण्य है और दूसरोंको दुःख देना पाप' ।
—अज्ञात

परोपकारी लोग हमेशा प्रसन्न चित्त होते हैं। —जेरमी टेलर

मनुष्यके स्थायी सुखका कारण दूसरोंको सुखी करनेके सिवा कुछ नहीं है। आज जैसे लोग पैसा इज्जत वगैरहके पीछे पागल हुए फिरते हैं वैसे ही एक दिन सारी मनुष्य जाति दूसरोंको सुखी बनानेके लिए पागल हुई फिरेगी। —मश्रुव

वह वृथा नहीं जीता जो अपना धन अपना तन अपना मन, अपना वचन दूसरोंकी भलाईमें लगाता है। —हिन्दू सिद्धान्त

परोपकारी

परोपकारी पुरुष उसी समय अपनेको गरीब समझता है जब कि वह सहायता माँगनेवालोंकी इच्छा पूरी करनेमें असमर्थ होता है। —विसारपुर

परोपदेश

'परोपदेशे पाण्डित्यं' कभी न होने दो। 'हम जगतके गुरु नहीं किन्तु सेवक हैं' यह हमेशा ध्यानमें रखना चाहिए। —विवेकानन्द

पवित्र

पवित्रात्माके लिए सब चीज़ें पवित्र हैं। —बाइबिल

सचमुच पवित्र-आत्मा वह है जिसने कामिनी और कांचनका त्याग कर दिया है। —रामकृष्ण परमहंस

पवित्रता

आसमानसे बढ़कर दुनियामें सिर्फ एक चीज़ है और वह है पवित्रता। —अफलातू

अपना हृदय पवित्र रखोगे तो दस आदमियोंकी ताकत रखोगे। —अदन

जो कुछ हृदयको पवित्र करता है उसे महान् भी करता है। —ग्रेर

पसन्द

कुत्तेके लिए दुनियामें सर्वोत्कृष्ट वस्तु कुत्ता है, बैलको बैल, गधेको गधा, और सूअरको सूअर। —शॉपेनहावर

पहिचान

साधु ही साधुको पहिचान सकता है। —रामकृष्ण परमहंस

अपनेको पहिचाननेके लिए मनुष्यको अपनेसे बाहर निकलकर तटस्थ बनकर अपनेको देखना है। —गाँधी

शाब्बाश, अपने आपको पहिचान। —सुकरात

तीर सीधा होता है और कमानमें कुछ टेढ़ापन रहता है। इसलिए आदमियोंको सूरतसे नहीं, बल्कि उनके कामोंसे पहचानो।

—शिलस्तुबर

हम आदमीको इससे पहिचान सकते हैं कि वह ईश्वरसे क्या कहता है लेकिन इस बातसे कभी नहीं कि ईश्वरने उसे क्या दिया है।

—पामर

पक्ष

बर्क्रास परोंवाले परिन्दे हमेशा बक्रीस नहीं होते। —कहावत

पण्डित

जो मनुष्य खूब सोच-विचारकर काम शुरू करता है, आरम्भ किये कामको समाप्त किये बिना नहीं छोड़ता, किसी समय भी काम करनेसे मुँह नहीं मोड़ता और इन्द्रियोंको वशमें रखता है वही 'पण्डित' कहलाता है। —विदुर

जो आदमी अपने कामोंसे खुद अपने लिए सुख हासिल करनेका इरादा नहीं रखता वही पण्डित है। —गीता

जो करके दिखाता है, वही पण्डित है। —महाभारत

पाकीज़गी

पाकीज़गी और सादगी एक ही चीज़के दो नाम हैं। —अज्ञात

पात्र-अपात्र

पात्र अपात्रमें बड़ा भेद होता है—गाय घास खाकर दूध देती है, साँप दूध पीकर ज़हर उगलता है। —अज्ञात

पाप

पापका आरम्भ चाहे प्रातःकालकी तरह चमकदार हो, मगर उसका अन्त रात्रिकी तरह अन्धकारपूर्ण होगा। —टालमेज

सुक़रातका कहना है कि पापमात्र अज्ञान है। इसके विपरीत यह भी कहा जा सकता है कि अज्ञान ही पाप है। —विनोबा

एक आदमी पाप करके धनादि लाता है, उसका उपभोग तो सब लोग करते हैं; लेकिन पापका फल वह अकेला ही भोगता है। —महाभारत

पापकी कल्पना आरम्भमें कलीके फूलकी तरह सुन्दर और मनोहारिणी होती है, किन्तु अन्तमें कामिनीके कालिमाकी तरह विनाशमयी है। —हरिभाऊ उपाध्याय

दूसरोंके पाप हमारी आँखोंके सामने रहते हैं, अपने हमारी पीठके पीछे। —सेनेका

मैं सिवाय पाप करनेके और किसीसे नहीं डरता। —बर्न

ईर्ष्यालु होना पाप है। —[illegible]

पाप पापीसे जीवन, सुख और काम लेता है और उसे शोक, वेदना और विनाश देता है। पापका मूल और स्रोत समझनेके लिए हमें उसके कार्यों और मुनाफ़ोंका मुक़ाबला करके देखना चाहिए। —साउथ

पापकी याद करके ज़िन्दगी पापके हवाले न कर दो।

—एनीबीसेंट

अगर किसीको अपनेसे प्रेम है तो उसे पापकी ओर ज़रा भी न झुकना चाहिए।

—तिरुवल्लुवर

जो काम अपनी ख़ुदीको बिल्कुल अलग रखकर अपने निजी सुख-दुख, नफ़े-नुक़सान और जीत-हारका बिल्कुल ख़याल न करते हुए, सिर्फ़ फ़र्ज़ समझकर किया जावे, उससे करनेवालेको पाप नहीं लगता।

—गीता

मैं सिर्फ़ उसीपर अमल करता हूँ जो अल्लाह मुझे हुक्म देता है। मेरा काम इसके सिवाय कुछ नहीं कि लोगोंको बुरे कर्मोंके नतीजोंसे आगाह करूँ।

—मुहम्मद

जो आदमी 'सिर्फ़ अपने लिए खाना पकाता है वह पापी है वह 'पाप' ही खाता है।

—गीता

पापको तुच्छ समझना ईश्वरको भी तुच्छ समझना है।

—प्राविस

आदमियोंमें अन्याय या बेईमानी या ख़ुदग़र्ज़ीसे बड़ा पाप नहीं जिसने दूसरोंका हक़ मार रक्खा है।

—उमर

यह सरासर अनुचित है कि ईश्वरके राज्यमें रहकर उसकी रोटी खाकर उसीकी आँखोंके आगे उसकी आज्ञाके विरुद्ध आचरण किया जाय।

—इब्राहिम अदहम

पाप-प्रवृत्ति

मैं पापके परिणामसे नहीं पापकी प्रवृत्तिसे मुक्ति चाहता हूँ।

—अज्ञात

पापी

जिनकी आत्माएँ छोटी होती हैं अक्सर वे ही बड़े-बड़े पाप-कार्योंके निर्माता होते हैं।

—गेटे

इस मस्जिदमेंसे सबसे बड़े पापीको बाहर निकालनेके लिए अगर बात हो तो मैं ही सबसे पहले निकलूँगा। —मलिक दिनार

पापीके बराबर मूढ़ नहीं, जो हर क्षण अपनी आत्माको दाँवपर लगाता रहता है। —टिलसन

पॉलिसी

मज़बूत छातीकी कोई पॉलिसी नहीं। —सिरम

पिता

पुत्रके प्रति पिताका कर्तव्य यही है कि वह उसे सभामें पहली पंक्तिमें बैठने लायक बना दे। —तिरुवल्लुवर

पीड़ा

अपने छोटे लड़केके मरनेके बादसे मैंने उससे ज्यादा अमली धर्म सीखा है जितना कि मैंने अपनी तमाम ज़िन्दगीमें पहले सीखा था। —होरेस बुशनैल

सुख तुम्हारे लिए है, पीड़ा मेरे लिए। —लॉर्ड बायरन

बात विचित्र लगती मगर हर व्यक्त परमात्मा हमको बीमारी, विपत्ति और निराशासे न केवल नेक बल्कि सुखी बनाना चाहता है। —पार्कर

पीड़ा तो प्रकृतियोंकी परखकसौटी है, यह कठोरपनको दूर करती है, और पाप करनेके विचारमें बाधा डालती है। —एटरबरी

सबकी रक्षा करनेवाला सबका विश्वासपात्र बनता है। जो कोई पीड़ा नहीं देता, वह पीड़ा नहीं पाता। —महाभारत

पुष्प

प्यारे पुष्पोंको मैं बुरा नहीं मानता, पर बात सिर्फ इतनी है कि वे आत्माकी महत्ताके साथ नहीं क्षमा होते। —नीत्शे

पुण्यका मार्ग शान्तिका मार्ग है। —नैतिक दर्शन

पुत्र

पुत्रसे कोई शाश्वत लाभ नहीं रहता। उसके लिए भी अनेक प्रकारके पाप और उपाधियाँ सहनी पड़ती हैं। —भागवत

पुत्री

मेरा बेटा तब तक मेरा बेटा है जब तक उसे बीवी नहीं मिल जाती लेकिन मेरी बेटी ज़िंदगीभर मेरी बेटी बनी रहती है। —कहावत

पुनर्जन्म

मैं सब्ज़े यानी घासकी तरह पैदा हुआ हूँ। मैंने सातसौ सत्तर जिस्म देखे हैं। —मौलाना रूम

पुरस्कार

मैं जो कुछ कर रहा हूँ वह उचित है या नहीं, इसकी परीक्षा तत्काल आर्थिक पुरस्कारसे बढ़कर कभी होगी। —प्रसाद

पुरुष

उत्तम पुरुषोंकी यह रीति है कि वे किसी कामको अधूरा नहीं छोड़ते। —[illegible]

पुरुषार्थ

हर आदमी एक ही निश्चित मार्गको अंगीकार करनेके बजाय अपने स्वभावानुसार स्वतन्त्र रीतिसे नया मार्ग निकालकर पुरुषार्थी हो सके तभी यह कहा जा सकता है कि उसने सच्चा पुरुषार्थ किया।

—अरविन्द घोष

ईश्वरमें अपनेको तद्गत करना व स्वयं उसका आत्मगत करके उसे सतत अनुभव करना यही अपना पुरुषार्थ और यही अपना स्वराज्य है।

—अरविन्द घोष

स्वतन्त्र रीतिसे आदर्शको पहचानकर चाहे जितना कठिन होने पर भी उसे पानेके लिए अनवरत परिश्रम करनेका नाम ही पुरुषार्थ है।

—गांधी

कर्म, ज्ञान और भक्ति इन तीनोंका जिस जगह मेल होता है वही श्रेष्ठ पुरुषार्थ है। —अरविन्द घोष

पुरुषार्थमें दरिद्रता नहीं, ईश्वर चिन्तनमें पाप नहीं, मौन रहनेमें कलह नहीं, जागनेवालेको भय नहीं। —चाणक्य

ईश्वरकी कृपाके बिना पत्ता भी नहीं हिलता। किन्तु मनुष्यरूपी निमित्तके बिना वह हिलता भी नहीं। —गांधी

बुद्धिमान् और माननीय लोग पुरुषार्थको बड़ा मानते हैं। परन्तु नपुंसक, जो पुरुषार्थ नहीं कर सकते दैवकी उपासना करते हैं। —शुक्राचार्य

हे राम, शुभ पुरुषार्थसे शुभ फल मिलता है और अशुभसे अशुभ फल मिलता है, तुम्हारी जैसी इच्छा हो वैसा कर्म करो। —वसिष्ठ

जो मनुष्य घरमें बैठा रहता है उसका भाग्य भी बैठ जाता है, जो खड़ा रहता है उसका भाग्य खड़ा हो जाता है, जो सोता रहता है उसका भाग्य भी सो जाता है और जो चलता-फिरता है उसका भाग्य भी चलने-फिरने लगता है। —ऐतरेय ब्राह्मण

पुरुषार्थी

पुरुषार्थी वह है जो भाग्यकी रेखाएँ मिटा दे। —रामतीर्थ

पुरुषार्थीका दैव भी अनुवर्तन करता है। —अज्ञात

पुरुषोत्तम

व्यक्तिका उत्तम पुरुष वही भगवान्‌का पुरुषोत्तम। —विनोबा

पुरुषोत्तम इतना मुक्त है कि वह अपनी मुक्तावस्थामें भी बद्ध नहीं है। —अरविन्द घोष

उत्कृष्ट व्यक्तिका मार्ग तिहेरा है: पुण्यात्मा—चिन्ताओंसे मुक्त, सम्यक्ज्ञानी—उलझनोंसे मुक्त, दिव्य—भयसे मुक्त। —च्वांगत्सु

पुरोहित

अगर दाढ़ी ही सब कुछ होती तो बकरा शेख हो गया होता।

—डेनिश कहावत

पुस्तक

जो पुस्तकें तुम्हें सबसे अधिक सोचनेके लिए विवश करती हैं तुम्हारी सबसे बड़ी सहायक हैं। —थ्योडोर पार्कर

पुस्तक-प्रेमी सबसे धनी और सुखी है, उसका धर्म या स्थान कुछ भी हो। —जे० ए० लैंगफोर्ड

जैसा लेखक वैसी पुस्तक। —कहावत

पुस्तकोंमें अक्षर रहते हैं इसलिए पुस्तकोंकी संगतिमें जीवन सार्थक करनेकी आशा व्यर्थ है। वचनोंकी वर्षा और वचनोंका ही भात खाकर भला कौन तृप्त हुआ है! —विनोबा

पूजनीय

सबसे बड़ा मित्र कौन है? सच्ची विद्या। सदा दुःखी कौन है? विषयानुरागी। धन्य कौन है? परोपकारी। पूजनीय कौन है? शिवतत्त्वनिष्ठ। —शंकराचार्य

पूजा

जो जिस रूपकी पूजा करता है वह उसी रूपको पाता है।

—गीता

सरल और प्रफुल्ल हृदयसे आई हुई पूजा ईश्वरको सबसे ज़्यादा प्रिय है। —प्लुटार्क

अल्लाहका कोप उन लोगोंपर हो जो अपने पैग़म्बरोंकी क़ब्रोंको पूजाका स्थान बना लेते हैं। ऐ अल्लाह मेरी क़ब्रकी कभी कोई पूजा न करे। —हज़रत मुहम्मद

भौंरेने फूलसे पूछा "ऐ फूल मैं तेरी पूजा-स्तुति किस तरह करूँ?" "अपनी पवित्रताके साथ मौन द्वारा" फूलने जवाब दिया। —टैगोर

प्राप्त कर्तव्य उत्तम रीतिसे पूरा करना ही परमेश्वरकी पूजा करनेका सच्चा तरीका है। —विवेकानन्द

पूर्णता

सर्वांग पूर्णताकी प्राप्ति सर्वांग संयमके बिना सम्भव नहीं। —गांधी

पूर्णताकी प्राप्तिका मार्ग इच्छाका नाश करना ही दिखाई पड़ता है।
—मनोविज्ञानका एक विद्वान्

मन, वाणी और कर्मसे सम्पूर्ण संयम पाये बग़ैर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। —महात्मा गांधी

कामिनी और कांचनके त्यागी बग़ैर आध्यात्मिक पूर्णता प्राप्त नहीं हो सकती। —रामकृष्ण परमहंस

पूर्वज

छछूँदरोंको फ़ख्र है कि उनके पुरखे शेर थे। —जर्मन कहावत

जिस आदमीके पास खानदानी पूर्वजोंके सिवाय अभिमान करनेकी कोई चीज़ नहीं है, वह आलू-जैसा आदमी है—उसका अच्छा हिस्सा ज़मीनके अन्दर। —ओवरबरी

पूर्व धारणा

आदमियोंसे पूर्व धारणाको तर्क द्वारा निकालनेकी कोशिश न करो। तर्कसे वह उसमें घुसेड़ी नहीं गई थी, चुनांचे तर्कसे वह निकल भी नहीं सकती। —सिडनी स्मिथ

पूर्व-धारणाओंसे सावधान रहना! वे चूहोंकी तरह हैं और आदमियोंके मन चूहेदानोंकी तरह; पूर्व-धारणाएँ कुछ आसानीसे आती हैं मगर इसमें सन्देह है कि वे कभी बाहर भी निकलती होंगी।
—जेफ़री

पूँजीपति

पचासों खेतोंका पूँजीपति कहलानेवाले किसानोंसे आम-आम

पेटूपन

हमारी समस्त दुर्बलताओं और तमाम बीमारियोंका एक कारण पेटूपन है। जैसे दीपक अत्यधिक तेलसे बुझ जाता है आग अत्यधिक ईंधनसे बुझ जाती है उसी तरह असंयत आहारसे शरीरका स्वाभाविक स्वास्थ्य नष्ट हो जाती है। —बर्टन

तलवारसे इतने नहीं मरते जितने अति-भोजनसे। —कहावत

पैग़म्बर

लेकिन ऐ मुहम्मद अगर लोग तुमसे मुँह फेर लें तो हमने (अल्लाहने) तुम्हें उनके ऊपर चौकीदार बनाकर नहीं भेजा है तुम्हारा काम सिर्फ़ अपना पैग़ाम सुना देना है। —क़ुरान

पैसा

प्रेम बहुत-कुछ कर सकता है परन्तु पैसा सब-कुछ कर सकता है।
—फ़्रेंच कहावत

जब पैसेका सवाल हो तो दोस्तोंसे 'खुदा हाफ़िज़'।
—हाउसमन

अगर तुम पैसेको अपना खुदा बना लोगे तो वह शैतानकी तरह तुम्हें सतावेगा। —अज्ञात

पैसेको ही सब मानकर ज़िन्दगी बरबाद कर दी जाय तो बरबाद हुई ज़िन्दगीको पैसेकी क़ीमत नहीं रहती। —अज्ञात

जिसकी राय यह हो कि पैसा सब कुछ कर सकता है उसके बारेमें यह मुनासिब शक की जा सकती है कि वह हर काम पैसेकी ख़ातिर करता है। —अज्ञात

जब दौलतमन्द बीमार पड़ता है तभी वह पूरी तौरसे अनुभव करता है कि पैसा कैसी नाकारा चीज़ है। —कोल्टन

अगर कोई आदमी फरिश्ता बननेके लिए ऊपर नहीं उठ रहा, तो इत्मीनान रखो वह शैतान बननेके लिए नीचे गिर रहा है। वह पशुकी अवस्थामें ही नहीं रुका रह सकता। —कॉलरिज

प्रचार

जो अच्छी तरह जीता है वह अच्छी तरह प्रचार करता है।

—स्पेनिश कहावत

प्रचुरता

नदीकी तरह प्रचुरता भी वस्तुओंका नाश कर देती है।

—[illegible]

प्रजातन्त्र

यह निश्चित रूपसे सिद्ध किया जा सकता है कि पूर्ण अहिंसाकी पृष्ठभूमिके बिना पूर्ण प्रजातन्त्र असम्भव है। —गांधी

प्रण

प्रण-हीनता प्राण-हीनताके समान है। —स्वामी शिवानन्द

जिसने किसी कामको पूरा करनेका प्रण ठान लिया वह उसको अवश्य कर देगा। —कालिदास

प्रणको तोड़नेसे पुण्य नष्ट हो जाते हैं। —रामायण

प्रतिध्वनि

जहाँ प्रतिध्वनियाँ होती हैं वहाँ हमें अक्सर प्रोत्साहन और लोक-मापन मिलता है, किन्हीं प्रतिध्वनियोंमें इससे ज्यादा होता है।

—थोरो

प्रतिमा

प्रतिमा एक तरहका आचरण है और आचरण भी एक तरहका आचरण है। —[illegible]

परिमितता विवेककी सहयोगिनी है परन्तु प्रतिभासे उसका दूरका भी वास्ता नहीं। —एमर्सन

प्रतिभावान् वह है जिसमें समझदारी और कार्यशक्ति विशेष हो। —शापेनहोर

प्रतिभावान्‌का एक लक्षण यह है कि वह मान्यताओंको हिला देता है। —गेटे

प्रतिभा केवल स्वतन्त्र वातावरणमें स्वतन्त्रतापूर्वक साँस ले सकती है। —जे एस मिल

प्रतिभा हमारी साधारण शक्तियोंके पुनीतस्वरूपके अतिरिक्त कुछ नहीं। —बेकन

प्रतिभावान्‌के लिए आवश्यक पहली और आखिरी चीज़ सत्यका प्रेम है। —गेटे

प्रतिशोध

पर्वतोंमें पानी नहीं रहता, महापुरुषोंके मनमें प्रतिशोधकी भावना नहीं रहती। —चीनी सूक्त

प्रतिष्ठा

सर्वोत्कृष्ट मिज़ाज क्या! हमारा ही हृदय हमें सच्ची प्रतिष्ठा देता है लोगोंकी राय नहीं। —शिलर

जिसने अपनी प्रतिष्ठा खो दी उसका सब कुछ खो गया। —मेनाव

स्वार्थके सिद्धान्तों पर बनी हुई प्रतिष्ठा शर्मनाक अपराध है। —हूर

प्रतिज्ञा

प्रतिज्ञा न लेनेका अर्थ अनिश्चित या डाँवाडोल रहना है। —गाँधी

प्रभुता

प्रभुताको सब कोई भजते हैं प्रभुको कोई नहीं भजता। प्रभुको भजे तो प्रभुता चेरी हो जाय। —कबीर

दुनियामें ऐसा कोई नहीं जन्मा जिसे प्रभुता पाकर मद न हुआ हो —रामायण

प्रभु-स्मरण

जो गम्भीरतापूर्वक प्रभु-स्मरण करता है वह दूसरे सब पदार्थोंको भूल जाता है और तो सभी पदार्थोंमें एक वह प्रभु ही दिखाई देने लग जाता है। —जुन्नुन

प्रमाद

काहिलीसे बच क्योंकि आत्माके प्रमादसे शरीर सड़ने लगता है।

—कैटो

प्रमाद न करो, ध्यानमें लीन रहो भोगोंके चक्करमें न पड़ो प्रमादके कारण तुम्हें लोहेका लाल-गरम गोला न निगलना पड़े और दुःखकी आगमें जलते वक्त तुम्हें यूँ न चिल्लाना पड़े कि 'हाय यह दुःख है।

—बुद्ध

जब रोनेका मकसद हो तब हँसना कैसे मुमकिन हो जाता है! जब कर्तव्य पुकारता हो तो तब प्रमाद कैसे बरदाश्त होता है!! —धम्मपद

जंग खा-खाकर खत्म होनेकी अपेक्षा घिस घिसकर मिटना अच्छा।

—बिशप कम्बरलैंड

मनुष्यकी अपेक्षा तो भेड़-बकरे भी अधिक सचेत होते हैं क्योंकि वे गड़रियेकी आवाज सुनकर खाना-पीना भी छोड़कर जल्दी और तुरन्त दौड़ पड़ते हैं, दूसरी ओर मनुष्य इतने लापरवाह हैं कि ईश्वरकी ओर जानेकी बाँग सुनकर भी इधर न आकर आहार-विहारमें तल्लीन रहते हैं।

—हुसैन बसरी

शैतान चोरोंको प्रकाशित करता है, प्रमादी आदमी शैतानको प्रकाशित करता है। —अंग्रेजी कहावत

जैसे वृक्षका पत्ता रात्रिकालके बीत जानेके बाद पीला होकर गिर जाता है, वैसे ही मनुष्यका जीवन भी आयु समाप्त होनेपर नष्ट हो जाता है। इसलिए गौतम! क्षणमात्रका भी प्रमाद न कर।

—भगवान् महावीर

हे आत्मा! तुझे उदासीनता धारण करना योग्य नहीं। प्रातःकाल तो गया; संध्या तक रहनेका भी कहाँ ठिकाना है?

—रत्नसिंह सूरि

अगर तुम अपनी प्राकृतिक शिथिलता या पाली हुई कमजोरियोंको नहीं जीत सकते तो यकीन रक्खो कि तुम 'सेकिण्ड-रेट'से ज्यादा कुछ नहीं हो सकते और तमाम उम्र यों ही पूर्ण असफल रहो। —अज्ञात

प्रमाद मौत है। प्रमाद नहीं करना। —अज्ञात

प्रमादसे बढ़कर दुःखदाता कोई शत्रु नहीं। —जैन सिद्धान्त

प्रमाद उतना शरीरका नहीं जितना मनका होता है। —रवी

अच्छा तो भिक्षुओ, मैं तुमसे कहता हूँ— 'संसारकी सभी चीजें बनी हैं इसलिए बिगड़नेवाली हैं नश्वर हैं। तुम अपने कल्याणकी प्राप्ति में प्रमाद न करना।' यही तथागतके अन्तिम शब्द हैं। —बुद्ध

प्रयत्न

प्रयत्न देवता है और भाग्य दैत्य है इसलिए प्रयत्न देवकी उपासना करना ही श्रेयस्कर है। —समर्थ रामदास

प्राप्तिकी अपेक्षा प्रयत्नका आनन्द अधिक है। —अज्ञात

अन्तर्यामीकी 'चमत्कार' जरी-सी हाथसे प्रयत्न डोंगा पार हो जाता है।

—दिनाग

बिना प्रयत्नके या अकस्मात् प्रयत्नसे मिट्टीके ढेले भले ही प्राप्त हो जायँ मगर रत्नकी प्राप्ति तो महान् प्रयत्नसे ही होती है। —अज्ञात

यह न समझ कि मानव-प्रयत्नसे कुछ नहीं मिल सकता, प्रयत्न ईश्वरका स्वरूप है। —अज्ञात

शक्तिभर प्रयत्नसे कुछ भी कम चीज तुम्हारी ही तुष्टि नहीं प्राप्त कर सकता। —अज्ञात

योग माने कर्म करनेका कौशल। —गीता

दैव-प्रतिकूल होनेसे प्रयत्न व्यर्थ जानेपर सत्त्वशील पुरुष विषाद नहीं करते। —अज्ञात

निष्फल प्रयत्न करनेसे जगत्में कौन नहीं हँसा जाता।

—कालिदास

प्रयास

क्या तुमने कभी ऐसे आदमीका नाम सुना है जिसने श्रद्धा और सरलताके साथ जीवनभर प्रयास किया हो और किसी अर्थमें भी सफल न हुआ हो? अगर कोई आदमी उन्नतिके लिए प्रयत्न करता है तो क्या वह उन्नत नहीं होता? क्या कभी किसी आदमीने वीरता, महत्ता, सत्य, दयालुताको आजमाया है और यह पाया है कि इनसे कोई लाभ नहीं है, यह प्रयास वृथा है? —थारो

किसी सम्यक् प्रयासको जब एक बार शुरू कर दिया, तो पूर्ण सफलता मिले बगैर नहीं छोड़ना चाहिए। —शेक्सपियर

माँग और वह तुझे अवश्य दिया जायेगा, खोज और तू अवश्य पायेगा, खटखटा तेरे लिए दरवाज़ा अवश्य खुलेगा। —बाइबिल

प्रलोभन

मालूम करो कि तुम्हारे प्रलोभन क्या हैं, और तुम्हें बहुत-कुछ मालूम हो जायगा कि खुद क्या हो। —बीचर

बदकिस्मतियोंकी तरह प्रलोभन भी हमारे नैतिक बलकी परीक्षा करने भेजे जाते हैं। —मारगरिट

जो शुभ कार्यके लिए प्रशंसाके भूखे रहते हैं उनकी वास्तविक प्रीति शुभ कामसे नहीं प्रशंसासे है। —हरिभाऊ उपाध्याय

स्वार्थ-सिद्धिके लिए प्रशंसा करना दासताके हाथ स्वाभिमानको बेच देना है। —हरिभाऊ उपाध्याय

प्रसन्न

प्रसन्न रहनेका नियम ले लेना चाहिए। छोटी-मोटी मर्यादा भी लोकमें पूजित होती है। —प्रसाद

प्रसन्न-चित्त

चिन्तामें डूबे रहनेवालेको अन्न अच्छी तरह नहीं पचता, प्रसन्न-चित्त रहनेसे भोजन अच्छी तरह पचता है। —प्रसाद

प्रसन्नता

मन और शरीरमें गहरा और अविच्छिन्न सम्बन्ध है, यदि मन प्रसन्न है तो शरीर स्वस्थता और स्वतंत्रता अनुभव करता है, प्रसन्नतासे बहुतसे पाप पलायन कर जाते हैं। —गेटे

प्रसन्नता वसन्तकी तरह हृदयकी तमाम कलियाँ खिला देती है। —जीन पॉल

प्रसन्नता समस्त सद्गुणोंकी माँ है। —गेटे

जीवन-वृक्ष केवल शुभचिन्ताओंके लिए खिलता है। —मारस

प्रसन्नतामें योगदान देनेवाली वस्तुओंमें तन्दुरुस्तीसे बढ़कर और दौलतसे बदतर कुछ नहीं। —शोपेनहॉर

प्रसन्नता परम स्वास्थ्यवर्धक है, शरीर और मन दोनोंके लिए मित्र-तुल्य। —एडीसन

प्रसन्नचित्त आदमी अधिक जीता है। —शेक्सपियर

चित्तकी प्रसन्नता—प्रफुल्लता एक वस्तु है, आमोद प्रमोद दूसरी। पहलीके लिए भीतरसे सामग्री मिलती है दूसरीके लिए बाहरसे। —हरिभाऊ उपाध्याय

किसी भी व्यक्तिमें कोई एक ही विशेषता होती है और उसीमें वह प्रसिद्धि पा जाता है। देखिए, क्या कमलोंमें फल लगते हैं? क्या पानकी बेलमें फूल या फल लगते हैं? —प्रसाद

प्रज्ञा

जैसे कछुआ अपने अंगोंको समेट लेता है उसी तरह जो अपनी इन्द्रियोंको उनके विषयोंसे हटा लेता है उसकी बुद्धि स्थिर हो जाती है। —गीता

प्रज्ञावान्

भारी भरकम शरीरके होते हुए भी मूर्ख मनुष्यको हम बड़ा नहीं कह सकते, जो प्रज्ञावान् है वही बड़ा है। —बुद्ध

प्राचीनता

प्राचीनता! उसके गुणविशेषोंकी अपेक्षा उसके खण्डहर ज्यादा पसन्द करता हूँ। —जूबर्ट

प्राप्ति

अल्लाहसे जो कुछ माँगोगे, तुम्हें मिलेगा। —हदीस

जितना त्यागोगे ईश्वरसे उतना ही अधिक पाओगे। —होरेस

मनुष्य जिस बातको चाहता है उसे प्राप्त कर सकता है और वह भी उसी तरहसे जिस तरह कि वह चाहता है बशर्ते कि वह अपनी शक्ति और पूरे दिलसे उसको चाहता हो। —शिलरलुवर

हे भगवान्, किसीको देनेसे ही हमें मिलता है; मरनेसे ही हम अमरपद पा सकते हैं। —सन्त फ्रांसिस (आसीसी)

जो कुछ प्राप्त करना हो उसे तू तलवारसे नहीं मुसकराहटसे प्राप्त कर। —शेक्सपियर

बालक चिल्लाता है, जवान कोशिश करता है और मर्द प्राप्त करता है। —अज्ञात

उत्पन्न करते हैं। प्रार्थनाके बलसे वह अन्तराय दूर हो जाता है। प्रार्थना प्रेमासक्त होनी चाहिए।

—गाँधी

साधुलोग नम्रतापूर्वक जो प्रार्थना किया करते हैं, उसे ईश्वर कभी भूलता ही नहीं।

—गियाउद्दीन जुहैर

मेरे अन्तस्तलकी अन्तिम गहराइयोंसे प्रभुसे मेरी आपसे यह याचना है कि पूरे ज़ोरसे कदम मुसदकर मेरी तमाम वासना बेर जावे।

—टैगोर

प्रार्थनाका उद्देश्य मनुष्यको पूर्ण मनुष्य बना देना और हृदयको पवित्र कर देना है। मैले हृदयसे प्रार्थना करना व्यर्थ है। कमसे कम प्रार्थनाके समय तो हमें हृदयको साफ़ रखना चाहिए।

—गाँधी

प्रार्थनासे मनुष्यको अत्यन्त आनन्द मिलता है।

—गाँधी

लालचसे की हुई प्रार्थना कब सफल नहीं होती!

—कालिदास

प्रार्थनामें साकार मूर्तिका मैंने विरोध नहीं किया है हाँ, निराकार को ऊँचा स्थान दिया है। मेरी दृष्टिसे निराकार अधिक अच्छा है।

—गाँधी

अगर तुम समुद्रमें गिर जाओ और तैर न सकते हो, तो तुम प्रार्थनाओं और पंखोंके बावजूद डूबोगे।

—अज्ञात

अगर तू उद्देश्योंकी पूर्तिके लिए सन्तोष धारण करके प्रार्थना करता है तो हताश न हो, एक न एक दिन तू सफलता प्राप्त कर लेगा।

—मुहम्मद बिन बशीर

प्रार्थना मात्र ईश्वरसे समागम करना और अन्तरात्माकी शुद्धिके लिए प्रकाश प्राप्त करना। ताकि ईश्वरकी सहायतासे हम अपनी कमज़ोरियोंपर विजय प्राप्त कर सकें।

—गाँधी

प्रार्थनामें वर्षा और हृदयको मिला है, एक ढँगलीसे यदि नहीं सुनती।

—मनसूर

जो बिना प्रार्थना किये खाता है वह रिज़्क़को हराम बनाता है।

—हदीस

हे प्रभो, मेरी भावना है कि मैं अन्दरसे सुन्दर बनूँ। —सुकरात

हृदय जितना बोलता है ईश्वर उससे अधिक कुछ नहीं सुनता; और अगर हृदय गूँगा हो तो ईश्वर अवश्य बहरा रहेगा। —सुरत

हमें अपनी प्रार्थनाओंमें सामान्य मंगलकामना करनी चाहिए क्योंकि ईश्वर ही अच्छी तरह जानता है कि हमारे लिए क्या हितकर है। —सुकरात

क्या प्रार्थनाओंका सचमुच कुछ असर है? हाँ जब मन और वाणी एक होकर कोई चीज माँगते हैं तो उस प्रार्थनाका जवाब मिलता है। —रामकृष्ण परमहंस

अगर कोई स्वयं और प्रार्थना करता हुआ ईश्वरकी तरफ एक बालिश्त भी चले तो ईश्वर उससे मिलनेके लिए बीस मील चलकर आयेगा। —आर्नोल्ड

शब्द जितने कम हों प्रार्थना उतनी ही उत्तम होती है। —ल्यूथर

प्रार्थना तुम्हारी महत्वाकांक्षाओंके प्रासादकी कुंजी है। तर्क तुम्हें क़तरा बनाता है मगर विश्वास समुद्र। विश्वास और भावनासे क्या नहीं प्राप्त हो सकता! —वसन्त

प्रार्थना हमारे अधिक अच्छे अधिक शुद्ध होनेकी आतुरताको सूचित करती है। —गाँधी

ज्ञानके लिए और सत्यके प्रकाशके लिए परमेश्वरसे अवश्य याचना करनी चाहिए, मगर किसी भी विषयको पानेके लिए प्रार्थना न करने की दृढ़ता प्राप्त करनी चाहिए। —विवेकानन्द

मैं अपना कोई काम बिना प्रार्थना किये नहीं करता। —गाँधी

जिन्होंने सीधा प्रभुसे माँगा, उनकी माँग कभी खाली नहीं गई। —प्रताप

प्रेम मनुष्यत्वका नाम है। —बुद्ध

प्रेम संसारकी ज्योति है। —ईसा

प्रेम पापियोंको भी सुधार देता है। —कबीर

प्रेम-प्रेम कहते सब कोई हैं प्रेमको पहिचानता कोई नहीं है। जिस प्रेमसे प्रभु मिले वही प्रेम कहलाता है। —कबीर

अपने आपको सबसे अन्तमें प्रेम कर। —शेक्सपियर

सब कुछ प्रेमकी खातिर और बदलेमें किन्तु कुछ नहीं। —स्पेंसर

मेरी आज्ञा है कि तुम एक दूसरेके साथ प्रेम करो। —कन्फ्यूशियस

दण्ड देनेका अधिकार सिर्फ उनको है जो कि प्रेम करते हैं। —रवीन्द्रनाथ टैगोर

प्रभुके मार्गमें प्राण तक देनेकी तैयारी न हो तो उसके प्रति प्रेम है ऐसा मानना ही नहीं चाहिए। —कुमेर

एक परमेश्वरके सिवाय अन्य नाना देवताओंकी पूजा करना अपने प्रेमको व्यभिचारी बनाकर शुद्ध भावनाका नाश करना है। —संत तुकाराम

अपने पड़ोसीसे प्रेम करो परन्तु बाड़को न तोड़ फेंको। —जर्मन कहावत

आपसमें लेने-देनेसे जो प्रेम पैदा होता है वह प्रेम उस लेने-देनेकी समाप्तिके साथ ही समाप्त हो जाता है। बिना किसी स्वार्थकी गन्धके जो प्रेम होता है वही सच्चा प्रेम है। —कुमार

प्रेममें हम सब समान रूपसे मूर्ख हैं। —गेटे

प्रेमकी सीमा कहाँ तक है? प्रेम-पात्र यदि असीम और अपार हो तो फिर प्रेमकी भी सीमा कैसी? —अज्ञात

प्रेम जीवनका प्राण है। जिसमें प्रेम नहीं वह सिर्फ मांससे घिरी हुई हड्डियोंका ढेर है। —तिरुवल्लुवर

बाहरी सौन्दर्य किस कामका जबकि प्रेम जोकि आत्माका भूषण है हृदयमें न हो ? —तिरुवल्लुवर

प्रेमसे हृदय स्निग्ध हो उठता है और उस स्नेहशीलतासे ही मित्रतारूपी बहुमूल्य रत्न पैदा होता है। —तिरुवल्लुवर

प्रेमकी ज़बान आँखोंमें है। —फिलचुर

जिस प्रेमको प्रकट न किया जा सके वह प्रेम सबसे पवित्र है। —बर्कीस

दूसरोंसे प्रेम करना यह स्वयं अपने साथ प्रेम करनेके बराबर है। —एमर्सन

इश्क मनुष्यकी निराशाको उत्साह बनाता है। इश्ककी आग मनुष्यके सिवाय बाकी सबको भस्म कर सकती है। —हसीस

द्वेषके लिए कोई कारण हुए बिना कोई द्वेष नहीं करता अतः अपनेको किसीने द्वेषका कारण दिया हो तो भी उससे द्वेष न कर उससे प्रेम करना चाहिए। उसपर रहमकर उसकी सेवा करना यही अहिंसा है। प्रेमी मनुष्यपर प्रेम करनेमें अहिंसा नहीं, वह तो व्यवहार है। अहिंसाको दान कहा जा सकता है। प्रेमके बदले प्रेम करना—यह क़र्ज़ चुकानेकी तरह है। —गाँधी

जिस प्रेमका तुम दम भरते हो अगर वह सच्चा होता तो तुम शमापर भी चलनेका साहस करते। —सिराजुद्दीन ज़ुबेर

जब प्रेम पक्का होता है तो दोष गायब हो जाते हैं। —[illegible]

शुद्ध प्रेममें शरीर-स्पर्श करनेकी आवश्यकता नहीं होती किन्तु उसका अर्थ यह नहीं है कि स्पर्शमात्र अपवित्र होता है। —गाँधी

परमात्मा मुझे ऐसी आँख दे ताकि संसारके सब पदार्थोंको प्रेमकी दृष्टिसे देखूँ। —वेद

हमेशा प्रेमपात्र बने रहनेके लिए, आदमीको हमेशा मनमोहक बना रहना चाहिए। —लेडी मैरिंग्टू

प्रेमको भौतिक सहवासकी आवश्यकता ही न होनी चाहिए। और हो तो वह प्रेम क्षणिक ही रहना चाहिए। सच्चे प्रेमकी कसौटी तो दूसरेके वियोगमें—दूसरेकी मृत्युके उपरान्त होती है। —गांधी

व्यक्ति-प्रेममात्र तिरस्करणीय नहीं है पर विश्व प्रेमका प्रभु-प्रेमका विरोधी न होना चाहिए। 'बा'के विषयमें मुझे प्रेम है किन्तु वह प्रभु प्रेमके मार्गमें है। मैं विषयी था तब वह प्रभु-प्रेमका विरोधी था अतः त्याज्य था। —गांधी

कोई आदमी इस भुलावेमें न रहे कि उसे कोई प्यार करता है, जब कि वह किसीसे प्यार नहीं करता। —एपिक्टेटस

'प्रेम सब कुछ जीतता है' यह अमर वाक्य हृदयमें जमने दे। कोई भी आवे प्रसन्न रहना ही अपना धर्म है। —गांधी

प्रेम और खुशबू छिपाये नहीं जा सकते। —फ्रांसीसी कहावत

जो दूसरोंको ऊपरसे प्यार करता है किन्तु भीतर ही भीतर उनसे द्वेष रखता है वह ईश्वरका कोप भाजन बनता है। —कुरान शरीफ

प्रेम कमानकी तरह है जोकि, अत्यधिक ताने जानेपर, टूट जाती है। —इटालियन कहावत

प्रेमकी अग्नि यदि एक बार बुझ जाय तो फिर बड़ी मुश्किलसे जलती है। —कहावत

साराका सारा प्रेम एक ही तरफ नहीं होना चाहिए। —कहावत

प्रेम परिश्रमको हल्का और दुःखको मधुर बना देता है। —कहावत

सबसे प्रेम करो और दुष्टोंको क्षमा कर दो। —कहावत

प्रेम जगतको गुजार देता है और पक्ष मनको गुजार देता है। —फ्रांसीसी कहावत

प्रेम स्वर्ग है और स्वर्ग प्रेम है। —स्कॉट

वह प्रेम प्रेम नहीं जो परिवर्तनके साथ परिवर्तित होता रहे। —शेक्सपियर

प्रेम झोपड़ोंको सुनहरी महल बना देता है। —हॉल्टी

जो प्रेम अकारणप्रेरित है वही सच्चा प्रेम है। —विवेकानन्द

जब दरिद्रता दरवाजेसे दाखिल होती है प्रेम खिड़कीसे भाग छूटता है। —कहावत

जीवन एक फूल है प्रेम उसका मधु। —विक्टर ह्यूगो

ढेरपर बैठकर बाजारोंमें नहीं बेचा जा सकता यही बात लौकिक प्रेमकी है। —स्वामी रामतीर्थ

प्रेम वह सुनहरी जंजीर है जिससे समाज परस्पर बँधा हुआ है। —गेटे

हम इस दुनियामें जीते तब हैं जब कि उससे प्रेम करते हैं। —टैगोर

प्रेमके दो लक्षण हैं पहला बाहरी दुनियाको भूल जाना और दूसरा, अपने शरीर तकको भूल जाना। —रामकृष्ण परमहंस

जो हम दूसरोंके लिए कर सकते हैं शक्तिका परिचायक है जो हम दूसरोंके लिए सहन कर सकते हैं प्रेमका परिचायक है। —वैस्टकॉट

गुप्त या खुले स्वतन्त्र प्रेममें मेरा विश्वास नहीं है। उन्मुक्त प्रेमको मैं कुत्तोंका प्रेम समझता हूँ। और गुप्त प्रेममें तो इसके अलावा कायरता भी है —गाँधी

दैविक प्रेमके समुद्रमें गहरा गोता लगा। डरो मत। यह अमरता-का समुद्र है। —रामकृष्ण परमहंस

दुनियावालोंका प्रेम मतलबका है, ईश्वरका प्रेम निःस्वार्थ। —विवेकानन्द

मैं जानता हूँ कि मेरे अन्दर बहुतसे प्रेम है। पर प्रेमकी तो सीमा ही नहीं होती। मैं यह भी जानता हूँ कि मेरा प्रेम असीम नहीं है। मैं साँपके साथ कहाँ खेल सकता हूँ? जो अहिंसामूर्ति हो उसके सामने साँप भी ठण्डा हो जाता है। मुझे इसपर पूरा-पूरा विश्वास है। —गाँधी

माँसे बीपर, बीसे पुत्रपर—यह प्रेमकी अधोगति है। माँसे सन्तों पर सन्तोंसे ईश्वरपर—यह प्रेमकी ऊर्ध्वगति है। —विनोबा

सफलताका मार्ग बुद्धिसे ही नहीं प्रेमसे भी सूझता है। —अज्ञात

व्यक्तिगत प्रेम = दुर्बलता। —स्वामी रामतीर्थ

प्रेमके अतिरेकसे सत्यमें तीखापन आ सकता है कटुता नहीं। तीखापन व्याकुलताका, अधीरताका और कटुता द्वेष और ईर्ष्याका चिह्न है। —अज्ञात

जबतक तेरे पास थोड़ी-बहुत सम्पत्ति है तबतक प्रेम-प्रेम कहकर अनेक लोग तेरे इर्द गिर्द इकट्ठे हो जाते हैं, पैसे खाली होते ही मौसी तक पास खड़ी नहीं होती। मगर ईश्वर तेरे पास हर जगह और हर समय रहता है, वह तुझे भले-बुरे वक्त भी नहीं त्यागता। उसीका प्रेम निरपेक्ष है, उसका प्रेम तुझे अधोगतिमें नहीं जाने देगा। —विवेकानन्द

प्रत्येक चतुर मनुष्य जो मजनूँके साथ बैठता है लैलाके सौन्दर्यको छोड़कर और कुछ बात न करेगा। —अज्ञात

बहन और भाईके प्रेममें पवित्रता है पति और पत्नीके प्रेममें मादकता। पवित्रता शान्ति दिलाती है और मादकता व्याकुल कर देती है। —हरिभाऊ उपाध्याय

सेवा तो वह है जिससे चित्त सदैव प्रसन्न रहे। मित्रता और प्रेम तो वह है कि संसर्गकी उत्सुकता रहे और संसर्गके बाद प्रफुल्लता। —हरिभाऊ उपाध्याय

बिल्लीके दाँतोंमें भी जो प्रेम देखता है और आसक्तोंके प्रेममें भी जो क्रोध देखता है वही देखता है। —विनोबा

प्रेम भरपूर जिन्दगी है जैसे कि मयसे भरपूर प्याला। —टैगोर

प्रेमका बड़ा सिद्धान्त है 'प्रेमके सिवाय तू किसी परमात्माको न मानना।' —अज्ञात

प्रेमी

जब मैं प्यालेसे कामें होता हूँ, उस समय भी अगर तुम्हारी याद आ जाती है तो शीतल जल तक पहुँचना भूल जाता हूँ।

—इब्न मातूक

रामबुलावा भेजिया दीन्हा कबीरा रोय।
जो सुख प्रेमी संगमें सो बैकुंठ न होय॥ —कबीर

प्रेमी सब वस्तुओंको अपने अनुकूल ही समझता है।

—कालिदास

सारी मानव जाति प्रेमीको प्रेम करती है। —एमर्सन

प्रेरणा

कामसे कामको प्रेरणा मिलती है और प्रमादसे प्रमादको। —हर

[फ]

फ़र्क़

किनारा नदीसे कहता है—"मैं तुम्हारी लहरोंको नहीं रख सकता। अपने पदचिह्नोंको मुझे अपने हृदयमें रखने दो। —टैगोर

फ़ल

तुम्हें काम करने मात्रका अपना फ़र्ज़ अदा करनेका ही अख़्तियार है। नतीजेपर तुम्हारा हक़ नहीं है। इसलिए अपने कामोंके नतीजेकी ओर दृष्टि मत लगाओ। अपना फ़र्ज़ पूरा करो। लगाव या आसक्ति छोड़कर कामयाबी और नाकामयाबीमें एक बराबर रहकर हर काम करो। इस एक बराबर रहनेका नाम ही योग है। —गीता

मेरे भाई अगर मुझे हानि पहुँचाते हैं तो मैं उनको लाभ पहुँचाता हूँ और चाहे वे मेरी प्रतिष्ठाको भंग करें, तथापि मैं उनका मान करता हूँ। वे पीठ-पीछे मेरी बुराई करें मगर मैं उनकी बुराई नहीं करता और अगर्चे वे मेरी दुर्गतिके अभिलाषी हों तो भी मैं उनकी सुगतिकी ही लालसा रखता हूँ। —अल-मुकन्ना-उल-किन्दी

अध्यात्म वार्ता स्वाभिमतमें चित्तको लगाये हुए, आशा और ममतासे ऊपर उठकर आदर्श ईश्वरके लिए अपने सब कर्मोंको पूरा करो। —गीता

फल

"ऐ फल तू मुझसे कितनी दूर है?" "मैं तेरे हृदयमें छिपा हूँ फूल।" —टैगोर

फल तुझे पहले ही मिल चुका है। अब तो कर्म करना बाकी रह गया है फिर फल कैसे माँगता है? —विनोबा

जो कर्म अभिमानसे किये जाते हैं उनका कुछ फल नहीं है जो त्यागकी भावनासे किया जाता है उसका महाफल है। —प्रसाद

काम फलका जनक है। —रौनामुल्क

अपना रखा हुआ कदम ठीक होगा तो आज या कल उसका फल होगा ही। —गाँधी

फल-प्राप्ति

अभ्यास तीव्र या मन्दम जैसा होगा उसीके अनुसार फल-प्राप्ति जल्दी अथवा देरसे होगी। —विवेकानन्द

फलाशा

सच्ची सफलता और सच्चा सुख उसीको मिलता है जिसको प्रतिफलकी आशा नहीं है। —विवेकानन्द

निश्चय करो कि दिनकी कोई घटना तुम्हें अप्रसन्न नहीं कर पायेगी। अपने आपको इस अनुपम और पवित्र निर्णयसे युक्त करो कि उसके साथ

न मिलने पायेगी महत्त्वाकांक्षा, न कामकी आसक्ति, न सुखकी अभिलाषा और उसके फलकी कोई चिन्ता तुम्हें स्पर्श न करेगी और न असफल होनेपर कोई अधीरता या दुःख। —रस्किन

फ़ायदा

नाजायज़ फ़ायदेकी उम्मीद नुक़सानकी शुरूआत है। —डेमोक्रिटस

इस दुनियामें कोई फ़ायदा उठानेपर परलोकमें उससे चौगुना ज़्यादा नुक़सान उठाना पड़ेगा। —[illegible]

फ़िज़ूल

नीतिके बिना राज्य, धर्मके बिना धन, हरिसमर्पणके बिना सत्कर्म, विवेकके बिना विद्या फ़िज़ूल है। —रामायण

फ़िलॉसफ़र

सिरसे ही नहीं, बल्कि हृदय और दृढ़ निश्चयसे सच्चा फ़िलॉसफ़र पूरा बनता है। —शैफ्ट्सबरी

फ़िलॉसफ़ी

जो देवत्वमें फ़िलॉसफ़ी ढूँढ़ता है वह ज़िन्दोंमें मुर्दे ढूँढ़ता है; जो फ़िलॉसफ़ीमें देवत्व ढूँढ़ता है वह मुर्दोंमें ज़िन्दे ढूँढ़ता है। —बैनिंग

सारी फ़िलॉसफ़ी दो शब्दोंमें है—परिश्रम और परहेज़।

—एपिक्टेटस

तमाम फ़िलॉसफ़ियोंकी ग़रज़ आत्माको जानना है, और इस ज्ञानका अन्त परमात्माको जानना है। आत्माको जान ताकि तू परमात्माको जान सके; और परमात्माको जान ताकि तू उससे प्रेम कर सके और उसके समान हो सके। पहलेमें तू सम्यग्ज्ञानमें प्रवेश पाता है और दूसरेसे उसमें परिपूर्णता। —क्वार्ल्स

सब तरहकी फ़िलॉसफ़ीका अधिकांश साधारण समझ होती है।

—[illegible]

बनावट

हम उन गुणोंके कारण जो हममें हैं कभी इतने हास्यास्पद नहीं बनते जितने उन गुणोंके कारण जिनके धारी होनेका हम ढोंग करते हैं ।

—ला रोशे

बन्दा

उस रहमान (दयालु ईश्वर) के सच्चे बन्दे वे हैं जो आजिज़ी (दीनता) के साथ सुकून धरतीपर चलते हैं और जब जाहिल लोग उनसे उल्टी-सीधी बात करते हैं तो वे जवाब देते हैं— 'सलाम' ।

—क़ुरान

बन्धन

प्रिय वस्तुओंसे ही शोक उत्पन्न होता है और प्रियसे ही भय । जो प्रिय वस्तुओंके बन्धनसे मुक्त है उसे न शोक है न भय । —बुद्ध

वे काम ही आदमीको बन्धनमें डालते हैं जो 'यज्ञ' के तौरपर नहीं यानी दूसरोंकी सेवा या दूसरोंके फ़ायदेके लिए नहीं बल्कि अपनी ख़ुदग़र्ज़ीके लिए किये जावें । —गीता

जिसका मन उसके वशमें है, जो द्वंद्वसे ऊपर (द्वन्द्वातीत) है जो किसीसे डाह नहीं करता (विमत्सरः) जो हर काम क़ुर्बानी (यज्ञ) के तौरपर यानी दूसरोंके भलेके लिए और ईश्वरके लिए करता है वह अपने कामोंसे बन्धनमें नहीं फँसता । —गीता

बन्धनमें कौन है ? विषयी । विमुक्ति क्या है ? विषयोंका त्याग ।

—शंकराचार्य

बन्धु

हर देशमें बन्धु मिल जाते हैं । —रामायण

बरकत

क़नाअतपसन्दी सबसे बड़ी बरकत है । —अज्ञात

स्वास्थ्य सबसे अच्छा वरदान है, सन्तोष सबसे बढ़िया धन है, सच्चा मित्र सबसे बड़ा आत्मीय है, निर्वाण उच्चतम आनन्द है। —बुद्ध

बर्ताव

बर्ताव वह आईना है जिसमें हर एक अपना प्रतिबिम्ब दिखाता है। —गेटे

हमेशा ऐसे बर्ताव करो मानो कुछ नहीं हुआ परवाह नहीं कुछ भी हो गया हो। —आर्नोल्ड बैनेट

बड़े लोगोंके सामने कानाफूसी न करो और न किसी दूसरेके साथ हँसो या मुस्कराओ। —थिरुवल्लुवर

जो कोई राजाओंके साथ रहना चाहता है उसको चाहिए कि उनके सामने बैठकर तापनेवाले आदमीकी तरह व्यवहार करे। उसको न तो अति समीप जाना चाहिए न अति दूर। —थिरुवल्लुवर

बल

बल तो निर्भयतामें है, शरीरमें मांस बढ़ जानेमें नहीं। —गाँधी

बल शक्ति नहीं है, कुछ लोगोंमें मांस-पेशियाँ अधिक होती हैं प्रतिभा कम। —आर्म

क्षत्रियका बल तेजमें है, ब्राह्मणका क्षमामें। —[illegible]

बलवा

श्रीमन्त लोग जब गरीबोंके लिए युद्ध करते हैं तब वह धर्म युद्ध कहलाता है परन्तु जब गरीब लोग श्रीमन्तोंके लिए युद्ध करते हैं तो वह अराजकता या बलवा कहलाता है। —पाउलिटर

बला

अगर कोई बला सिरपर आन पड़े और आत्मा उससे पीड़ित न हो, तो वह बला सुगमताके साथ टल जाती है। —एरिया-बिन-अमर

बहादुर

बहादुर आदमी जिन दिनों अपने जिस्मपर गहरे घाव नहीं खाता है वह समझता है कि वे दिन व्यर्थ नष्ट हो गये। —तिरुवल्लुवर

मैं पार्थिव जीवन प्रवाहकी तरह अत्यन्त भयंकर अवसरोंपर भी आगे ही बढ़ता हूँ। मानो मेरे लिए इस जानके अलावा कोई और जान भी है जिसके कारण मैं इसकी कुछ परवाह नहीं करता, या जैसे मुझे इस जानके साथ दुश्मनी है। —मुतनब्बी

बहाना

बहाना झूठसे भी बदतर और भयंकरतर चीज़ है क्योंकि बहाना सुरक्षित झूठ है। —पोप

बहुभोजी

जैसे जिन घरोंमें सामग्री बहुत भरी रहती है उनमें चूहे भरे हो सकते हैं, उसी तरह जो लोग बहुत खाते हैं वे रोगोंसे भरे रहते हैं।
—डायोजिनीज़

उनका चौका उनका मन्दिर है, रसोइया उनका पुरोहित [illegible] उनकी बलिवेदी और उनका पेट उनका परमात्मा है। —बक

बहुमत

कोई आदमी जो सचाईके हक़में है जिसकी तरफ़ ईश्वर है वह बहुमतमें है चाहे वह अकेला ही हो। —बीचर

ईश्वर जिसके साथ है वह बहुमतमें है। —फ़्रेड्रिक डगलस

बहुमत क्या है? बहुमत जाहिलाना चीज़ है। समझदारी हमेशा अल्पमतके ही साथ रही है। —शिलर

बाड़ा

मैं किसी बाड़ेका नहीं हूँ और न किसी बाड़ेमें रहना ही चाहता हूँ।
—श्रीमद्राजचन्द्र

बातोंमें अक्लमन्दी नहीं है। कामयाबीका बाधा होता है। —मसल

बातचीत

बातचीतकी एक महान् कला खामोशी है। —हेज़लिट

आप सब विषयोंपर बातचीत कीजिए सिवाय अपने कामों, अपनी बीमारियाँ। —मसल

बातचीत होनी ही चाहिए आडम्बररहित सुखकार, प्रदर्शनरहित बुद्धिमत्तापूर्ण, असम्बद्धतारहित आज़ादाना, अहम्मन्यतारहित, विद्वत्तापूर्ण असत्यरहित नूतन। —शेक्सपियर

मनुष्योंसे तो जितनी कम हो सके बात करो, ज्यादा बात तो करो बस ईश्वरसे। —हसन

बातून

बातून अच्छे कर्म नहीं होते इत्मीनान रक्खो। —शेक्सपियर

वह मक्कामानस जिसे अपनी ही गुफ्तगू सुननेका शौक है एक मिनटमें इतना बोल जायेगा जितना वह एक महीनेमें भी सुनना गवारा न करेगा। —शेक्सपियर

जो कभी नहीं सोचते वे हमेशा बोलते हैं। —प्रायर

बादशाह

बादशाह अपनी रियायाके गुलाम हैं वे अपने दिलकी मर्जीपर चलने की हिम्मत नहीं कर सकते। —शिलर

बाधा

अवश्य विपत्तिके विधानसे हमारी सबसे बड़ी बाधा ही हमारा सबसे बड़ा योग बन जाती है। —अरविन्द घोष

आपत्तियोंकी एक सच्ची सेनाको अपने ख़िलाफ़ खड़ा देखकर भी जिसका मन टेढ़ा नहीं जाता, बाधाओंको उसके पास आनेमें खुद बाधा होती है। —शिवरतपुरी

जिसकी इन्द्रियाँ और मन सब तरहसे विषयोंसे हटे हुए हैं उसीकी बुद्धि स्थिर हो सकती है। —गीता

जिसके पास बुद्धि है उसके पास सब-कुछ है, मगर मूर्खके पास सब-कुछ होनेपर भी कुछ नहीं है। —तिरुवल्लुवर

अगर किसीकी नज़र मालमत्तापर लगी है तो उसकी बुद्धि जायेगी। —एमर्सन

बुद्धिका पहला लक्षण है कामका आरम्भ न करो और अगर काम शुरू कर दिया है तो उसे पूरा करके छोड़ो। —विनाय

बुद्धिजीवी

श्रमजीवीसे बुद्धिजीवी क्यों बड़ा है? क्या इसलिए कि वह उसकी मेहनतसे अपना गुजारा करना जानता है? तो क्या बड़ा उन्हें कहना चाहिए जो सीधे लोगोंको बेवकूफ बनाकर अपना उल्लू सीधा करते हैं? —प्रभात

बुद्धिमान्

बुद्धिमान् वह है जो शुरू किये हुए कामको पूरा करके दिखावे। —प्रभात

थोड़ा पढ़ना अधिक सोचना, कम बोलना, अधिक सुनना—यही बुद्धिमान् बननेका उपाय है। —रैमार

इन तीनको बुद्धिमान् जानना—जिसने संसारका त्याग कर दिया है जो मौत आनेके पहले सब तैयारियाँ किये बैठा है और जिसने पहले ही से ईश्वरकी प्रसन्नता प्राप्त कर ली है। —हदीस

बुद्धिमान् पुरुष सारी दुनियाके साथ मिलनसारीसे पेश आता है और उसका मिज़ाज हमेशा एक-सा रहता है। —तिरुवल्लुवर

बुद्धिवाद

कोरे बुद्धिवादसे कोई रसोत्पत्ति होनी संभव नहीं। हम कितना ही तर्कका मुलम्मा फिर भी हमको उससे अनुभवकी प्राप्ति नहीं होती। —विवेकानन्द

अगर तेरी बुराई की जाय और वह सच हो तो अपनेको सुधार ले, और अगर वह झूठ हो तो उसपर हँस दे। —एपिक्टेटस

जो चीज़ मुझे हर वक़्त ध्यानमें रखती है वह यह है कि मुझे उन ताक़तोंके सामने झुकना नहीं है जिसे मैं बुरा समझता हूँ। —थोरो

बेईमानी

सिर्फ़ एक चीज़ है जिससे तुम्हें डरना है। अपने प्रति और इसलिए परमात्माके प्रति बेईमान होना। अगर तुम वह काम नहीं करोगे जिसे तुम सही समझते हो और वह बात नहीं कहोगे जिसे तुम सत्य मानते हो, तो निस्सन्देह तुम कमज़ोर हो तुम कायर हो तुमने परमात्माका साथ छोड़ दिया है। —बिस्मार्क

वह आदमी जो किसी समस्याके दोनों पहलुओंपर ग़ौर नहीं करता बेईमान है। —लिंकन

बेड़ियाँ

यश और धन सुनहरी बेड़ियाँ हैं, पर हैं वे बेड़ियाँ ही। —रफ़िनी

कोई आदमी अपनी बेड़ियोंसे प्रेम नहीं करता, चाहे वे सोनेकी ही बनी हों। —अंग्रेज़ी कहावत

बेवक़ूफ़

हर शख़्स तीन जगह बेवक़ूफ़ दिखाई देता है एक भाईके सामने दूसरे औरतके सामने तीसरे बच्चेके सामने। —अज्ञात

कोई बेवक़ूफ़ अपने कोटपर साटनके बेल-बूटे कढ़वा सकता है लेकिन फिर भी वह बेवक़ूफ़का ही कोट है। —रिवेरल

जब बेवक़ूफ़को ग़ुस्सा आता है तो वह अपना मुँह खोल देता है और आँख बन्द कर लेता है। —अज्ञात

बेवक़ूफ़ी

सबसे हसीन बेवक़ूफ़ी ज्ञानको अत्यन्त बारीक कातना है। —फ्रैंकलिन

बेहूदगी

इस बहुत-सी बेहूदगीकी पाबन्दगी समझे बैठे हैं महज इसलिए कि 'बड़े आदमियों'ने उसको इख्तियार कर रक्खी थी। —अज्ञात

बोध

पूर्ण बोधके चार भाग हैं, विवेकशीलता न्यायप्रियता धीरता और सच्चरित्रता। —प्लेटो

बोलना

बुद्धिमान् तो पसोपेशमें रहता है कि कहाँ बोलना शुरू करे पर मूर्ख कभी नहीं जानता कि कहाँ ख़त्म करे। उसकी जीभ बिगड़ैल जानवरकी तरह है कि जहाँ पगहा छुड़ाया कि फिर रुकना नहीं जानता।

—अज्ञात

पशु न बोलनेसे कष्ट उठाता है और मनुष्य बोलनेसे। —लुकमान

जिस तरह घनी पत्तियोंवाले पेड़में फल कम लगते हैं उसी तरह बहुत बोलनेवालेमें बुद्धि कम पायी जाती है। —अज्ञात

पहले सोचना फिर बोलना; पहले बुनियाद फिर दीवार। —सादी

बोली

वाणी मनका चित्र है लेखनी मनकी जीभ। —बेकन

बंसीकी ध्वनि और सितारका स्वर मधुर है—ऐसा वे ही लोग कहते हैं जिन्होंने अपने बच्चोंकी तुतलाती हुई बोली नहीं सुनी है।

—तिरुवल्लुवर

भक्ति

यह शरीरमें भी अधिक स्वाद होनेसे और स्वप्रकाश होनेसे भक्तजनोंके चित्तका विशेष आस्वादन हो जाता है। —अज्ञात

भक्तस्वरूपकी अवस्था स्वतन्त्र है, स्वतन्त्र-स्फूर्तिमें दूसरेकी अपेक्षा नहीं। —भरत

प्रियं ब्रह्म' । ईश्वर प्रेममय है । ऐसा मुस्लिम वचन है । भक्ति मार्गका योगक्षेम नहीं है । —विनोबा

'अहं ब्रह्मास्मि'में 'तत्त्वमसि'का निषेध नहीं है । —विनोबा

'अहं ब्रह्मास्मि'की अनुभूतिसे इच्छा नष्ट हो जाती है । उपयोग ही रह जाता है । —स्वामी रामतीर्थ

बुद्धिके द्वारा जो ब्रह्म समझता है वह ब्रह्म जानता ही नहीं । ब्रह्मज्ञान हृदयमें होता है । ब्रह्मज्ञान माने प्रवृत्ति मात्रका त्याग ऐसा बिलकुल नहीं । बाहरसे ज्ञानी और अज्ञानी समान ही होंगे । किन्तु दोनोंकी प्रवृत्तियोंके हेतु उत्तर-दक्षिणके समान विरुद्ध होंगे । रामनाम ब्रह्मज्ञानका विरोधी नहीं है । —गाँधी

ब्रह्मचर्य

ब्रह्मचर्य ही जीवन है वीर्यहानि ही मृत्यु है । —शिवसंहिता

ब्रह्मचर्य-पालन है तो मुश्किल मगर मुश्किलोंको जीतनेके लिए ही तो हम पैदा हुए हैं । आरोग्य प्राप्त करना हो तो हम मुश्किलको जीतना ही होगा । —गाँधी

ब्रह्मचर्यसे स्मृति स्थिर और संग्राहक बनती है । बुद्धि तेजस्विनी और फलवती बनती है, संकल्प-शक्ति बलवती बनती है, और उससे चारित्र्यमें ऐसा चमत्कार आ जाता है जो स्वेच्छाचारीके स्वप्नमें भी नहीं आ सकता । —गाँधी

जिसने स्वादको नहीं जीता वह विषयको नहीं जीत सकता । —गाँधी

दुःखका मूल नाश करनेके लिए ब्रह्मचर्यका व्रत-पालन अत्यन्त आवश्यक है । —बुद्ध

ईश्वरकी सेवाका आशिक जिसे ब्रह्मचारी होना है उसे तो जीवनकी सुख-सुविधा तजनी ही होगी और कठोर तपश्चर्यामें ही उसे रस लेना पड़ेगा । वह भले ही संसारमें रहे मगर संसारका होकर नहीं

रहेगा। उसका आहार उसका व्यवहार उसके कामका समय उसके आचरण उसका साहित्य उसकी जीवनके प्रति दृष्टि संसारियोंकी दृष्टिसे भिन्न ही रहेगी। —गाँधी

आधुनिक विचार ब्रह्मचर्यको अगम समझता है, अतः कृत्रिम उपायोंसे सन्तति निरोध कर विषय-सेवनके धर्मका पालन करना चाहता है। इसके विरुद्ध मेरी आत्मा विद्रोह करती है। विषयासक्ति संसारमें रहेगी ही किन्तु जगत्‌की प्रतिष्ठा ब्रह्मचर्यपर है और रहेगी। —गाँधी

मुझे ब्रह्मज्ञान हुआ है ऐसा कहनेवालेमें उसके न होनेकी पूरी सम्भावना है। वह मूक ज्ञान है स्वयं प्रकाश है सूर्यको अपना प्रकाश मुँहसे नहीं बताना पड़ता। वह है, यह हमें दिखाई देता है। यही बात ब्रह्मज्ञानके बारेमें भी है। —गाँधी

[भ]

भक्त

सच्चे प्रभु-प्रेमीके दो लक्षण हैं स्तुति-निन्दामें समभाव रखना और धर्मके पालन और अनुष्ठानमें कोई लौकिक कामना न रखना।

—जुन्नुन

जो हर हालतमें सन्तुष्ट पाक आसक्ति-रहित 'मेरे-तेरे' से ऊपर और दुःखसे परे है जो नतीजेकी परवाह न कर हमेशा अपने कामके पूरा करनेमें लगा रहता है वह भक्त ईश्वरको प्यारा है। —गीता

जो आदमी दोस्त और दुश्मन दोनोंको एक निगाहसे देखता है; जो मान और अपमान दोनोंमें एक बराबर रहता है; जो सर्दी-गर्मी सुख-दुःखमें एक सा है; जिसे मोह नहीं है जिसके लिए बदनामी और

नेकनामी बराबर है; जो फ़िज़ूल नहीं बोलता; जो हर हालतमें राज़ी रहता है, जो किसी घरको अपना घर नहीं मानता, जिसका दिल अविचल है वह भक्त ईश्वरका प्यारा है। —गीता

जो कोई परमेश्वरके अनन्य भक्त हैं मैं उनके चरणोंका सेवक हूँ; [illegible] चाहे वे ईसाई हों हिन्दू हों या मुसलमान हों समान हैं।
—विवेकानन्द

भक्तिके लिए जगह तोड़कर रास्ता तैयार नहीं करना पड़ता, वह अपना रास्ता देख लेती है। भक्तके परिस्थिति कभी प्रतिकूल नहीं है।
—विनोबा

भक्तकी चतुराई क्या है? संसारियोंके संसर्गसे अपनेको सर्वदा बचाये रखना। —प्रश्न

जिससे दुनियाके किसी आदमीको किसी तरहका डर नहीं और न जिसे किसीसे किसी तरहका डर है जो खुशी रंज और डरसे ऊपर उठ गया है वह ईश्वरको प्यारा है। —गीता

जो न आनन्दसे फूलता है और न दुःखोंसे दुःखी होता है जिसे न किसी चीज़के जानेका रंज और न आनेकी खुशी जिसने अपने लिए अच्छे और बुरे दोनों तरहके नतीजोंका त्याग कर दिया वह भक्त ईश्वरको प्यारा है। —गीता

भक्ति

धन्य है वह मनुष्य जो आदि-पुरुषके साक्षात्कारमें रत रहता है; जो न किसीसे प्रेम करता है न घृणा। उसे कभी कोई दुःख नहीं होता।
—तिरुवल्लुवर

ईश्वरके प्रति तृप्ति रखनेसे तुम्हारी उन्नति ही होगी, अवनति होगी तो कभी सम्भव ही नहीं। —अबु हसन

ईश्वरके साथ जिसकी दोस्ती हुई, उसे दुनियाकी सम्पत्तिके साथ तो दुश्मनी हुई ही समझ लेनी चाहिए। —हसन

एक दिन मैं अपने मनके पीछे पड़ा हुआ था। दूसरे दिन सवेरे ही मुझे सुनाई दिया—'बायजीद! मुझे छोड़कर तू दूसरी चीज़के पीछे क्यों पड़ा हुआ है? मनसे तुझे क्या सरोकार है?' —बायजीद

जैसे पेड़की जड़को सींचनेसे उसकी सब डालियाँ और पत्ते तृप्त हो जाते हैं उसी तरह एक मात्र परम पुरुषकी भक्तिसे सब देवी-देवता सन्तुष्ट हो जाते हैं। —महानिर्वाणतन्त्र

जो आदमी सच्ची लगनके साथ ईश्वरकी भक्ति करता है वह सब गुणों यानी दर्जोंसे पार होकर ईश्वर ही में लीन यानी ब्रह्म हो जाता है। —गीता

जो ईश्वरके सिवा न किसीसे डरता है न किसीकी आशा रखता है जिसे अपने सुख-सन्तोषकी अपेक्षा प्रभुका सुख-सन्तोष अधिक प्रिय है, उसीका ईश्वरके साथ मेल है। —अबु उस्मान

यदि तू ईश्वरके प्रेममें पागल होता तो कभी नहीं कहता। ज्ञानी होता तो दूसरेकी चीज़पर नज़र नहीं डालता और जो ईश्वर-दर्शी होता तो ईश्वरको छोड़कर तेरी नज़र दूसरी ओर नहीं दौड़ती। —मसरूर

लौकिक भोगोंसे विमुखता, ईश्वरकी आज्ञाका पालन और ईश्वरेच्छा-से जो कुछ हो जाय उसमें प्रसन्नता मानना सच्ची प्रभु-भक्तिके लक्षण हैं। —अबु मुर्तइश

सहनशीलता और सत्यपरायणताके संयोग बिना प्रभुप्रेम पूर्णताको प्राप्त नहीं होता। —सुम्नुन

भजन

साधु-सन्तोंकी भावनाके पीछे जो कल्पना होती है वह देखनी चाहिए। वे साकार ईश्वरका चित्र खींचते हैं किन्तु भजन निराकारका करते हैं। —गाँधी

भय

भयको ज़रा मत सामने आने दो। उसका पैर पकड़कर निकाल बाहर हटाते रहना। —हरिभाऊ उपाध्याय

भर्त्सना

तीसरेकी मौजूदगीमें किसीको लानत-मलामत न दो। —टॉम

भला

जो भलाई करनेमें अति व्यस्त रहता है उसे भला बननेका समय नहीं मिलता। —टैगोर

सबसे भले आदमी दो हैं, एक तो वह जो मर गया और दूसरा वह जो अभी पैदा नहीं हुआ। —चीनी कहावत

भलाई

दूसरोंको हानि पहुँचाकर अपनी भलाईकी कभी आशा न करो। —महावीर

भलाई करनेका गौरव हर व्यक्तिगत सुखोपभोगसे बढ़कर है। —गे

अन्य किसी मार्गकी अपेक्षा नेक बनकर हम अधिक भलाई कर सकते हैं। —रॉबर्ट हिल

आदमी सारी दुनियाकी कीमतपर अपनी भलाई चाहता है। —प्रभात

जो दूसरोंकी भलाई करना चाहता है उसने अपना भला तो कर ही लिया। —कन्फ्यूशियस

भलाई करना ही इन्सानकी जिन्दगीका एकमात्र निश्चित सुखद काम है। —सर फिलिप सिडनी

भलाई चाहना पशुता है, भलाई करना मानवता है, भला होना दिव्यता है। —मार्टिनो

तुमने कोई भलाई की और उससे तुम्हारे पड़ोसीका भला हो गया। अब तुम्हें इतना मूर्ख बननेकी क्या ज़रूरत है कि तुम इसके भी आगे देखो और नामवरी तथा प्रत्युपकारके लिए मुँह बाये रहो।

—आरिलियस

सबसे अच्छी बात वह करता है जो अल्लाहकी ओर लोगोंको बुलाता है और स्वयं नेक काम करता है और फिर कहता है कि मैं मुसलमान हूँ। बुराईको भलाईसे दूर करो और वह जिसे तुमसे शत्रुता थी तुम्हारा दिली दोस्त हो जायगा। —हजरत मुहम्मद

जो दूसरोंका भला करता है उसका भला मालिक आप करता है। —धम्मपद

अगर तुम कोई अच्छा काम करनेवाले हो, तो उसे अभी करो अगर तुम कोई नीच काम करनेवाले हो तो कल तक रुको। —[illegible]

भले आदमीके जीवनसे ही भलाई होती रहती है। —[illegible]

भलाई करनेके पैगम्बर बनो। —गोल्डस्मिथ

हर व्यक्ति उस तमाम भलाईका जिम्मेदार है जो उसकी ताकतके घेरेके अन्दर है पर उससे अधिकके लिए नहीं और कोई नहीं बता सकता किसका दायरा सबसे बड़ा है। —हैमिल्टन

मनुष्य किसी बातमें देवोंसे इतना ज्यादा नहीं मिलते-जुलते जितने कि लोगोंकी भलाई करनेमें। —सिसरो

जो दूसरोंकी भलाई करता है अपनी भी भलाई करता है; फलके रूपमें नहीं बल्कि उसी वक्त, क्योंकि नेकी करनेका भाव, स्वतः विपुल पुरस्कार है। —सेनेका

भले लोग ही सुखी हैं भले लोग ही महान् हैं। —एम ट्रोलोप

ओ दिल, कोशिश तो कर! भला बनना कितना आसान है और भला दिखना कितना बारीक। —[illegible]

अलिप्तता

अलिप्तता! जिस बातको नहीं चाहती उसे तुम अत्यन्त चेष्टा करने पर भी नहीं रख सकते और जो चीजें तुम्हारी हैं—तुम्हारे भाग्यमें हैं—उन्हें तुम फेंक भी दो फिर भी वे तुम्हारे पाससे नहीं जायेंगी। —[illegible]

भाई

सच्चा भाई वह है जिसको तू अपनी मददके लिए बुलावे तो वह खुशीसे आवे—चाहे बागमें झूमती मारें ही क्यों न चलती हों।

—कुरद-बिन-औबाद

कोई आदमी अपने भाईको रौंदकर बाप-दादा तक नहीं पहुँचता।

—अज्ञात

भाग्य

बुरा समय सिद्धान्तका परीक्षाकाल है—इसके बिना आदमी मुश्किलसे जान पाता है कि वह ईमानदार है या नहीं। —फील्डिंग

अभागोंकी ओर देखो, तुम उन्हें बुद्धिहीन पाओगे। —यंग

आजका जो पुरुषार्थ है वही कलका भाग्य है। —पामविरर

जो तेरे भाग्यमें नहीं है वह तुझे हर्गिज़ न मिलेगा, और जो तेरे भाग्यमें है वह तुझे जहाँ तू होगा वहीं मिल जायगा। —सादी

जितना भाग्यमें लिखा है उतना हर जगह बिना उद्योग और परिश्रमके भी मिल जायगा और जो भाग्यमें नहीं लिखा है वह कुबेरकी खुशामद और चापलूसीसे भी नहीं मिलेगा। —अज्ञात

ईश्वरसे डरना भाग्यशालीके बननेका लक्षण है। पाप करते रहकर भी ईश्वरकी दयाकी आशा रखना दुर्भाग्यकी निशानी है।—अबु उस्मान

दो बातें असम्भव हैं, भाग्यमें जितना लिखा है उससे अधिक खाना, और नियत समयसे पहले मरना। —गुलिस्ताँ

महान् उद्देश्यसे शासित मनुष्यका भाग्य नहीं रोक सकता।

—अज्ञात

भार

स्वेच्छापूर्वक अंगीकार किया हुआ भार भार नहीं है।

—इयाहिमन बराबर

भारत-माता

आज हमारी जननी जन्मभूमि भारतमाँ महाभारतकी द्रौपदी-सी हालतमें है जिसे हमारे ही भाइयोंने दाँवपर लगा दिया है, वह आपसे अपनी सुरक्षाकी आशा कर रही है। —गाँधी

भावना

अगर विचार रूप है तो भावना रंग। —एमर्सन

ऐसा कोई कीमिया नहीं जो सीसेके भावोंसे सोनेका चरित्र पैदा कर दे। —एक लेखक

जिस मनुष्यको भावनाओंका उफान आता है वह हिस्टिरिकल है। —गाँधी

भावना बच्चों और स्त्रियोंकी चीज़ है। —नेपोलियन

वाणी-विलाससे विचार अधिक गहराईपर है, विचारसे भावना अधिक गहराईपर है। —कुक

भाषण

दुनियामें चलो-फिरो तो भेदों और सच्चाईसे रहो और जब बोलो तो धीमी आवाज़से बोलो; सचमुच गधेकी तरह रेंकना अल्लाहको सबसे ज़्यादा नापसन्द है। —कुरान

जो अपनेको शान्त रखना नहीं जानता कभी अच्छा नहीं बोल सकता। —प्लुटार्क

केवल भाषणसे तू श्रेष्ठ नहीं बन जायगा; बकबक करनेसे कोई सत्पुरुष नहीं हो जाता। —धम्मपद

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारा तक़रीर प्रभावक हो तो उसको संक्षिप्त करो क्योंकि अल्फ़ाज़ सूरजकी किरणोंकी तरह हैं, जितनी ज़्यादा एकत्र होंगी उतनी ही तेज़ होंगी। —सूदे

भाषा

समझमें न आनेवाली भाषा बिना रोशनीकी लालटेन है। —प्रसाद

भाषा हमको इसलिए दी गई थी कि हम एक दूसरेसे खुशगवार बातें कर सकें। —बोवी

भिक्षु

भिक्षु वही है जो संयत है, सन्तुष्ट है, एकान्तसेवी है और अपनेमें मस्त है। —बुद्ध

भूल

भूल करना मनुष्यका स्वभाव है, की हुई भूलको मान लेना और इस तरह आचरण रखना कि जिससे वह भूल फिर न होने पाय—मर्दानगी है। —गाँधी

सबसे बड़ी भूल कोई कोशिश न करना है। —अज्ञात

भेद

नौकरसे अपना भेद कहना उसे सेवकसे स्वामी बना लेना है। —अरस्तू

अपना आँखों होठों और कानों सबको बन्द कर ले फिर अगर तुझे अल्लाहका भेद दिखाई न दे तो हमपर हँसना। —मौलाना रूमी

जो आदमी दूसरेके गुप्त भेदको तुमपर प्रकट कर दे जहाँ तक बने उसे अपना भेद न दे, क्योंकि जो कुछ वह दूसरेके भेदके साथ कर रहा है वही तेरे भेदके साथ भी करेगा। —हज़रत अली

वह भेद जिसे तुम गुप्त रखना चाहते हो किसीसे भी न कहो; चाहे वह तुम्हारा परम विश्वासी ही क्यों न हो। गुप्त बातको जितनी अच्छी तरह आप स्वयं छिपा सकते हैं दूसरा न छिपा सकेगा। —गुलिस्ताँ

जिसने इतना भी जता दिया कि उसके पास कोई भेद है तो उसने आधा भेद तो खोल दिया है बाकी आधा अवश्य खुल जायगा। —लुकमान

भेंट

भेंटमें मिली हुई चीज़से खरीदी हुई सस्ती है। —अज्ञात

जिसने तुम्हें यहाँ भेजा है उसने तुम्हारे भोजनका प्रबन्ध पहलेसे कर रक्खा है। —प्रसाद

ऐसा जो आदमी बेवकूफ़ी करके अपनी जठराग्निसे परे ठूँस-ठूँसकर खाता जाता है उसकी बीमारियोंकी कोई सीमा नहीं रहेगी। —तिरुवल्लुवर

मर्जीस कोससे उत्तम भोजन अच्छा। —बर्गॉडियन कहावत

भूखसे कुछ कम खानेसे शरीरमें फुर्ती बनी रहती है, काम करनेकी चाहना है और आदमी नीरोग रहता है; अघाकर खानेसे आलस और भारीपन पैदा होता है जिससे पड़ रहनेकी इच्छा होती है और कार्यक्षमतामें कमी आ जाती है। भूखसे ज्यादा खानेकी आदतसे आदमी बिल्कुल निकम्मा हो जाता है, इससे रोग पैदा होते हैं उम्र घटती है और परमार्थ मटियामेट हो जाता है। —धम्मपद

मद

जो बड़ी-बड़ी शक्तियाँ प्राप्त करता है बहुत सम्भव है वह मिथ्या-भिमानसे और झूठी शानसे फूल उठे, और निश्चय ही वह अपने परमा-त्माको एकदम भूल जाता है। —रामकृष्ण परमहंस

मद वचन और मद-विचार मद आत्माके परिचायक हैं। —प्रसाद

[म]

मकान

आदमीको मरनेके बाद उसी मकानमें रहना होगा जिसको कि उसने अपनी मृत्युसे पहले बनाया है। —हजरत अली

हर चीज अपना मकान बनाती है, लेकिन बादमें वह मकान उस चीजकी हदबन्दी कर देता है। —एमर्सन

मक्कार

वह कापुरुष जो तपस्वीकी-सी तेजस्वी आकृति बनाये फिरता है, उस गधेके समान है जो शेरकी खाल पहने हुए घास चरता है।
—तिरुवल्लुवर

स्वयं उसके ही शरीरके पञ्चतत्त्व मन-ही-मन उसपर हँसते हैं जब कि वे मक्कारकी चालबाज़ी और ऐयारीको देखते हैं। —तिरुवल्लुवर

मक्कारी

देखो, जो आदमी अपने दिलसे सचमुच तो किसी चीज़को छोड़ता नहीं मगर बाहर त्यागका आडम्बर रचता है और लोगोंको ठगता है उससे बढ़कर कठोर-हृदय दुनियामें और कोई नहीं है। —तिरुवल्लुवर

मज़दूरी

लोग कभी-कभी पूछते हैं—'हर व्यक्तिके लिए मज़दूरी लाज़िमी क्यों होनी चाहिए?' मैं पूछता हूँ, 'हर एकके लिए खाना ज़रूरी क्यों होना चाहिए?' पूछा जाता है कि 'ज्ञानी मज़दूरीका काम क्यों करें? व्याख्यान क्यों न दें?' मैं पूछता हूँ कि 'ज्ञानी भोजन क्यों करें? केवल ज्ञानामृतसे तृप्त क्यों न रहें? उसे खाने पीने सोनेकी क्या ज़रूरत है?'
—विनोबा

मजबूरी

जिसमें तुम्हारा कोई चारा नहीं उसके लिए अफ़सोस करना बन्द कर दो। —शेक्सपियर

मज़हब

ग़रीबोंको क़ाबूमें रखनेके लिए मज़हबको एक अच्छा साधन माना जाता रहा है। —जे बी बरी

कोई इतना अमीर नहीं है कि उसे दूसरोंकी मददकी जरूरत न हो, कोई इतना ग़रीब नहीं है कि दूसरोंका किसी-न-किसी तरह सहायक न हो सके। विश्वासपूर्वक दूसरोंसे सहायता लेने और अनुकम्पापूर्वक दूसरोंको सहायता देनेका तो हमारा स्वभाव ही बन जाना चाहिए।

—पोप लिओ १३ वाँ

मदान्ध

अज्ञको समझाना आसान है, विशेषज्ञको समझाना तो और भी आसान है। लेकिन जो ज़रा-सा ज्ञान पाकर मदान्ध हो गया है, उसे समझानेकी ताकत ब्रह्मामें भी नहीं है। —भर्तृहरि

मदिरा

अगर तू मनुष्य है तो मदिराको त्याग। क्या पागलपनकी हालतमें कोई मनुष्य बुद्धिमानोंके साथ बरताव कर सकता है? —इब्न-उल-वर्दी

आसमानका गोलार्द्ध मेरा प्याला है, और चमकती हुई रोशनी मेरी शराब। —स्वामी रामतीर्थ

मन

यह एक अनादि रहस्य है कि मनुष्यको बनानेवाला मन है।

—अज्ञात

जिस तरह टूटे छप्परमें बारिश घुस जाती है उसी तरह अशिक्षित मनमें तृष्णा दाखिल हो जाती है। —धम्मपद

जब तक मन अस्थिर और चंचल है तब तक किसीको अच्छा गुरु और साधु लोगोंकी संगति मिल जानेपर भी कोई लाभ नहीं होता।

—रामकृष्ण परमहंस

उत्तम मन शरीरको उत्तम बनाता है। —अज्ञात

मन ही मनुष्योंके बन्धन और मोक्षका कारण है। जिसने अपनी देह और धनधाममें आपा डाला वह बंधा है, जिसने इनको मिथ्या समझ लिया वही मोक्षको प्राप्त हुआ। —सर्वोपनिषद्

आदमीका मन इस तरह बना हुआ है कि वह शक्तिका प्रतिरोध करता है और प्रेमभावसे झुक जाता है। —सेन्ट सन्त फ्रांसिस

हर मन अपना ही एक नया कम्पास, एक नया उत्तर एक नया पथ रखता है। —एमर्सन

मनको हर्ष और प्रसन्नतामय बनाओ इससे हजार हानियोंसे बचोगे और दीर्घ जीवन पाओगे। —शेक्सपियर

जो बरकतें मुत्तमइन मनसे प्राप्त होती हैं वे न माँगे मिलती हैं न पैसे न रिश्तेदारोंसे। —अज्ञात

मन पाँच तरहके होते हैं—(१) मुर्दार मन जैसे नास्तिकोंका (२) रोगी मन जैसे पापियोंका, (३) अचेत मन जैसे पेट-भरोंका, (४) जीता मन जैसे सदा ध्यान करनेवालोंका, (५) जगा मन जैसे धर्मात्माओंका। —पारस नाम

मनुष्यका मन पूर्वजन्मके सम्बन्धको सहज ही जान लेता है।

—कालिदास

हरएक नया मन एक नया वर्गीकरण है। —एमर्सन

तुच्छ मन सूक्ष्मदर्शीकी तरह तुच्छ चीजोंको बढ़ा देता है मगर महान् वस्तुओंको ग्रहण नहीं कर सकता। —चैस्टरफील्ड

मन अभी नहीं लगता है तो फिर कभी नहीं लगेगा।

—दीनानाथ

मनको शान्त और पवित्र-विचारपूर्ण रक्खो तो तुम्हारा कोई विरोध नहीं कर सकता यह नियम है। —स्वामी रामतीर्थ

जैसे कच्ची छतमें पानी भरता है वैसे ही अविवेकी मनमें कामनाएँ घुसती हैं। —धम्मपद

हम मनको ठीक तरह नहीं इस्तेमाल कर सकते जब कि शरीर भोजनसे ठसाठस भरा हो। —सिसरो

अभ्यास और वैराग्यसे मन आसानीसे वशमें आ जाता है।

—गीता

मिथ्यात्वकी ओर खिंचनेवाले मनको सत्य वस्तुओंमें रस नहीं आता। —होरेस

उस मनुष्यको देखो जिसने विद्या और बुद्धि प्राप्त कर ली है, जिसका मन शान्त और पूरी तरह वशमें है धार्मिकता और नेकी उसका दर्शन करनेके लिए उसके घरमें जाती है। —तिरुवल्लुवर

अपना मन पवित्र रक्खो धर्मका तमाम सार बस एक इसी उपदेशमें समाया हुआ है बाकी सब बातें शब्दाडम्बर-मात्र हैं।

—तिरुवल्लुवर

देखो, मन हमेशा दिलसे धोखा खाता रहता है। —रोशे

मनुष्यका मन ही सम्पूर्ण मनुष्य है। —मोर्किलास

मानव-मनकी एक अतीव अद्भुत दुर्बलता यह है कि यह जो कुछ पसन्द करता है उसे देखनेके लिए अपनेको मना लेनेकी क्षमता रखता है। —रस्किन

अपने मनको बुरी बातोंसे बचा और उसे ऐसी बातोंके लिए उचित कर जिससे उसकी शोभा बढ़े। ऐसी दशामें तेरा जीवन आनन्दमय होगा और लोग तेरी प्रशंसा करेंगे। —हकलसभी

अपने मन बालकके बच्चोंकी तरह हैं। बालकके बच्चे जैसे हमेशा अतृप्त रहते हैं उसी तरह हमारे मन हमेशा अतृप्त रहते हैं। इसलिए मनका काम कम करके उसे एकाग्र रखना चाहिए। —विवेकानन्द

मन सब कुछ है जो कुछ हम सोचते हैं हो जाते हैं। —बुद्ध

पूरे जागे हुए मनका यही अर्थ है कि ईश्वरके सिवाय दूसरी किसी चीज़पर वह जावे ही नहीं। जो मन उस परवरदिगारकी ख़िदमतमें लीन हो सकता है, उसे फिर दूसरे किसीकी क्या ज़रूरत! —रबिया

धन लोभीका मन मुरदा; पापीका मन रोगी लोभी व स्वार्थी का मन आलसी और भजन-ध्यानमें तत्पर व्यक्तिका मन स्वस्थ होता है। —हातिम हासम

जो इस मन सरीखा ही चंचल होगा और इससे आठों पहर लड़ेगा वही इसे मिलालेगा। —शीतलनाथ

मनके रोगी होनेके ये चार लक्षण हैं—(१) उपासनासे आनन्दित न होना (२) ईश्वरसे डरकर न चलना (३) ज्ञान प्राप्त करनेके मतलबसे किसी चीजको न देखना और (४) ज्ञानकी बात सुनकर भी उसके मर्मको न समझना। —कुनुन

मनन

शुद्ध अन्तःकरणमें ही सत्य स्फुरित होता है। स्वार्थ व सुख छोड़ने से ही अन्तःकरण शुद्ध बनता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

बिना मनन किये पढ़ना, बिना पचाये खानेके समान है। —बर्क

मनस्वी

ज़मीनपर सोना पड़े या पलंगपर सोना मिल जाय, साग-भाजी खानी पड़े या स्वादिष्ट भोजन मिल जाय, फटा-पुराना कपड़ा मिले या दिव्य वस्त्र मिले, मनस्वी लोग काम सफल करनेके लिए न दुःखको गिनते हैं न सुखको। —नीति

मालतीके फूलकी तरह मनस्वियोंकी दो ही गतियाँ होती हैं : या तो सब लोगोंके सिरपर विराजना या वनमें ही मुर्झा जाना। —भर्तृहरि

मनःस्थिति

अपनी प्रशंसामें जब तक रुचि है तब तक अपनी निन्दासे भी अप्रिय दुःख हुए बिना न रहेगा। अपनी सफलतामें जब तक रुचि है तब तक असफलता दुःखदायी हुए बिना न रहेगी। —हरिभाऊ उपाध्याय

मना

किसीको धोखा नहीं देना चाहिए, किसीकी चोरी नहीं करनी चाहिए, किसीका बुरा नहीं सोचना चाहिए। —अज्ञात

अपने रिश्तेदारोंसे झगड़ना नहीं चाहिए, बलीका मुकाबला नहीं

करना चाहिए। स्त्री, बच्चों, बड़ों और बेवकूफोंसे बहस नहीं करनी चाहिए। —अज्ञात

बुद्धिमान्को ऐसा काम नहीं करना चाहिए जो निष्फल हो जिससे बहुत क्लेश हो, जिसमें सफलता संदिग्ध हो, या जिससे दुश्मनी पैदा हो। —अज्ञात

मनुष्य

मनुष्यकी परिभाषा 'पैदायशी सिपाही' की जा सकती है। —कार्लाइल

जो मनुष्य होना चाहता है वह अवश्य ही किसी मत-विशेषमें दीक्षित नहीं होगा। यदि एक अकेला मनुष्य अपने अन्तःकरणपर धर्मरूपसे दृढ़ रहकर उसके अनुसार कार्य करे तो वह विशाल जगत् उस मनुष्यके चरणोंपर आ जायगा। —एमर्सन

मनुष्य समतासे श्रमण होता है, ब्रह्मचर्यसे ब्राह्मण होता है, ज्ञानसे मुनि होता है, तपसे तपस्वी होता है। —म. महावीर

इस विचारने मेरे हृदयको बहुत दुखाया कि मनुष्यने मनुष्यको क्या बना डाला है। —वर्ड्सवर्थ

मनुष्य पशु नहीं है। बहुतसे पशु-जन्मोंके अन्तमें वह मनुष्य बना है। पशुता और पुरुषार्थमें इतना भेद है जितना जड़ और चेतनमें है। —गाँधी

संसारमें तीन तरहके मनुष्य होते हैं—नीच, मध्यम और उत्तम। नीच मनुष्य विघ्नके भयसे काम शुरू ही नहीं करते, मध्यम मनुष्य काम शुरू तो कर देते हैं किन्तु विघ्न आते ही उसे बीचमें ही छोड़ देते हैं, परन्तु उत्तम मनुष्य जिस कामको आरम्भ कर देते हैं उसे विघ्नपर विघ्न आनेपर भी पूरा ही करके छोड़ते हैं। —भर्तृहरि

मनुष्य-मात्र ईश्वरका प्रतिबिम्ब है। —गाँधी

जितना ही मैं मनुष्योंको जानता जाता हूँ उतना ही मैं कुत्तोंकी प्रशंसा करता हूँ। —एक अंग्रेज

साँप और मनुष्यमें क्या फ़र्क ? देखनेमें साँप पेटके बल चलता है मनुष्य पैरोंपर खड़ा होकर चलता है। लेकिन यह दिखावा है। जो मनुष्य मनसे पेटके बल चलता है उसका क्या ? —गाँधी

हम मनुष्य नहीं हैं। जिसको पहले मनुष्य बननेकी धुन सवार हो गई वही सर्वोत्कृष्ट मार्गी है। —टैगोर

मनुष्यता

मनुष्यता बड़ी है परन्तु मनुष्य छोटा है। —बोर्न

हमारा मनुष्यत्व एक दरिद्र वस्तु होता यदि उसमें वह देवत्व भी न होता जो हमारे अन्दर उमरता रहता है। —बेकन

जिस मनुष्यको अपने मनुष्यत्वका भान है वह ईश्वरके सिवा और किसीसे नहीं डरता। —गाँधी

जीवनमें भगवान्‌को अभिव्यक्त करना ही मनुष्यका मनुष्यत्व है।
—अरविन्द घोष

मनोबल

मनोबल ही सुख सर्वस्व है, यही जीवन है, और यही अमरता है। मनोदौर्बल्य ही रोग है दुःख है और मौत है। —विवेकानन्द

मनोभाव

ऐसा जो आदमी जबानसे कहनेके पहले ही दिलकी बात जान लेता है वह सारे संसारके लिए भूषणस्वरूप है। —तिरुवल्लुवर

मनोरञ्जन

जो अपनी सच्ची हालतका विचार किये बिना ही राग-रंगमें मस्त हो रहे हैं, यदि वे सब अपनी असली हालतको पहचान जाँय तो फिर एक पल भी वे यों व्यर्थ न जाने देंगे। —हुसेन बसराई

महत्वाकांक्षा

महत्वाकांक्षासे सावधान रह; स्वर्ग अहंकारसे नहीं नम्रतासे मिलता है।

—मिल्टन्

हम प्रेमसे महत्वाकांक्षाकी ओर अक्सर चल पड़ते हैं लेकिन कोई महत्वाकांक्षासे प्रेमके पास लौटकर कभी नहीं आ पाता। —अज्ञात

महत्वाकांक्षाका एक पैर नरकमें रहता है, भले ही वह अपनी उँगलियोंसे स्वर्ग छूनेके लिए बढ़ती रहे। —किसी

अहंकारी शैतान, दुनियाका सबसे बुरा दुश्मन महत्वाकांक्षी।

—ह्यूम फ़ील्ड

ऊपरसे जो निःस्वार्थ प्रयास दीख पड़ता है बहुधा उसकी भी प्रेरक शक्ति महत्वाकांक्षा और स्पर्धा ही होता है। —पी जे हाम्स

जिसके लिए दुनिया नाकाफ़ी थी उसके लिए अब एक क़ब्र काफ़ी हो गई।

—सिकन्दर महान्के विषयमें

महत्वाकांक्षा वह पाप है जिसने फ़रिश्तोंको भी पतित कर दिया।

—शेक्सपियर

चैन-चैन खोकर तू महत्वाकांक्षाके फेरमें क्यों पड़ गया? तेरे लिए पासमें अमृतका कलश तेरे हाथसे छीनकर यह गरलका प्याला है दिया?

—हरिभाऊ उपाध्याय

महात्मा

ईश्वरकी भावनासे पवित्र हृदयको, जो उसी स्थितिमें उस प्रभुके चरणोंमें अर्पित कर देता है अपनी दूसरी सब सँभाल भी उस प्रभुपर ही छोड़ देता है और ख़ुद उसके ध्यान-भजनमें रत रहता है वही सच्चा महात्मा है।

—गीता

जो मनुष्य अपने छोटेसे-छोटे दोष या पापको बड़ा भयंकर समझता है वह साधु, महात्मा हो जाता है। —अज्ञात

महान्

जो महान् हमसे एक नहीं है वह महान् नहीं है। —शेक्सपियर

अरे मुझे मासूम रहने दे, औरोंको महान् बना। —कैरोलेन

वे ही सचमुच महान् हैं जो सचमुच भले हैं। —चैपमैन

महत्तके लिए महान् महान् नहीं है। —सर-फिलिप-सिडनी

सबसे महान् आदमी वह है जो दृढ़तम निश्चयके साथ सत्यका अनुसरण करता है। —सेनेका

बहुतसे विचारोंवाला नहीं एक निश्चयवाला महान् बनता है। —ऑइकन

वास्तविक महान् व्यक्तिके तीन चिह्न हैं—उदारतापूर्ण योजना, मानवतापूर्ण अमल, साधारण सफलता। —बिस्मार्क

कोई चीज़ वास्तवमें महान् नहीं हो सकती जो कि सत्यमय नहीं है। —जॉन्सन

जिसे तुम्हारा अन्तःकरण महान् समझे वह महान् है। आत्माका फ़ैसला हमेशा सही होता है। —एमर्सन

अभी तक ऐसा कोई वास्तवमें महान् आदमी नहीं हुआ जो साथ ही साथ वास्तविक पुण्यात्मा न रहा हो। —फ्रैंकलिन

सबसे महान् व्यक्ति वह है जो अटल प्रतिज्ञाके साथ सत्यका अनुसरण करता है जो अन्दर और बाहरके सभी प्रलोभनोंका प्रतिरोध करता है जो भारीसे भारी बोझोंको प्रसन्नतासे सहन करता है सत्य नेकी और ईश्वरपर जिसकी निर्भरता सबसे अडिग है। —चैनिंग

महान् है वह जिसने अपने शत्रुओंको परास्त कर दिया परन्तु महत्तर है वह जिसने उन्हें अपना बना लिया। —ह्यूम

महानसे प्रेम करना स्वयं लगभग महान् होना है। —नैकर

महान् पुरुष वे हैं जो देखते हैं कि किसी भी भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक शक्ति बढ़कर है कि विचार दुनियापर शासन करते हैं। —एमर्सन

आज तक कभी कोई आदमी नक़ल करके महान् नहीं बना।

—जॉनसन

अगर कोई महत्ताकी तलाश करता है तो उसे चाहिए कि महत्ताको तो भूल जाय और सत्यकी खोज करे वह दोनों पा जायेगा।

—हॉरेसमन

महापुरुषका यह लक्षण है कि वह तुच्छ बातोंको तुच्छ मानकर चलता है और महत्त्वपूर्णको महत्त्वपूर्ण —हैलिंग

महापुरुषकी महत्ता इसीमें है कि वह हरगिज़-हरगिज़ निराश न हो।

—थॉमसन

सितारोंको इस बातकी चिन्ता नहीं कि हम जुगनू कैसे दीखते हैं।

—अज्ञात

किसीकी डिग्रियों (उपाधियों) से उसकी महत्ताका अनुमान न लगा। उसका अनुमान उसकी सफलतासे न कर। —अज्ञात

सद्गुण ही महत्ताका ठोस आधार है। —जॉन्सन

महापुरुष

विपत्कालमें धैर्य ऐश्वर्यमें क्षमा सभामें वचन-चातुरी संग्राममें पराक्रम, सुयशमें अभिरुचि और शास्त्रोंमें व्यसन—ये गुण महापुरुषोंमें स्वभावसे ही होते हैं। —भर्तृहरि

महान् व्यक्ति बाज़ोंकी तरह होते हैं वे अपना घोंसला किसी ऊँचे एकान्त स्थानमें बनाते हैं। —शापेनहार

महापुरुष फूल-सा कोमल होता है वह पहाड़की तरह कठोर और शेरकी तरह निर्भीक होता है। —अज्ञात

महारिपु

आलस अज्ञान और अकर्मता ये तीन 'महारिपु' हैं। —विनोबा

जो सोचता और कुछ है और कहता कुछ और है, मेरा दिल उससे ऐसी घृणा करता है जैसी नरककुण्डसे। —पोप

मार्ग

जब तक अन्तःकरणमें आत्मविश्वास पक्का है और परमेश्वरपर भरोसा है तब तक तेरा मार्ग सरल ही है। —विवेकानन्द

दो बिन्दु निश्चित हुए कि सुरेखा 'निश्चित' तैयार होती है। जीव और शिव ये दो बिन्दु कायम किये कि परमार्थ-मार्ग तैयार हुआ। —विनोबा

देख ए बुद्धि द्वारा यथाविधि मार्गपर कायम रहना। —एमर्सन

मार्गदर्शन

अचूक मार्ग दिखानेके लिए मनुष्यका अन्तःकरण पूर्ण निर्दोष और सुकर्म करनेमें असमर्थ होना चाहिए। —गाँधी

मालिकी

मालिकी उनकी होनी चाहिए जो सदुपयोग कर सकते हों न कि उनकी जो जोड़ते और छिपाते हैं। —एमर्सन

मासूम

मुझे भरोसा है अपनी मासूमियतका, और इसीलिए मैं निडर और दृढ़चित्त हूँ। —शेक्सपियर

माँ

क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरे बदलेमें मृत्युकी भेंट होती।
—एक माँ अपने बेटेकी मौतपर

माँ फिर भी माँ है जीती हुई पवित्रतम वस्तु।
—एस. टी. कॉलेरिज

माँके पैरोंके नीचे जन्नत है—जो-अपनेआपमें फिरदौसे-बरीं है।
—[illegible]

महिमा

रामचन्द्रजीके कानों-कपोलोंकी कामनासे बने मन्दिरपर अगर लगाये और बंद कर दें तो क्या मन्दिरकी महिमा कम हो जाती है!

—तुलसीदास

मन्दिर

भारतवर्षके पूजा-घरोंपर बड़ा तरस आना चाहिए। उनमें पत्थरके सिवा कुछ भी नहीं रहा। —एमर्सन

माता

पूजाके योग्य सबसे प्रथम देवता माता है। पुत्रोंको चाहिए कि माताकी खान-सेवा तन-मन-धनसे करें। उसे सब तरहसे प्रसन्न करें। उसका अपमान कभी न करें। —स्वामी दयानन्द

माता पृथ्वीसे भी बड़ी है। —अज्ञात

ईश्वर हर जगह मौजूद नहीं हो सकता था इसलिए उसने माताएँ बनाईं। —यहूदी कहावत

मातृप्रेम

ईश्वरी प्रेमको छोड़कर दूसरा कोई प्रेम मातृप्रेमसे श्रेष्ठ नहीं है।

—विवेकानन्द

मान

मान घटाई, यमपुर जाई। —दीनानाथ

बिना मान अमृत पिलावो मुझे नहीं सुहाता। मान सहित विष पिला दे तो मर जाना भी अच्छा। —रहीम

तिरस्कारमय अमृतसे मानयुक्त हलाहलका प्याला अच्छा। —अज्ञात

मान-मर्यादा प्राप्त कर चाहे वह नरकमें ही क्यों न मिले, और अपमानका त्याग चाहे वह रामकी स्वर्गमें ही क्यों न हो। —मुतनब्बी

मान-सहित मरना, अपमान-सहित जीनेसे भला है। —अज्ञात

"मान करै तिनके घर जावे" । —अज्ञात

शेर भूखा भले मर जाय पर कुत्तेका जूठा हरगिज़ न खायेगा ।
—सादी

नाम और मानके पीछे दुनिया तबाह है । —अज्ञात

मानवता

मनुष्य स्वभाव अपने विकसित रूपमें लाज़िमी तौरसे मानवतापूर्ण है; प्रेमके बिना वह मानवताहीन है, समझदारी बिना मानवताहीन, अनुशासन बिना मानवताहीन । —रस्किन

माप

कोई मनुष्य भले ही इतना लम्बा हो कि आकाश छू ले या सूर्यको मुट्ठीमें ले ले लेकिन उसका माप आत्मा और हृदयसे ही होना चाहिए ।
—वाट्स

माया

जीव परतन्त्र है ईश्वर स्वतन्त्र है । जीव बहुत हैं ईश्वर एक है । यद्यपि यह दो प्रकारका भेद मायाकृत है फिर भी वह भगवान् की इसके बिना करोड़ों उपाय करनेपर भी नहीं जाता । —रामायण

मायाके दो भेद हैं—अविद्या और विद्या । —रामायण

मायाके पाशसे छूटनेका प्रयत्न करते समय भी कोमलता और सेवा-भाव हमें न खोना चाहिए । —गाँधी

जितनी इन्द्रियगम्य चीज़ें हैं जहाँ तक जाना जा सके, सब माया है ।
—रामायण

मायाचार

मायाचार ही एकमात्र अधम दुर्गुण है । मायाचारोंका पश्चात्ताप भी मायाचार है । —विलियम हेज़लिट

लपटोंवाली आग मुझे अपनी चमकसे चेतावनी देकर दूर रखती है । मुझे राखमें छिपे बुझते हुए अंगारोंसे बचाना । —टैगोर

जो सोचता और कुछ है और कहता कुछ और है मेरा दिल उससे ऐसी घृणा करता है जैसी नरककुण्डसे। —पोप

मार्ग

जब तक अन्तःकरणमें आत्मविश्वास पक्का है और परमेश्वरपर भरोसा है तब तक तेरा मार्ग सरल ही है। —विवेकानन्द

दो बिन्दु निश्चित हुए कि सुरेखा 'निश्चित' तैयार होती है। जीव और शिव ये दो बिन्दु कायम किये कि परमार्थ-मार्ग तैयार हुआ। —विनोबा

नेक व शुद्ध हृदय सर्वोपरि मार्गपर कायम रहना। —एमर्सन

मार्गदर्शन

अचूक मार्ग दिखानेके लिए मनुष्यका अन्तःकरण पूर्ण निर्दोष और दुष्कर्म करनेमें असमर्थ होना चाहिए। —गाँधी

मालिकी

मालिकी उनकी होनी चाहिए जो सदुपयोग कर सकते हों, न कि उनकी जो जोड़ते और छिपाते हैं। —एमर्सन

मासूम

मुझे भरोसा है अपनी मासूमियतका, और इसीलिए मैं दिलेर और दृढ़प्रतिज्ञ हूँ। —शेक्सपियर

माँ

क्या ही अच्छा होता कि मैं तेरे बदलेमें मृत्युकी भेंट होती।
—एक माँ अपने बेटेकी मौतपर

माँ फिर भी माँ है जीती हुई पवित्रतम वस्तु।
—एस० टी० कॉलेरिज

माँके पैरोंके नीचे जन्नत है—जैसे-अनमोल रत्नोंसे-भरी है।
—कुरान

माँ अपने लड़केकी तारीफ़ दूसरोंकी ज़बानी सुनकर उसके जन्म समयसे भी ज़्यादा ख़ुश होती है। —अज्ञात

जब उसके लड़केने शिकायत की कि उसकी तलवार छोटी है तो स्पार्टन माँ बोली—"इसमें एक क़दम जोड़ दे।" —अज्ञात

माँ होनेसे मनुष्य सनाथ होता है उसके न होनेपर अनाथ हो जाता है। —महाभारत

फ्रांसकी माताएँ अच्छी हों, उसे सपूत मिल ही जायँगे। —नैपोलियन

मैं जो कुछ हूँ या कुछ होनेकी आशा रखता हूँ, उसका कारण मेरी देवी माँ है। —लिंकन

जिस वक़्त मनुष्यको माँका वियोग होता है तभी वह वृद्ध होता है, तभी वह दुःखी होता है और तभी उसे सारी दुनिया शून्य लगती है। —अज्ञात

मांसाहार

जानवरोंको मारने और खानेसे बढ़कर अधम पेशा दुनियामें न हो पर है। —तिरुवल्लुवर

अगर दुनिया खानेके लिए मांस न चाहे तो उसे बेचनेवाला कोई आदमी ही नहीं रहेगा। —तिरुवल्लुवर

अहिंसा ही दया है और हिंसा ही निर्दयता, मगर मांस खाना एकदम पाप है। —तिरुवल्लुवर

अगर आदमी दूसरे प्राणियोंकी पीड़ा और यन्त्रणाको एक बार समझ सके तो फिर वह कभी मांस खानेकी इच्छा न करे। —तिरुवल्लुवर

जो लोग माया और मूढ़ताके फन्देसे निकल गये हैं वे मांस नहीं खाते। —तिरुवल्लुवर

भला उसके दिलमें तरस कैसे आवेगा, जो अपना मांस बढ़ानेको दूसरोंका मांस खाता है? —तिरुवल्लुवर

उसे बन्धु मित्र चाहिए तो ईश्वर काफ़ी है; संगी चाहिए तो विधाता काफ़ी है; साथ प्रतिष्ठा चाहिए तो दुनिया काफ़ी है; सान्त्वना चाहिए तो धर्म-पुस्तक काफ़ी है; उपदेश चाहिए तो मौतकी याद काफ़ी है; और अगर मेरा यह कहना गले नहीं उतरता हो तो फिर तेरे लिए नरक काफ़ी है। —हातिम हासम

जो सामने तो मीठी-मीठी बातें करता है लेकिन पीठ पीछे बुरा बोलता है और दिलमें कुटिलता रखता है जिसका चित्त साँपकी गतिके समान है ऐसे कुमित्रको छोड़नेमें ही भलाई है। —रामायण

मित्र खूब दूर रहना चाहते हैं। वे एक दूसरेसे मिलनेकी अपेक्षा अलग रहना पसन्द करते हैं। —भारा

जो तुम्हें बुराईसे बचाता है नेक राहपर चलाता है और जो मुसीबतके वक्त तुम्हारा साथ देता है, बस वही मित्र है। —तिरुवल्लुवर

अपने मित्रको अपने लिए, या अपनेको अपने मित्रके लिए सस्ता न बना डाल। —कहावत

मित्रोंके बिना कोई भी जीना पसन्द नहीं करेगा चाहे उसके पास बाकी सब अच्छी चीज़ें क्यों न हों। —अरस्तू

प्रकृति पशुओं तकको अपने मित्र पहचाननेकी समझ देती है। —कॉर्नील

पुराने अच्छे दोस्तसे बढ़कर कोई दर्पण नहीं है। —स्पेनिश कहावत

कुटिल आदमीसे न दोस्ती करो न जान-पहिचान। गरम कोयला जलाता है ठंडा हाथ काले करता है। —हितोपदेश

मित्र दुःखमें राहत है कठिनाईमें पथ-प्रदर्शक है जीवनकी खुशी है ज़मीनका ख़ज़ाना है मनुष्याकार नेक फ़रिश्ता है। —जोसेफ़ हॉल

जिसे दोष विहीन मित्रकी तलाश है वह मित्र-विहीन रहेगा। —तुर्की कहावत

दुनियामें सब स्वार्थके मित्र हैं परमार्थ तो उनके सपनेमें भी नहीं है। —रामायण

मित्रता

"मैं तुमसे डरता हूँ।" "भाई क्यों?" "क्योंकि तू 'स्वामी' है तुमसे सदा चौकन्ना रहना पड़ता है। मित्रता और इतना चौकन्नापन एक साथ नहीं रह सकते। —अज्ञात

निष्कपट-हृदय ही सच्चे मित्र हो सकते हैं; कुटिल और कमीने कभी नहीं जान सकते कि सच्ची मित्रताके क्या मानी हैं।

—चार्ल्स किंग्सले

जिससे मित्रता न रही वह कभी सम्मित्र था भी नहीं।

—अंग्रेज़ी कहावत

असमान मित्रताएँ हमेशा घृणामें समाप्त होती हैं।

—डा० गोल्ड स्मिथ

नीति कहती है कि दोस्ती या दुश्मनी बराबरवालोंसे करे।

—रामायण

वे दोस्तियाँ ज्यादा टिक नहीं सकतीं जो कारणसे भी बढ़कर हैं, बड़ा बुलन्द भावनासे उठती हैं। —स्वामी रामतीर्थ

मित्रता दो तत्त्वोंसे बनी है: एक सचाई है और दूसरा कोमलता।

—एमर्सन

मित्रताका सार है पूर्ण उदारता और विश्वास। —एमर्सन

सच्चा प्रेम दुर्लभ है सच्ची मित्रता और भी दुर्लभ है। —ला फ्रौन्टेन

जब हम देवोंसे मित्रता स्थापित कर लेते हैं तभी हम मनुष्योंमें मित्रताका संचय कर पाते हैं। —थोरो

परस्पर सात बातें होनेसे या सात कदम साथ चलनेसे ही सज्जनोंमें मित्रता हो जाती है। —कालिदास

जीवनमें मित्रतासे बढ़कर सुख नहीं। —जान्सन

यदि मित्रता मुझे दृष्टिविहीन कर दे यदि वह मेरे दिमागको अंधकार-युक्त बना दे, तो मुझे वह कबूल नहीं चाहिए। —पोप

मिला एक इन्सानका फ़ायदा इसीमें है कि वह बेवकूफ़ोंसे दोस्ती न करे। —तिरुवल्लुवर

योग्य पुरुषोंकी मित्रता दिव्य ग्रन्थोंके स्वाध्यायके समान है, जितनी ही उनके साथ तुम्हारी घनिष्ठता होती जायगी, उतनी ही अधिक ख़ूबियाँ तुम्हें उनके अन्दर दिखाई देती जायेंगी। —तिरुवल्लुवर

जो लोग मुसीबतके वक़्त धोखा दे जाते हैं, उनकी मित्रताकी याद मौतके वक़्त भी दिलमें जलन पैदा करेगी। —तिरुवल्लुवर

योग्य पुरुषोंकी मित्रता बढ़ती हुई चन्द्रकलाके समान है मगर बेवकूफ़ोंकी दोस्ती घटते हुए चाँदके समान है। —तिरुवल्लुवर

पाक-साफ़ लोगोंके साथ बड़े शौक़से दोस्ती करो; मगर जो तुममें अयोग्य हैं उनका साथ छोड़ दो इसके लिए चाहे तुम्हें कुछ भेंट भी देनी पड़े। —तिरुवल्लुवर

नीचोंकी मित्रतासे बच क्योंकि वह शुद्धभाव रखकर मित्रता नहीं करते बल्कि मतलबसे काम करते हैं। —हज़रतजामी

मित्रता दो शरीरोंमें एक मन है। —अरस्तू

बेवकूफ़से दोस्ती करना रीछको गले लगाना है।

—अफ़गान कहावत

मित्रता ऐसा पौधा है जिसे अक्सर पानी देते रहना चाहिए।

—जर्मन कहावत

जान लो कि छोटे-छोटे उपकारोंसे मित्रता ताज़ी रहती है।

—सेनेका

जो दोस्तियाँ बराबरीकी नहीं होतीं हमेशा नफ़रतमें ख़त्म होता है। —गोल्डस्मिथ

हँसी दिखलानेवाली गलबाँहोंका नाम मित्रता नहीं है, मित्रता तो वास्तवमें वह प्रेम है जो हृदयको आह्लादित करता है।

—तिरुवल्लुवर

मित्रताका दरबार कहाँ लगता है? बस वहींपर कि जहाँ दो दिलोंके बीच अनन्य प्रेम और पूर्ण एकता है और जहाँ दोनों मिलकर हर एक तरहसे एक दूसरेको उच्च और उज्ज्वल बनानेकी चेष्टा करें।

—तिरुवल्लुवर

भीख या उपेक्षासे बहुत-सी मित्रताएँ समाप्त हो जाती हैं।

—भागवत

मित्र-रहित

कंगाल है मित्र-रहित दुनियाका मालिक। —पेन

मिथ्याचारी

जो मूढ़ आदमी इन्द्रियोंको काम करनेसे रोके लेकिन मनसे इन्द्रियोंके विषयोंका स्मरण करता रहे वह मिथ्याचारी कहलाता है। —गीता

मिलन

हम जैसे हैं वैसोंसे ही मिलते हैं। —एमर्सन

अपने मित्रसे कभी-कभी मिला कर ताकि प्रेम बना रहे। जो मित्र बहुत आता-जाता रहता है उसको अवश्य दुःखी होना पड़ता है।

—इब्न-उल-वर्दी

मिलाप

बहुतोंका मिलाप और थोड़ोंके साथ अति समागम ये दोनों समान दुःखदायक हैं। —श्रीमद्राजचन्द्र

मितव्ययता

जो आवश्यकतासे अधिक मितव्ययता प्रकट करता है वह चोरी करता है और चोरीका दण्ड दिया जाता है। वह बच नहीं सकता। अन्तमें वह चोरकी मितव्ययता न होगी—ऐसा विश्वास हम अपने अहिंसक उपाय हमें करते ही जाना चाहिए। —गांधी

मुकदमेबाजी

मुकदमेबाजी करना बिल्लीकी खातिर गाय खोना है।

—चीनी कहावत

मुकदमाबाजीमें कुछ भी निश्चित नहीं है, सिवाय खर्चेके।

—बटलर

ज्यादा मुकदमेबाजीसे बचो, उससे तुम्हारे अन्तरंगपर कुप्रभाव पड़ता है स्वास्थ्यको हानि पहुँचती है और मित्रताका नाश होता है।

—मुहर

मुक्ति

मैं कब मुक्त होऊँगा? जब 'मैं' खत्म हो जायगा।

—स्वामी रामतीर्थ

मुक्तिके लिए ज़ोर नहीं लगाना पड़ता यह तो अत्यन्त सरल प्राकृतिक विकास है। —महात्मा भगवानदीन

शरीरको सक्रिय संघर्षमें रखना और मनको विश्रान्ति और प्रेममय रखना इसीके मानी हैं यहीं इसी जन्ममें पाप और दुःखसे मुक्ति।

—स्वामी रामतीर्थ

मैं कब मुक्त होऊँगा? जब 'मैं' न रहेगा। 'मैं' और 'मेरा' अज्ञान है, 'तू' और 'तेरा' ज्ञान है। —रामकृष्ण परमहंस

इच्छारहितता ही मुक्ति है और सांसारिक वस्तुओंकी कामना ही बन्धन है। —योगवासिष्ठ

जो अपनी आत्माके अन्दर ही सुख-आनन्द और रोशनी पाता है वही परमेश्वरमें लीन होकर मुक्ति प्राप्त करता है। —गीता

जो आदमी आखिरतक ऊपरी रस्मों यानी रीति-रिवाजों और कर्म-काण्डमें फँसा रहता है वह मरनेके बाद अन्धेरे रास्तेसे जाकर स्वर्ग और नरकके चक्करमें पड़ता है और जो इन सब चीज़ोंसे ऊपर उठकर सब आचारोंको एक निगाहसे देखता हुआ दुनियाकी बेलौस, बेग़रज़

(निष्काम) और बेग़रज़ (निःस्वार्थ) सेवामें लगा हुआ शरीर बाँधता है पर दौलतोंके रास्तेसे बचकर मुक्तिकी तरफ़ क़दम बढ़ाता है।

—गीता रहस्य

जो आदमी राग और द्वेष मुहब्बत और नफ़रत से ऊपर उठकर दुईसे ऊपर उठकर सब तरहके पापोंसे बचता हुआ, नेक काम करता हुआ, सिर्फ़ एक परमेश्वरकी पूजा करता है वही ब्रह्मज्ञानको जान सकता है और वही निजात हासिल कर सकता है। —गीता

मुक्ति (निजात) के लिए किसी रीति-रिवाजकी ज़रूरत नहीं ज़रूरत अपने दिलसे मोह डर और ग़ुस्सेको निकालकर उसे एक परमेश्वरकी तरफ़ लगानेकी है। —गीता

अगर हम उस ऊँचतर और गम्भीरतर चेतनामें जाना चाहें जो भगवान्‌को धारती और उनके अन्दर आत्मरूपसे निवास करती है तो हमें निम्न प्रकृतिकी शक्तियोंसे मुक्त होना होगा और भागवत शक्तिकी उस क्रियाके प्रति अपनेको उद्घाटित करना होगा जो हमारी चेतनाको दिव्य प्रकृतिकी चेतनामें रूपान्तरित कर देगी। —अरविन्द घोष

अनासक्तिकी पराकाष्ठा गीताकी मुक्ति है। —गाँधी

अनासक्ति कैसे आये? सुख और दुःख, दोस्त और दुश्मन हमारा और दूसरोंका—सब समान समझनेसे अनासक्ति आती है। इसलिए अनासक्तिका दूसरा नाम समभाव है। —गाँधी

भक्त कवि गाते हैं: "हरिजन तो मुक्ति न माँगे, माँगे जन्मो जनम अवतार रे।" इस दृष्टिसे देखें तो 'मुक्ति' कुछ और ही रूप ले लेती है। —गाँधी

जिन लोगोंके दिलोंसे मोह ग़ुस्सा और डर बिलकुल जाते रहे जिन्होंने एक परमेश्वरका सहारा लिया और उसीमें अपना मन लगाया उन्हें सच्चा ज्ञान मिलता है और आख़िरमें वे उसी परमेश्वरमें लय (फ़ना) हो जाते हैं। —गीता

यदि कोई मनुष्य अपनी समस्त वासनाओंको सर्वथा त्याग दे तो वह मुक्तिको जिस रास्तेसे आनेकी आज्ञा देता है उसी रास्तेसे आकर उससे मिलती है। —शिवस्तुवर

जो गुणातीत हो जाता है वही इस दुनियासे निजात पाता है।
—गीता

तुम एक साथ इन्द्रियोंके दास और आत्माके स्वामी नहीं हो सकते।
—स्वामी रामतीर्थ

अगर तुम मुझे मुक्त करना चाहते हो तो तुमको मुक्त होना चाहिए।
—एमर्सन

वे ही लोग मुक्त हैं जिन्होंने अपनी इच्छाओंको जीत लिया है; बाकी सब देखनेमें स्वतन्त्र मालूम पड़ते हैं मगर वास्तवमें बन्धनसे जकड़े हुए हैं। —शिवस्तुवर

दूसरोंकी गुलामी न चाहिए तो अपनी गुलामी—आत्म-संयम—करनेकी तत्परता चाहिए। —स्वामी रामतीर्थ

अपने परमात्मस्वरूपमें लीन रहो तो तुम मुक्त हो, अपने मालिक और दुनियाके शासक हो। —स्वामी रामतीर्थ

मुक्ति हमेशा त्यागसे मिलती है। आज-कलके छूती-के-पालन स्वार्थकी खातिर रोष पूर्ण करनेवालेको सब गुलामको कर्मकाण्ड पाप और दुःखसे नहीं बचा सकता। —स्वामी रामतीर्थ

जितना कम यह जीव संसारी चीज़ोंके पानेमें लगाता है उसका कुछ अंश भी आत्मोद्धारमें लगाता तो कभीका मुक्त हो गया होता।
—वैराग्यमें

त्यागके रास्ते चलनेसे 'अमरपुर' आता है। —स्वामी रामतीर्थ

मुखिया

मुखिया मुखके समान होना चाहिए—खाने-पीनेको एक मगर सब अंगोंका विवेकसहित पालन-पोषण करनेवाला। —रामायण

मूर्ख तुम्हारा शुभचिन्तक बनने लगा हो गया तो तुम्हारा समूचा समग्र ज्ञान तुम्हें बचा नहीं पायेगा। —मार एम मिल्ने

मूर्ख लोग सहसा कोई काम कर बैठते हैं और फिर पीछे पछताते हैं। —रामायण

जहाँ मूर्खोंकी व्याख्यानियोंकी संख्या अधिक है वहाँ भूल, बोलेवाला मूर्खों नहीं मरते। —एक अंग्रेज लेखक

मूर्खोंका आत्मदान अमोघ है। —कॉबिन

मूर्ख कौन है? बकवादी। मूर्खको चाहिए कि सभामें मुँह न खोले और बुद्धिमान् सिर्फ़ समझका बयान देनेके लिए। बहुत सुनना और थोड़ा बोलना यही बुद्धिमान्का लक्षण है। —कुमारविमिहिर

जिन भारोंको मनुष्य सहन कर सकता है उनमें मूर्खोंकी बातको सुनना और सहना सबसे कठिन है। —सैसर

मूर्खोंसे न मिलो। क्योंकि अगर तुम समझदार हो तो पागल दिखोगे और अगर मूर्ख हो तो और भी ज्यादा मूर्ख दिखोगे। —सादी

पत्थर भले ही पिघल जाय मूर्खका हृदय नहीं पिघलेगा। —तामिल कहावत

कोई बेवकूफ ऐसा नहीं हुआ जो अपनी ज़बान बन्द रख सका हो। —सोलन

मूर्खको जो काम करनेको मना करोगे; वह उस कामको ज़रूर करेगा। —अज्ञात

मूर्ख बोते या उगाते नहीं जाते वे अपने आप उगते हैं। —रूसी कहावत

दुर्गम पर्वतों और भयानक जंगलोंमें वीर पशुओंके साथ घूमना अच्छा पर मूर्खोंका सम्पर्क इन्द्रभवनमें भी अच्छा नहीं। —भर्तृहरि

सबका इलाज है पर मूर्खका इलाज नहीं। —भर्तृहरि

जो अपने अमृतमय उपदेशोंसे दुष्टको सन्मार्गपर लाना चाहता है वह सिरसके नाज़ुक फूलकी पंखड़ीसे हीरेको छेदना चाहता है या एक बूँद शहदसे खारे समुद्रको मीठा करना चाहता है। —भर्तृहरि

जो पढ़े-लिखे मूर्ख हैं वे ही सदा दूसरोंकी मूर्खताकी बातोंपर ही हँसा करते हैं। —गोल्डस्मिथ

जो मनुष्य पढ़ा-लिखा न होनेपर भी घमण्डी हो, दरिद्र होकर भी ऊँची-ऊँची वासनाओंके भोगनेकी इच्छा करे और बुरे कामोंसे धन पैदा करना चाहे, वह मूर्ख है। —महाभारत

अपनेको गधा बना डाला तो हर आदमीका बोझा अपनी पीठपर पायेगा। —डेनिश कहावत

मैं मूर्खसे हमेशा डरता हूँ; कोई कैसे जान सकता है कि वह दुष्ट भी नहीं है। —हेज़लिट

मूर्ख लोग जो कुछ कहते हैं उससे अपना अहित करते हैं; और जो कुछ वे लिखते हैं उससे दूसरोंका अहित करते हैं। —रस्किन

चतुराईकी उतनी ज़रूरत कभी नहीं होती जितनी कि उस वक्त जब कि कोई किसी मूर्खसे बहस कर रहा हो। —चीनी कहावत

मूर्खको सिखाना मुर्देका इलाज करनेके समान है। —रूसी कहावत

जवान सोचते हैं कि बूढ़े मूर्ख हैं; बूढ़े जानते हैं कि जवान मूर्ख हैं। —चैपमैन

जो अपनी मूर्खतासे भी कुछ न सीख सके वह निपट मूर्ख होना चाहिए। —हेमर

वह बेवकूफ़ है जो सारी दुनियाको और उसके बापको सन्तुष्ट करनेकी कोशिश करता है। —फ़ॉन्टेन

मूर्ख अपनेको ज्ञानी समझता है। —कहावत

एक आदमी खूब पढ़ा-लिखा और चतुर है और दूसरोंका गुरु है मगर फिर भी वह इन्द्रिय-लिप्साका दास बना रहता है—उससे बढ़कर मूर्ख और कोई नहीं है। —गिरधरसुन्दर

मूर्खोंको और जो चाहो तुम सिखा सकते हो, मगर अक्लमन्दगी वे नहीं सीख सकते। —गिरधरसुन्दर

मूर्खको आमोद कर देना बदतहज़ीबी है मगर उसे अपनी हिमाकतपर क़ायम रहने देना क्रूरता है। —फ्रैंकलिन

बेवकूफ़ छह बातोंसे पहिचाना जाता है—बिना वजह गुस्सा बेफ़ायदा बोलना, बिना उन्नतिके परिवर्तन, बेमतलब पूछना, अजनबीपर विश्वास करना, और दोस्तोंको दुश्मन समझना।

—अरबी कहावत

जो हमेशा दूसरोंकी सलाहपर चलता है वह बेवकूफ़ है। —कहावत

मूर्ख दुरवस्थाको प्राप्त होनेपर देवोंको दोष देने लगता है मगर अपनी ग़लतियोंको देखनेकी कोशिश नहीं करता। —कहावत

चाहे बादल अमृत बरसावें मगर बेंत नहीं फूलता-फलता, चाहे ब्रह्माके समान गुरु मिल जावें मगर मूर्खका हृदय नहीं चेतता।

—रामायण

सूअरोंको मोतियोंसे, गधोंको गुलकन्दसे, अन्धोंको चिराग़से और बहरोंको संगीतसे क्या फ़ायदा? मूर्खको उपदेश देनेसे क्या फ़ायदा?

—कहावत

जो अविश्वासियोंकी इच्छा करता है इमानदारको त्यागता है और वफ़ादारोंसे दुश्मनी मोल लेता है वह बेवकूफ़ है। —कहावत

मूर्खता

मैं मानती हूँ कि अपनी रुचियोंके अनुसार चलनेमें इतनी मूर्खता नहीं होती, जितनी दुनियाका लिहाज़ रखकर चलनेमें।

—लेडी मेरी मोण्टेग्यू

जैसे कुत्ता अपने वमनपर लौटकर आता है वैसे अधम पुरुष अपनी मूर्खतापर लौटकर आता है। —बाइबिल

क्या तुम जानना चाहते हो कि मूर्खता किसे कहते हैं? जो चीज़ लाभदायक है उसको फेंक देना और हानिकर पदार्थको पकड़ रखना बस यही मूर्खता है। —तिरुवल्लुवर

मोहकी जंजीर सिवाय वैराग्यके किसी चीज़से नहीं तोड़ी जा सकती।
—[illegible]

संसारमें मोह-बुद्धि तभी तक रहती है जब तक अविचार है।
—[illegible]

प्रेम-मोहके दूर होते ही पुनर्जन्म बन्द हो जाता है। जो लोग इन बन्धनोंको नहीं काटते वे भ्रमजालमें फँसे रहते हैं। —तिरुवल्लुवर

जीवन-रक्षाका मोह साहसीको उच्च पदोंकी प्राप्तिसे वंचित रखता है। —अबू हस्सान [illegible]

मोक्ष

ज्ञान भक्ति और कर्मोंके मिलनेसे आत्मा परमब्रह्मपद प्राप्त करता है।
—अरविन्द घोष

जो मोक्षमार्ग बतलाया गया है वह तो चाहे जिस जाति या वेषसे प्राप्त किया जा सकता है। जो उसका साधन करेगा उसे ही मोक्ष प्राप्त होगा। —श्रीमद्राजचन्द्र

मार्ग यह है कि सबसे अनासक्त होकर एक चीज़में आसक्ति रक्खे फिर उससे भी अनासक्त हो जाय तो मोक्ष ही है। —उड़िया बाबा

जो परमेश्वरको सब जगह रमा हुआ देखकर किसी दूसरेको दुःख देकर अपने हाथसे अपनी हिंसा नहीं करता वही परमगतिको पाता है।
—गीता

मोक्ष या निर्वाण सिर्फ उन्हींको मिल सकती है और उन्हींके पास पहुँच सकते हैं जिनकी दुविधा मिट गई है जिन्होंने अपनी इन्द्रियोंको वश किया है और जो हमेशा सबकी भलाईके कामोंमें लगे रहते हैं।—गीता

हर एकको अपना मोक्ष आप बनाना होता है। उसे अपनी राह भी आप बनानी होती है —जैनेन्द्रकुमार

जो सब कामनाओंको छोड़कर निःस्पृह निर्मम और निरहंकार होकर विचरता है, वही शान्ति पाता है।
—गीता

मेहनती

कामचोर घोड़ेसे मेहनती कुत्ता अच्छा है। —कहावत

मेहमान

मेहमानको अपने मेज़बानकी हैसियतके मुताबिक़ बरतना चाहिए। —कहावत

मेहमानदारी

जब घरमें मेहमान हो तब चाहे अमृत ही क्यों न हो, अकेले नहीं पीना चाहिए। —तिरुवल्लुवर

घर आये हुए अतिथिका आदर-सत्कार करनेमें जो कभी नहीं चूकता, उसपर कभी कोई आपत्ति नहीं आती। —तिरुवल्लुवर

बुद्धिमान् लोग इतनी मेहनत करके गृहस्थी किस लिए चलाते हैं! अतिथिको भोजन देने और यात्रीकी सहायता करनेके लिए। —तिरुवल्लुवर

देखो जो आदमी योग्य अतिथिका प्रसन्नतापूर्वक स्वागत करता है, लक्ष्मीको उसके घरमें निवास करनेसे खुशी होती है। —तिरुवल्लुवर

अनीचाका फूल सूँघनेसे मुरझा जाता है मगर अतिथिका दिल तोड़नेके लिए एक निगाह ही काफ़ी है। —तिरुवल्लुवर

अतिथि-सत्कारमें कसर करना दरिद्रताकी दरिद्रता है। —पारस भाग

गृहस्थका धर्म है कि घरपर शत्रु भी आवे तो उसका आदर-सत्कार करे जैसे पेड़ अपने काटनेवालेको भी छाया देता है। अतिथि-सत्कारमें चूकनेवाला पतित होता है। —मनु

मेहरबानी

उदार बन खुशमिज़ाज बन दयावान् बन, जिस तरह कि कुदरत की मेहरबानियाँ तुमपर बरसती हैं तू औरोंपर बरसा। —सादी

किसी आदमीको उसके प्रति की गई मेहरबानीकी याद दिलाना और उसका ज़िक्र करना गाली देनेके समान है। —डिमॉस्थनीज़

चिड़िया सोचती है कि मछलियोंको उठाकर हवामें ले जाना दयाका काम है। —टैगोर

मैत्री

जैसे बिन्दुका समुदाय समुद्र है इसी तरह हम मैत्री करके मैत्रीका सागर बन सकते हैं। और जगत्‌में सब एक दूसरेसे मित्र-भावसे रहें तो जगत्‌का रूप बदल जाय। —गाँधी

मैं

अगर मैं अपने लिए नहीं हूँ तो मेरे लिए कौन होगा? और अगर मैं सिर्फ अपने लिए हूँ तो मैं हूँ ही किसलिए? —अज्ञात

ईश्वर मुझे मुझीसे बचावे। —अज्ञात

मैं कौन हूँ? ईश्वरका दिया खानेवाला और शैतानका हुक्म बजानेवाला। —मलिक दिनार

मोनोडायट

मोनोडायट' (एक समयमें एक ही चीज़ खाना) में लाभ है ही। —गाँधी

मोह

जो महामोह मद पिये हैं उनके कहेपर ध्यान नहीं देना चाहिए। —रामायण

चेतना-सरीखे चेतन होकर जड़का मोह रखना किंवा जड़वत् होना इसे क्या कहा जाय? —विनोबा

जिस तरह पानीसे निकलकर ज़मीनपर आ पड़नेपर मछली तड़पती है उसी तरह यह जीव राग, द्वेष और मोहके फन्देमें पड़ा तड़पता है। —बुद्ध

जो ज्यादा कमा पाते हैं या ज्यादा काम करते हैं वे कम-से-कम बोलते हैं। दोनों साथ मिलते ही नहीं। देखो, कुदरत सबसे ज्यादा काम करती है सोती नहीं, लेकिन मूक है। —गाँधी

प्रतिदिन अनुभव लेता हूँ कि मौन सर्वोत्तम भाषण है। अगर बोलना ही चाहिए तो कम-से-कम बोलो। एक शब्दसे चले तो दो नहीं। —गाँधी

मुझे तू अपने मौनके केन्द्रमें ले चल और मेरे हृदयको गीतोंसे भर दे। —टैगोर

मनसे उत्पन्न मौन पशुता व संयमसे उत्पन्न मौन साधुता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

आओ, हम खामोश रहें ताकि फरिश्तोंकी कानाफूसियाँ सुन सकें। —एमर्सन

वाचालता चाँदी है मौन सोना; वाचालता मनुष्योचित है मौन देवोचित। —जर्मन कहावत

जहाँ कौवे कोलाहल कर रहे हों वहाँ कोयलका कूजन क्या होगा? जहाँ बकवाद परस्पर वाद-विवाद कर रहे हों वहाँ सज्जनके मौन रहनेमें ही सार है। —भरत

मौन! आत्मा चुप रहती ताकि परमात्मा बोल सकता। —हर्मीटन

लेखकने अच्छा किया कि वह शब्दोंके आगेपर खामोश रहा। जहाँ मौलिक स्तुति हो वहाँ मौन ही शोभा देता है। —अज्ञात

मौन नींदकी तरह है, यह विवेकको ताजा करता है। —बेकन

यदि तुमसे बोलना नहीं आता तो तुम उससे चुप रहना सीख लो। —अज्ञात

गायनसे भी ज्यादा संगीतमय है मौन। —क्रिस्टिना

हमारे पवित्रतम विचारोंका मन्दिर मौन है। —श्रीमती हेल

बेहतर है कि आप खामोश रहें और मूर्ख समझे जायें बनिस्बत इसके कि आप अपना मुँह खोलकर तद्विषयक सारा भरम मिटा दें।

—अब्राहम लिंकन

एक चुप और सौ सुख। —अज्ञात

मौलिकता

धोबी बिना धुले हुए कपड़ोंके ढेर अपने घरमें रखता है, मगर वे उसके नहीं हैं। ज्यों ही कपड़े धुल जाते हैं उसका कमरा खाली हो जाता है। वे लोग जिनके अपने मौलिक विचार नहीं हैं धोबियोंकी तरह हैं। अपने विचारोंमें धोबी न बनो। —रामकृष्ण परमहंस

मौलिकता अपनेपनमें कायम रहती है और सही-सही वह बताना जो हम हैं और देखते हैं। —एमर्सन

[य]

यश

कुछ लोगोंको यश मिल जाता है लेकिन उसके पात्र दूसरे होते हैं।

—हैरिम

हज़ार बरसका यश एक दिनके चारित्रपर निर्भर रह सकता है।

—चीनी कहावत

यशकी चमक अन्तिम वस्तु है जिसे ज्ञानी छोड़ता है। —टेसिटस

मैंने विश्वको घूमकर देखा है मगर यशकी वैभव और गौरव ऊँचाईमें कोई शरण न मिली। प्रकाश फीका पड़नेसे पहले मेरे रहबर मुझे शान्तिकी घाटीमें ले चल जहाँ जिन्दगीकी चमक सुनहरी शाममें मुकुलित होती है। —टैगोर

युवक

युवकको साधुशील, अध्यवसायी आशावान्, दृढ़निश्चयी और बलिष्ठ होना चाहिए। ऐसे तरुणको यह तमाम पृथ्वी धनमय हो जाती है। —अज्ञात

योग

जो कुछ अन्तराय बनकर आये उसे विदा कर देना होगा—योगकी यह एक प्रधान शर्त है। —अरविन्द घोष

योग उसीके दुःखोंको मिटा सकता है जो अपने आहार और विहारमें यानी खाने-पीने और रहन-सहनमें, न कोई ज्यादती करता है और न बिल्कुल कमी जो ठीक बीचके रास्तेपर चलता है जो अपने सब कर्मोंको पूरा करने और कामोंको करनेमें एक बीचका रास्ता पकड़ता है ठीक सोता भी है और ठीक जागता भी है। —गीता

'योगश्चित्तवृत्तिनिरोधः'—यह पातञ्जल योग दर्शनका पहला सूत्र है। योग चित्त-वृत्तिका निरोध है, यानी हमारे दिलमें उठती तरंगोंपर अंकुश रखना, उसे दबा देना यह योग हुआ। —गांधी

ज्ञानसे दिखनेवाले सत्यका साधन करनेको ही योग कहते हैं। —अरविन्द घोष

जिसके घरमें साध्वी व प्रियवादिनी स्त्री नहीं उसको वनमें चला जाना चाहिए, क्योंकि उसके लिए जैसा वन वैसा घर। —अज्ञात

शीघ्र लेखन यह लेखनमें 'कर्म', शुद्ध लेखन है 'ज्ञान' और सुन्दर लेखन है 'भक्ति'। तीनोंका मेल साधना यह लेखनका 'योग' है। यह दृष्टान्त सर्वजीवनमें लागू किया जाय। —विनोबा

योगी

जो आदमी अपनी ही तरह सबको एक बराबर देखता है और सबके सुख और दुःखको अपना ही सुख और दुःख समझता है वही सबसे बड़ा योगी है। —गीता

सर्वात्मका राज़ वही आदमी समझ सकता है जो किसीसे राग न रखता हो। —गीता

कोई विमतावादी आजतक कभी यह न बतला सका कि 'यह सब क्यों है?' —एमर्सन

जब तुम बाहरी चीज़ोंकी ओर देखोगे और उन्हें पाना और रखना चाहोगे ये तुम्हारी पकड़में नहीं आयेंगी दूर भागेंगी मगर जिस वक्त तुम उनसे मुँह फेर लोगे और ज्योतिस्वरूप अपनी अन्तरात्माके रूबरू होगे उसी वक्त अनुकूल स्थितियाँ तुम्हें तलाश करने लगेंगी—यही नियम है। —स्वामी रामतीर्थ

ईश्वर अपने रहस्य कायरोंसे नहीं खुलवाता। —एमर्सन

मूर्खको रहस्य बता दो वह फ़ौरन जाकर उसकी उद्घोषणा करेगा। —हिन्दुस्तानी कहावत

जगत्पराङ्मुख रहनेवाले सच्चिदानन्दके शान्त स्वरूपका अनुभव लेना ईश्वरका ऐश्वर्य नहीं है। उसके शान्त स्वरूपके साथ ही उसके क्रियात्मक रूपका अर्थात् जीव और जगत्का भी आनन्द लेना चाहिए। इस प्रकार सर्वांगीण आनन्द लेना ही जीवनका रहस्य है।

—अरविन्द घोष

अगर तुम अपने रहस्यको किसी दुश्मनसे छिपाये रखना चाहते हो तो किसी मित्र तकसे उसका ज़िक्र न करो। —फ्रैंकलिन

तुम मुझसे आध्यात्मिक रहस्यकी बात जानना चाहते हो तो मैं ईश्वर और उसके बन्दोंको अपनी ही तरह प्रेम करनेके अलावा कोई रहस्य नहीं जानता। —संत फ्रांसिस

रहस्यके प्रकट हो जानेपर कोई शोक न करो, और फूलकी तरह आनन्दसे हमेशा खिले रहो। इस बहुरूपिणी दुनियामें पद और प्रतिष्ठा, मान और मर्यादा सभी कुछ मिटनेवाले हैं। —हाफ़िज़

रहस्य यह है कि जब तक मन पूर्णतः शान्त नहीं हो जाता तब

तक चैन नहीं पा सकता, ईश्वर-साक्षात्कारका तेरा मार्ग चाहे कोई-सा हो। योगी मनको वशमें रखता है मनके वश नहीं होता।

—रामकृष्ण परमहंस

रहनी

वेद पढ़े सो गुरु हमारा कथन करे सो नाती।
राह चले सो गुरु हमारा हम रहनीके साथी॥

—एक कवि

रहबर

कामिल रहबरकी पहिचान यह है कि जब वह दिखाई दे तो खुदा याद आ जाए।

—मुहम्मद

रक्षा

जब ईश्वर नहीं बचाना चाहता तब न धन बचायेगा, न माता-पिता, न बड़ा डाक्टर।

—गाँधी

राग-द्वेष

आदमीकी इन्द्रियाँ कुछ चीज़ोंकी तरफ़ तो चाहसे लपकती हैं और कुछ चीज़ोंसे भागती हैं। उनके इस चाहने और भागनेमें नहीं आना चाहिए, यह चाह और नफ़रत ही आदमीका दुश्मन है।

—गीता

संसाररूपी गाड़ीके राग और द्वेष दो बैल हैं। —श्रीमद्राजचन्द्र

राग-रंग

राग-रंगकी ज़िन्दगी अक्लिसे अक्लि मनको भी अन्तमें बावला बना देती है।

—बल्वर

पश्चात्तापके बीज यौवनमें राग-रंग द्वारा बोये जाते हैं लेकिन उनकी फ़सल बुढ़ापेमें दुःखभोग द्वारा काटी जाती है।

—कोल्टन

राग-रंगकी या मनमानी सारा रंगकी ज़िन्दगी हमेशा एक तुच्छ और मुरझाई ज़िन्दगी होती है न जीने लायक, अपने दौरानमें हमेशा असन्तोषजनक अन्तमें हमेशा दुःखद।

—थियोडोर पार्कर

राजदण्ड

जो राजदण्ड धारण करता है उसकी भावना भी हाथमें तलवार लिये हुए डाकूके इन शब्दोंके समान है—'खड़े रहो और जो कुछ है उसे रख दो।' —तिरुवल्लुवर

राजदण्ड ही ब्रह्मविद्या और धर्मका मुख्य संरक्षक है।

—तिरुवल्लुवर

मलिक महमूदके राजदण्डके पास बाँसुरी भी रक्खी रहती थी।

—जीन पॉल

राजनीति

मेरी देश-भक्ति अनन्त शान्ति तथा मुक्तिकी ओर मेरी यात्राका एक पड़ाव मात्र है। मेरे लिए धर्मसे रहित राजनीतिकी कोई सत्ता नहीं। राजनीति धर्मकी सेविका है। —गांधी

लोग कहते हैं कि मैं धर्मपरायण मनुष्य हूँ। मगर राजनीतिमें फँस गया हूँ। सच बात यह है कि राजनीति ही मेरा क्षेत्र है और उसमें रहकर मैं धर्मपरायण होनेका प्रयत्न कर रहा हूँ। —गांधी

सारी मानवजातिके साथ आत्मीयता क़ायम किये बग़ैर मेरी धर्म-भावना सन्तुष्ट नहीं हो सकती और यह तभी संभव है जब कि मैं राजनीतिक मामलोंमें भाग लूँ। क्योंकि आजकी दुनियामें मनुष्योंकी प्रवृत्ति एक और अविभाज्य है। उसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक और शुद्ध धार्मिक क्षेत्र जुदा जुदा भाग नहीं किये जा सकते। —गांधी

राजनीतिज्ञ

राजनीतिज्ञ पौधेकी तरह है। अगर तुम उसपर ढँगका रखनेकी कोशिश करो तो उसके नीचे कुछ नहीं मिलता। —ऑलिन्स

राजा

देखो, जो राजा अपनी प्रजाको सताता और उसपर जुल्म करता है वह हत्यारेसे भी बदतर है। —तिरुवल्लुवर

जासु राज प्रिय प्रजा दुखारी ।
सो नृप अवसि नरक अधिकारी ॥

—रामायण

राजा माने गुरु । —स्वामी रामतीर्थ

राजा एक-एकसे बड़ा है लेकिन सबके संगठनसे छोटा है ।

—प्रेस्टन

जो प्रजाको दुःख देकर अपना प्रयोजन साधे वह राजा नहीं डाकू है । —ऋषि दयानन्द

राज्य-कोष

राज्यका कोष गरीबोंका कुनबा है शैतान आदमीका भक्ष्य नहीं है ।

—अज्ञात

राम

जिसकी अशान्तिमें जो रामनामका आश्रय लेता है वह जीत जाता है । —गाँधी

व्याधि अनेक हैं वैद्य अनेक हैं उपचार भी अनेक हैं । अगर व्याधिको एक ही देखें और उसको मिटानेवाला वैद्य एक राम ही है ऐसा समझें, तो बहुत-सी झंझटोंसे हम बच जायें । —गाँधी

रामनाम

जो केवल ओठोंसे रामनाम बड़बड़ाता है वह ओठोंको दुखाता है और समयका हत्या करता है । —गाँधी

विकारी विचारसे बचनेका एक अमोघ उपाय रामनाम है । नाम कण्ठसे ही नहीं किन्तु हृदयसे निकलना चाहिए । —गाँधी

राय

दूसरे तुम्हारे विषयमें क्या सोचते हैं इसकी अपेक्षा 'अपने बारेमें तुम्हारा ख़याल' बहुत ज्यादा महत्वकी चीज़ है । —सेनेका

हर नई राय शुरूमें ठीक एकके अल्पमतमें होती है।

—कार्लाइल

किसी भी मनुष्यके विषयमें उसकी मृत्युके पूर्व कोई राय निश्चित मत करो। —सालन

छोटी-छोटी बातें अनजाने रूपसे हमें शुरूसे ही किसीके अनुकूल या प्रतिकूल बना देती हैं। —शोपेनहार

जिसकी अपनी कोई राय नहीं, बल्कि दूसरोंकी राय और रुचिपर निर्भर रहता है गुलाम है। —क्लॉपस्टॉक

यदि मैं अपने बारेमें दूसरोंकी राय जाननेको उत्सुक रहता हूँ तो इसके माने यह हैं कि अपने बारेमें मेरी कोई राय नहीं है।

—हरिभाऊ उपाध्याय

रास्ता

सीधा रास्ता जैसा सरल है वैसा ही कठिन है। ऐसा न होता तो सब सीधा रास्ता ही लेते। —गाँधी

आदमीकी शक्ति और आनन्द इसमें है कि वह पता लगाये कि ईश्वर किस रास्ते जा रहा है और उसी रास्ते चला चले। —बीचर

रिज़्क

ऐ आसमानकी चिड़िया उस रिज़्कसे मौत अच्छी है जिस रिज़्कके लिए तुझे नीचा उड़ना पड़े। —इक़बाल

रिवाज

मूर्खोंके लिए रिवाज तर्कका काम देता है। —रीपेल्टर

ज़ालिम रिवाज विचारकर्ताको गुलाम बना डालता है।

—[illegible]

रिवाज बुद्धिमानोंका शासन और बेवकूफोंकी आराध्य देवी होती है। —[illegible]

रिवाज बेवकूफोंका कानून है। —बैनाप

किसी रिवाजके इतने कट्टर पक्षपाती न बनो कि सत्यका बलिदान करके उसे पूजने लगो। —जिमरमन

रिश्ता

दुनियासे तुम्हारा रिश्ता ऐसा हो जाय जैसा ईश्वरका दुनियासे है।
—स्वामी रामतीर्थ

रिश्तेदार

ज़रा यह तो बता कि तूने मामा और चाचाका रिश्ता किससे कायम कर रक्खा है? और उससे दुःख और चिन्ताके अलावा तुझे क्या मिलता है? —हमदानी

रुचि

हर मनुष्यकी रुचि दूसरेसे भिन्न होती है। —कालिदास

रोग

शारीरिक रोग जिसे हम बजाय खुद एक मुकम्मिल चीज़ समझते हैं आखिरश आत्माकी किसी बीमारीका लक्षणमात्र हो सकता है।
—हार्थोर्न

यदि कोई योगी बाहरके शक्ति-जगतसे अपनेको अलग करके एकान्तमें रहे तो वह कभी-कभी सब प्रकारके रोगोंसे मुक्त हो सकता है।
—अरविन्द घोष

रोटी

कुत्ता तुम्हारे लिए नहीं, रोटीके लिए दुम हिलाता है।
—शम्सुद्दीन महाराज

जो अपनी रोटी दूसरोंके साथ बाँटकर खाता है उसको भूतकी बीमारी कभी स्पर्श नहीं करती। —तिरुवल्लुवर

यदि तुम्हें रोटीकी चिन्ता सताती रहती है तो या तो तुम अबोध हो या स्वार्थान्ध या नास्तिक। —हरिभाऊ उपाध्याय

अगर मैं अपने भाइयोंसे लड़ूँ तो निस्सन्देह मैं उस आदमीकी तरह हूँ जो मृगतृष्णामें पड़कर अपना मशकका पानी गिरा दे।

—हरैश-बिन-इब्न-ख़रस

लक्ष्मी

अहंकार और तृष्णासे बढ़कर ऐश्वर्यके लिए घातक बाधाएँ दूसरा कोई नहीं है। —गोल्डस्मिथ

अगर तुम चाहते हो कि तुम्हारी सम्पत्ति कम न हो तो तुम दूसरोंके धन-वैभवको हड़पनेकी कामना मत करो। —तिरुवल्लुवर

जो बुद्धिमान् मनुष्य न्यायकी बातको समझता है और दूसरोंकी चीज़ोंको लेना नहीं चाहता लक्ष्मी उसकी श्रेष्ठताको जानती है और उसे ढूँढ़ती हुई उसके घर आ जाती है। —तिरुवल्लुवर

उत्साही निरालसी, कुशल, निर्व्यसन शूरवीर कृतज्ञ और मित्रतामें दृढ़ रहनेवालेके पास लक्ष्मी स्वयं बसनेके लिए जाती है।

—नीति

लक्ष्मी अक्सर दरवाज़ा खटखटाती है, मगर मूर्ख उसे अन्दर नहीं बुलाता। —डेनिश कहावत

लक्ष्मी मुसकराते हुए दरवाज़ेपर आती है। —जापानी कहावत

लक्ष्मी साहसीको वरती है। —कहावत

जो माँगता नहीं है लक्ष्मी उसकी दासी हो जाती है। —कहावत

लक्ष्मी अनेकों पापोंसे पैदा होती है। वह आनेपर अभिमान मदहोशी और मूढ़ता पैदा करती है —कहावत

मैले कपड़े पहिननेवालोंको, गन्दे दाँतवालोंको, अधिक भोजन करनेवालोंको निष्ठुर बोलनेवालोंको, और सूर्योदयके बाद सोनेवालोंको लक्ष्मी छोड़ देती है चाहे वह विष्णु ही क्यों न हों। —कहावत

लक्ष्य

बस आत्म-समर्पण और आत्मोत्सर्ग ही मानव संस्कृतिका चरम लक्ष्य है। —अज्ञात

अपने लक्ष्यको न भूलो वरना जो कुछ मिल जायगा उसीमें सन्तोष मानने लगोगे। —बर्नार्ड शा

लाइलाज

दरिद्रताके साथ आलस्य भी हो तो वह रोग लाइलाज है।

—इस्माईल-इब्न-अबीबकर

लाचारी

जिस शक्तिने हमें उत्पन्न किया है उससे अपनेको अलग समझने की मूर्खतासे ही लाचारीकी प्रतीति होती है। —जिन्न

हिंसाके मुकाबलेमें लाचारीका भाव आना अहिंसा नहीं कायरता है। —गाँधी

लाभ

खयाल कर लेना चाहिए कि असत्य और हिंसाके द्वारा कितना भी लाभ हो हमारे लिए वह त्याज्य है। क्योंकि वह लाभ लाभ नहीं किन्तु हानिरूप ही होगा। —गाँधी

उन कामोंसे सदा अलग रहो जिनसे न तो यश मिलता है न लाभ होता है। —तिरुवल्लुवर

अशुभ लाभकी आशा हानिका श्रीगणेश है। —डेमाक्रिटस

लालच

दूरदर्शिताहीन लालच नाशका कारण होता है, मगर महत्त्व जो कहता है 'मैं नहीं चाहता' सर्व-विजयी होता है। —तिरुवल्लुवर

देखो, जो आदमी लालचमें फँसा हुआ है और उससे निकलना नहीं चाहता उसे दुःख आकर घेर लेगा और फिर मुक्त न करेगा।

—तिरुवल्लुवर

लालची

शराबी कुछ, भोगी बहुतसी, कंजूस तमाम चीज़ें चाहता है।

—कौली

कंजूस आदमी किसीके लिए भला नहीं है लेकिन वह सबसे बुरा अपने लिए है। —मसल

लुटेरा

एक आदमी है जिसे लोग आग्रहके साथ चाहते हैं, एक आदमी है जो दूसरोंके सिर लदना चाहता है; पहला सेवा-भावी है, दूसरा शासक है। —हरिभाऊ उपाध्याय

लेखक

सोचो अधिक, बोलो थोड़ा, लिखो उससे भी कम।

—फ़्रांसीसी कहावत

लेखक नामी पुरोहित है, मगर आम तौर उसका जो अपने नापाक हाथोंसे वेदीपर यह दावा करते हुए चढ़ाता है कि वह मानव जातिके कल्याणका सबसे अधिकारी है मगर सीधा करना चाहता है अपना ही उल्लू। —हारेस मैन

जो अपने लिए लिखता है वह शाश्वत जनताके लिए लिखता है।

—एमर्सन

साफ़ लेखक, साफ़ चश्मेकी तरह इतना गहरा नहीं दिखता जितना कि वह है; गँदला गंभीरतम दिखता है। —लैण्डर

वह लेखक सबसे अच्छा लिखता है जो अपने पाठकोंका सबसे कम समय लेकर उन्हें सबसे ज़्यादा ज्ञान देता है। —सिडनी स्मिथ

'मूर्ख' मेरी कलमने मुझसे कहा "अपने दिलमें देख और लिख।"

—सिडनी

लेखन

पाठक आपको अथवा अचूकता और नम्रतासे कहे हुए तीन शब्दोंसे, घृणित तीक्ष्णतासे लिखे हुए तीन हजार शब्दोंकी अपेक्षा कहीं अधिक कल्याणकारक पारितोषिक मिलेगा। —हक्सर

किताब लिखनेकी बजाय यह कहीं सुन्दर और आसान है कि आदमी शान्तिके चहुँरोंसे कपड़ा बनाये। —मसाय

लेखन-कार्य धर्मकी तरह है। हर लफ्ज़ लिखो मेरा मित्र भगवी सुचिकी ही राह शुरू बनाये। —जॉर्ज होरेस लोरीमर

ऐसी कोई चीज़ न लिखो जिससे तुम्हें महान् खुशी न हो। भावना सुगमतापूर्वक लेखकसे पाठक तक चली जाती है। —बार्ट

लेखनी

मैंने अपनी क़लम या लेखनीको कभी विषमें नहीं डुबोया। —केरिलस

लेन-देन

मित्रोंमें लेन-देनको मित्रताकी कसरत समझो। —सादी

परस्पर विनिमय यानी 'देनालेना' सारी दुनियाका नियम है। —विवेकानन्द

बुरा मर्द वह है जो देता है मगर लेता नहीं; अच्छा मर्द वह है जो लेता है और देता है; नामर्द वह है जो लेता है मगर देता नहीं। —अज्ञात

लोकप्रिय

जो 'कार्यप्रिय' है वह सुखका धनी है। पर जो 'लोकप्रिय' बनता है उसकी दुर्दशा ही होती है। —स्वामी रामतीर्थ

लोकप्रियता

लोकप्रियतासे बचा रह, इसमें बहुतसे फन्दे हैं मगर कोई मजा नहीं है। —पेन

मैं वह नहीं चुनूँगा जिसे बहुतसे लोग चाहते हैं क्योंकि मैं साधारण जीवोंके साथ कूदना और बर्बर समूहमें शामिल होना नहीं चाहता। —शेक्सपियर

लोकभय

घरमें काम कमी हुई है, 'लोग क्या कहेंगे' इसलिए कहता नहीं है, उसको भी 'लोग क्या कहेंगे'। —विनोबा

लोकलाज

तुम लोक-लाजके पीछे अपना हित गँवा रहे हो। —अज्ञात

जहाँ आत्माको ऊपर ले जानेका अवसर हो वहाँ लोक-लाज नहीं मानी गई। —अज्ञात

लोकाचार

अपनी खोजमें जो लोकाचार अड़चन डाले उसे तोड़ डालना चाहिए। —गाँधी

लोग

लोगोंसे काम लेनेके लिए मजमकके ख्यालमें तेज़ दिमाग होना चाहिए। —चार्ल्स ईलियट

कुछ लोग ऐसे हैं जो खुश रह सकते हैं मगर ज्ञानी नहीं, और कुछ ऐसे हैं जो ज्ञानी रह सकते हैं (या जो सोचते हैं कि वे ज्ञानी रह सकते हैं) मगर खुश नहीं। —डिकेन्स

लोग अमूमन् ऐसे आदमीका सत्कार करते हैं जो आत्मप्रशंसा करता है या कुछ और सख्त है या [illegible] करता है और सब पर शासन करता है। —अज्ञात

लोग बातें ऐसी करते हैं मानो वे ईश्वरमें विश्वास करते हैं लेकिन जीते इस तरह हैं मानो उनके ख्यालमें ईश्वर है ही नहीं।

—एण्ड्रेज

अगर तुम लोभको हटाना चाहते हो तो तुम्हें उसकी माँ अय्याशीको हटाना चाहिए। —सिसरो

लोभ उन्हीं लोगोंमें अधिक पाया जाता है जिनमें शायद ही कोई सद्गुण होता हो। यह वह घास है जो ऊसर ज़मीनमें उगती है। —सूबीज

दोषोंमें सबसे बड़ा दोष लोभ अर्थात् जहाँ चाहिए वहाँ खर्च न करना है। —अज्ञात

लोभसे बुद्धि नष्ट होती है, बुद्धि नष्ट होनेसे लज्जा नष्ट होती है, लज्जा नष्ट होनेसे धर्म नष्ट होता है और धर्म नष्ट होनेसे धन नष्ट होता है। —अज्ञात

[व]

वक्त

एक मिनट देरके बजाय तीन घंटे पहले पहुँचना अच्छा। —शेक्सपियर

ज़िन्दगी कितनी ही छोटी हो, वक्तकी बर्बादीसे और भी छोटी बना दी जाती है। —जॉन्सन

वक्ता

बिना किसी महान् उद्देश्यसे सरशार हुए न कभी कोई वक्ता हुआ न होगा न हो सकता है। —ड्राइडन

वक्ता बननेके लिए दो बातें ज़रूरी हैं: अच्छी सामग्री और अच्छा ढंग। —जे फ्लेमिंग

विरोधीको उत्तर देते समय विचारोंको तरजीह दो, शब्दोंको नहीं।
—कोल्टन

वक्ता अपनी गहराईकी कमीको लम्बाईसे पूरी करते हैं।
—मोण्टेस्क्यू

जो वाक्पटु तो नहीं है मगर जिसका अन्तर किसी प्रबल विश्वाससे सरशार है वक्ता है।
—एमर्सन

जो शूर नहीं है वह भला वक्ता नहीं हो सकता।
—एमर्सन

जो वक्ताके शब्दोंकी ध्वनिकी अपेक्षा उस वक्ताका ही अधिक तौरसे निरीक्षण करता है, उसे शायद ही कभी निराशा मिलती हो।
—लैवेटर

वक्ता वह नहीं जो कि सुन्दर बोलनेवाला हो बल्कि वह जिसका अन्तरंग किसी विश्वाससे सरशार हो।
—एमर्सन

वक्तृता

तुम ऐसी वक्तृता दो कि जिसे दूसरी कोई वक्तृता चुप न कर सके।
—तिरुवल्लुवर

देखो जो लोग अपने ज्ञानको समझाकर दूसरोंको नहीं बता सकते वे उस फूलकी तरह हैं जो खिलता है मगर सुगन्ध नहीं देता।
—तिरुवल्लुवर

ऐ शब्दोंका मूल्य जाननेवाले पवित्र पुरुषो, पहले अपने श्रोताओंकी मानसिक स्थितिको समझ लो, फिर उपस्थित जन-समूहकी अवस्थाके अनुसार अपनी वक्तृता आरम्भ करो।
—तिरुवल्लुवर

रणक्षेत्रमें खड़े होकर बहादुरीके साथ मौतका सामना करनेवाले लोग तो बहुत हैं मगर ऐसे लोग बहुत ही थोड़े हैं जो बिना डरे हुए जनताके सामने रंगमञ्चपर खड़े हो सकें।
—तिरुवल्लुवर

देखो। जो वक्तृता मित्रोंको और भी घनिष्ठताके सूत्रमें बाँधती है और दुश्मनोंको अपनी तरफ आकर्षित करती है बस वही यथार्थ वक्तृता है।
—तिरुवल्लुवर

वज्रमूर्ख

वह वज्रमूर्ख होना चाहिए जो अपनी मूर्खतासे भी कुछ नहीं सीख सकता। —हेयर

वन्दनीय

जो सदा प्रसन्न रहते हैं जिनके हृदयमें दया है जबानमें अमृत है और जो परोपकार-परायण हैं वे किसके वन्दनीय नहीं हैं? —नीति

वफ़ादार

हमें वफ़ादार न समझ जो तेरे तमाम वचनों और कामोंकी तारीफ़ करें बल्कि उन्हें जो कृपाकर तेरे अपराधोंपर झिड़कें।

—सुकरात

वतन

वतन वह दर्पण है जिसमें हर कोई अपनी झलक दिखाता है।

—गोटे

वतन ही ईश्वरत्व है। —स्वामी रामतीर्थ

ऐसे जियो कि मरनेपर मुसलमान तुम्हारी लाशको आबे-ज़मज़मसे धोवें और हिन्दू गङ्गा तटपर जलावें। —अज्ञात

वर्तमान

यदि हम अपने विचारों और इच्छाओंकी जाँच करें तो हम उन्हें भूत और भविष्यसे ओतप्रोत पायेंगे। —पास्कल

भविष्यके लिए सबसे अच्छा इन्तज़ाम वर्तमानका यथाशक्य सुबनाना है। —हार्डिंग

भूतका अफ़सोस न करो भविष्यकी फ़िक्र न करो बुद्धिमान लोग वर्तमानमें कार्यरत रहते हैं। —अज्ञात

भूत और भविष्य सबसे अच्छा लगता है, वर्तमान सबसे बुरा।

—शेक्सपियर

वाचालता

जिसको बोलते रहने जानेकी बीमारी एक बार गिरफ्त कर लेती है वह कभी शान्त नहीं बैठ सकता। नहीं, बजाय इसके कि वह न बोले वह मार्गपर आदमी लायेगा कि वे उसे सुनें। —[illegible]

वाणी

जो वाणी सत्यको सँभालती है उस वाणीको सत्य सँभालता है। —विनोबा

वाणी मनकी परिचायिका है। —सेनेका

श्रुति-प्रिय शब्दोंकी मधुरताका अनुभव कर लेनेके बाद भी मनुष्य क्रूर शब्दोंका व्यवहार करना क्यों नहीं छोड़ता? —तिरुवल्लुवर

वे शब्द जो कि सहृदयतासे पूर्ण और क्षुद्रतासे रहित होते हैं इह लोक और परलोक दोनों जगह काम पहुँचाते हैं। —तिरुवल्लुवर

देखो, जो ऐसी वाणी बोलता है कि जो सबके हृदयको आह्लादित कर दे, उसके पास दुःखोंको बढ़ानेवाली दरिद्रता कभी न आयगी। —तिरुवल्लुवर

वाणीसे निकले हुए एक असंयत शब्दको एक रथ और चार घोड़े भी वापिस नहीं ला सकते। चीनी-कहावत

वाणीसे आदमीकी औकात और बुद्धिका पता लग जाता है। —अरबी कहावत

गर्मीको ठंडा करनेमें एक नम्र शब्द एक बाल्टी पानीसे ज्यादा काम करता है। —कहावत

वाद-विवाद

बुद्धिमानको मूर्खसे मित्रसे गुरुसे व अपने प्रियजनोंसे वाद विवाद नहीं करना चाहिए। —नीति

किसी भी बातपर वाद-विवाद बढ़ा कि मनका सन्तुलन नष्ट हुआ। —विवेकानन्द

वाद-विवादमें हठ और गर्मी मूर्खताके पक्के प्रमाण हैं। —मॉण्टेन

वाल्दैन

ईश्वरके बाद तेरे वाल्दैन। —पैन

अपने बच्चोंको पढ़ाओ तब माँ-बापकी क़द्र होगी कि तुम्हें कितनी मेहनत और खर्चसे पढ़ाया। —हितोपदेश

वाहवाही

जब लोग आदमी तुम्हारी वाहवाही करें तो गम्भीर होकर पूछो—'मुझसे क्या अपराध बन गया'; और जब निन्दा करें तो—'क्या भलाई।' —कोल्टन

वासना

उस आदमीसे बढ़कर रास्तेसे भटका हुआ और कौन है जो अपनी ख्वाहिश (वासना) के पीछे चलता है ? —क़ुरान

कामनाओंके रहते सपनेमें भी सुख नहीं मिल सकता। बिना भगवान्के भजनके वासनाएँ नहीं मिट सकतीं। —रामायण

निस्सन्देह मुझे अपने बन्दोंके लिए जिस बातका सबसे अधिक डर है वह है विषय-वासना और महत्त्वाकांक्षा। विषय-वासना मनुष्यको सत्यसे हटा देती है और महत्त्वाकांक्षामें पड़कर मनुष्य परलोकको भूल जाता है। —हज़रत मुहम्मद

विकार

विकारोंकी वृद्धि अथवा वृत्तिमें ही आत्माका कल्याण है ऐसी कल्पना करना महाअज्ञान है… विकार रोके नहीं जा सकते अथवा उन्हें रोकनेमें नुकसान है यह कथन ही अत्यन्त अहितकर है।

—गाँधी

विकारी विचार भी आत्माकी बीमारी है। इसलिए हम सब विकारी विचारसे बचते रहें। —गाँधी

विकार आगकी तरह है—वह मनुष्यको घासकी तरह जलाता है। —गाँधी

विकास

तुम मोमबत्ती क्यों बने हुए हो जब कि तुम सूर्य बन सकते हो! —अज्ञात

इस संसारके उद्यानमें किसी एकान्त स्थान झुरमुटके मध्य एक पौधेका पुष्प बनूँ, खिलूँ और वहीं मुरझा जाऊँ। —अज्ञात

विघ्न

क्षुद्र लोग विघ्नके डरसे काम शुरू ही नहीं करते, मध्यम जन विघ्न आनेपर बीचमें ही छोड़ देते हैं, लेकिन उत्तम लोग विघ्न आनेपर भी शुरू किया हुआ काम नहीं छोड़ते। —नीति

विचार

बिना विचारके सीखना मेहनत बर्बाद करना है; बिना सीखे हुए विचार करना ख़तरनाक है। —कन्फ्यूशियस

तुम जैसे विचारोंकी दुनियामें विचरते हो उसमें तुम कभी-न-कभी अपने जीवनको मूर्तिमान् देखोगे। —अज्ञात

जो सोचता है कि मैं जीव हूँ वह सचमुच जीव ही रहता है; जो अपनेको ब्रह्म मानता है वह सचमुच ब्रह्म हो जाता है—जो जैसा सोचता है वैसा बन जाता है। —रामकृष्ण परमहंस

किसीके विचारोंको हमने ग्रहण तो किया, पर पचा न सके, *बुद्धिने उनका ग्रहण कर लिया पर उन्हें हज़म नहीं किया*—उनपर अमल नहीं किया तो वह एक प्रकारका अजीर्ण हो है; बुद्धिका विलास है। विचारोंका अजीर्ण मानसिक अजीर्णसे कहीं बुरा है। भोजनके अजीर्णके लिए तो दवा है पर विचारोंका अजीर्ण आत्माका विनाश करता है। —गाँधी

विचार चाहे पुराना हो और बहुत बार पेश किया जा चुका हो लेकिन आखिरकार वह उसका है जो उसे बेहतरीन तरीकेसे पेश करे।

—लॉवेल

आदमी किसी विचारकी खातिर जान दे देंगे परन्तु उसका विश्लेषण न करेंगे। —जे ब्राउन

मनुष्य अपनी परिस्थितियोंको स्वतन्त्रतः नहीं चुन सकता, लेकिन वह अपने विचारोंको चुन सकता है और इस तरह परोक्ष रूपसे किन्तु यकीनी तौरपर अपनी परिस्थितियोंका निर्माण कर सकता है।

—जेम्स ऐलन

विचार-शून्यता हमारे ज़मानेकी प्रधान सार्वजनिक आपत्ति है।

—रस्किन

कणभर वैज्ञानिक-विचार मन-भर अज्ञानपूर्ण उत्साहसे बढ़कर है।

—रेयर्ड

महान् विचार जब वे कार्यरूपमें परिणत हो जाते हैं तब महान् कृतियाँ बन जाते हैं। —हैज़लिट्

अन्तरात्मा या भावनाके विषयमें पहले विचार सर्वोत्तम हैं समस्त-शरीर मामलोंमें अन्तिम विचार सर्वोत्तम हैं। —रॉबर्ट हॉल

विचारसे अधिक ठोस चीज़ ब्रह्माण्डमें नहीं है। —एमर्सन

अपने विचारोंको अपनी ज़बान न बनाओ। —शेक्सपियर

भौतिक शक्तिसे आध्यात्मिक बढ़कर है; विचार दुनियापर शासन करते हैं।

—एमर्सन

उधार लिये हुए विचार उधार लिये हुए पैसेकी तरह उधार लेनेवालेके सिर्फ़ कंगालपनके परिचायक हैं। —लेडी ब्लेसिंग्टन

जो मनमें है वही हाथ भी आयगा—इन्तज़ार कीजिए।

—अज्ञात

विचार अलबत्ता पेटपर निर्भर हैं ताहम जिनके बेहतरीन पेट हैं बेहतरीन विचारक नहीं हैं। —वाल्टेयर

विचार हैं वे साधन जो सभ्यताको बदलते हैं। वे क्रान्तियाँ पैदा करते हैं। बहुतसे बमोंकी अपेक्षा एक विचारमें ज्यादा डायनामाइट है।
—बिशप विन्सेण्ट

विचार आत्माका दूसरा नाम है। —स्वामी रामतीर्थ

अगर किसी आदमीके मनमें बुरे विचार हैं तो उसपर दुःख इसी तरह आता है जैसे बैलके पीछे पहिया। अगर कोई पवित्र विचारोंमें लीन रहता है तो उसके पीछे आनन्द ठीक उसी प्रकार आता है जैसे उसका साया। —अज्ञात

आदमी सदा याद रखे कि अपनी जेबमें कागज पेंसिल रखे और अच्छे विचारोंको तुरन्त लिख डाले। जो अनायास आते हैं वे अक्सर सबसे ज्यादा कामके होते हैं। उन्हें सँभालकर रखना चाहिए, क्योंकि वे बार-बार नहीं आते। —बेकन

मनुष्यमें जैसे विचार उत्पन्न होते हैं, वैसे ही वह काम कर सकता है। —अरविन्द घोष

कर्म सरल है विचार कठिन है। —गेटे

अच्छे विचारोंपर यदि अमल न किया जाय तो वे अच्छे स्वप्नोंसे बढ़कर नहीं हैं। —एमर्सन

विचारक

जिसे उचित-अनुचितका विचार है वही वास्तवमें जीवित है; पर जो धर्म-अधर्मका ख्याल नहीं रखता उसकी गिनती मुर्दोंमें की जायगी। —तिरुवल्लुवर

सम्यक्-दर्शी निस्सन्देह दुर्लभ है परन्तु सम्यक्-विचारक उससे भी अधिक दुर्लभ है। —एच टी बक्ले

जब ईश्वर किसी विचारकको इस धरतीपर छोड़ देता है तो सावधान रहो। उस वक्त तमाम चीज़ें ख़तरेमें हैं। —एमर्सन

विद्वत्ता

संसारके महान् व्यक्ति अक्सर बड़े विद्वान् नहीं रहे और न बड़े विद्वान् महान् व्यक्ति हुए हैं। —होम्स

विद्वत्ताका अभिमान सबसे बड़ा अज्ञान है। —जेरेमी टेलर

विद्वान्

यदि विद्वान् लोग विद्याको अपमानसे सुरक्षित रखते तो विद्या भी उन्हें अपमानसे सुरक्षित रखती, और विद्वान् लोग यदि लोगोंके हृदयोंमें विद्याका सिक्का बैठाते तो विद्या भी विद्वानोंका सिक्का जमा देती।
—एक यति

एक दिनमें हज़ार बार शोककी ओर सौ बार भयकी ओर मूर्ख पुरुष जाता है। विद्वान्के लिए शोक और भय कुछ नहीं। —महाभारत

विद्वान् देखता है कि जो विद्या उसे आनन्द देती है, वह संसारको भी आनन्दप्रद होती है और इसीलिए वह विद्याको और भी अधिक चाहता है। —तिरुवल्लुवर

जो मूर्खोंके सामने विद्वान् दिखना चाहते हैं वे विद्वानोंको मूर्ख दिखेंगे। —क्विंट

विद्वान् आदमी ज्ञानके हौज़ हैं स्रोत नहीं। —नार्थकोट

विद्वान् वे हैं जो अपने ज्ञानपर अमल करते हैं। —कुरान

विद्वान् ही विद्वान्के परिश्रमको जान सकते हैं। बाँझ औरत प्रसव-वेदना क्या जाने? —अज्ञात

विनय

धर्मका मूल विनय है, उसका परम रस-फल मोक्ष है, विनयके द्वारा ही मनुष्य बड़ी जल्दी शास्त्रज्ञान तथा कीर्ति प्राप्त करता है और अन्तमें निःश्रेयस मोक्ष भी। —भ० महावीर

बन्धनको तोड़नेवाली प्रत्येक वस्तु पथ्य है, शेष सब अपथ्य। विवाह बन्धनको तोड़नेके बजाय उसे और अधिक कस देता है। केवल एक ब्रह्मचर्य ही मनुष्यके बन्धनको मर्यादित करके उसे ईश्वरार्पित जीवन बितानेके लिए शक्ति प्रदान करता है।
—गांधी

आज हम जिसे विवाह कहते हैं वह विवाह नहीं, उसका आडम्बर है। जिसे हम भोग कहते हैं वह अनाचार है।
—गांधी

व्यभिचार भी व्यभिचारित हो गया है एक चीज़से वह है—विवाह।
—नीत्शे

विवाहित

पशुजीवनमें दूसरी बात हो सकती है लेकिन मनुष्यके विवाहित जीवनका यह नियम होना चाहिए कि कोई भी पति-पत्नी बिना आवश्यकताके प्रजोत्पत्ति न करें और बिना प्रजोत्पादनके हेतुके सम्भोग न करें।
—गांधी

विवेक

आत्माके लिए विवेक वैसा ही है जैसे शरीरके लिए स्वास्थ्य।
—रूसो

विवेक मैं तेरे प्रमुख शासनको 'स्वस्ति' कहती हूँ, और हमेशा, हमेशा अनुगमन करूँगी।
—श्रीमती बार्बौल्ड

हंस दूध निकाल लेता है और उसमें मिले हुए पानीको छोड़ देता है।
—कालिदास

विवेक-भ्रष्टोंका सौ-सौ तरहसे पतन होता है।
—भर्तृहरि

आत्मगौरव, नम्रता और विवेक शायद ही कभी साथ-साथ मिलते हों।
—हैली

मर्दोंका भार बच्चोंका पालन और स्त्रियोंकी ज़िन्दगी सदा डरती हुई रहती है।
—शिलर

कोई भी बात हो, उसमें सत्यको मूलमें जाकर देखा ही विवेकका काम है। —तिरुवल्लुवर

क्रोध और दुर्गन्ध ईर्ष्या और प्रतिशोध विवेकको नष्ट कर देते हैं। —टिम्सन

बुद्धि और भावनाका समन्वय माने 'विवेक'। —विनोबा

विवेकको शान आते भी ऐसे काम करनेमें है जिनकी मरते वक्त इच्छा रहे। —जेरेमी टेलर

सच्चा विवेक इसमें है कि हम सर्वोत्तम साधनसे साध्यको जानें और सर्वोत्तम करके साध्यको करें। —हम्फ्री

उच्च विवेक, उच्च आनन्द है। —यंग

भावुकता एक क्षणिक वेग है तूफान है, बाढ़ है, विवेक सतत समान प्रवाह है। —प्रसाद

यद्यपि विवेक मनको स्वच्छन्दतासे नहीं विचरने देता है, किन्तु उसे बुराईसे बचाकर सन्मार्गमें लगा देनेवाला भी वही है। —प्रसाद

विवेक न सोना है न चाँदी न शोहरत न दौलत न तन्दुरुस्ती न ताक़त, न ख़ूबसूरती। —प्लुटार्क

आत्मतत्वका विचार ही विवेक है। —स्वामी रामतीर्थ

बुद्धि परीक्षण करने बैठती है परन्तु विवेक निरालससे ही राज़ी रहती है। —पासविएर

विवेकका पहला काम मिथ्याको पहिचानना है दूसरा सत्यको जानना। —प्रसाद

जो विवेकसे काम करता है वह ईश्वरविषयक उत्तम काम करता है। —एरिस्टटल

विवेकी

नियम हो सबसे बड़े विद्वान् सबसे बड़े विवेका नहीं होते।

—रैबिलर

आज़ाद कौन है ? विवेकी जो अपनेको वशमें रख सकता है ।
—होरेस

विवेकका दावा करता है तो तू विवेकी है यह समझता है कि तू उसे पा गया तो तू बेवकूफ है ।
—रूमी

जल्दीसे विवेकी बन । चालीस बरसकी उम्रमें भी जो बेवकूफ है, वह सचमुच बेवकूफ है ।
—मीस्केन

विश्राम

धीमा काम विश्राम है । हर सच्चा काम विश्राम है ।
—स्वामी रामतीर्थ

विश्राम ! क्या विश्राम करनेके लिए तमाम 'अनन्त' नहीं पड़ा हुआ है ?
—ब्राउन

उद्योगका परिवर्तन ही विश्राम है इसमें बहुत सत्य है । —गाँधी

विश्व

विश्व रामका शरीर है ।
—स्वामी रामतीर्थ

विश्वास

न तो अविश्वासीका विश्वास न करे और विश्वासीका भी बहुत विश्वास न करे क्योंकि विश्वाससे उत्पन्न हुआ भय मूल सहित नष्ट कर देता है ।
—नीति

जब तुम ईश्वरके प्यारे बन जाओगे तभी वह तुम्हें संपूर्ण सन्तोष देगा । उसका विश्वास छोड़कर महलमें न पड़ना ।
—जुनून

विश्वासके तीन लक्षण हैं—सब चीजोंमें ईश्वरको देखना, सारे काम ईश्वरकी ओर नजर रखकर ही करना और हरएक हालतमें हाथ पसारना तो उस सर्वशक्तिमान्‌के आगे ही ।
—जुनून

किसीका भी विश्वास न करनेवाले दुर्बल मनुष्य भी बलवानोंके बन्धनमें नहीं फँसते, किन्तु विश्वास करनेवाले बलवान् पुरुष भी दुर्बलोंके बन्धनमें फँसकर मारे जाते हैं ।
—नीति

'मैं भूल गया' यह कभी मान्य बहाना नहीं है। —डॉक्टर [illegible]

विज्ञ

जिस प्रकार जीभ चखते ही स्वाद पहचान लेती है, उसी प्रकार विज्ञ पुरुष मुहूर्तमात्रमें ज्ञानियोंसे धर्म और ज्ञान पा लेता है। —बुद्ध

विज्ञान

जो मनुष्य यह सोचता है कि विज्ञान और धर्ममें कोई वास्तविक विरोध है उसे या तो विज्ञानका बहुत कम ज्ञान है या वह धर्मसे बहुत अनजान है। —प्रोफेसर हेनरी

विज्ञान चीजोंके इस सिरेमें मशगूल है उस सिरेमें नहीं। —पार्कर्स

वीतराग

जिसका राग दूर हो गया है उसके लिए घर ही तपोवन है। —[illegible]

वीतरागता

सत्य ज्ञान पानेके लिए वीतरागता नितान्त जरूरी है। वीतरागता जितनी अधिक होगी ज्ञान उतना ही अधिक पूर्ण होगा। जहाँ वीतरागताका अन्त है वहाँ सत्य ज्ञानका भी अन्त है। —सत्यभक्त

वीर

वीर पुरुषके ऊपर भाला चलाया जाय और उसकी आँख झपक भी जाय तो क्या यह उसके लिए शर्मकी बात नहीं है?

—तिरुवल्लुवर

उत्कृष्ट वक्ता हमेशा वीर होता है। —सर्न

वीर पुरुष लाखोंमें एक। —[illegible]

बुज़दिल अपनी मौतसे पहले बहुत बार मरते हैं, वीर पुरुष मृत्युका आस्वादन सिर्फ एक बार करते हैं। —शेक्सपियर

वीर पुरुष दुर्भाव नहीं जानता, शान्तिकालमें वह युद्धकी क्षतियोंको भूल जाता है और अपने घोरतम शत्रुका मैत्रीभावसे आलिंगन करता है।

—कूपर

उनको वीर समझ लिया गया क्योंकि वे डरके मारे भाग न सके।

—अज्ञात

वीरता

लोमड़ीकी तरह भाग जानेकी अपेक्षा शेरकी तरह कट! शेरके हाथमें तलवार है क्या?

—अज्ञात

अहिंसा और कायरता परस्पर विरोधी शब्द हैं। अहिंसा सर्वश्रेष्ठ सद्गुण है; कायरता बुरीसे बुरी बुराई है। अहिंसाका मूल प्रेममें है कायरताका घृणामें। अहिंसक सदा कष्ट-सहिष्णु होता है; कायर सदा पीड़ा पहुँचाता है। सम्पूर्ण अहिंसा उच्चतम वीरता है। —गाँधी

अगर कोई आदमी बहुतसे बच्चे पैदा करे और उनका पालन-पोषण करे इसमें उसकी कोई तारीफ नहीं है इसमें सच्चा पराक्रम नहीं है क्योंकि कुतियाँ और बिल्लियाँ भी बच्चे पैदा करतीं और उनकी परवरिश करती हैं। सच्ची वीरता अपना धर्मपालन करनेमें है; ऐसी वीरता अर्जुनने दिखाई थी। —रामकृष्ण परमहंस

सच्ची वीरता अर्जुनमें थी; वह जिसे अपना कर्तव्य या करने लायक काम समझता था उसे अवश्यमेव करता था। —रामकृष्ण परमहंस

वीरता पुरुषके सिरसे सँभाल लेनेमें है। —एमर्सन

वीरतामें हमारी सुरक्षा है। —एमर्सन

वीरता क्या है? निर्भय और बेधड़क होकर अपनेको बड़े-से-बड़े कष्ट और खतरेका सामना करनेके लिए तैयार रखना। —हरिभाऊ उपाध्याय

वीरांगना

जो भी मरनेके लिए तैयार है उसे कौन दुःख एक शब्द भी कह

वैयक्तिकता

अगर वैयक्तिकतामें सुख होता तो आदमियोंसे जानवर ज्यादा सुखी होते, लेकिन इन्सानका आनन्द आत्मामें रहता है मूरतमें नहीं।
—जैनेन्द्र

वोट

वोटको तौलना चाहिए, गिनना नहीं। —शिलर

ईमानदार आदमीकी वोट सारे जहानकी दौलतसे भी नहीं खरीदी जा सकती। —मिसरी

व्यक्ति

बाहरकी हर चीज व्यक्तिसे कहती है कि वह कुछ नहीं है; अन्दरकी हर चीज उसे प्रेरित करती है कि वह सब कुछ है। —होवन

समाज राष्ट्र बल्कि हर चीजसे व्यक्तिवैशिष्ट्य बढ़कर है।
—स्वामी रामतीर्थ

जो बात एक व्यक्तिपर लागू पड़ती है वही बात सारे राष्ट्रपर भी लागू पड़नी चाहिए। —विवेकानन्द

व्यक्तित्व

जो व्यक्तित्वको कुचल देह अत्याचारी है उसका नाम चाहे जो कुछ रख लिया जाय। —जे० एस० मिल

हर मनुष्य इसलिए है कि उसका अपना चरित्र हो; अद्वितीय बने और वह कर जो कोई और नहीं कर सकता। —चैनिंग

जो कुछ तुम हो तुम वही दिखलाओगे अलफाज नहीं बल्कि जब तुम कुछ न कहो। जो कुछ तुम हो तुम्हारे सर ऊपर मँडराता है और इतना गरजता है कि उसके मुकाबिले तुम जो कुछ कहते हो उसे मैं नहीं सुन सकता। —एमर्सन

व्यभिचार

किसी स्त्रीके सतीत्वको भंग करनेसे पहिले मर जाना बहुत ही उत्तम काम है। —गाँधी

जो पर-स्त्रीको कुदृष्टिसे देखता है वह मानसिक व्यभिचार करता है। —ईसा

जब आदमी ज़िनाकारी (व्यभिचार) करता है ईमान उसे छोड़ जाता है। —मुहम्मद

व्यभिचारीको इन चार चीज़ोंसे कभी छुटकारा नहीं मिलता— वैर पाप भय और कलङ्क। —तिरुवल्लुवर

ज़िना (व्यभिचार) करनेवाले मर्द या औरत हर एकको सौ कोड़ोंकी सज़ा देनी चाहिए; इस बातमें उनपर रहम खाकर अल्लाहके हुक्मको नहीं रोकना चाहिए। —क़ुरान

व्यर्थ

रोगी शरीरके लिए सुखभोग व्यर्थ हैं, हरिभक्तिके बिना जप योग व्यर्थ है। —रामायण

व्यवस्था

जब मनमें गहरी अव्यवस्था होती है हम बाहरी व्यवस्था नहीं रखते। —शेक्सपियर

व्यवहार

आध्यात्मिक व्यवहार माने स्वाभाविक व्यवहार माने शुद्ध व्यवहार माने नीतियुक्त व्यवहार। —विनोबा

दुनियाको वैसी लेकर चलो जैसी वह है न कि जैसी वह होनी चाहिए। —जर्मन कहावत

जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। दुष्टके साथ दुष्टता और सज्जनके साथ सज्जनता दिखलानी चाहिए। —विदुर

सकता है। उसकी आँखोंमें ही इतना तेज होगा कि सामने खड़ा हुआ व्यभिचारी पुरुष जहाँ-का-तहाँ ढेर हो जायेगा। —गाँधी

वृत्ति

प्रवृत्ति और निवृत्ति ये दो वृत्तियाँ सब जीवोंमें होती हैं। सबमें प्रवृत्ति रक्खो और आत्मपदमें निवृत्ति। —'साधक सहचरी'

वृत्तियोंका क्षय करना ही सब शास्त्रोंका सार है। हर एक पदार्थकी तुच्छताका विचारकर वृत्तिको बाहर जाते हुए रोकना चाहिए और उसका क्षय करना चाहिए। —प्रसाद

अपनी वृत्तिकी गुलामीसे बढ़कर कोई दूसरी गुलामी मैंने अब तक नहीं देखी। मनुष्य स्वयं अपना शत्रु है और वह चाहे तो अपना मित्र भी बन सकता है। —गाँधी

वृद्धि

जो बढ़ना बन्द कर देता है घटना शुरू हो जाता है। —एमर्सन

वेतन

वेतन-शून्य पदोंसे चोरोंकी सृष्टि होती है। —अर्नेस्ट ब्रामन

वेद

जो ज्ञानी आदमी दर्शनशास्त्रको जान गया है उसके लिए तमाम वेद वैसे ही बेकार हैं जैसे उस जगह जहाँ पानी-ही-पानी भरा हो, एक छोटा-सा कुँआ। —गीता

वैद्य

संयम और परिश्रम आदमीके दो वैद्य हैं। —रूसो

व्यायाम संयम ताज़ी हवा और काफ़ी आराम सर्वोत्तम वैद्य हैं। —प्रसाद

वैधव्य

बलपूर्वक पालन कराया गया वैधव्य पाप है। —गाँधी

वैभव

सांसारिक वैभव जो चाहता है उससे वह दूर भागता है और जो नहीं चाहता उसके पीछे-पीछे रहता है। —स्वामी रामतीर्थ

यदि तू सत्यका ही उपासक है तो दुनियाकी वैभव-विभूतियाँ तेरे सामने अपने आप आती चली जायेंगी, किन्तु तू उन्हें मुसकराकर अस्वीकार करता चला जायेगा। —हरिभाऊ उपाध्याय

धर्मका मूल्य वैराग्य है वैभव नहीं। —गाँधी

वैर

जब भगवान् विष्णु मुझमें बसते हैं कि वे सब प्राणियोंमें विहार करते हैं तो हम किससे वैर करें? —गाँधी

हिरन, मछली और सज्जन क्रमशः तिनके, जल और सन्तोषपर अपना जीवन निर्वाह करते हैं पर शिकारी, मछुवा और दुष्ट लोग अकारण ही इनसे वैर-भाव रखते हैं। —भर्तृहरि

वैराग्य

वैराग्यकी पहली अवस्थामें ईश्वरपर विश्वास उत्पन्न होता है, दूसरी अवस्थामें सहनशीलता बढ़ती है, और तीसरी अन्तिम अवस्थामें ईश्वरके प्रति प्रेम प्रकट होता है। —हातिमहासम

वैराग्य ईश्वर-प्राप्तिका गूढ़ उपाय है उसको तो गुप्त रखनेमें ही कल्याण है जो अपना वैराग्य प्रकट करते हैं उनका वैराग्य उनसे दूर भाग जाता है। —शाहशुजा

वैराग्यकी विवेकयुक्तता ही वैराग्यका रहता है। —विनोबा

श्मशान, दुःख और रोगीमें किसको विरक्ति नहीं होती? मगर सच्चा वैराग्य वह है जो अन्तरसे स्फुरित होता है और परम कल्याण तक ले जाता है। —प्रसाद

वैषयिकता

अगर वैषयिकतामें सुख होता तो आदमियोंसे जानवर ज्यादा सुखी होते; लेकिन इन्सानका आनन्द आत्मामें रहता है मांसमें नहीं। —सेनेका

वोट

वोटोंको तोलना चाहिए, गिनना नहीं। —शिलर

ईमानदार आदमीकी वोट सारे ब्रह्माण्डकी दौलतसे भी नहीं खरीदी जा सकती। —ग्रियरी

व्यक्ति

बाहरकी हर चीज़ व्यक्तिसे कहती है कि वह कुछ नहीं है; अन्दरकी हर चीज उसे प्रेरित करती है कि वह सब कुछ है। —रोवन

समाज, राष्ट्र, बल्कि हर चीजसे व्यक्तिविशेष बढ़कर है। —स्वामी रामतीर्थ

जो बात एक व्यक्तिपर लागू पड़ती है वही बात सारे राष्ट्रपर भी लागू पड़नी चाहिए। —विवेकानन्द

व्यक्तित्व

जो व्यक्तित्वको कुचले वह अत्याचारी है, उसका नाम चाहे जो कुछ रख लिया जाय। —जे॰ एस॰ मिल

हर मनुष्य इसलिए है कि उसका अपना चरित्र हो, अद्वितीय बने और वह करे जो कोई और नहीं कर सकता। —चैनिंग

जो कुछ तुम हो तुम वही सिखाओगे, जानकर नहीं बल्कि अनजाने। कुछ न कहो। जो कुछ तुम हो तुमपर हर वक्त सवार है और ऐसा गरज रहा है कि उसके खिलाफ तुम जो कुछ कहते हो उसे मैं नहीं सुन सकता। —एमर्सन

व्यभिचार

किसी स्त्रीके सतीत्वको भंग करनेसे पहिले मर जाना बहुत ही उत्तम कर्म है। —गांधी

जो पर-स्त्रीको कुदृष्टिसे देखता है वह मानसिक व्यभिचार करता है। —ईसा

जब आदमी ज़िनाकारी (व्यभिचार) करता है ईमान उसे छोड़ जाता है। —मुहम्मद

व्यभिचारीको इन चार चीज़ोंसे कभी छुटकारा नहीं मिलता— घृणा पाप भय और कलङ्क। —तिरुवल्लुवर

ज़िना (व्यभिचार) करनेवाले मर्द या औरत हर एकको सौ कोड़ोंकी सज़ा देनी चाहिए, इस बातमें उनपर रहम खाकर अल्लाहके हुक्मको नहीं तोड़ना चाहिए। —कुरान

व्यर्थ

रोगी शरीरके लिए सुखभोग व्यर्थ हैं, हरिभक्तिके बिना जप जोग श्रम है। —रामायण

व्यवस्था

जब मनमें गहरी अव्यवस्था होती है हम बाहरी व्यवस्था नहीं रखते। —शेक्सपियर

व्यवहार

आध्यात्मिक व्यवहार माने स्वाभाविक व्यवहार माने शुद्ध व्यवहार माने नीतियुक्त व्यवहार। —विनोबा

दुनियाको वैसी लेकर चलो जैसी वह है न कि जैसी वह होनी चाहिए। —अमन अदावत

जो जैसा हो उसके साथ वैसा ही व्यवहार करना चाहिए। दुष्टके साथ दुष्टता और सज्जनके साथ सज्जनता दिखलानी चाहिए। —विदुर

सद्व्यवहार प्रभावक होता है क्योंकि वह वास्तविक शक्तिका परिचायक है। —एमर्सन

आत्म-निर्भरता सद्व्यवहारका आधार है। —एमर्सन

ज़रा सोचो तुम्हारा सुख कितना ज़्यादा इस बातपर निर्भर है कि और लोग तुमसे कैसे पेश आते हैं! इस बातको ध्यानमें रखो और याद रक्खो कि उसी तरह तुम भी अपने बर्तावसे लोगोंको सुखी या दुःखी बना रहे हो। —जॉन मैरियम

यह भी एक बुद्धिमानीका काम है कि मनुष्य लोक-रीतिके अनुसार व्यवहार करें। —तिरुवल्लुवर

व्याख्यान

ऐ अपनी वक्तृतासे विद्वानोंको प्रसन्न करनेकी इच्छा रखनेवाले लोगो, ऐसा कभी भूलकर भी मूर्खोंके सामने व्याख्यान न देना। —तिरुवल्लुवर

व्यापार

सस्तेसे सस्ता खरीदना और महँगेसे महँगा बेचना' इस नियमके बराबर मनुष्यके लिए कलंकरूप दूसरी कोई बात नहीं है। —गांधी

व्यापारी

मालदारिया (बनियोंके) बाद शैतानके सबसे बड़े कारिन्दे लोग ये हैं जो व्यापारक बड़ी और निराशाओंमें विश्वासपूर्ण इतनी बमर करते हैं और दुःखी और नीच होकर जाते हैं सिर्फ़ इसलिए कि वे अपनी साख भर सकें—न कि मज़दूरी पाते शैतानकी ख़िदमत करते रहते हैं और अन्तमें ठाकर मरनेकी मौतकी हिमाकतके लिए अपना सब कुछ भी सुख और ईमानदारीको कुर्बान करते हैं। —रस्किन

व्यायाम

व्यायामसे शरीर स्वस्थ होता है काम करनेकी ताकत बढ़ती है

मन स्थिर होता है सब तरह सफलताकी शक्ति आती है, सब दोषोंका नाश होता है अलौकिक तेज होता है। —अज्ञात

व्रत

व्रत बन्धन नहीं, स्वतन्त्रताका द्वार है। —गाँधी

व्रती

व्रती जब अखण्ड व्रत धारण कर लेता है तब वह अपनी दोनों आँखोंके सामने अपनी प्रतिज्ञाको रख लेता है और तेज तलवारकी तरह कर्मक्षेत्रमें प्रविष्ट हो जाता है। —सम्राट-बिन-साहिब

[श]

शक्ति

पशुबल कभी आदमीको नहीं समझा सकता, वह उसे महज चौपाया बना देता है। —प्रेनेसन

प्रत्येक बुद्धिमान् जो कार्यशक्ति विहीन है असफल रहेगा। —सेम्पर्स

शक्ति शारीरिक क्षमतासे नहीं उत्पन्न होती, वह अजेय संकल्प (या इच्छाश) उत्पन्न होता है। —गाँधी

यह दुनिया शक्तिशालियोंकी है। —एमसन

'जहाँ धर्म वहाँ जय' यह बिलकुल सत्य है मगर धर्मके पीछे शक्ति चाहिए नहीं तो अधर्मका ही अभ्युत्थान होता है। —अरविन्द घोष

शक्तिका एक स्रोत यह है कि हम इन्तजार करना साथ ही परिश्रम करना सीखें। —अज्ञात

शक्ति कभी उपहासास्पद नहीं है। —नैपोलियन

शक्ति नम्रताके साथ रहती है। —एमर्सन

शक्तिका कण-कण कर्तव्यपालन है। —जॉन फ़ॉस्टर

इन्सानकी काम-शक्तियोंका माप नहीं हुआ न हम गुज़री हुई नज़ीरोंसे फ़ैसला कर सकते हैं कि वह क्या कर सकता है इतने कमकी आज़माइश हुई है। —थोरो

मेरा ख़याल है कि मैं शक्तिके पक्षियोंमेंसे नहीं हूँ बल्कि मैं उन अचेतन प्राणियोंके साथ हूँ जो उससे कुचले जाते हैं। —कैमार

दुनियामें सबसे शक्तिमान् मनुष्य वह है जो सबसे ज़्यादा अकेला खड़ा हुआ है। —इब्सन

जलप्रपातका आनन्द उसकी शक्तिका परिचायक है। —एमर्सन

जो शक्ति अपनी शरारतका शोर मचाती है उसपर गिरती हुई पीली पत्तियाँ और गुज़रते हुए बादल हँसते हैं। —टैगोर

ज्ञान ही शक्ति है। —विवेकानन्द

मनुष्योंकी निर्बलता ही शक्ति-सम्पन्नोंकी उद्धतताका आमन्त्रण करती है। —एमर्सन

शक्ति बिना शिव शव-तुल्य है। —अज्ञात

अपनी ख़ुदकी शक्तिपर हम विश्वास कर रहे हों तो शायद हम भटक न होंगे। किन्तु ईश्वरकी शक्तिपर विश्वास करें तो हमें अँधेरेमें भी प्रकाश दिखाई देगा। —गांधी

शक्ति दुरित नहीं है। —जॉन ब्राइट

शत्रु

अगर हम अपने शत्रुओंकी गुप्त आत्म-कहानियाँ पढ़ें तो हमें प्रत्येकके जीवनमें इतना दुःख और शोक भरा मिलेगा कि फिर हमारे मनमें उनके लिए ज़रा भी शत्रुभाव नहीं रहेगा। —अज्ञात

दुःख और शोक ये दोनों ही शत्रु हैं। —अज्ञात

इन तीन बातोंको अपना परम शत्रु समझो—धनका लोभ लोगोंसे मान पानेकी लालसा और लोक-प्रिय होनेकी आकांक्षा। —अबु उस्मान

आदमीका खुद अपनेसे बड़ा कोई दुश्मन नहीं है। —पेट्रार्क

शत्रुता

जिन्दगी थोड़ी है। मैं उसे शत्रुता बनाये रखने या अपराधोंकी यादमें नहीं गुजारना चाहता। —ब्राउट

शब्द

नर्म शब्द सख्त दिलोंको जीत लेते हैं। —अँग्रेजी कहावत

कोई वक्ता या लेखक तबतक कदापि सफल नहीं होता जबतक वह अपने शब्दोंको अपने विचारोंसे छोटा बनाना न सीख ले। —एमर्सन

शब्द पत्तियोंकी तरह हैं और जब उनकी सर्वाधिक बहुलता होती है तो उनके नीचे समझदारीका फल शायद ही कभी मिलता हो।

—पोप

शरण

हे प्रभु ये कम्बख्त आँखें और यह भूखा पेट तो बहुत जुल्म करते हैं इनसे छुटकारा पानेके लिए मैं तेरी शरण आया हूँ। —फ्रांसिस

इस जगत्में अपने लिए मैंने आश्रय-स्थान खोजा, पर वह कहीं भी न मिला। —बुद्ध

जिसने भगवान्की शरण ली है उसके कदम नहीं डगमगाते।

—रामकृष्ण परमहंस

अपने लिए स्वयं दीपक बनो। अपनी ही शरण लो। आलोककी भाँति सत्यका आश्रय लो। —बुद्ध

शरणागति

सर्वात्मा शरणमें सर्वभावसे जाओ—उसीकी कृपासे परम शान्ति मिलती और शाश्वत धाम प्राप्त होता है। —गीता

शराफत

जाहिलाना और भद्दे लफ्ज भूलकर भी शरीफ आदमीकी जबानसे नहीं निकलेंगे। —तिरुवल्लुवर

सच्ची शराफत अपरिचित होती है। —शेक्सपियर

शान्ति और प्रसन्नता शराफतकी अलामत है। —एमर्सन

शरीर

शरीर तेरा नहीं; तुझे सौंपी गई ईश्वरकी वस्तु है। अतः उसकी रक्षाके लिए तुझे अवश्य समय देना चाहिए। —गाँधी

ऐ शरीरके सेवक, तू कबतक इसकी सेवामें लगा रहेगा! क्या तू उस चीज़से लाभ उठाना चाहता है जिसमें बाधा ही बाधा है?

—अबुल-फतह-बुस्ती

अरे यह चमड़ी क्या ऐसी चीज़ है कि लोग अपनी इज्जत बेचकर भी इसे बचाये रखना चाहते हैं। —तिरुवल्लुवर

बुद्धिमान् लोग जानते हैं कि यह जिस्म तो मुसीबतोंका निशाना है—हदफ़-ए-मसाइब है। इसलिए जब उसपर कोई आफ़त आ पड़ती है तो वे उसकी कुछ परवाह नहीं करते। —तिरुवल्लुवर

शरीर-रक्षण

मैं शरीरके रक्षणका दातार नहीं केवल मात्र उपदेशका दाता हूँ।

—भगवान् महावीर

शरीर-सुख

'शरीरको सुखी रखना धर्म नहीं, इतिकर्तव्यता है' ऐसा भ्रम जिनको उत्पन्न हो गया हो तो समझना चाहिए कि वह मनुष्य पतनोंमें जानेके मार्गपर चल पड़ा है। पशु अक्सर बीमार नहीं पड़ते, उनका स्वास्थ्य अक्सर खराब नहीं होता, क्या इसलिए उन्हें उच्च कोटिके प्राणी कहा जायगा? —विवेकानन्द

शर्म

'इस वक्त मत शरमाओ' एक प्रसिद्ध हरैक्लियनने शराबखानेसे निकलकर आते हुए अपने एक जवान रिश्तेदारसे मिलनेपर कहा 'शरमानेका वक्त वह था जब तुम अन्दर गये थे।' —अज्ञात

शर्मिन्दा

आदमियोंको बदमाशियाँ करते देखकर मुझे कभी आश्चर्य नहीं होता लेकिन उसे शर्मिन्दा न होते देख मुझे अक्सर आश्चर्य होता है।

—स्विफ्ट

शहीद

मृत्यु नहीं, मृत्युका कारण शहीद बनाता है। —नेपोलियन

शादी

अच्छी बीवीके साथ शादी ज़िन्दगीके तूफ़ानमें बन्दरगाह है, बुरी बीवीके साथ, बन्दरगाहमें तूफ़ान। —सेन

किसीने एक क्वारे महात्मासे पूछा कि आप शादी क्यों नहीं कर लेते? बोले एक मन तो मेरा मन है दूसरा मेरी बीवीका होगा। दो मनोंको सँभालना मुझसे बन नहीं। —अज्ञात

सुकरातसे जब एक नवयुवकने पूछा कि वह शादी करे या नहीं तो उसने जवाब दिया 'करोगे तो पछताओगे, न करोगे तो पछताओगे।'

—सुभाष

शादीके पहले अपनी आँखें खूब खुली रखो। शादीके बाद आधी बन्द। —फ्रैंकलिन

शादी ज़रूर करना! अच्छी बीवी मिली तो खुशी होगे, और ख़राब तो तत्वज्ञानी। यह भी क्या ख़राब है? —सुकरात

मनुष्यकी शान्तिकी कसौटी समाजमें ही हो सकती है, हिमालयकी चोटीपर नहीं। —गाँधी

जो निर्बलतासे डरता है और लोगोंके संगसे खुश होता है वह अपनी शान्ति खोता है। —[illegible]

पहले स्वयं शान्त बन तभी औरोंमें शान्तिका संचार कर सकता है। —टॉमस केम्पी

विपत्तिको सह लेनेमें असमर्थ नहीं, असमर्थ है वैसी हालतमें भी शान्त रहनेमें। —[illegible]

शान्ति उत्तम है। मगर उस अवसरपर शान्ति अच्छी नहीं जब कि अत्याचारके तौरपर तू धूपमें बिठाया जाय। —[illegible]

जीवन और व्यवहारकी समरूपतासे मनको शान्ति मिलती है। —अज्ञात

जो न तो लोगोंको खुश करनेकी लालसा रखता है न उनके नाखुश होनेसे डरता है वही शान्तिका आनन्द लेता है। —कैम्पिस

शान्त रहो, सौ वर्ष बाद यह सब एक हो जायेगा। —एमर्सन

शान्तको शान्ति शायद ही कभी न मिलती हो। —शिलर

यदि बुराई करके तू ईश्वरका गुनहगार बन चुका है तो लोक समाजमें अपनेको निर्दोष सिद्ध करके तू आन्तरिक शान्ति कैसे पा सकता है? —अज्ञात

पहले प्रेम, फिर त्याग, तब शान्ति। —अज्ञात

बकना बड़ा स्वादिष्ट होता है—दिनभर बकता रहता है। वैसा ही सुननेका स्वाद होता है। जिसे न कुछ कहना है, न कुछ सुनना वही शान्ति पाता है। —दीनानाथ

अगर तुम्हें अपनेमें ही शान्ति नहीं मिलती तो बाहर उसकी तलाश व्यर्थ है। —[illegible]

शान्ति सुखका सबसे सुन्दर रूप है। —चैनिंग

मेरी शान्ति और मेरे विनोदका रहस्य है मेरी ईश्वरकी सत्तापर अचल श्रद्धा। मैं जानता हूँ कि मैं कुछ कर ही नहीं सकता हूँ। मुझमें ईश्वर है, वह मुझसे सब कुछ कराता है तो मैं कैसे दुःखी हो सकता हूँ? यह भी जानता हूँ कि जो कुछ मुझसे कराता है मेरे भलेके ही लिए है। इस भावसे भी मुझे खुश रहना चाहिए। —गांधी

शान्ति ठीक वहाँसे शुरू होती है जहाँ महत्वाकांक्षाका अन्त हो।
—यंग

जहाँ मन हिंसासे मुड़ता है वहाँ दुःख अवश्य ही शान्त हो जाता है।
—बुद्ध

जहाँ वासना है वहाँ शान्ति नहीं, जहाँ शान्ति है वहाँ वासना नहीं।
—भागवत

तुम्हें शान्तिका आनन्द मिलेगा अगर तेरा दिल तुम्हे कोसे नहीं।
—थॉमस

विश्वास और शान्तिका त्याग प्राणोत्सर्ग हो जानेपर भी न करो।
—विवेकानन्द

आनन्द उछलता-कूदता आता है, शान्ति मुसकराती हुई चलती है।
—हरिभाऊ उपाध्याय

मनकी शान्ति और आनन्दका सिर्फ एक उपाय है और वह यह कि बाहरी चीज़ोंको अपनी न समझे, और सब कुछ परमात्माके हवाले कर दे।
—एपिक्टेटस

शान्ततामें एक शाही शान है। —वाशिंग्टन इर्विंग

जहाँ शान्ति, सौम्यता और सत्संगति। —शेक्सपियर

अगर शान्ति पाना चाहते हो तो लोक-प्रियतासे बचो।
—अब्राहम लिंकन

वही मर्ज़ी रखना जो ईश्वरकी मर्ज़ी है बस यही वह आराम है जो हमें विश्रान्ति देता है।
—डॉमिनिको

मूर्ख ज्ञानियोंसे कुछ नहीं सीखते, लेकिन ज्ञानी मूर्खोंसे बहुत कुछ प्राप्त करते हैं।
—इब्न [illegible]

शिक्षा

वास्तविक शिक्षाका आदर्श यह है कि हम अन्दरसे कितनी विद्या निकाल सकते हैं, यह नहीं कि बाहरसे कितना अन्दर डाल चुके हैं।
—स्वामी रामतीर्थ

शिक्षाका चरित्र निर्माण एकमात्र नहीं तो, महान् उद्देश्य अवश्य है।
—भारती

शिक्षाके मानी ये नहीं कि उन्हें वह सिखाया जाय जिसे वे नहीं जानते, उसके मानी हैं उन्हें ऐसा बर्ताव करना सिखाना जैसा बरताव कि वे नहीं करते।
—रस्किन

अगर आदमी सीखना चाहे तो उसकी हर एक भूल उसे कुछ शिक्षा दे सकती है।
—गाँधी

उन विषयोंका पढ़ना जो हमारे जीवनमें कभी काम नहीं आते शिक्षा नहीं है।
—स्वामी रामतीर्थ

शिक्षाका सही नियम या तरीका यह है कि सर्वोत्तम बातके प्रति सर्वोच्च परिश्रम करो। खराब कामोंपर कभी श्रम न गँवाओ; परन्तु बुराई या अच्छाई होनेकी समता रखनेवाली भूमिपर कोई श्रम न रखना।
—रस्किन

मुझे ज्यादा पसन्द है कि लोग मुझे सीख देते हुए मुझपर हँसें बनिस्बत इसके कि वे मुझे कुछ भी फायदा पहुँचाये बगैर मेरी तारीफ करें।
—गेटे

ज्ञानी विवेकसे सीखते हैं साधारण मनुष्य अनुभवसे मूर्ख आवश्यकतासे और पशु स्वभावसे।
—सिसरो

हर आदमीके शिक्षाका सर्वोत्तम भाग वह है जो वह स्वयं अपने लिए देता है।
—सर वाल्टर स्कॉट

विचारका ज़ेवर शील है। —अज्ञात

शुद्धता

सब शुद्धताओंमें अर्थकी शुद्धता सर्वोत्तम है; क्योंकि शुद्ध वही है जो धनको ईमानदारीसे कमाता है वह नहीं जो अपनेको मिट्टी और पानीसे शुद्ध करता है। —मनु

शुद्धि

एक मनुष्य दूसरेको शुद्ध नहीं कर सकता अपनी शुद्धि अपने ही किये होती है। —बुद्ध

मैं उसके लिए प्रेम रखता हूँ जिसका बाहर और भीतर अपने लिए शुद्ध हो। —मुहम्मद मरवानी

शुभ कार्य

तुम विजयके इतने नज़दीक कभी नहीं हो जितने जब कि तुम किसी नेक काममें हार जा जाओ। —बीचर

एक शुभ काम ईश्वरकी तरफ़ एक क़दम है। —हर्डिंग

शूर

जिस तरह एक ही तेजस्वी सूर्य सारे जगत्‌को प्रकाशित करता है, उसी तरह एक ही शूरवीर सारी पृथ्वीको पाँव तले दबाकर अपने वशमें कर लेता है। —भर्तृहरि

सच्चा शूर वह है जो दुनियाके प्रलोभनोंके बीच रहता हुआ पूर्णता प्राप्त करता है। —रामकृष्ण परमहंस

शूर समरमें करके दिखाते हैं कहकर नहीं। मगर कायर लोग मैदानमें दुश्मनको पाकर बकवास करने लगते हैं। —रामायण

शैतान

मुझे उस शख़्सपर ताज्जुब आता है जो शैतानको दुश्मन जानता है और फिर उसका कहा मानता है। —अज्ञात

शोषण

यह कहना कि हम अफ्रीकामें वहाँके निवासियोंका उद्धार करनेके लिए रहते हैं सरासर धूर्तता है। —एडन मपवर

कैसी विभूति! कैसी शानोशौकत! कैसी दौलत! परन्तु सब दूसरोंकी मेहनतमेंसे खींची हुई! —ई. कार्पेन्टर

शोहरत

जो मनुष्य मशहूर नहीं है वह सुखी है। बढ़िया कुर्ता और कमख्वाब नहीं पहनता तो अच्छा करता है। ऐसा आदमी तो चिड़ियाकी तरह ऊपर आकाशमें उड़ जाता है और इस संसारके झगड़े-झंझटका उसको पता नहीं चलता। —रामस्वरी

मैं मशहूर तो हूँ, मगर इस सूखी शोहरतसे मैं शर्मिन्दा हूँ। —रामस्वरी

भूखके समन्दर बहानेकी बनिस्बत एक आँसू पोंछनेमें ज्यादा सच्ची शोहरत है। —बायरन

श्रद्धा

मनुष्य श्रद्धामय है। जिसकी जैसी श्रद्धा है वैसा ही वह है। —गीता

नये करारमें यह वाक्य है 'तेरे दिलमें न चिन्ता रहे न गमीका भय रहे।' यह वचन उसके लिए है जो परमात्माको मानता है। —गाँधी

श्रद्धाके मानी अन्ध विश्वास नहीं है। किसी ग्रन्थमें कुछ लिखा हुआ या किसी आदमीका कुछ कहा हुआ अपने अनुभव बिना सच मानना श्रद्धा नहीं है। —विवेकानन्द

श्रद्धाका अर्थ है आत्म विश्वास, और आत्म विश्वासका अर्थ है ईश्वर पर विश्वास। —गाँधी

श्रद्धा वह चिड़िया है जो प्रकाशका अनुभव कर लेती है और अंधेरे प्रभातमें गाने लगती है। —टैगोर

जिसकी आँखोंके सामने ईश्वर दिखता है वह ज्ञानी हो गया। परन्तु मेरी पीठ पीछे ईश्वर खड़ा हुआ है इतनी श्रद्धा स्थिर हुई तो भी साधकके लिए काफी है। —विनोबा

जो जिसकी पूजा श्रद्धासे करना चाहता है परमेश्वर उसे उसीमें श्रद्धा देते हैं। जो फल उन लोगोंको प्राप्त होते हैं वे भी ईश्वर ही के ठहराये हुए हैं लेकिन उन अल्पमतियोंके वे फल नाश होनेवाले ही होते हैं। देवताओंकी पूजा करनेवाले देवताओंको पहुँचते हैं और एक परमेश्वरकी पूजा करनेवाले परमेश्वरको। —गीता

जो काम बिना श्रद्धा बेदिलीसे, किया जाय वह न इस दुनियामें किसी कामका है, न दूसरी दुनियामें। —गीता

श्रद्धासे मनुष्य क्या नहीं कर सकता? सब कुछ कर सकता है। —गाँधी

श्रद्धालु मनुष्य पहलेसे तैयारी नहीं कर रखते। पहलेसे तैयारी करती है वह श्रद्धा नहीं अथवा हो तो वह शिथिल श्रद्धा है। —गाँधी

मेरी श्रद्धा तो ज्ञानमयी और विवेकपूर्ण है। अन्ध श्रद्धा श्रद्धा ही नहीं। —गाँधी

श्रम

जो श्रमसे शर्माये वह हमेशाका गुलाम है। —अज्ञात

यह मूर्खता है कि ज्ञानी कुँओंमें डोल डालते रहें, खींचते रहें, और बिना कुछ पाये सूखे हाथ आवें। —कूपर

श्रम करनेमें ही मानवकी मानवता है। —विनोबा

श्रीमन्त

हजार आदमी देकर श्रीमन्त बनता है, कंजूस संग्रह करके रंक बनता है। —अज्ञात

प्राप्त वस्तुपर जो समाधानी है वह हमेशा प्रसन्न है। —अज्ञात

श्रेष्ठ

सबसे श्रेष्ठ मनुष्य वह है जो अपनी उन्नतिके लिए सबसे अधिक परिश्रम करता है। —सुकरात

सबको अपनी बुद्धि श्रेष्ठ मालूम होती है और अपने बच्चे सुन्दर मालूम होते हैं। —अज्ञात

जो इन्द्रियों और मनको नियममें रखकर अलिप्त रहकर कर्मेन्द्रियोंसे काम करता है वह मनुष्य श्रेष्ठ है। —गीता

श्रेष्ठता

ए तलवारके फलसे अपना मतलब रख और उसके म्यानको छोड़। मनुष्यकी श्रेष्ठताको ग्रहण कर न कि उसके वस्त्रोंको। —इब्न-उल-वर्दी

[स]

सक्रियता

दुःख है कि मैं यह जाननेके लिए जीता रहा कि आनन्दका रहस्य अपनी शक्तियोंको सक्रिय बनाये रखनेमें है। —ग्राण्ट अलार्ड

सच्चरित्रता

सच्चरित्रताका महान् नियम ईश्वरके बाद मनका आदर करता है —सेनेगर

सजा

देखो, जिस मनुष्यका हृदय कामसे पाक है वह सबके दिलोंपर हुकूमत करता है। —तिरुवल्लुवर

सच्चा भोजन वह है जो बच्चोंको और बड़ोंको खिलाकर खाया जाय। सच्चा प्रेम वह है जो वैरियोंके प्रति भी दर्शाया जाय। सच्चा ज्ञान वह है जो पाप नहीं करता। सच्चा धन वह है जो क्षय नहीं करता।

—अज्ञात

सच्चाई

अगर तुम ईश्वरके प्रति सच्चे नहीं हो, तो तुम आदमीके प्रति कभी सच्चे नहीं हो सकते। —लॉर्ड बेकन

इस झूठमें भी सच्चाईकी खासियत है जिसके फलस्वरूप सत्कार भली ही होती हो। —तिरुवल्लुवर

सच्चाई क्या है? जिससे दूसरोंको किसी तरहका जरा-सा भी नुकसान न पहुँचे उस बातको बोलना ही सच्चाई है। —तिरुवल्लुवर

अपने प्रति सच्चे रहो और फिर दुनियामें किसी और चीजकी परवा न करो। —स्वामी रामतीर्थ

सज्जन

बुरा आदमी अपने मित्रोंके प्रति जितना मेहरबान होता है भला आदमी अपने शत्रुके प्रति उससे अधिक होता है। —बिशप हॉल

पेड़ तेज धूपको अपने सरपर लेता है और शरणागतोंको शीतल छाया देता है यही सज्जनोंका भी स्वभाव होता है। —अज्ञात

जिनका चेहरा आनन्दसे खिला हुआ है जिनका हृदय दयासे भरा हुआ है जिनकी वाणी अमृतकी तरह बहती है और जिनके कार्य परोपकारके लिए होते हैं ऐसोंका कौन सत्कार न करेगा? —अज्ञात

सज्जन यदि अत्यन्त कुपित भी हो गये हों तो भी उचित तरीकेसे मनाये जा सकते हैं मगर नीच लोग नहीं। सोना सख्त है तो भी उस पिघलानेका तरीका है लेकिन घासके लिए नहीं है। —अज्ञात

सज्जन अपने स्वार्थकी अपेक्षा मित्रोंके हितार्थ काम करते हैं।

—अज्ञात

सज्जनोंका स्वभाव ही है कि वे प्रिय बोलते हैं और अकृत्रिम स्नेह करते हैं। —अज्ञात

सज्जनता

तुम्हारे बल-प्रयोगकी अपेक्षा तुम्हारी सज्जनता हमें सज्जनताकी ओर ले चलनेके लिए अधिक बलवती है। —शेक्सपियर

सतीत्व-रक्षा

मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि कोई भी स्त्री जो निडर है और जो दृढ़तापूर्वक यह मानती है कि उसकी पवित्रता ही उसके सतीत्वकी सर्वोत्तम ढाल है उसका शील सर्वथा सुरक्षित है। ऐसी स्त्रीके तेजमात्रसे पशुपुरुष चौंधिया जायेगा और शर्मसे गड़ जायेगा। —गाँधी

सत्कार

यदि तू किसी कुलीनका सत्कार करेगा तो उसका स्वामी बन जायेगा, और यदि किसी दुष्टका सत्कार करेगा तो वह तुझे दुःख देगा। —मुतनब्बी

सत्ता

शरीर-बलसे प्राप्त की हुई सत्ता मानवदेहकी तरह क्षणभंगुर रहेगी जबकि आत्म-बलसे प्राप्त सत्ता आत्माकी तरह अजर और अमर रहेगी।

—गाँधी

सत्पथ

हृदय सत्पथपर है तो न-कुछ ज्ञानकणोंकी आवश्यकता है और अगर वह कुमार्गपर है तो सारी विद्वत्तासे भी कुछ नहीं होता जाता।

—रेरिंग

सत्पुरुष

जिनके तन मन और वाणीमें पुण्यरूपी अमृत भरा है जो अपने उपकारोंसे तीनों लोकोंको तृप्त करते हैं और जो दूसरोंके परमाणु समान

गुणोंको पर्वतके समान बढ़ाकर अपने हृदयमें प्रसन्न होते हैं—ऐसे सत्पुरुष इस जगत्‌में विरले ही हैं। —भर्तृहरि

सत्पुरुष वह है जो दूसरोंकी ख़ातिर कष्ट उठाता है। —मसल

सत्य

सत्य स्वयं ही एक शक्तिमान् है और जब कभी शब्दोंके द्वारा उसको पुष्टिका प्रयत्न किया जाता है तब वह अपमानित होता है।
—गांधी

सूर्यकी किरणोंको और सत्यको किसी बाहरी स्पर्शसे बिगाड़ना असम्भव है। —जॉन मिल्टन

सत्य और प्रेम दुनियाकी सबसे अधिक शक्तिशाली चीज़ें हैं, और जब ये दोनों साथ हों तो उनका आक्रमणोंसे मुक़ाबला नहीं किया जा सकता। —कडवर्थ

स्वयं सत्य भी अपनी साख खो बैठेगा अगर ऐसे आदमी द्वारा दिया गया जिसमें उसका अंश भी नहीं है। —साउथ

मैं प्रेसीडेंट होनेकी अपेक्षा सत्यपर क़ायम रहना अधिक पसन्द करूँगा। —हेनरी क्ले

सत्य केवल गम्भीर चिन्तन-द्वारा आत्माकी गहराइयोंमें ही मिल सकता है। —अज्ञात

सत्यका प्रथम बड़ा अभिनन्दन यह है कि हम उसपर चलें।
—एमर्सन

सत्यका हमेशा विजय ही है ऐसी जिसकी सतत श्रद्धा है उसके शब्दकोषमें 'हार' शब्द ही नहीं है। —गांधी

सत्य स्थिरतासे घिरा नहीं है न अनुशासनसे परिबद्ध। काल भी सत्य ही है, काल तो सतत निरन्तर आक्षेप है। अतः स्थिरता सिद्धि नहीं गति भी आवश्यक है। जीवन अस्तित्वसे अधिक कर्म है।
—जैनेन्द्रकुमार

सत्य-प्रेमीके लिए शरीर स्त्री, पुत्र घर, धन ज़मीन तिनकेके समान बताई है। —रामायण

मनुष्य जैसी उच्च योनिको पा लेनेसे भी कोई लाभ नहीं, अगर उसमें सत्यका आस्वादन नहीं किया। —तिरुवल्लुवर

दुनिया सत्यके बलपर टिकी हुई है। 'असत्'—असत्य—के मानी हैं 'नहीं' 'सत्'—सत्य—अर्थात् 'है'। जहाँ असत् अर्थात् अस्तित्व ही नहीं है उसकी सफलता कैसे हो सकती है? और जो सत् अर्थात् 'है' उसका नाश कौन कर सकता है? बस, इसीमें सत्याग्रहका तमाम शास्त्र समाया हुआ है। —गांधी

जो सत्यको अपना पथप्रदर्शक बनाता है और कर्तव्यको अपना ध्येय वह ईश्वरकी कुदरतमें इत्मीनानके साथ विश्वास कर सकता है कि वह उसे सीधे रास्ते ले जायेगी। —पारकर

सत्य गोलमोलबातसे घृणा करता है। —गांधी

हममें जितना धैर्य और प्रेम होगा सत्य उतना ही हमपर रोशन होगा। हमारे अनुरोधोंसे सत्य हमपर कृपाकर प्रकट होता है और प्रकट होकर हमें गहनतर सत्योंकी ओर ले जाता है। —रस्किन

सत्यका टेढ़ी पॉलिसीसे और दुनियावी मामलोंकी दुरंगाइयों चालबाजियोंसे मेल बैठना कठिन है, क्योंकि सत्य प्रकाशकी तरह सीधी रेखाओंमें ही चलता है। —कास्टन

सत्यका रूप ऐसा है और उसकी छवि ऐसी है कि दिखते ही मन मोह लेता है। —ड्राइडन

सन्देहमें सज्जनके अन्तःकरणकी प्रवृत्ति ही सत्यका निर्देश करती है।
—कालिदास

सत्यकी खोज तो चाहे जहाँ भी करें अपने करें दूर करें प्रकट करें गुप्त करें। असत्-भाव कई बार हिरण्मय पात्रका काम करता है और सत्यका मुँह ढक देता है। —गांधी

तमाम गुणों और सद्गुणोंकी जड़ सत्य है। —एमर्सन

तमाम कलाओंका आधार सत्य है। —बॉनस

यह नहीं हो सकता कि तुम दुनियाके भी मज़े लो और सत्यको भी पा लो। —स्वामी रामतीर्थ

सत्यपरायण

क्या जीवन जीने लायक है? यह आपपर निर्भर है। सत्यपरायण रहिए, फिर जो कुछ आप करेंगे उसमें कमाल होगा। —जोंसी

तमाम सत्यपरायण लोग एक ही सेनाके सैनिक हैं और एक ही दुश्मनसे लड़ने चले हैं—अन्धकार और मिथ्यात्वके साम्राज्यके खिलाफ़। —कार्लाइल

विजय लाज़िमी नहीं है लेकिन सत्यपरायण होना मेरे लिए लाज़िमी है। सफलता लाज़िमी नहीं है लेकिन जो रोशनी मुझे प्राप्त है उसपर अमल करना मेरे लिए लाज़िमी है। —अ० लिंकन

सत्य-प्रेमी

सत्यप्रेमियोंके हृदयमें सत्यस्वरूप परमात्मा ऐसे सत्य प्रकट करता है जिनकी प्राप्ति दूसरोंके लिए दुर्लभ होती है। —क़ुरान

वे सत्यके सर्वोत्तम प्रेमी हैं जो अपने प्रति ईमानदार हैं, और जिसका वे स्वप्न देखते हैं, उसे कर दिखानेका साहस करते हैं। —होविक

सत्याग्रह

प्रत्येक मनुष्यके सम्मुख संकट निवारणके लिए दो पथ हैं—एक पाशविक और दूसरा आत्मबल किंवा सत्याग्रह। भारतवर्षकी कल्याण रक्षा केवल सत्याग्रह ही से हो सकता है। —गाँधी

सत्याग्रही

एक सत्याग्रही मानो ईश्वरका पूर्ण अवतार। यह संसार ऐसा अवतार निर्माण करनेकी प्रयोगशाला ही है। —गाँधी

सत्संग

स्वर्ग और मोक्षका सुख भी क्षणमात्र सत्संगके सुखकी बराबरी नहीं कर सकता। —रामायण

जिस तरह पारस पत्थरके छूनेसे लोहा सोना हो जाता है उसी तरह सत्संगति पाकर दुष्ट आदमी भी सुधर जाते हैं। —रामायण

जो सांसारिक विषयों तथा विषयी लोगोंके संसर्गसे दूर रहता है और साधुजनोंका ही संग करता है वही सच्चा प्रभु-प्रेमी है; कारण, ईश्वर-परायण साधुजनोंसे प्रीति करना और ईश्वरसे प्रीति करना एक समान है। —अर्जुन

सन्तमिलनके समान कोई सुख नहीं है। —रामायण

सत्संग बड़े भाग्यसे मिलता है। उससे बिना प्रयासके भवभ्रम मिट जाता है। —रामायण

सदाचार

अगर आप मनोवाञ्छित फल चाहते हैं तो आप और गुणोंमें कष्ट और इससे वृथा परिश्रम न करके, केवल सच्चरित्रतारूपी भगवतीकी आराधना कीजिए। वह दुष्टोंको सज्जन, मूर्खोंको पण्डित, शत्रुओंको मित्र, गुप्त विषयोंको प्रकट और हलाहल विषको तत्काल अमृत कर सकती है। —भर्तृहरि

मैं तुम्हें बहिश्तका विश्वास दिलाता हूँ; एक, सच बोलो सच; दूसरे वचन करो तो उन्हें पूरा करो; तीसरे किसीकी अमानतमें ख़यानत न करो; चौथे, बदचलनीसे बचो; पाँचवें आँखें सदा नीची रखो और छठे, किसीपर अत्याचार न करो। —मुहम्मद

सद्गुण

सद्गुण मेरे साथ बीमार नहीं पड़ते और न वे मेरी क़ब्रमें ही दफ़न होंगे। —एमर्सन

पैसेके लिए सद्गुण न बेच। —नैतिक सूत्र

सत्संग

स्वर्ग और मोक्षका सुख भी क्षणमात्र सत्संगके सुखकी बराबरी नहीं कर सकता। —रामायण

जिस तरह पारस पत्थरके छूनेसे लोहा सोना हो जाता है उसी तरह सत्संगति पाकर बुरे आदमी भी सुधर जाते हैं। —रामायण

जो सांसारिक विषयों तथा विषयी लोगोंके संसर्गसे दूर रहता है और साधुजनोंका ही संग करता है वही सच्चा प्रभु-प्रेमी है; कारण ईश्वर-परायण साधुजनोंसे प्रीति करना और ईश्वरसे प्रीति करना एक समान है। —जुन्नुन

सन्तमिलनके समान कोई सुख नहीं है। —रामायण

सत्संग बड़े भाग्यसे मिलता है। उससे बिना प्रयासके भवभ्रमण मिट जाता है। —रामायण

सदाचार

अगर आप मनोवाञ्छित फल चाहते हैं, तो पाप और दुर्गुणोंसे बच और इससे वृथा परिश्रम न करके, केवल सच्चिदानन्दमयी भगवतीकी आराधना कीजिए। यह दुष्टोंको सज्जन मूर्खोंको पण्डित शत्रुओंको मित्र गुप्त विषयोंको प्रकट और हलाहल विषको तत्काल अमृत कर सकती है। —भर्तृहरि

मैं तुम्हें पवित्रताका विश्वास दिलाता हूँ; एक, जब बोलो सच; दूसरे, जब वादे करो तो उन्हें पूरा करो; तीसरे किसीकी अमानतमें ख़यानत न करो; चौथे बदचलनीसे बचो; पाँचवें आँखें सदा नीची रखो और छठे, किसीपर अत्याचार न करो। —[illegible]

सद्गुण

सद्गुण मेरे साथ बीमार नहीं पड़ते और न वे मेरी क़ब्रमें ही दफ़न होंगे। —एमर्सन

पैसेके लिए सद्गुण न बेच। —नैतिक [illegible]

सद्गुणशील शाश्वत आनन्द पाता है। —सादी

सद्गुणशीलता शान्त और आनन्दमयी है। —कनफ्यूशियस

सद्गुणशीलता

सद्गुणशीलता निर्भीक होती है और नेकी कभी अचानक नहीं होती। —शेक्सपियर

सद्गुरु

जिसका मन अत्यन्त पवित्र है, जो बिलकुल निरपेक्ष वृत्तिका है, जिसको मान या अपनी [illegible] आकांक्षा नहीं है वही सद्गुरु है। —विवेकानन्द

सद्गृहस्थ

सद्गृहस्थ वही है जो अपने पड़ोसीकी बीबीके सौन्दर्य और आचरण की परवा नहीं करता। —तिरुवल्लुवर

सद्व्यवहार

सद्व्यवहार-शीलताकी कसौटी यह है कि हम दुर्व्यवहारको खुश-सूरतीसे बर्दाश्त कर सकें। —[illegible]

विद्वानोंकी शोभा सद्व्यवहारसे है। —[illegible]

सन्त

सन्त मोक्ष मार्ग है और कामी भव-बन्धन। —रामायण

नेता यह देखता है कि वह मेरे काम आयेगा या नहीं। सन्त यह देखता है कि वह दुखी है या नहीं। —हरिभाऊ उपाध्याय

नेताकी एक पार्टी होती है सन्त अकेला होता है। नेताका बल उसका दल होता है सन्तका बल उसका निर्मल हृदय होता है। —हरिभाऊ उपाध्याय

सन्त भी युगोंका [illegible] होता है। —एमर्सन

सन्तपुरुष यथार्थ शिक्षा न देते हों तो भी उनकी सेवा करनी चाहिए। क्योंकि उनकी सहज बातें भी शास्त्र तुल्य हैं। —भर्तृहरि

सेवा यह देखता है कि इससे मेरी आज्ञाका पालन किया या नहीं, सन्त यह देखता है कि इससे मेरी बात बँची है या नहीं।

—हरिभाऊ उपाध्याय

सन्त लोगोंकी आपत्तियोंको दूर करनेके लिए सत्पुरुष ही समर्थ होते हैं जैसे कि कीचड़में डूबे हुए हाथीको हाथी ही बाहर निकाल सकते हैं।

—भरत

साधुओंका बड़प्पन इसीमें है कि वे अपने साथ बुराई करनेवालोंके साथ भी भलाई ही करें।

—रामायण

सन्तोष

वर्तमानको छोड़कर विपत्तिको भी सम्पत्ति मानना ही सच्चा सन्तोष है।

—सुमेर

अगर आजकी वृत्ति तुम्हारा कठिन हो, तो सन्तोष कर जाता है कि समयका फेर कल तक जाता रहेगा।

—[illegible]

जब सन्तोष धन आता है तो सब धन धूलके समान हो जाते हैं।

—तुलसीदास

भाग्यमें जितना धन लिखा है वह मरुस्थलमें भी मिल जायेगा, उससे ज्यादा सोनेके सुमेरु पर्वतपर भी नहीं मिल सकता। इसलिए दीन याचक न बनो। देखो घड़ा समुद्र और कुएँसे समान ही जल ग्रहण करता है।

—भर्तृहरि

यदि तुम ईश्वरके प्रीति-पात्र होना चाहते हो तो ईश्वर जिस स्थितिमें रखना चाहता है उसमें सन्तुष्ट होना सीखो। —हातिम हासम

सन्तोषके बिना किसीको शान्ति नहीं मिल सकती। —रामायण

जो कुछ हमारे पास हो उससे सन्तोष मानना ठीक है लेकिन हम जो कुछ हैं उससे सन्तुष्ट हो रहना कभी नहीं। —मैकिन्टाश

जब कि सब कामोंके रास्ते बन्द हो जाते हैं, उस वक्त सन्तोष ही तमाम रास्तोंको बिना शक अच्छी तरह खोल देता है।

—मुहम्मद-बिन-बशीर

प्रेम दुःख लाता है, सन्तोषमें आनन्द ही आनन्द है ।

—रामकृष्ण परमहंस

सन्देश

हर बच्चा इस सन्देशको लेकर आता है कि ईश्वर अभी मनुष्यसे निराश नहीं हुआ है । —टैगोर

सन्देह

जिसे सन्देह है उसे कहीं ठिकाना नहीं । उसका नाश निश्चित है । इस रास्ते चलता हुआ भी नहीं चलता है क्योंकि वह जानता ही नहीं कि मैं कहाँ हूँ । —गाँधी

सन्देह सदा दोस्तीका हत्यारा है । —ऑगस्टाइन

सन्मार्ग

सन्मार्ग तो परमात्माकी सतत प्रार्थनासे, अतिशय नम्रतासे, आत्मनिरीक्षणसे आत्म त्याग करनेको हमेशा तैयार रहनेसे मिलता है । इसकी साधनाके लिए ऊँचेसे ऊँचे प्रकारकी निर्भयता और साहसकी आवश्यकता है । —गाँधी

सफलता

संसारमें लाखों ऐसे स्त्री-पुरुष हैं जो निश्चित और निर्धारित मार्गपर न चल सकनेके कारण दुःखी रहते हैं, और करोड़ों ऐसे हैं जो जीवनभर कभी अपना मार्ग निर्धारित ही नहीं कर पाते । इन दोनों ही कोटियोंके मनुष्य सफलतासे सदा कोसों दूर रहते हैं । —जेम्स ऐलेन

सफलता इसमें नहीं है कि चूकें कभी न हों, बल्कि इसमें कि एक ही चूक दुबारा न हो । —एच डब्ल्यू शा

उस आदमीके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है जो इरादा कर सकता है और फिर उसपर अमल कर सकता है, सफलताका यही नियम है ।

—मीराबो

सफलताको खो देनेका निश्चित तरीका अवसरको खो देना है।
—चेपिन

अपने विचारोंका द्रोही न बन, अपने प्रति ईमानदार रह, अपने विचारोंपर अमल कर तू अवश्य कामयाब होगा। सच्चे और सरल हृदयसे प्रार्थना कर तेरी प्रार्थनाएँ जरूर सुनी जायँगी।

—रामकृष्ण परमहंस

अपनी इच्छाओंको अपने काममें घुला दो। सफलता अवश्य मिलेगी। अन्यथा हो नहीं सकता। सफलता मिलनेसे पहले सच्ची इच्छा तुम्हारे काममें भर जाना चाहिए।
—स्वामी रामतीर्थ

समानके पास समान चीज आती है। अपने अन्दर अभी यदि ईश्वरका आनन्द भरा रखो तो सफलताका आनन्द तुम तक खिंचकर आना ही चाहिए।
—स्वामी रामतीर्थ

पहले परमात्माका नाम लो, तब अपना काम शुरू करो। ऐसा करनेसे असफलताकी गुंजाइश नहीं रहेगी।
—दयाराम

सफलता वह सुन्दरी है जिसे बहुतसे लोग प्यारसे चाहते हैं पर वह आलिङ्गन उसीका करती है जो उत्साहके अतिरेकसे मुक्त रहकर दृढ़तापूर्वक प्रयत्नशील रहता है और शान्तिपूर्वक अध्यवसायमें जुटा रहता है।
—[illegible]

सफलताके योग्य बन, वह तेरी हो जायेगी।
—वैदिक सूत्र

कुछ भी चाहो, अगर ईमानदारीसे कोशिश करोगे तो जरूर कामयाब होगे।
—फारसी कहावत

साधारण बुद्धिवाला भी यदि असाधारण अध्यवसाय करे तो सब कुछ पा सकता है।
—बक्सटन

सफलता मिलती है समझदारी और परिश्रमसे। यदि तुझे चाहना है तो दोनोंको अपना।
—माघ

निर्मल अन्तःकरण, कार्य-तत्परता और नम्रतासे सफलता मिलती है।
—तिरुवर

सभा

जिस सभामें अधर्म धर्मको घायल कर दे और अगर सभासद् उसके कांटेको न दूर करें तो निश्चय जानो कि उस सभामें सब सभासद् ही घायल पड़े हैं। —मनुस्मृति

मनुष्यको योग्य है कि सभामें प्रवेश न करे, यदि सभामें प्रवेश करे तो सत्य ही बोले। यदि सभामें बैठा हुआ भी असत्य बातको सुनकर मौन रहे अथवा सत्यके विरुद्ध बोले वह मनुष्य अति पापी है।

—मनुस्मृति

सभ्यता

जो भद्रपुरुष समाजसे जितना ले उतना ही समाजको वापिस कर दे, वह साधारण भद्र-पुरुष कहा जाता है। जो सभ्य-पुरुष समाजसे जितना ले उससे अधिक उसे लौटा दे, वह विशिष्ट भद्र-पुरुष है और जो करोड़ आमदनी अथवा समस्त जीवन समाजमें लगा दे और बदलेमें समाजसे कुछ भी न चाहे, वह असाधारण सभ्य एवं भद्र-पुरुष कहलाता है लेकिन पश्चिमका सभ्य पुरुष (!) समाजसे लेता ही लेता है देनेकी तो वह इच्छा ही नहीं करता। —जार्ज बर्नार्ड शा

समझ

मूर्खको समझ देना मुश्किल है। —भागवत

वह विकृत समझ, जिससे आदमी बिना मतलब या परिणामको समझे एक ही काममें अन्धेकी तरह लिपटा रहता है और उसे ही सब कुछ समझ लेता है तामस समझ है। —गीता

समझदार

समझदार आदमीको चाहिए कि बिना किसी तरहके लगावके सबका भला चाहते हुए ही सब काम करे। —गीता

वे लोग समझवाले हैं जो परमेश्वरसे लौ लगाये हुए एक दूसरेसे हमेशा उसका ज़िक्र करते हैं आपसमें समझते-समझाते हैं और इस तरह एक दूसरेके साथ मिलकर सन्तोष और आनन्द पाते हैं। —गीता

समझदार आदमीको चाहिए कि अपनी आत्माको शुद्ध करे और फिर सबके साथ अपने फ़र्ज़ोंको पूरा करते हुए सबकी आत्माके अन्दर परमात्माकी आराधना (पूजा) करे। —गीता

समझदार आदमी पहले ही से जान जाता है कि क्या होनेवाला है मगर मूर्ख आगे आनेवाली बातको नहीं देख सकता।

—तिरुवल्लुवर

समझदार आदमियोंको चाहिए कि जो कम-समझ लोग किसी भी 'रास्ते' पर चलकर नेक कामोंमें लगे हुए हैं उनकी समझको डाँवाडोल न करें बल्कि उन्हें उसी तरह नेक कामोंमें लगाये रखें। —गीता

समझदारी

बोलनेमें समझदारीसे काम लेना वाक्पटुतासे अच्छा है। —बेकन

जीवनमें ऐसे प्रसंग और वस्तु-स्थितियाँ आती हैं जबकि बुद्धिमत्ता इसीमें होती है कि अति बुद्धिमान् न बने। —शिलर

समता

सम होना माने अनन्त होना विश्वमय हो जाना।

—अरविन्द घोष

समग्र विश्वजीवनपर आत्माका प्रभुत्व स्थापन करनेकी पहली सीढ़ी समता है। —अरविन्द घोष

जब अन्तःकरणमें अक्षुब्ध शान्ति सदैव विराजमान रहे तब समझना कि समता प्राप्त हो गई। —अरविन्द घोष

सम भाव ही समस्त धर्मसाधनाका सार है। —विवेकानन्द

ईश्वरके मर्त्योंमें एक सीमा तक ही समता होती है। पूर्ण समता जिसमें प्रकट होती है वह परमेश्वर है किन्तु वह तो एक ही है। सब

एकांगम मनुष्यमें भी समता अपूर्ण होगी। अतः मतभेद और विरोध होगा उसमें दुःख माननेका कारण नहीं। असत् विषमताका परिणाम है। अपना धर्म रोज़ समताका अंश प्राप्त करनेका होना चाहिए। ऐसा करनेसे विषमता असह्य मालूम होनेके बजाय सह्य और कुछ अर्थोंमें सुन्दर भी प्रतीत होगी। —गाँधी

समता ही परमेश्वर है। —गीता

समय

आम लोग वक़्तको महज़ गुज़ार देना चाहते हैं मनस्वी उसका सदुपयोग करना। —शोपेन हार

आज जो कोई व्यक्ति रोज़ाना एक निश्चित समयपर सोता है और अगर वह चालीस बरस तक सात बजेके बजाय पाँच बजे उठा करे, तो इससे उसकी उम्रमें क़रीब दस बरसका गोया इज़ाफ़ा हो जायेगा। —डॉडरिज

मेरा विश्वास करो जब कि मैं कहता हूँ कि वक़्तकी हिफ़ाज़त भविष्यमें तुम्हें ऐसे प्रचुर लाभके मुआवज़ा देगा जो तुम्हारे सबसे अधिक आशापूर्ण स्वप्नोंसे भी अधिक होगा, और उसकी बरबादी वैसे हा तुम्हारी कल्पनासे कहीं अवगणनाओंसे भी अधिक बौद्धिक और नैतिक पतनमें तुम्हें विलीन कर देगी। —ग्लैडस्टन

जबतक समय अनुकूल नहीं है तबतक दुश्मनको कन्धेपर लिये रहना चाहिए, लेकिन जब मौक़ा आवे तब उसे पत्थरपर घड़ेकी तरह फोड़ दे। —नीति

कोई ऐसी चीज़ नहीं बना सकता जो मेरे गुज़रे हुए वर्षोंको फिरसे बना दे। —डिकेन्स

समय सत्यके सिवाय हर चीज़को कुतर खाता है। —हक्सले

चिराग़ गुल हो जानेपर तेल डालना, चोरके भाग जानेपर सावधान होना, जवानी बीत जानेपर स्त्री-सहवास, पानी बह जाने पर बाँध बाँधना ये सब व्यर्थ हैं; समयपर ही काम करना चाहिए। —अज्ञात

लोगोंको सताकर जो सम्पत्ति इकट्ठी की जाती है वह आक्रन्द-ध्वनि के साथ ही विदा हो जाती है; मगर जो धर्म-द्वारा संचित की जाती है वह बीचमें क्षीण हो जानेपर भी अन्तमें खूब फलती-फूलती है।

—तिरुवल्लुवर

अधर्मसे इकट्ठी की हुई सम्पत्तिसे तो सदाचारीकी दरिद्रता कहीं अच्छी है। —तिरुवल्लुवर

सम्बन्ध

सज्जनोंके जोड़े हुए सम्बन्धोंका परिणाम कष्टदायक नहीं होता।

—कालिदास

जन्मसे पहिले किसीके साथ सम्बन्ध नहीं था, मरनेके बाद नहीं रहता, तो फिर बीचमें ही अपना सम्बन्ध किस तरह हो?

—अज्ञात

हमारा दूसरे लोगोंके साथ जो सम्बन्ध होता है, प्रायः उसीसे हमारे सभी शोक और दुःखोंका जन्म होता है। —शोपेनहार

सम्यक् आजीविका

मनुष्यके पेट देनेमें ईश्वरका हेतु है। प्रामाणिकतासे पेट भरना यह बात जब मनुष्य समझ लेगा तब समाजके बहुतसे दुःख और पातक नष्ट हो जायेंगे। —विनोबा

सम्यक् चारित्र

जब कोई सही काम कर रहा हो तो उसे पता तक नहीं लगता कि वह क्या कर रहा है लेकिन गलत कामका हमें हमेशा भान रहता है।

—गेटे

सम्यक् ज्ञान

सम्यक्ज्ञान दरिद्रताकी भी भावी शक्तिको नष्ट कर देता है।

—गा

सहायता

दूसरोंके सहारे जीनेवाला हमेशा दुःखी रहता है। —प्रसाद

जो सिर्फ ईश्वरका सहारा लेते हैं वे मनुष्यका सहारा नहीं लेते, चाहे वे मरे हों चाहे ज़िन्दा। यदि तुमने इसे पचा लिया, तो तुम कभी शोक नहीं करोगे। —गाँधी

जब कि इन्सान तमाम बाहरी सहारा अलग कर देता है और अकेला खड़ा होता है तभी मैं देखता हूँ कि वह मज़बूत है और बाज़ी ले जायेगा। —एमर्सन

संकल्प

जो आदमी इरादा कर सकता है उसके लिए कुछ भी असम्भव नहीं है। —एमर्सन

पचीस सच्ची और अच्छीसे अच्छी चतुराई एक साहस है। —नैपोलियन बोनापार्ट

संकीर्णता

संकीर्ण मनवाला आदमी [illegible] तरह होता है, वह बस सीधा सामने देखता है दायें-बायें कुछ नहीं। —एमन

संक्षिप्तता

जो लोग अपने मनकी बात थोड़ेसे चुने हुए शब्दोंमें कहना नहीं जानते, वास्तवमें उन्हींको अधिक बोलनेकी लत होती है।

—[illegible]

संक्षिप्तता बुद्धिमानीकी जान है। —शेक्सपियर

संक्षिप्तता, भाषण-पटुताका महान् भाग है। —सिसरो

संगठन

जब दुष्ट लोग गुट बना लें तो भलेमानसोंको भी संगठित हो जाना चाहिए, वर्ना एक-एक करके, उन सबकी बलि चढ़ जायगी। —बर्क

संगति

जिसका बाह्य जीवन उसके आन्तरिक जीवनके समान नहीं है उसका संसर्ग मत करो। —कुन्दन

किसका संग किया जाय ? जिसमें 'तू-मैं' का भाव न हो। —कुन्दन

मिलने-जुलनेकी भूख तीव्र होती है, मगर उसमें समझदारी और किफ़ायतसे काम लेना चाहिए। —इमर्सन

चन्दन शीतल है। चन्दनसे चन्द्रमा अधिक शीतल है। चन्द्र और चन्दनसे भी साधु पुरुषोंकी संगति अधिक शीतल होती है। —प्रभात

हीन मनुष्योंकी संगतिसे बुद्धि हीन हो जाती है समान मनुष्योंके संगसे समान और उत्तम मनुष्योंके संगसे उत्तम। —प्रभात

हम अपने साथियोंकी संगतिसे कुछ नहीं पाते : हम एक दूसरेको तुच्छ बननेमें सहायक होते हैं। मैं हमेशा उन लोगोंकी संगतिका अभिलाषी रहता हूँ जो मुझसे बेहतर हैं। —लैम

मुझे बताइए आपके संगी साथी कौन हैं और मैं बता दूँगा कि आप कौन हैं। —गोटे

दुष्टकी संगति करोगे तो ठगे जाओगे; मूर्ख शुभेच्छु होनेपर भी अहितकर ही होगा; कृपण अपने स्वार्थके लिए दूसरोंको अवश्य हानि पहुँचायगा; नीच आपत्तिके समय दूसरेका नाश करेगा। —शान्तिक

मूर्खोंकी संगतिमें ज्ञानी ऐसा है जैसे अन्धोंके साथ कोई खूबसूरत लड़का। —सादी

जिसकी संगतिमें—फिर वह व्यक्ति हो समाज हो या संस्था हो—अपनेको मालूम हो कि वहाँ दूषित कामोंका प्रचार करना अपना धर्म है। गुनाहका अथवा पाप बढ़ता हो तो उसका त्याग—असहयोग—धर्म है। यह शाश्वत सिद्धान्त है। —गाँधी

मूर्खोंकी संगतिमें रहनेवाला अवश्य बरबाद होगा। —कहावत

गरम लोहेपर पड़नेसे जलकी बूँदका नाम भी नहीं रहता, वही कमलके पत्तेपर पड़नेसे मोती-सी हो जाती है, और वही स्वाति नक्षत्रमें सीपमें पड़नेसे मोती हो जाती है। अधम मध्यम और उत्तम गुण प्रायः संसर्गसे ही होते हैं। —भर्तृहरि

नीच लोगोंकी संगतिसे मनुष्यकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है, मध्यम लोगोंकी संगतिसे वे मध्यम होते हैं और उत्तम लोगोंके सहवाससे उत्तम होते हैं। —महाभारत

संगति बदमाशोंकी संगतिने मेरा नाश कर डाला है।

—शेक्सपियर

संगीत

संगीत पैगम्बरोंकी कला है वही वह कला है जो कि आत्माकी अशान्तियोंको शान्त करती है। —ल्यूथर

भावावेशमें हृदय संगीतसे उत्तेजित होता है ईश्वरको खोजनेके लिए व्याकुल बनता है। जो ईश्वरभक्तिकी वृद्धिके लिए संगीत सुनता है उसे तो उससे लाभ ही होता है। परन्तु जो संगीत इन्द्रियोंकी तृप्तिके लिए सुना जाता है उससे तो ईश्वर विरोधी भाव और विषय-प्रेम ही की वृद्धि होती है। —गुन्गुन

समस्त कलाओंमें संगीतका भावोंपर अधिकतम प्रभाव पड़ता है।

—नैपोलियन

संचय

दो शख्स फिजूल तकलीफ उठाते हैं, और बेमतलब मशक्कत करते हैं। एक तो वह जो धन संचय करता है परन्तु उसे भोगता नहीं, दूसरा वह जो ज्ञानार्जन करता है किन्तु तदनुसार आचरण नहीं करता।

—ग़ी

बातचीतका पहला अंग है सत्य, दूसरा समझदारी, तीसरा खुश-मिज़ाजी और चौथा हाज़िर जवाबी। —टैम्पिल

वह संगीत जो अधिकतम गहराई तक पहुँचता है, और तमाम बुराइयोंको दूर करता है हार्दिक सम्भाषण है। —एमर्सन

किसीके बोलनेके प्रवाहमें टोक उठनेसे बढ़कर बदतहज़ीबी नहीं हो सकती। —लौके

बातचीत होते ही विद्वानोंमें परस्पर एक प्रकारका सम्बन्ध हो जाता है। —अश्वघोष

संयम

जब मनुष्य अपनी इन्द्रियोंको वश कर लेता है, तभी उसकी बुद्धि स्थिर होती है। —महाभारत

संयम हीन स्त्री या पुरुषको गया-बीता समझिए। —गाँधी

जो अपने मुँह और ज़बानपर क़ाबू रखता है, वह अपनी आत्माको मुसीबतोंसे बचा लेता है। —बाइबिल

जो अपने ऊपर शासन नहीं करेगा, वह हमेशा दूसरोंका ग़ुलाम रहेगा। —गेटे

सौन्दर्य शोभा पाता है शीलसे और शील शोभा पाता है संयमसे। —कवि मान्दारम

संशय

संशयात्मा नाशको प्राप्त होते हैं। —अज्ञात

जो निष्पाप है और स्वार्थ-रहित है, वह संशयी नहीं हो सकता। —अज्ञात

संसर्ग

महात्माओंके संसर्गसे किसकी उन्नति नहीं होती? कमलके पत्तेपर पड़ी हुई पानीकी बूँद मोतीकी सुन्दरता पाती है। —अज्ञात

संसार

संसार क्या ? जो ईश्वरसे तुम्हें परे रखे। —कुरान

अचेत आत्माओंके लिए संसार खेल-तमाशोंकी जगह है परन्तु विचारवान्के लिए कर्तव्यका क्षेत्र है जहाँ जीवन पर्यन्त मन और इन्द्रियोंसे जूझना पड़ता है। —सादी

संसार महापुरुषोंकी नाट्यशाला है। —हरिभाऊ उपाध्याय

संसारके सुख क्षण-भंगुर हैं। कोई सुखी नहीं कहा जा सकता जो सुखी न मरे। —सोलन

संसारका संसर्ग जिसको या तो तोड़ता है या उसे कठोर बनाता है। —चैम्फर्ट

संस्कृति

दौलतमन्द पैसा देकर काम करा सकता है, ज्ञान-संस्कृति नहीं खरीद सकता। —स्माइल्स

संस्कृति ही सुखकी शत्रु है। वही सबसे अधिक सुखी है जो कुछ भी पढ़ा-लिखा नहीं है। —महात्मा टॉलस्टॉय

भौतिक संस्कृति अनाज-गुदामकी तरफ दौड़ती है, परिपूर्ण संस्कृति आदर्शकी ओर। —लोवेल

कठिनसे कठिन बातको सरलसे सरल तरीकेसे कहना उच्च संस्कृतिका प्रमाण है। —एमर्सन

साहस

जो यह कहते हैं कि साहस और धर्मका विरोध है वे या तो साहससे वह समझते हैं जो उसने कभी नहीं कहा या धर्मसे वह समझते हैं जो उसने कभी नहीं सिखाया। —पोप

साक्षात्कार

जीवनमात्रकी सुन्दरतम सेवा ही साक्षात्कार है। —गांधी

जिसे आत्माका साक्षात्कार हो गया है उसके लिए सारी दुनिया नन्दनवन है, सब वृक्ष कल्पवृक्ष हैं सब जल गंगाजल हैं। उसकी क्रिया पवित्र रहती है, उसकी वाणीमें वेदोंका सार रहता है। उसके लिए सारी पृथ्वी काशी है और उसकी सारी चेष्टा परमात्मामय है।

—प्रज्ञाद

वास्तविक साक्षात्कारमें एक ईश्वरमें ही स्थिति होनेके कारण अहंभाव और ममताका नाश होता है। ऐसी हालतमें तुम अपने शरीर और जीवको नहीं देख पाओगे। —जुनैद

साथी

धीरज धर्म मित्र और नारी इन चारोंकी परीक्षा आपत्तिकालमें हो जाती है। —रामायण

ईश्वर ही हमारा निरन्तर साथी है। —गाँधी

सादगी

सादगीमें एक सच्ची शान है जो कि बुद्धि-वैचित्र्यसे बहुत ऊँची है। —पोप

सूरज प्रकाशकी सादा पोशाकमें है। बादल तड़क-भड़कसे सुशोभित हैं। —टैगोर

सत्य, शक्ति, सौन्दर्य रहते हैं सादगीमें। —टैगोर

सादगी कुदरतका पहला क़दम है, और कलाका आख़िरी।

—बेली

स्त्रियोंमें सादगी मनोमुग्धकारी लावण्य है उतनी ही दुर्लभ जितनी कि वह आकर्षक है। —डी क्रिना

मेरे भाइयो अहंकारी और ठाठवालोंके सामने अपनी सादगीकी सफ़ेद पोशाक पहिनकर खड़े होनेमें शर्माओ मत। —टैगोर

चरित्रमें व्यवहारमें शैलीमें सब चीज़ोंमें बेहतरीन कमाल है— सादगी। —लाँगफेलो

अगर कोई सच्चे अधिकारी मिल जाय तो साधुलोग उनसे गुह्यतत्त्व भी नहीं छिपाते। —रामायण

जिसमें सारी मानव-जातिके लिए प्रेम-भाव व परमसहिष्णुता पैदा होना ही साधुताकी सच्ची कसौटी है। —विवेकानन्द

शैतान काँप उठता है जब वह दुर्बलसे दुर्बल साधुको भी अपने घुटनोंके बल पड़ा देखता है। —कौपर

साधु पुरुषसे किसीका अहित नहीं होता। —रामायण

सच्चा साधु वह है जो समस्त संसारसे सीखता है। —पूर्वी कहावत

साधु-जीवन

साधु-जीवनसे ही आत्म-शान्तिकी प्राप्ति सम्भव है। यही इहलोक और परलोक, दोनोंका साधन है। साधु-जीवनका अर्थ है सत्य और अहिंसामय जीवन संयमपूर्ण जीवन। भोग कभी धर्म नहीं बन सकता। धर्मकी जड़ तो त्यागमें ही है। —गांधी

साधुता

ऐ भाई, अपने भाईको कलेजेसे लगा, जहाँ साधुता है वहीं ईश्वरकी शान्ति है। —व्हिटियर

हमारी साधुता बड़ी कमज़ोर और अपूर्ण होनी चाहिए अगर उसमें भीखका डर नहीं होता। —फ़ैनेलन

भोगोपभोगोंके त्यागमें आनन्द मिलने लगना साधुताका लक्षण है। —शास्त्रमत

दुनियामें दो चीज़ें हैं जो एक दूसरेसे बिल्कुल नहीं मिलतीं। धन सम्पत्ति एक चीज़ है और साधुता-पवित्रता बिल्कुल दूसरी चीज़। —तिरुवल्लुवर

साधु-शीलता

वह भला है जो दूसरोंकी भलाई करता है। अगर वह उस भलाईके एवज़ कष्टमें पड़ जाता है तो वह और भी भला है; अगर वह उन्हींके

हाथों कष्ट पाता है जिसकी उसने भलाई की थी तो वह नेकीकी उस ऊँचाईपर पहुँच गया जहाँ कर्मोंकी वृद्धि हो सकती और अधिक शोभित कर सकती है; अगर उसे प्राणोत्सर्ग करना पड़े तो उसकी साधुशीलता पराकाष्ठाको पहुँच गई—वहाँ तो वीरताकी परिपूर्णता हो गई।

—ब्रूयेर

साफ़-दिल

साफ़ दिल किसी इल्जामसे नहीं डरता। —[illegible]

ख़ुशमिज़ाज और दिलके साफ़ आदमीका काम कभी नहीं रुकता।

—[illegible]

ख़ुशक़िस्मत हैं वे जिनका दिल साफ़ है क्योंकि उन्हें परमात्माके दर्शन ज़रूर होंगे। —ईसा

सामयिक

सुधार होनेके लिए हमारे शब्दों और कामोंको सामयिक होना चाहिए। —एमर्सन

सामञ्जस्य

कोई भी अपने सिवाय किसीके साथ पूर्ण सामञ्जस्य स्थापित नहीं कर सकता। —शोपेनहोर

साम्राज्यवाद

साम्राज्यवाद बनाती सौदागरी और व्यापारिक सर्वोत्तम अड्डा है और उसकी उद्देश्यपूर्तिके साधन हैं ईसा और हीरोंमें अर्ध-शिक्षित उत्साही डाकूरे।

—सी आर एस रेवर

सावधान

कुछ लोग हैं जिनसे सावधान रहना चाहिए। वे हैं धनवान् आदमी, कुत्ता साँप और शराबी। —रामकृष्ण परमहंस

सावधानी

मिन्नर्षाका हर कदम सिखलाता है कि कितनी महाविपत्तकी जरूरत है। —गेटे

साहस

क्या ठीक है?—यह देख लेना और फिर उसे न करना साहसके अभावका द्योतक है। —कन्फ्यूशियस

शारीरिक साहस जो तमाम खतरोंको तुच्छ मानता है आदमीको एक तरहसे वीर बनाता है, और नैतिक साहस, जो तमाम रायजनीको तुच्छ गिनता है आदमीको दूसरी तरहसे वीर बनाता है। लेकिन महान् पुरुष होनेके लिए दोनों लाजिमी हैं। —कोल्टन

अपना भार दूसरेपर न डालना और बिना संकोच दान करना वही विवेकीका काम है। —जुन्नैद

साहस यानी कि आदमीकी सारी समझदारी उसके साथ रहे। —एमर्सन

साहसी

वही सच्चा साहसी है जो कभी निराश नहीं होता। —कन्फ्यूशियस

साहसी बनो साहसी बनो, और सदा साहसी बनो। —स्पेन्सर

साहित्य

साहित्यका पतन राष्ट्रके पतनका द्योतक है। —गेटे

साहित्य वह है जिसे चरस खींचता हुआ किसान भी समझ सके और साक्षर भी समझ सके। —गाँधी

सिद्ध

देह तन्मयता—बद्ध, देहव्यतिरिक्तता—बद्ध, देहातीतता—मुक्त, देहरहितता—सिद्ध। —विनोबा

सब जग सुखी रहे ऐसी इच्छा रख करनेसे हम खुद सुखी होते हैं।
—विवेकानन्द

सुख-सन्तोष बाहरकी चीज़ोंसे नहीं अन्दरके गुणोंसे मिलता है।
—अज्ञात

कृत्रिम सुखको ज्ञानियोंने दुःख ही बतलाया है। जो सुख अकृत्रिम है अनादि है अनन्त है वही सुख है।
—अज्ञात

जीवन जितना ही स्वाभाविक व समतोल होगा उतना ही सुख मिलेगा।
—हरिभाऊ उपाध्याय

यह एक महान् सत्य है अपरिवर्तनीय और अकाट्य कि हमारा सुख—भौतिक, आध्यात्मिक और शाश्वत—एक बातमें है और वह यह कि हम परमात्माको आत्मसमर्पण कर दें और अपनेको उसके, उसमें और हमारे अन्दर कुछ भी करनेके लिए, हवाले कर दें।
—श्रीमती गियान

सुखका रास्ता निःस्वार्थता और शुभ कामनाओंमेंसे है। —अज्ञात

सुखका आधार पुण्य है और कानूनी तौरसे उसकी बुनियाद लगाई होनी चाहिए।
—कॉलेरिज

तुम्हारे सुख-दुःखका रहस्य यह है कि आया तुम यह सोच रहे हो कि और लोग तुम्हारे लिए क्या करें। या यह कि तुम औरोंके लिए क्या कर सकते हो?
—विलियम जॉर्ज

अधिकतम आदमियोंका अधिकतम सुख नैतिकतामें है। —प्रीस्टले

नदीका यह किनारा निःश्वास ले-लेकर कहता है: "सामनेके किनारेपर ही तमाम सुख है मुझे इसीका भान है"। नदीके सामनेका किनारा गहरी आह भर-भरकर कहता है: 'जगत्में जितना सुख है वह तमाम पहले ही किनारेपर है।
—टैगोर

जिस दिन मैं ईश्वरका कोई अपराध नहीं करता वही दिन मेरे लिए सुखका दिन है।
—हातिम आसम

किसीको केवल सुख अथवा एकमात्र दुःख नहीं मिलता—दुःख और सुख रथके पहियेकी भाँति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।

—कालिदास

सिर्फ धर्म जनित सुख ही सच्चा सुख है, बाकी तो सब पीड़ा और कष्ट-मात्र है। —तिरुवल्लुवर

सुख परिग्रहके बाहुल्यसे नहीं हृदयकी निराकुलतासे बढ़ता है।

—रस्किन

हृदय कब सुखी होता है? जब हृदयमें प्रभु वास करते हैं।

—जुनैद

सुख क्या है? प्रवासमें न रहना। —भर्तृहरि

वही सबसे सुखी है चाहे वह राजा हो या किसान जो अपने घरमें शान्ति पाता है। —गेटे

सच्चा सुख बाहरसे नहीं मिलता अन्दरसे ही मिलता है। —गाँधी

जो सुख शुरूमें जहरकी तरह और आखिर अमृतकी तरह है जिससे आत्मा और बुद्धिको शान्ति मिलती है वह सुख सात्त्विक है। इन्द्रियोंका सुख जो शुरूमें अमृतकी तरह और आखिरमें जहरकी तरह है राजस सुख है। जो सुख शुरूसे आखिर तक आत्माको सिर्फ मोह और आलस्य और सुस्तीमें डाले रखता है वह तामस सुख है। —गीता

यहाँ भी मनुष्यको सुख मिल सकता है अगर वह सबसे बड़ी आपत्ति इच्छा, का ध्वंस कर सके। —तिरुवल्लुवर

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करनेमें हमारा सुख है हमारी शान्ति है, न कि जो दूसरे कहें या करें उसे करनेमें। —गाँधी

सुख-दुःख

जितनी पराधीनता उतना दुःख और जितनी स्वतन्त्रता उतना सुख। सुख-दुःखके ये ही संक्षिप्त लक्षण हैं। —मनु

सीख

हर शख्स जिससे मैं मिलता हूँ किसी न किसी बातमें मुझसे बढ़कर है। वहाँ मैं उससे सीखता हूँ। —एमर्सन

मैंने वाचालसे मौन सीखा है, असहिष्णुसे सहिष्णुता और दयाहीनसे दयालुता सीखी है। —खलील जिब्रान

सुख

जो किसीका बुरा नहीं चाहता और सबको समदृष्टिसे देखता है उसे हर तरफ सुख ही सुख मिलता है। —नीति

इन्द्रियसुख और स्वर्ग-सुख उस सुखका सोलहवाँ भाग भी नहीं है जो इच्छाओंके नाश करनेसे मिलता है। —नीति

सुखमय जीवन त्यागमय जीवन है। दूसरोंको किसी न किसी प्रकारका दुःख पहुँचाये बिना सांसारिक सुख नहीं प्राप्त हो सकता।
—हरिभाऊ उपाध्याय

गुरुके बिना ज्ञान नहीं होता, ज्ञानके बिना वैराग्य नहीं होता, वेद पुराण गाते हैं कि हरि भक्तिके बिना सुख नहीं मिल सकता।
—रामायण

सन्तोष ही सर्वोत्तम सुख है। —भारत

जीनेकी इच्छा ही सब दुःखोंकी जननी है। मरनेकी तैयारी ही सब सुखोंकी जननी है। —स्वामी रामतीर्थ

आधी दुनियाका ख्याल है कि सुख, पाने और रखने और दूसरोंकी सेवा लेनेमें है। परन्तु सुख है देने और दूसरोंकी सेवा करनेमें।
—हेनरी ड्रमण्ड

काम सरीखी व्याधि नहीं है, मोह सरीखा कोई दुश्मन नहीं है, क्रोध सरीखी आग नहीं है और ज्ञान सरीखा सुख नहीं है। —भारत

जो अकिंचन है, शान्त-दान्त-समचित्त है, सदा सन्तुष्ट-मन है उसके लिए सब दिशाएँ सुखमय हैं। —भागवत

सब लोग सुखी रहें ऐसी इच्छा रख करनेसे हम खुद सुखी होते हैं।

—विवेकानन्द

सुख-सन्तोष बाहरकी चीज़ोंसे नहीं अन्दरके गुणोंसे मिलता है।

—प्रसाद

क्षणिक सुखको ज्ञानियोंने दुःख ही बतलाया है। जो सुख अकृत्रिम है अनादि है अनन्त है वही सुख है। —प्रसाद

जीवन जितना ही स्वाभाविक व समतोल होगा उतना ही सुख मिलेगा। —हरिभाऊ उपाध्याय

यह एक महान् सत्य है आश्चर्यजनक और अकाट्य कि हमारा सुख—भौतिक आध्यात्मिक और शाश्वत—एक बातमें है; और वह यह कि हम परमात्माको आत्मसमर्पण कर दें और अपनेको उसके, उसके और हमारे अन्दर कुछ भी करनेके लिए, हवाले कर दें।

—श्रीमती [illegible]

सुखका रास्ता निःस्वार्थता और शुभ कामनाओंमेंसे है। —प्रसाद

सुखका आधार पुण्य है और कुदरती तौरसे उसकी बुनियाद भलाई होनी चाहिए। —[illegible]

दुनियामें सुख-दुःखका रहस्य यह है कि क्या तुम यह सोच रहे हो कि और लोग तुम्हारे लिए क्या करें। या यह कि तुम औरोंके लिए क्या कर सकते हो? —विलियम [illegible]

अधिकतम आदमियोंका अधिकतम सुख नैतिकतामें है। —[illegible]

नदीका यह किनारा निःश्वास छोड़कर कहता है: "सामनेके किनारेपर ही तमाम सुख है मुझे इतमीनान है"। नदीके सामनेका किनारा गहरी आह भर-भरकर कहता है: 'जगतमें जितना सुख है वह सब इस पहले ही किनारेपर है। —टैगोर

उस दिन मैं ईश्वरका कोई अपराध नहीं करता वही दिन मेरे लिए सुखका दिन है। —[illegible]

किसीको केवल सुख अथवा एकमात्र दुःख नहीं मिलता—दुःख और सुख रथके पहियेकी भाँति कभी ऊपर और कभी नीचे रहा करते हैं।
—कालिदास

सिद्ध धर्म सहित सुख ही सच्चा सुख है; बाकी तो सब पीड़ा और क्लेश-मात्र है। —तिरुवल्लुवर

सुख परिग्रहके बाहुल्यसे नहीं हृदयकी विशालतासे बढ़ता है।
—रस्किन

हृदय कब सुखी होता है? जब हृदयमें प्रभु वास करते हैं।
—कुन्नेर

सुख क्या है? प्रवासमें न रहना। —भर्तृहरि

वही सबसे सुखी है चाहे वह राजा हो या किसान, जो अपने घरमें शान्ति पाता है। —गेटे

सच्चा सुख बाहरसे नहीं मिलता अन्तरसे ही मिलता है। —गाँधी

जो सुख शुरूमें जहरकी तरह और आखिर अमृतकी तरह है, जिससे आत्मा और बुद्धिको शान्ति मिलती है वह सुख सात्त्विक है। इन्द्रियोंका सुख जो शुरूमें अमृतकी तरह और आखिरमें जहरकी तरह है राजस सुख है। जो सुख शुरूसे आखिर तक आत्माको सिर्फ मोह और आलस्य और सुस्तीमें डाले रखता है वह तामस सुख है। —गीता

यहाँ भी मनुष्यको सुख मिल सकता है अगर वह सबसे बड़ी आपत्ति इच्छा, का नाश कर सके। —तिरुवल्लुवर

जिसे हम सही और शुभ मानें वही करनेमें हमारा सुख है हमारी शान्ति है, न कि जो दूसरे कहें या करें उसे करनेमें। —गाँधी

सुख-दुःख

जितनी पराधीनता उतना दुःख और जितनी स्वतन्त्रता उतना सुख। सुख-दुःखके ये ही संक्षिप्त लक्षण हैं। —मनु

सुधार

हालातको यूँ ही छोड़ दिया जाय तो वे दुरुस्त नहीं होते।

—हक्सले

दुनियाको सुधारनेका एक ही समझदारीका तरीका है और वह यह कि अपनेसे शुरू करो।

—अज्ञात

जो अपना सुधार कर लेता है वह एक दर्जन जोशीले अज्ञानी उपदेशकोंकी अपेक्षा जनताका अधिक सुधार करता है।

—लैवेटर

जो कुछ तुम दूसरोंमें नापसंद करते हो उसे अपनेमें न रहने दो।

—स्वैट

समानपर सिर्फ़ समान ही असर करता है, इसलिए तर्कसे नहीं वस्तुएँ पैदा करके सुधारो, भावनाके पास भावनासे जाओ; प्रेमके सिवाय और किसी प्रकार प्रेम पैदा करनेकी आशा न रक्खो। जो तुम दूसरोंको बनते देखना चाहते हो वैसे स्वयं बन जाओ।

—एमर्सन

जिसने अपना सुधार किया उसने दूसरोंके सुधारनेमें बहुत कुछ किया; दुनिया क्यों नहीं सुधरी इसका एक कारण यह है कि हर कोई चाहता है कि शुरुआत दूसरे करें और वह कभी नहीं सोचता कि वह स्वयं ही क्यों न करे।

—आदम्स

कोई बाहरी सुधार आदमीको स्वतंत्र नहीं कर सकते, न उसमें परिवर्तन ला सकते हैं। सुधार तो अपने अन्दर मनका व्यक्तिगत परिवर्तन है।

—अज्ञात

स्वार्थ

अगर तू यह जानना चाहे कि जिस कामको तू करना चाहता है वह न्यायपूर्ण है या नहीं तो अपनी कल्पनासे उसे दैविक आशीर्वादके लिए पेश करने दे; अगर वह न्यायपूर्ण होगा तो अपनी प्रार्थनासे तुझे अपना दिल प्रोत्साहित होता मालूम होगा; अगर अन्यायपूर्ण हुआ

तो तेरा मित्र तेरी भावनाको हृदोल्लास करता मालूम देगा। वह काम करने लायक नहीं है जो या तो करने मात्रसे थकावे, या सफल होने पर कुछ बड़ा करनेका साहस न कर सके। —स्मार्ट

सुन्दर

स्वभावतः सुन्दरको बाहरी गहनोंकी ज़रूरत नहीं होती।
—प्रसाद

मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ, कि हे प्रभो, मेरा अन्तरंग सुन्दर हो।
—सुकरात

वास्तविक सौन्दर्य वही है जो क्षण-क्षण नवीन लगे। —प्रसाद

ओ! उस मधुर आभूषणसे जिसे सत्य देता है सुन्दरता कितनी अधिक सुन्दर दिखती है! —शेक्सपियर

एक भारतीय स्त्रीसे यह पूछे जानेपर कि उसकी रायमें, विश्वमें सबसे सुन्दर दो चीज़ें कौन-सी हैं, उसने जवाब दिया। हमारे सिरोंके ऊपर सितारोंभरा आकाश और हमारे दिलोंके अन्दर कर्तव्यकी भावना। —मासेट

सुन्दरता

सुन्दरताको बाहरी ज़ेवरकी ज़रूरत नहीं बल्कि जब अनाभूषित है तभी सर्वाधिक आभूषित है। —थॉमसन

सुन्दरता वहीं है जहाँ सत्य है, जहाँ शिव है। —प्रसाद

अच्छा स्वभाव हमेशा सुन्दरताके अभावको पूरा कर देगा; लेकिन सुन्दरता अच्छे स्वभावके अभावकी पूर्ति नहीं कर सकती। —एडीसन

ईश्वर प्रत्येकपर सुन्दरताकी छाप लगाता है, हर प्राकृतिक काम सुन्दर है। वास्तवमें हर काम शानदार है और वह उस बातको और पास लाते हुए लोगोंको चमका देता है। —एमर्सन

सुन्दर चीज़ोंकी इच्छा बिलकुल स्वाभाविक है। इतनी ही बात है कि इसका कोई मापदण्ड नहीं है कि सुन्दर किसे कहा जाय। इसलिए

सृजन

आत्माको कोई चीज इतनी पवित्र, इतनी धार्मिक नहीं बनाती, जितनी कि किसी परिपूर्ण वस्तुके सृजनकी कोशिश। क्योंकि परमात्मा परिपूर्ण है और जो कोई परिपूर्णताके लिए प्रयास करता है वह ऐसी वस्तुके लिए प्रयास करता है जो परमात्मस्वरूप है। —अज्ञात

सेवक

सुधारकका—सेवकका—जीवनके बिना क्षणमात्र भी नहीं चल सकता यह याद रखो। अपनी डायरीपर लिख रखो। इसका मंत्र बनाकर गलेमें पहनो। —गांधी

स्वामीकी आज्ञा सुनकर जो उत्तर देता है ऐसे सेवकको देखकर लज्जा भी लज्जित हो जाती है। —रामायण

मन और शरीर तुम्हारा आत्माकी आज्ञाओंके निःसंकोच आज्ञाकार सेवक होने चाहिए। —अज्ञात

सेवक वह है जो अपना दूसरोंको देता रहता है। जो दूसरोंका छीन लेना चाहता है वह तो लुटेरा है। —हरिभाऊ उपाध्याय

सेवा

अखण्ड नामस्मरण माने अजपा जाप माने स्वकर्माचरण माने निरन्तर सेवा। —विनोबा

उत्तम बुद्धि रखनेकी अपेक्षा प्यासेको ठण्डा पानीका पिला देनेका स्वभाव कहीं बेहतर है। शैतान कुशाग्र-बुद्धि है लेकिन ईश्वरका रूप उसके पास नहीं। —रस्किन

जग मेरी प्रत्यक्ष सेवा करता है और मैं जगकी सेवाका सिर्फ नाम लेता हूँ। —विनोबा

लौकिक लोगोंकी सेवा नौकर-चाकर करते हैं, और अलौकिक लोगोंकी सेवा साधु वैरागी और महान् पुरुष करते हैं। —रामदास

किसीका दिल उसकी सेवा करके अपने हाथोंमें ले यही सबसे बड़ा हज है। हजारों काबोंसे एक दिल बढ़कर है। —एक सूफी

कर्मोंमें धर्म और अर्थ दोनों ही बराबर समाये जाते हैं। आत्मगत अस्तित्व केवल देश-सेवाके लिए ही नहीं, देश-सेवाके द्वारा विश्व-सेवा साधनेके लिए है और विश्व-सेवा द्वारा मोक्ष प्राप्त करनेके लिए, ईश्वर का दर्शन करनेके लिए है। —गांधी

महान् सेवा यह है कि हम किसी ज़रूरतमन्दकी इस तरह मदद करें कि वह अपनी मदद खुद कर सके। —अज्ञात

सेवा-धर्म

सेवा-धर्मका पालन किये बिना मैं अहिंसा धर्मका पालन नहीं कर सकता और अहिंसा धर्मका पालन किये बिना मैं सत्यकी खोज नहीं कर सकता और सत्यके बिना धर्म नहीं। सत्य ही राम है, नारायण है, ईश्वर है खुदा है अल्लाह है गॉड है। —गांधी

सैनिक

प्रत्येक सैनिक मोती हीरे जवाहिरातसे जटित एक अद्भुत आभूषण है। —अज्ञात

सोच

विचार करते करते अपनेको दीवाना न बना डालो, बल्कि जहाँ हो अपने काममें लगे रहो। —एमर्सन

सोना

क्या कोई ऐसा दुर्गम स्थान भी है जहाँ सोनेसे लदा गधा न घुस सकता हो? —मकदूनियाँका बादशाह

सोनेकी चाबी हर दरवाज़ेको खोल देती है। —कहावत

चिड़ियाके पंखोंको सोनेसे मढ़ दो बस वह फिर कभी आसमानमें नहीं उड़ सकेगी। —टैगोर

स्थितप्रज्ञ

जो स्थितप्रज्ञ अथवा होशियार है वह किसीका बुरा नहीं चाहेगा, और अन्तकालमें भी अपने दुश्मनके भलेके लिए ईश्वरसे प्रार्थना करेगा। —गाँधी

कछुआ जैसे अपने अङ्गोंको अन्दरमें सिकोड़ लेता है उसी तरह जो अपनी इन्द्रियोंको विषयोंमेंसे खींचकर आत्माकी छायाके नीचे कर लेता है वह स्थितप्रज्ञ है। —गीता

स्नेह

जो मनुष्य ईश्वरको छोड़कर दूसरेसे स्नेह करता है वह क्या कभी सुखी हो सकता है? —फ्रांसिस

जिसका जिसपर सत्य स्नेह है वह उसे जरूर मिलेगा इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। —रामकृष्ण

स्पृहा

स्पृहा तीन प्रकारकी होती है—भोगने, बोलने और देखनेकी। भोग भोगते समय ध्यान रखना कि ईश्वर देख रहा है, बोलते समय ध्यान रखना कि सत्यका विनाश न हो, और देखते समय ध्यान रखना कि साधुता दूषित न हो जाय। —हातिम हासम

स्याही

स्याहीकी एक बूँद दस लाख आदमियोंको विचारमग्न कर सकती है। —बायरन

स्वच्छता

जो सचमुच भीतरसे स्वच्छ है वह बाहरसे अस्वच्छ हो ही नहीं सकता। —गाँधी

स्वच्छता देखकर पवित्रताका अन्दाज लगाना जिल्द देखकर किताबपर राय देनेके समान है। —विनोबा

स्वाद

मेरा तो अनुभव यह है कि जिसने स्वादको नहीं जीता वह विषयको नहीं जीत सकता। —गाँधी

स्वामित्व

सब आदमी दूसरोंके मालिक बनना चाहते हैं अपना स्वामी कोई नहीं। —गेटे

मैं भी मालिक, तुम भी मालिक तो फिर गायोंको कौन चरायेगा। —असमी कहावत

स्वार्थ

कोई दुर्गुण या अपराध ऐसा नहीं है जो खुद-पसन्दीसे पैदा न होता हो —अज्ञात

स्वार्थमें सद्गुण ऐसे खो जाते हैं जैसे समुद्रमें नदियाँ। —वही

तमाम प्राकृतिक और नैतिक पापोंका मूल और स्रोत स्वार्थ है। —ऐमन्स

स्वावलम्बन

क्या व्यक्ति और क्या राष्ट्र हर एकको अपने पैरोंपर खड़ा रहना सीखना चाहिए। —विवेकानन्द

अपने पैरोंपर खड़ा हुआ किसान अपने घुटनोंपर झुके हुए जेंटिल्मैनसे ऊँचा है। —बॅ. फ्रैंकलिन

खुद ही अपनी परीक्षा कर अपनेको अपने आप बचा। इस प्रकार तू विचारशील हो अपनी रक्षा स्वयं करता हुआ दुनियामें सुखपूर्वक विहार करेगा। —बुद्ध

जो एकदम स्वावलम्बी है वह सबसे ज्यादा सुखी है। —अज्ञात

जो काम परवश हों उनसे यत्नपूर्वक दूर रहे, लेकिन जो आत्मवश हों उनमें यत्नपूर्वक लगा रहे। —अज्ञात

[ह]

हक़

धर्म कहता है 'हक़का रक्षण करना कर्तव्य है।' कर्म कहता है 'कर्तव्य करते रहना हक़ है।' —विनोबा

हक़ यह है कि एक ही हक़ीक़तकी आवाज़ सारी दुनियामें गूँज रही है। गीता हिन्दुस्तानकी क़ुरान है और क़ुरान अरबकी गीता है। —[illegible]

हंस

चाहे दुनिया अन्धकारमय हो जाय या प्रलय आ ही जाय मगर हंस क्या कभी कौओंकी तरह घूरेको कुरेदने जायगा। —अज्ञात

हंस श्मशानमें नहीं बैठता। —[illegible]

हँसना

जो इन्सान रोता नहीं है अंधा है; और जो कभी हँसता नहीं है बेवकूफ़ है। —चार्ल्स साल्टमन

बात-बात और ज़ोर ज़ोरसे हँसना मूर्खता और बदतमीज़ीकी निशानियाँ हैं। —चैस्टर फ़ील्ड

आदमीको इसकी बड़ी एहतियात रखनी चाहिए कि वह इतना ज़्यादा अभ्यस्त न हो जाय कि हँसने जैसी महान् ख़ुशीसे वञ्चित रहने लगे। —एडीसन

हानि

बुद्धिमान् कभी अपनी हानिपर रोते-धोते नहीं बैठते बल्कि प्रसन्नतापूर्वक अपनी क्षतिको पूर्ण करनेका उपाय करते हैं। —शेक्सपियर

हानि क्या है? समयपर चूकना। —भर्तृहरि

जो निन्दनीय मनुष्यकी प्रशंसा करता है या प्रशंसनीय मनुष्यकी निन्दा करता है वह अपने ही मुँहसे अपनी हानि करता है—उसे सुख नहीं प्राप्त होता। —बुद्ध

हार

हारसे दिलोंमें हसद पैदा होता है क्योंकि जिसकी हार हुई है वह असन्तुष्ट बना रहता है। सुखी वही है जो हार-जीतकी परवाह नहीं करता। —धम्मपद

हित

जितना हित माता-पिता या दूसरे भाई-बन्धु कर सकते हैं उससे कहीं अधिक मनुष्यका सधा-चित्त करता है। —बुद्ध

हिम्मत

कठोरतम हृदयको भी पिघला देनेकी मुझे उम्मीद है अतः मैं प्रयत्नशील रहता हूँ। —गाँधी

आदमीकी आधी होशियारी उसकी हिम्मतमें है। —अज्ञात

हिंसक

देखो, यह आदमी जिसका सड़ा हुआ शरीर पीपदार ज़ख्मोंसे भरा हुआ है गुज़रे ज़मानेमें ख़ून बहानेवाला रहा होगा!

—तिरुवल्लुवर

हिंसा

हिंसा बुरी है पर गुलामी उससे भी बुरी है। —अज्ञात

हिंसा आत्म-घातक है और उसके सामने यदि प्रतिहिंसा न हो तो वह टिकी नहीं रह सकती। —गाँधी

दूसरोंको सतानेके बराबर कोई नीचता नहीं। —तुलसी

जहाँ सिर्फ कायरता और हिंसाके बीच किसी एकके चुनावकी बात हो वहाँ मैं हिंसाके पक्षमें राय दूँगा। —गाँधी

कायरतासे तो हिंसा भली। क्योंकि हिंसा क्या?—निष्फल वीरता; यह तो कायरतासे हजारगुना अच्छी है। उसमें देहका मोह और स्वार्थ इतना नहीं।
—गाँधी

जिसको हिंसा करना पसन्द है उसके पापोंकी सीमा नहीं है।
—एमर्सन

हिंसा कोई कभी नहीं कही जा सकती। उसमें भलाई इतनी ही है कि वह कायरतासे कुछ कम बुरी है।
—गाँधी

हृदय

लोगोंके दिलोंको एक दूसरेके खिलाफ नहीं भिड़ाना चाहिए, बल्कि एक दूसरेसे मिलाना चाहिए, और सबोंको सिर्फ बुराईके खिलाफ लगाना चाहिए।
—अशोक

बड़े रूप बड़े बल और बड़े धनसे वास्तवमें और सचमुच कोई महान् प्रयोजन नहीं निकलता सच्चा हृदय सबसे बढ़कर है।
—फ्रैंकलिन

हृदय-दौर्बल्य

दिलके दुर्बल आदमीका अपना नुकसान तो होता ही है पर जिस काममें पड़ता है उसकी भी हानि हुए बगैर नहीं रहती।
—विवेकानन्द

दुर्बल मनुष्यको किसी भी काममें सफलता मिलना सम्भव नहीं है। दुर्बलकी कौड़ीकी भी कीमत नहीं। मनकी दुर्बलता सारी गुलामी की जड़ है बल्कि साक्षात् मौत है।
—विवेकानन्द

[क्ष]

क्षणिक

धन कमाना तमाशा देखनेके लिए आई हुई भीड़के समान है और उसका नष्ट हो जाना उस भीड़के तितर-बितर हो जानेके समान है।

—तिरुवल्लुवर

सम्पत्ति क्षणिक चीज़ है। अगर तुम सम्पत्तिशाली हो गये हो तो ऐसे काम करनेमें देर न करो जिनसे स्थायी लाभ पहुँच सकता है।

—तिरुवल्लुवर

पर्णबिन्दुने चमेलीके कानमें कहा "मुझे अपने हृदयमें हमेशा रखना।" चमेलीने आह भरकर कहा, "अफ़सोस"; और ज़मीनपर आ पड़ी।

—टैगोर

क्षत्रिय

प्रारम्भिक व अन्तिम अवस्थामें मनुष्य कैसा ही हो पूर्णत्व प्राप्तिके लिए मध्य जीवनमें क्षत्रिय (योद्धा) होना लाज़िमी है।

—अरविन्द घोष

क्षमा

जो लोग बुराईका बदला लेते हैं बुद्धिमान् उनकी इज्जत नहीं करते, मगर जो अपने दुश्मनोंको माफ़ कर देते हैं वे स्वर्णकी तरह बहुमूल्य समझे जाते हैं।

—तिरुवल्लुवर

क्षुद्र

क्षुद्र काम तुम्हारी कृतियोंका नहीं तुम्हारी त्रुटियोंका हिसाब रखते हैं।

—कहावत

क्षुद्र जीव जिसको अपना लेता है उसकी तुच्छतापर ध्यान नहीं देता।

—भर्तृहरि

[ज्ञ]

ज्ञान

कोई दूसरेकी विद्वत्तासे विद्वान् भले ही बन जाय परन्तु उसे ज्ञानी अपने ही ज्ञानसे होना पड़ेगा। —मांटेन

हर कण चिह्न देता है और हर पदार्थ; क्योंकि ज्ञान हर कणमें भरा हुआ है। —एमर्सन

ज्ञान तीन प्रकारसे मिल सकता है। मननसे जो कि सर्वोच्च है; अनुसरणसे जो कि सबसे सरल है; अनुभवसे जोकि सबसे कड़वा है। —कन्फ्यूशियस

उठो जागो और श्रेष्ठ पुरुषोंके पास जाकर ज्ञान ले लो। इस मार्गमें जाना छुरीकी तेज धारपर चलना है। —उपनिषद्

जिसे ईश्वरका साक्षात्कार हुआ है उसके लिए जानना कुछ भी नहीं रहा। जिसने परमात्माको जान लिया उसने जानने योग्य सब कुछ जान लिया। —श्रुति

सबको अपना तरह समझना और सबके अन्दर एक ईश्वरके दर्शन करना यही ज्ञानकी आख़िरी हद है। इस ज्ञानसे बढ़कर आदमीको पाक बनानेवाली दूसरी चीज़ इस दुनियामें नहीं है। इसके लिए सच्ची श्रद्धा और अपनी इन्द्रियोंको काबूमें रखनेकी ज़रूरत है। —गीता

ज्ञान प्राप्ति उसके लिए सरल है जो समझदार है। —बाइबिल

ज्ञान पाप हो जाता है यदि उद्देश्य शुभ न हो। —प्लेटो

जिस समय लोग मुझे उन्मत्त और 'मस्त' कहकर मेरी निन्दा करेंगे तभी मेरे मनमें गुप्त तत्त्वज्ञानका उदय होगा। —हाफ़िज़

ज्ञान माने अपने आत्माको जानना। —श्री समर्थ

जिस प्रकार स्वच्छ दर्पणमें मुख साफ दीखता है उसी प्रकार शुद्ध चित्तमें ज्ञान प्रकट हो जाता है। —शंकराचार्य

सर्वोच्च ज्ञान क्या है? सत्यका सबसे छोटा और सबसे साफ़ रास्ता। —कास्टन

ज्ञान आनन्द है। —कनफ्यूशियस

ज्ञानका पहला काम असत्यको मालूम करना है दूसरा सत्यको जानना। —लेक्टेन्टियस

ईश्वरके पास अनन्त ज्ञान है, दूसरोंके पास वही अनन्त ज्ञान बीजरूप है। —विवेकानन्द

जानना काफ़ी नहीं है, ज्ञानसे हमें काम उठाना चाहिए; इरादा करना काफ़ी नहीं है हमें करना चाहिए। —गेटे

जहाँ सम्यग्ज्ञान और तदनुसारिणी क्रिया है वहाँ नीति विजय लक्ष्मी और अखण्ड वैभव है। —गीता

हमारा आख़िरी अवलम्ब ज्ञानसे है —सुक़रात

द्रव्य-यज्ञसे ज्ञान-यज्ञ श्रेयस्कर है। तमाम कार्योंकी परिसमाप्ति ज्ञानमें होती है। —गीता

पहलेके अनुभवसे नया अनुभव के मिलना इस क्रियाको ज्ञान कहते हैं। —विवेकानन्द

जब आदमीको सच्चा ज्ञान हो जाता है तो वह ईश्वरको दूरकी चीज़ नहीं समझता। तब वह उसे 'वह' की तरह नहीं, 'यह' की तरह, यहाँ अन्दर—अपनी आत्माके अन्दर—अनुभव करता है। वह सबमें है जो कोई उसे तलाश करता है उसे वहाँ पाता है।

—रामकृष्ण परमहंस

वही ज्ञान सच्चा ज्ञान है जिससे मन और हृदय पवित्र हों, बाक़ी सब ज्ञानका विपर्यास है। —रामकृष्ण परमहंस

ज्ञान और भक्तिमें कुछ भेद नहीं है। दोनों ही भव-संभव दुःखोंका नाश करते हैं। —रामायण

जिस ज्ञानसे मनुष्य अलग अलग सब जीवोंमें एक ही अविनाशी आत्माको देखता है वह सात्त्विक ज्ञान कहलाता है। —गीता

करनेमें ज्ञान-ज्योति प्रकट होती है। जो सुनकर भी उसपर अमल नहीं करता उसका ज्ञान तो कानों हीमें रहता है। —अबु उस्मान

भाग्य चाहे पदवियाँ और जागीरें बरसा दे दौलत चाहे हमें डुबो दे, लेकिन ज्ञानको तो हमें ही खोजना पड़ेगा। —यंग

काम क्रोधको आपसमें लड़ाकर मारना इसमें ज्ञानका कौशल है। —विनोबा

ज्ञानी

जो उन बातोंको नहीं जानता जिनका जानना उसके लिए उपयोगी और आवश्यक है अज्ञानी है चाहे फिर वह और कुछ भी क्यों न जानता हो। —ट्रिप्लटन

ज्ञानवान्के ये लक्षण हैं। किसीकी निन्दा नहीं करना किसीकी स्तुति नहीं करना, किसीको दोष नहीं देना अपने विषयमें या अपने गुणोंके विषयमें नहीं बोलना। —एपिक्टेटस

ज्ञानी हर बातका अपनेमें आधार रखता है, मूर्ख दूसरोंकी ओर ताकता है। —जीन पॉल

ज्ञानी लोग तुम्हारा तमाम गुप्त इतिहास तुम्हारी आँखोंमें चालमें और वर्तावमें बड़ी तेजीसे पढ़ लेते हैं। —एमर्सन

ज्ञानी वह जिसके लिए मानापमान कुछ नहीं और जो सबमें ब्रह्म रूप देखता है। —रामायण

ज्ञानी हार नहीं कर सकता वह उसको बदलता है हम अपनी आत्मामें ही उसका पतन है। —विमला

जो ज्ञानियोंके साथ चलता है अवश्य ज्ञानी हो जायेगा। —सुलेमान

सुन्दर सुन्दर भाषण देनेसे ही कोई ज्ञानवान् नहीं हो जाता। जो कोई शान्त है मित्रपूर्ण है और निर्भय है वह ज्ञानी है। —धम्मपद

मूर्ख लोग सुखमें हर्षसे और दुःखमें विषादसे भर जाते हैं, ज्ञानी दोनों हालतोंमें समभाव धारण करते हैं। —रामायण

कोई सांसारिक भय ज्ञानी मनुष्यको डिगा नहीं सकता, चाहे वह उसके कितने ही निकट पहुँच जाय। जैसे कोई तीर पत्थरकी विशाल ठोस शिलाको नहीं बेध सकता। —योगवासिष्ठ